इतिहास
HISTORY

कक्षा/Class: XII
2024-25

विद्यार्थी सहायक सामग्री
Student Support Material

हिंदी माध्यम/ Hindi Medium

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
Kendriya Vidyalaya Sangathan

संदेश

विद्यालयी शिक्षा में शैक्षिक उत्कृष्टता प्राप्त करना केन्द्रीय विद्यालय संगठन की सर्वोच्च वरीयता है। हमारे विद्यार्थी, शिक्षक एवं शैक्षिक नेतृत्व कर्ता निरंतर उन्नति हेतु प्रयासरत रहते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में योग्यता आधारित अधिगम एवं मूल्यांकन संबन्धित उद्देश्यों को प्राप्त करना तथा सीबीएसई के दिशा निर्देशों का पालन, वर्तमान में इस प्रयास को और भी चुनौतीपूर्ण बनाता है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पांचों **आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान** द्वारा संकलित यह 'विद्यार्थी सहायक सामग्री' इसी दिशा में एक आवश्यक कदम है । यह सहायक सामग्री कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए सभी महत्वपूर्ण विषयों पर तैयार की गयी है । केन्द्रीय विद्यालय संगठन की 'विद्यार्थी सहायक सामग्री' अपनी गुणवत्ता एवं परीक्षा संबंधी सामग्री-संकलन की विशेषज्ञता के लिए जानी जाती है और अन्य शिक्षण संस्थान भी इसका उपयोग परीक्षा संबंधी पठन सामग्री की तरह करते रहे हैं । शुभ-आशा एवं विश्वास है कि यह सहायक सामग्री विद्यार्थियों की सहयोगी बनकर सतत मार्गदर्शन करते हुए उन्हें सफलता के लक्ष्य तक पहुंचाएगी ।

शुभाकांक्षा सहित ।

निधि पांडे
आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन

संपादक - मंडल

पाठ्यक्रम सह-निदेशक

श्री मयंक मिश्रा,

उप प्राचार्य, पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय

क्रमांक- 03,मोरार कैंट ग्वालियर

पाठ्यक्रम समन्वयक

श्री उपेन्द्र सिंह तोमर

प्रशिक्षण सहायक (हिंदी),

ZIET,ग्वालियर

संसाधक:

1. श्री सविन्द्र कुमार पाण्डेय, स्नातकोत्तर शिक्षक (इतिहास), पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक- 02,गया

2. श्री ज़ाहिद हुसैन, स्नातकोत्तर शिक्षक (इतिहास), केन्द्रीय विद्यालय बैरकपुर (वायुसेना स्थल)

सहायक सामग्री निर्माणकर्ता

- डॉ. बिंकटेश सिंह, पीजीटी- इतिहास, केंद्रीय विद्यालय आर के पुरम, (द्वितीय पाली), सेक्टर 8, नई दिल्ली
- डॉ. मनीष कुमार, पीजीटी- इतिहास, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय पीतमपुरा (द्वितीय पाली), दिल्ली
- डॉ. राजेश पति त्रिपाठी, पीजीटी- इतिहास, केंद्रीय विद्यालय आईटीबीपी (प्रथम पाली),देहरादून
- सुश्री लुसी ठाकुर, पीजीटी- इतिहास, केंद्रीय विद्यालय नंबर 1, हिंडन, गाजियाबाद
- श्री. हरिन्द्र कुमार तिवारी, पीजीटी- इतिहास, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय नंबर 2,(प्रथम पाली), दिल्ली कैंट
- श्री. मुकेश कुमार, पीजीटी- इतिहास, केंद्रीय विद्यालय एनएचपीसी सिंगताम, सिक्किम

समीक्षा समिति

संयोजक

क्र.सं.	नाम	पद का नाम	के.वि.	संभाग
1	श्री राजेश्वर सिंह	प्राचार्य	के.वि. सवाई माधोपुर	जयपुर
2	श्री विजयेन्द्र नागदा	प्राचार्य	के. वि. देवगढ़	जयपुर

टीम के सदस्य

क्र.सं.	नाम	पद का नाम	के.वि.	संभाग
1	श्री जीतेन्द्र सिंह	पीजीटी(इतिहास)	के.वि. नं.1 एएफएसआगरा	आगरा
2	श्री शोएब इस्लाम	पीजीटी(इतिहास)	के.वि.SGPGI, लखनऊ	लखनऊ
3	श्री प्रेम कुमार पटले	पीजीटी(इतिहास)	के.वि. नं.1 छिंदवाडा, जबलपुर(प्रथम पाली)	जबलपुर
4	श्री अमित कुमार वर्मा	पीजीटी(इतिहास)	के.वि.न्यू कैंट प्रयागराज	वाराणसी

तकनीकी विशेषज्ञ

क्र.सं.	नाम	पद का नाम	के.वि.	संभाग
1	श्री आलोक गुप्ता	पीजीटी(सीएस)	के.वि. इटावा	आगरा

COURSE STRUCTURE
CLASS: XII

क्रमांक	भाग	अवधि	अंक
1	भारतीय इतिहास के कुछ विषय भाग:01	60	25
2	भारतीय इतिहास के कुछ विषय भाग:02	60	25
3	भारतीय इतिहास के कुछ विषय भाग:03	60	25
4	मानचित्र	15	05
	कुल	195	80

भारतीय इतिहास के कुछ विषय भाग:01			
पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	कालखंड	अंक
1	ईंटें, मनके और अस्थियाँ	15	25
2	राजा: किसान और नगर	15	
3	बंधुत्व; जाति तथा वर्ग	15	
4	विचारक; विश्वास और इमारतें	15	
भारतीय इतिहास के कुछ विषय भाग:02			
5	यात्रियों के नजरिए से	15	25
6	भक्ति-सूफी परंपराएँ	15	
7	एक साम्राज्य की राजधानी : विजयनगर	15	
8	किसान,जमींदार और राज्य	15	
भारतीय इतिहास के कुछ विषय भाग:03			
9	उपनिवेशवाद और देहात	15	25
10	विद्रोही और राज	15	
11	महात्मा गांधी और राष्ट्रीय	15	

	आंदोलन		
12	संविधान का निर्माण	15	
	मानचित्र कार्य	15	05
	लिखित परीक्षा		80
	परियोजना कार्य	25	20
	कुल	220	**100**

प्रश्न पत्र की रुपरेखा-2024-25

कक्षा- बारहवीं (इतिहास)

पुस्तक	वस्तुनिष्ठ		लघु उत्तरीय प्रश्न		दीर्घ उत्तरीय प्रश्न		स्त्रोत आधारित प्रश्न		मान चित्र	कुल	
	प्रश्नों की संख्या	अधिकतम अंक	प्रश्नों की संख्या	अधिकतम अंक	प्रश्नों की संख्या	अधिकतम अंक	प्रश्नों की संख्या	अधिकतम अंक		लिखित	परियोजना
भाग-01	7	1	2	3	1	8	1	4		25	
भाग-02	7	1	2	3	1	8	1	4		25	
भाग-03	7	1	2	3	1	8	1	4		25	
मानचित्र									05	5	
परियोजना											20
कुल	7 X 3 = 21		6 X 3 = 18		3 X 8 = 24		3 X 4 = 12		1 X 5 = 5	**100**	

विषय सूची

1. ईंटें, मनके और अस्थियाँ -------- 6
2. राजा: किसान और नगर -------- 22
3. बंधुत्व; जाति तथा वर्ग -------- 32
4. विचारक; विश्वास और इमारतें -------- 46
5. यात्रियों के नजरिए से -------- 60
6. भक्ति-सूफी परंपराएँ -------- 71
7. एक साम्राज्य की राजधानी : विजयनगर -------- 88
8. किसान,जमींदार और राज्य -------- 101
9. उपनिवेशवाद और देहात -------- 113
10. विद्रोही और राज -------- 127
11. महात्मा गांधी और राष्ट्रीय आंदोलन -------- 140
12. संविधान का निर्माण -------- 154

1. ईंटें,मनकें और अस्थियाँ

हड़प्पाई पुरातत्व के विकास के प्रमुख चरण/काल रेखा

- 1875 - हड़प्पा मुहर पर अलेक्जेंडर कनिंघम की रिपोर्ट।
- 1921 - दयाराम साहनी ने हड़प्पा में खुदाई शुरू की
- 1925 - मोहनजोदड़ो में खुदाई शुरू हुई।
- 1944 - आर.ई.एम. व्हीलर एएसआई के महानिदेशक बने।
- 1946 - आर.ई.एम. व्हीलर ने हड़प्पा में खुदाई की।
- 1955 - एस.आर.राव ने लोथल में खुदाई शुरू की।
- 1960 - बी.बी. लाल और बी.के. थापर ने कालीबंगन में खुदाई शुरू की।
- 1974 - एम.आर. मुगल ने बहावलपुर में खोज शुरू की।
- 1990 - आर.एस. बिष्ट ने धोलावीरा में खुदाई शुरू की।

•हड़प्पा सभ्यता को सिंधु घाटी सभ्यता के रूप में भी जाना जाता है जिसका इतिहास 2600-1900 ईसा पूर्व के बीच का है।

निर्वाह के तरीके

- हड़प्पा सभ्यता के निवासी कई प्रकार के पेड़ पौधों से प्राप्त उत्पाद और जानवरों जिसमे मछली भी शामिल है से प्राप्त भोजन करते थे।
- हड़प्पा स्थलों से मिले अनाज के दोनों में गेहूं,जौ, बाजरा, दाल, सफेद चना तथा तिल शामिल हैं।
- हड़प्पा स्थलों से मिली जानवरों की हड्डियों में मवेशियों जैसे भेड़ बकरी भैंस तथा सूअर की हड्डियां शामिल हैं।
- जंगली प्रजातियों जैसे सूअर, हिरण और घड़ियाल की हड्डियाँ भी मिली हैं।
- जंगली प्रजातियों की हड्डियाँ मिलने से पता चलता है कि हड़प्पा के लोग इन जानवरों का शिकार खुद करते थे या अन्य शिकारी समुदायों से मांस प्राप्त करते थे। मछली और पक्षियों की हड्डियाँ भी मिली हैं।

कृषि प्रौद्यौगिकी

- हल चलाने के लिए बैलों का इस्तेमाल किया जाता था |
- दो अलग-अलग फसलें एक साथ उगाई जाती थीं। ज़्यादातर स्थल अर्ध-शुष्क भूमि में हैं, इसलिए सिंचाई के लिए नहरों और कुओं के पानी का इस्तेमाल किया जाता था।

- धौलावीरा (गुजरात) में पाए गए जलाशयों का इस्तेमाल कृषि के लिए पानी इकठ्ठा करने के लिए किया जाता था।
- अफ़गानिस्तान के शोर्तुघई में सिंचाई हेतु नहरों के कुछ अवशेष मिले हैं।
- चोलिस्तान और बनावली में हल के टेराकोटा मॉडल मिले हैं। कालीबंगन में जुते हुए खेत का साक्ष्य भी मिला है।

मोहनजोदड़ो: एक नियोजित शहरी केंद्र :• इन शहरों को दो भागों में विभाजित किया गया था- एक हिस्सा छोटा लेकिन ऊँचाई पर बनाया गया जिसे ***दुर्ग*** कहा जाता था | दूसरा कहीं अधिक बड़ा लेकिन शहर के निचले हिस्से में स्थित जिसे ***निचला शहर*** कहा जाता था।

दुर्ग

• यहाँ की संरचनाएं कच्ची इंटों के चबूतरे पर बनी थी | दुर्ग को दीवार से घेरा गया था जिसका अर्थ है कि इसे निचले शहर से अलग किया गया था |

• अन्नागार एक विशाल संरचना है जिसके ईंट वाले निचले हिस्से बचे हुए हैं।

• ऊपरी हिस्से, शायद लकड़ी के थे |

विशाल स्नानागार - आंगन में एक बड़ा आयताकार जलाशय था । जो चारों तरफ़ से गलियारे से घिरा हुआ था |

निचला शहर: निचला शहर भी दीवारों से घेरा गया था।

- इसके अतिरिक्त कई भवनों को ऊंचे चबूतरों पर बनाया गया था जो नींव का कार्य करते थे।
- एक बार चबूतरों के यथास्थान बनने के बाद शहर का सारा भवन निर्माण कार्य चबूतरों पर एक निश्चित क्षेत्र तक सीमित था ।
- इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि पहले बस्ती का नियोजन किया गया था और फिर उसके अनुसार कार्यान्वयन किया जाता था |
- नियोजन के अन्य लक्षणों में ईंटें शामिल है जो भले ही धूप में सुखाकर अथवा भट्टी में पकाकर बनाई गई हों, एक निश्चित अनुपात की होती थी, जहां लंबाई और चौड़ाई, ऊंचाई की क्रमशः चार गुनी और दो गुनी होती थी।

नालों का निर्माण

* इसमें सावधानीपूर्वक नियोजित जल निकासी प्रणाली थी। सड़कें और गलियाँ लगभग "ग्रिड" पैटर्न के साथ बनाई गई थीं।

• हड़प्पा शहरों की सबसे विशिष्ट विशेषता थी सावधानीपूर्वक "नियोजित जल निकासी व्यवस्था" ।

• सड़कों के दोनों ओर ढकी हुई नालियाँ थीं।

• घरों से निकलने वाली नालियाँ सड़कों पर बहने वाली नालियों से जुड़ी हुई थीं ।

गृह स्थापत्य

• मोहनजोदड़ो के निचले शहर में आवासीय इमारतों के उदाहरण मिलते हैं।

• कई इमारतें एक आँगन पर केंद्रित थीं, जिसके चारों ओर कमरे थे। आँगन खाना पकाने और बुनाई जैसी गतिविधियों का केंद्र था, खासकर गर्मी और शुष्क मौसम के दौरान।

• गोपनीयता बनाए रखने के लिए दीवारों में खिड़कियाँ नहीं हुआ करती थी।

• कुछ घरों में दूसरी मंजिल या छत तक पहुँचने के लिए सीढ़ियों के अवशेष मिलें हैं।

• मोहनजोदड़ो से लगभग 700 कुएँ के साक्ष्य मिलें हैं।

सामाजिक भिन्नताओं का अवलोकन

शवाधान : पुरातत्वविदों को हड़प्पा स्थलों में शवाधान मिले हैं, मृतकों को आम तौर पर गर्तों में रखा जाता था। कभी-कभी, शवाधान गर्त की बनावट एक दूसरे से भिन्न होती थी |

• कुछ शवाधानों में मिट्टी के बर्तन और आभूषण पाए गए हैं, जो शायद इस विश्वास को दर्शाते हैं कि इनका उपयोग मृत्यु के बाद किया जा सकता था ।

• पुरुषों और महिलाओं दोनों के शवाधानों में आभूषण पाए गए हैं ।

"विलासिता" की वस्तुओं की खोज : सामाजिक अंतरों की पहचान करने के लिए कलाकृतियों को मोटे तौर पर उपयोगितावादी और विलासिता के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। उपयोगितावादी वस्तुएँ दैनिक उपयोग की होती हैं जो पत्थर या मिट्टी जैसी साधारण सामग्रियों से काफी आसानी से बनाई जाती हैं।

• विलासिता वे वस्तुएँ हैं जो दुर्लभ हैं या महंगी, गैर-स्थानीय सामग्रियों से या जटिल तकनीकों से बनी हैं।

शिल्प उत्पादन के विषय में जानकारी

• हड़प्पा सभ्यता के कलाकार और शिल्पकार विभिन्न प्रकार के शिल्पों में अत्यधिक कुशल थे- धातु ढलाई, पत्थर की नक्काशी, मिट्टी के बर्तन बनाना और रंगना तथा टेराकोटा के प्रतिरूप बनाना।

• चन्हूदड़ो विशेष रूप से शिल्प उत्पादन के लिए संलग्न था, जिसमें मनका बनाना, सीप काटना, धातु का काम, मुहर बनाना और बाट बनाना शामिल था।

• मनका बनाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली सामग्रियों की विविधता उल्लेखनीय है।

• सामग्री के अनुसार मनका बनाने की तकनीक अलग-अलग थी।

• मनकों के गांठों को खुरदरे आकार में काटा जाता था, और फिर उन्हें अंतिम रूप में बारीक किया जाता था।

• चन्हूदड़ो, लोथल और हाल ही में धोलावीरा से छेद करने के विशेष उपकरण मिले हैं।

• नागेश्वर और बालाकोट सीप की वस्तुएँ बनाने के लिए विशेष केंद्र थे - जिसमें चूड़ियाँ, करछुल और पच्चीकारी की वस्तुएं शामिल हैं।

• मनका बनाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली विभिन्न सामग्रियाँ हैं:

- कार्नेलियन,जैस्पर,स्फटिक,क्वार्ट्ज और सेलखड़ी जैसे पत्थर।

-तांबा, कांस्य और सोना जैसी धातुएँ।

- शंख

- फ़यांस

- टेराकोटा

उत्पादन-केन्द्रों की पहचान:

• शिल्प उत्पादन के केन्द्रों की पहचान के लिए पुरातत्वविद सामान्यतः कच्चे माल और उपयोगी औजारों की तलाश करते हैं।

• अपशिष्ट, शिल्प कार्य के सबसे अच्छे संकेतकों में से एक है। कभी-कभी, बड़े अपशिष्ट टुकड़ों का उपयोग छोटी वस्तुओं को बनाने के लिए किया जाता था।

• ये टुकड़े इस ओर संकेत करते हैं कि छोटे, विशेष केंद्रों के अलावा, मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे बड़े शहरों में भी शिल्प उत्पादन किया जाता था।

माल प्राप्त करने सम्बन्धी नीतियाँ: उपमहाद्वीप और उसके आगे से आने वाला माल

• हड़प्पा के लोग शिल्प उत्पादन के लिए विभिन्न तरीकों से माल प्राप्त करते थे।

• बैलगाड़ियों के टेराकोटा खिलौने मॉडल बताते हैं कि यह भूमि मार्गों पर माल और लोगों को ले जाने का एक महत्वपूर्ण साधन था।

• कच्चे माल की खरीद के लिए एक और रणनीति अभियान भेजना हो सकता है, जिससे स्थानीय समुदायों के साथ संचार स्थापित होता है।

सुदूर क्षेत्रों से संपर्क: पुरातात्विक खोजों से पता चलता है कि तांबा संभवतः अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पूर्वी सिरे पर स्थित ओमान से भी लाया गया था।

• तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के मेसोपोटामिया के ग्रंथों में मगन नामक क्षेत्र से आने वाले तांबे का उल्लेख है, जो संभवतः ओमान का नाम है।

• अन्य पुरातात्विक खोजों में हड़प्पा की मुहरें, बाट, पासे और मनके शामिल हैं, जो दिलमुन (संभवतः बहरीन द्वीप), मगन और मेलुहा नामक क्षेत्रों, संभवतः हड़प्पा क्षेत्र से संपर्क का सुझाव देते हैं।

• यह संभावना है कि ओमान, बहरीन या मेसोपोटामिया के साथ संचार समुद्र के रास्ते होता था। मेसोपोटामिया के ग्रंथों में मेलुहा को नाविकों की भूमि के रूप में संदर्भित किया गया है। इसके अलावा, हमें मुहरों पर जहाजों और नावों के चित्रण मिलते हैं।

मुहरें, लिपि तथा बाट: मुहरें और मुद्रांकन

• मुहरों और मुद्रांकनों का प्रयोग लंबी दूरी के संचार को सुविधाजनक बनाने के लिए किया जाता था। मुद्रांकन से प्रेषक की पहचान का भी पता चलता था।

एक रहस्यमय लिपि:

• हड़प्पा लिपि को चित्रात्मक माना जाता है क्योंकि इसमें चित्रों का उपयोग किया गया है।

• हड़प्पा की मुहरों पर आमतौर पर एक पंक्ति में कुछ लिखा होता है, जो संभवतः मालिक के नाम और पदवी को दर्शाता है। विद्वानों ने यह भी सुझाव दिया है कि इन पर बना चित्र (आम तौर पर एक जानवर) अनपढ़ लोगों को संकेतिक रूप से इसका अर्थ बताता था ।

• अधिकांश अभिलेख छोटे हैं,सबसे लंबे अभिलेख में लगभग 26 चिन्ह हैं। हालाँकि लिपि आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है, यह स्पष्ट रूप से वर्णमाला की नहीं थी क्योंकि इसमें बहुत अधिक चिन्ह हैं -लगभग 375 और 400 के बीच। लिपि को दाएं से बाएं लिखी जाती थी ।

बाट:

• आदान-प्रदान बाटों की एक सूक्ष्म प्रणाली द्वारा नियंत्रित थे, जो सामान्यतः चर्ट नामक पत्थर से बना होता था और आमतौर पर घनाकार होता था जिसमें कोई निशान नहीं होता था।

• इन बाटों के निचले मानदंड द्विआधारी (1, 2, 4, 8, 16, 32, आदि 12,800 तक) थे, जबकि ऊपरी मानदंड दशमलव प्रणाली का अनुसरण करते थे।

• छोटे वजन का उपयोग संभवतः आभूषण और मोतियों को तौलने के लिए किया जाता था|
धातु से बने तराजू के पलड़े भी पाए गए हैं।

प्राचीन सत्ता: प्रासाद और राजा

हड़प्पा समाज में जटिल निर्णय लिए जाने और लागू किए जाने के संकेत हैं।

कुछ पुरातत्वविदों का मानना है कि हड़प्पा समाज में कोई शासक नहीं था, और सभी को समान दर्जा प्राप्त था।

दूसरे पुरातत्वविद का मानना है कि यहाँ कोई एक शासक नहीं था, बल्कि कई शासक थे| जैसे मोहनजोदड़ो, हड़प्पा आदि के अपने अलग अलग राजा होते थे |

कुछ और यह तर्क देते हैं कि यह एक ही राज्य था।

मोहनजोदड़ो में मिली एक बड़ी इमारत को पुरातत्वविदों ने महल का नाम दिया था, लेकिन इसके साथ कोई भव्य वस्तुएं नहीं मिली है | एक पत्थर की मूर्ति को "पुरोहित-राजा" की संज्ञा दी गयी थी और यह नाम आज भी प्रचलित है |

सभ्यता का अंत: कारक: जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, अत्यधिक बाढ़, नदियों का मार्ग परिपरिवर्तन और सूखना, भूदृश्य का अत्यधिक उपयोग, बड़े पैमाने पर विनाश, बाहरी आक्रमण आदि

हड़प्पा सभ्यता की खोज

कनिंघम का भ्रम: एएसआई के पहले महानिदेशक कनिंघम ने प्रारंभिक बस्तियों का पता लगाने के लिए चौथी और सातवीं शताब्दी ई. के बीच उपमहाद्वीप में आये चीनी बौद्ध तीर्थयात्रियों द्वारा छोड़े गए वृतांतों का उपयोग किया।

• हड़प्पा जैसा पुरास्थल जो चीनी यात्रियों के यात्रा कार्यक्रम का हिस्सा नहीं थी और जिसे प्रारंभिक ऐतिहासिक शहर के रूप में नहीं जाना जाता था, कनिंघम के अन्वेषण ढाँचे में उपयुक्त नहीं बैठता था|

• एक अंग्रेज ने कनिंघम को हड़प्पा की मुहर दी थी। उन्होंने मुहर पर ध्यान तो दिया लेकिन उसे ऐसे कालखंड में, दिनांकित करने का असफल प्रयास किया, जिससे वे परिचित थे। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि वे हड़प्पा के महत्व को समझने से चूक गए।

एक नवीन प्राचीन सभ्यता:

1924 में एएसआई के महानिदेशक जॉन मार्शल ने विश्व के समक्ष सिंधु घाटी में एक नई सभ्यता की खोज की घोषणा की।

• तब दुनिया को न केवल एक नई सभ्यता के बारे में पता चला बल्कि मेसोपोटामिया के समकालीन एक सभ्यता के बारे में भी पता चला।

• मार्शल ने पूरे टीले में सामान परिमाण वाली नियमित क्षैतिज इकाइयों के साथ साथ उत्खनन करने का प्रयास करते थे | इसका यह मतलब था कि अलग अलग स्तरों से सम्बद्ध होने पर भी एक इकाई विशेष से प्राप्त सभी पुरावस्तुओं को सामूहिक रूप से वर्गीकृत कर दिया जाता था।

नई तकनीकें और प्रश्न:

• 1980 के दशक से, हड़प्पा पुरातत्व में अंतर्राष्ट्रीय रुचि भी बढ़ रही है।

• उपमहाद्वीप और विदेश के विशेषज्ञ, हड़प्पा और मोहनजोदड़ो दोनों स्थानों में संयुक्त रूप से काम करते रहे हैं।

• वे मिट्टी, पत्थर, धातु और पौधे तथा पशु अवशेषों के प्राप्त करने के लिए सतही अन्वेषण सहित आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं, साथ ही उपलब्ध साक्ष्य के प्रत्येक टुकड़े का बारीकी से विश्लेषण कर रहे हैं। ये अन्वेषण भविष्य में दिलचस्प परिणामों की आशा दिलाते हैं।

अतीत को जोड़कर पूरा करने की समस्याएँ

• हड़प्पाई लिपि इस प्राचीन सभ्यता को समझने में कोई मदद नहीं मिलती बल्कि, यह भौतिक साक्ष्य है जो पुरातत्वविदों को हड़प्पा जीवन को बेहतर ढंग से पुनर्निर्मित करने में सहायक होते हैं। येवस्तुएं, मृद्भांड, औजार, आभूषण, घरेलू सामान आदि हो सकती है।

• कपड़ा, चमड़ा, लकड़ी और सरकंडे जैसी जैविक पदार्थ आम तौर पर विघटित हो जाते है, खासकर उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में जो बच जाते हैं वे हैं पत्थर, पकी हुई मिट्टी (या टेराकोटा), धातु,आदि।

खोजों का वर्गीकरण:

• वर्गीकरण का एक सामान्य सिद्धांत प्रयुक्त पदार्थों जैसे पत्थर, मिट्टी, धातु, हड्डी, हाथी दांत, आदि के सम्बन्ध में होता है ।

दूसरा, उनकी उपयोगिता के आधार पर होता है |

कभी-कभी, पुरातत्वविदों को अप्रत्यक्ष साक्ष्य का सहारा लेना पड़ता है। उदाहरण के लिए, कुछ हड़प्पा स्थलों पर कपास के टुकड़े मिले हैं लेकिन पहनावे के बारे में पता लगाने के लिए हमें अप्रत्यक्ष साक्ष्यों, जैसे मूर्तिकला के चित्रण पर निर्भर रहना पड़ता है।

व्याख्या की समस्याएँ:

• आरंभिक पुरातत्वविदों को लगता था कि कुछ वस्तुएँ जो असामान्य और अपरिचित लगती थीं, संभवतः धार्मिक महत्व की होती थी|

• मुहरें, जिनमें से कुछ अनुष्ठान दृश्यों को दर्शाती हैं,के परिक्षण से धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं को पुनः निर्मित करने का प्रयास भी किया गया है|

• कुछ अन्य जिन पर पेड़-पौधे उत्कीर्णित हैं, मान्यतानुसार प्रकृति की पूजा के संकेत देते हैं |

वस्तुनिष्ट प्रश्न (1 अंक)

1. हड़प्पा सभ्यता का प्रथम उत्खनन स्थल कौन सा है?

(ए) – मोहनजोदड़ो (बी) – लोथल

(सी) – हड़प्पा (डी) – कालीबंगा

उत्तर: (सी)

प्रश्न २. निम्नलिखित कथन पर विचार करें:

1. स्वतंत्रता के बाद, हड़प्पा सभ्यता के अधिकांश केंद्र पाकिस्तान में चले गए।
2. हड़प्पा लिपि को पढ़ लिया गया है।
3. हड़प्पा सभ्यता में शासकों की महत्वपूर्ण भूमिका थी।
4. हड़प्पा में मृतकों को दफनाया गया था।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है?

(ए) 1, 2 और 3 (बी) 1, 3 और 4

(सी) 1, 2, 3 और 4 (डी) 2, 3 और 4

उत्तर: (बी) 1, 3 और 4

प्रश्न.3 प्रोटो-शिव की मुहरों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।

1. प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में एक देवता 'रुद्र' का उल्लेख मिलता है।
2. बाद में शिव के लिए रुद्र शब्द का प्रयोग किया गया।
3. ऋग्वेद में रुद्र का उल्लेख पशुपति के रूप में नहीं किया गया है।
4. पशुपति का चित्रण ऋग्वेद में रुद्र के उल्लेख से मेल नहीं खाता।

दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(ए) 1, 2, 3, 4 (बी) 1, 2, 3

(सी) 2, 3, 4 (डी) 1, 3, 4

उत्तर: (ए) 1, 2, 3, 4

प्रश्न4 निम्नलिखित का मिलान करें:

i.हड़प्पा (a) गुजरात

ii.धोलावीरा (b) हरियाणा

iii.राखीगढ़ी (c) राजस्थान

(iv) कालीबंगा (d) पाकिस्तान

(ए) (i) d, (ii) a, (iii) b, (iv) c (बी) (i) b, (i) c, (iii) d, (iv) a

(सी) (i)c, (ii) b, (iii) a, (iv) d (डी) (i)a, (ii) b, (iii) c, (iv)d

उत्तर: (ए). (i) d, (ii) a, (iii) b, (iv) c

.प्रश्न 5 मूर्ति की पहचान करें और सही उत्तर चुनें

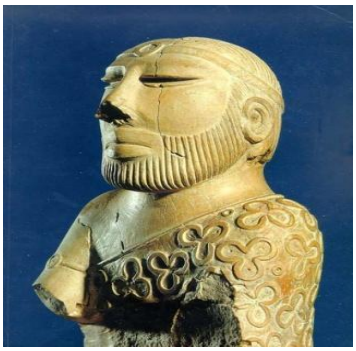

(ए) पुजारी राजा (बी) देवी माँ

(सी) भगवान शिव (डी) अन्य

उत्तर (ए) पुजारी राजा

प्रश्न 6. इनमें से कौन हड़प्पावासियों के लिए तांबे का स्रोत था?

(ए) कर्नाटक (बी) राजस्थान

(सी) आंध्र प्रदेश (डी) गुजरात

उत्तर: (बी) राजस्थान

प्रश्न 7. इनमें से कौन हड़प्पा सभ्यता के पतन का कारण था?

(ए) जलवायु परिवर्तन (बी) बाढ़

(सी) वनों की कटाई (डी) ये सभी

उत्तर: (डी) ये सभी

प्रश्न 8. बड़े अन्न भंडार कहाँ पाए जाते हैं ?

(ए) - लोथल और धोलावीरा (बी) - कालीबंगा

(सी) – बनावली (डी) - मोहनजोदड़ो

उत्तर: (डी) - मोहनजोदड़ो

प्रश्न 9. हड़प्पा सभ्यता के शिल्प उत्पादन केंद्रों में निम्नलिखित में से कौन सी चीजें पाई जाती थीं?

1. कार्निलियन

2. जैस्पर

3. चर्ट

4. क्वार्ट्ज

(ए) 1, 2 और 3 (बी) 1,2,3, 4

(सी) 2, 3, 4 (डी) 2, 4

उत्तर: (बी) 1,2,3, 4

प्रश्न 10. मूर्ति की पहचान करें और सही उत्तर चुनें

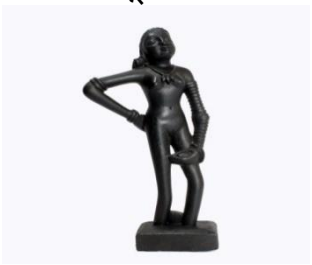

(ए) देवी माँ (बी) नर्तकी

(सी) पुजारी राजा (डी) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (ए) नर्तकी

प्रश्न11. पुरातत्त्वविदों द्वारा किन दो रणनीतियों को अपनाया जाता है ताकि हड़प्पावासी सामाजिक भिन्नता की पहचान की जा सके?

i.शवाधान का अध्ययन

ii. लिपि का अध्ययन

iii व्यापार और वाणिज्य का अध्ययन

iv) कलाकृतियों का अध्ययन

सही विकल्प चुनें

(ए) दोनों 'i' और 'ii' (बी) दोनों 'i' और 'iv'

(सी) दोनों 'ii' और 'iii' (डी) दोनों 'i' और 'iii'

उत्तर: (बी) दोनों 'i' और 'iv'

प्रश्न12. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के प्रथम महानिदेशक कौन थे

(ए) अलेक्जेंडर कनिंघम (बी) जॉन मार्शल

(सी) जॉर्ज एवरेस्ट (डी) जेम्स प्रिंसपे

उत्तर (ए) अलेक्जेंडर कनिंघम

प्रश्न 13. हड़प्पावासियों को टिन कहाँ से प्राप्त हुआ?

(ए) अफगानिस्तान (बी) मध्य भारत

(सी) हिमालयी क्षेत्र (डी) राजस्थान

उत्तर: (ए) अफगानिस्तान

प्रश्न 14. चन्हुद्रो का सबसे महत्वपूर्ण उद्योग था

(ए) मनके बनाना (बी) ईंट बनाना

(सी) हथकरघा (डी) जहाज निर्माण

उत्तर (ए) मनके बनाना

प्रश्न 15 हड़प्पा की लिपि लिखी जाती थी

(ए) नीचे से ऊपर (बी) ऊपर से नीचे

(सी) बाएं से दाएं (डी) दाएं से बाएं

उत्तर (डी) दाएं से बाएं

प्रश्न 16 पुरातत्ववेत्ताओ को जूते हुए खेत के प्रमाण मिले हैं-

(ए) बनावली (बी) कालीबंगा

(सी) लोथल (डी) मांडा

उत्तर: (बी) कालीबंगा

प्रश्न 17. सड़कों और गलियों को लगभग --- पैटर्न के अनुसार बिछाया गया था

(ए) ग्रिड (बी) त्रिकोणीय

(सी) वर्गाकार (डी) वृत्त

उत्तर: (ए) ग्रिड

प्रश्न 18. हड़प्पा किस नदी के तट पर स्थित है

(ए) सिंधु (बी) चेनाब

(सी) रावी (डी) झेलम

उत्तर: (सी) रावी

प्रश्न 19 एलेक्जेंडर कनिंघम के बारे में असत्य कथन है

(ए) उन्होंने सांची और सारनाथ सहित कई स्थलों की खुदाई की

(बी) उन्होंने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना में भूमिका निभाई

(c) वे पुरातत्व विभाग के पहले महानिदेशक बने

(d) वह एक ब्रिटिश डॉक्टर थे।

उत्तर (डी) एक ब्रिटिश डॉक्टर थे

प्रश्न 20. हड़प्पा सभ्यता की मुख्य विशेषता क्या थी?

(ए) नगर नियोजन (बी) कला और वास्तुकला

(सी) प्रशासन (डी) कृषि

उत्तर: (ए) नगर नियोजन

प्रश्न 21. निम्नलिखित में से कौन हड़प्पा लेखन की एक विशेषता नहीं है?

(ए) हड़प्पा लिपि चित्रात्मक थी और वर्णानुक्रमिक नहीं थी

(बी) इसे जेम्स प्रिंसेप द्वारा समझा गया है

(सी) इसमें बहुत अधिक संकेत थे, कहीं 375 और 400 . के बीच

(डी) लिपि दाएं से बाएं लिखी गई थी

उत्तर: (बी)इसे जेम्स प्रिंसेप द्वारा समझा गया है

प्रश्न22 . सही कथन का चयन कीजिए।

(ए) -हड़प्पा सभ्यता सी 3600 और 1900 ईसा पूर्व के बीच की है।

(बी) - पहले और बाद की संस्कृतियां थीं, जिन्हें अक्सर प्रारंभिक हड़प्पा और परवर्ती हड़प्पा कहा जाता था।

(सी) - हड़प्पा सभ्यता में लोहे के औजार मिले थे|

(डी) - प्रारंभिक हड़प्पा और हड़प्पा सभ्यता के बीच कोई विराम नहीं था।

उत्तर: (बी)

प्रश्न 23. हड़प्पा काल के दौरान इस्तेमाल किए गए वजन के संबंध में कौन सा कथन गलत है?

(ए) -हड़प्पा के लोगों ने कई प्रकार के छोटे और भारी वजन विकसित किए थे।
(बी) - वे आकार में वर्गाकार थे और उन पर निशान थे ।
(ग)- ये बाट ज्यादातर चर्ट जैसे कठोर पत्थरों से बने होते थे।
(डी) - वजन के उच्च मूल्यवर्ग दो के गुणकों में द्विआधारी थे।
उत्तर:(डी)
प्रश्न 24.अभिकथन (A)-सिंधु घाटी के लोग स्वच्छता के मामलों का ध्यान रखते थे।
कारण (R)- जल निकासी व्यवस्था ने सभी घरों को,गली की नालियों से जोड़ दिया जो ईंट या पत्थर के स्लैब के साथ ढकी हुई थी |
(ए) - दोनों (ए) और (आर) सत्य हैं और (आर) (ए) की सही व्याख्या है।
(बी) - दोनों (ए) और(आर) सत्य हैं और(आर) (ए) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(सी) - (ए) सच है लेकिन (आर) झूठा है।
(डी) - (ए) झूठा है लेकिन (आर) सच है
उत्तर: (ए)

लघुत्तरात्मक प्रश्नोत्तर 3 अंक

प्रश्न 1.हड़प्पा वासियों द्वारा प्रयुक्त लिपि के बारे में लिखिए

1. हड़प्पा की मुहरों में आमतौर पर लिखने की एक पंक्ति होती है, जिसमें संभवतः मालिक का नाम और शीर्षक होता है।
2. विद्वानों ने यह भी सुझाव दिया है कि मूल भाव उन लोगों को एक अर्थ देता है जो पढ़ नहीं सकते।
3. अधिकांश शिलालेख छोटे हैं, जिनमें से सबसे लंबे समय तक लगभग 26 संकेत हैं।
4. हालांकि लिपि आज तक समझ में नहीं आई है, यह स्पष्ट रूप वर्णानुक्रमिक स्टैंड नहीं था
स्वर के रूप में इसमें बहुत अधिक संकेत हैं - कहीं 375 और 400 के बीच।
5. स्क्रिप्ट दाएं से बाएं लिखी गई थी।
6. कुछ मुहरें दायीं ओर एक व्यापक रिक्ति और बाईं ओर ऐंठन दिखाती हैं, जैसे कि उत्कीर्णन शुरू हुआ हो दायीं ओर से काम करना और फिर जगह से बाहर भागना
7. विभिन्न प्रकार की वस्तुएं जिन पर लेखन पाया गया है: मुहरें, तांबे के औजार, जार के रिम, तांबा और टेराकोटा की गोलियां, गहने, हड्डी की छड़ें, यहां तक कि एक प्राचीन साइनबोर्ड

प्रश्न 2. हड़प्पावासियों की घरेलू वास्तुकला का उल्लेख कीजिए।

1. मोहनजो-दारो का निचला शहर आवासीय भवनों के उदाहरण प्रदान करता है। कई भवन एक आंगन पर केंद्रित है, जिसके चारों ओर कमरे हैं।
2. आंगन शायद खाना पकाने और बुनाई जैसी गतिविधियों का केंद्र था, खासकर गर्म और शुष्क मौसम के दौरान आंतरिक या आंगन का दृश्य।
4. हर घर का अपना बाथरूम ईंटों का होता था, जिसमें नालियां दीवार से जुड़ी होती थीं जिसका पानी गली में बह जाता था।
5. कुछ घरों में दूसरी मंजिल या छत तक पहुंचने के लिए सीढ़ियों के अवशेष हैं।
अक्सर कई घरों में एक कमरे में कुआ था जिसमें बाहर से पहुँचा जा सकता था और शायद राहगीरों द्वारा उपयोग किया जाता था।

प्रश्न 3. हड़प्पा सभ्यता में दुर्ग क्षेत्र पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ?

1. हमें यहाँ उन संरचनाओं के प्रमाण मिलते हैं जिनका उपयोग शायद जनता के लिए विशेष उद्देश्य के लिए किया जाता था।

2. इनमें गोदाम शामिल हैं- एक विशाल संरचना जिसमें निचले हिस्से ईंट के बने रहते थे ,जबकि ऊपरी हिस्से, शायद लकड़ी के, जो कि बहुत पहले ही सड़ चुके थे

3. ग्रेट बाथ चारों तरफ एक गलियारे से घिरे आंगन में एक बड़ा आयताकार टैंक था

प्रश्न 4. हड़प्पावासियों द्वारा प्रयुक्त भार प्रणाली के बारे में लिखिए |

1. विनिमय को भार की एक सटीक प्रणाली द्वारा नियंत्रित किया जाता था, जो आमतौर पर चर्ट नामक पत्थर से पर बिना किसी निशान के घनाकार आकृति में बना होता था

2. भार के निचले मूल्यवर्ग द्विआधारी (1, 2, 4, 8, 16, 32, आदि 12,800 तक) थे, जबकि उपरी मानदंड में दशमलव प्रणाली का पालन किया।

3. छोटे बाटों का उपयोग संभवत: आभूषण और मोतियों को तौलने के लिए किया जाता था। मेटल स्केल-पैन भी पाया गया है।

प्रश्न 5. हड़प्पा सभ्यता में शिल्प उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चे माल की सूची बनाएं और चर्चा करें ये कैसे प्राप्त हुए होंगे।

उत्तर। मोतियों को बनाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली कारेलियन जैसे पत्थर (एक सुंदर की तरह) लाल रंग), जैस्पर, क्रिस्टल, क्वार्ट्ज और स्टीटाइट; तांबा, कांस्य और सोना जैसी धातुएं; और खोल,
फिएंस और टेराकोटा या जली हुई मिट्टीसामग्री की विविधता उल्लेखनीय है: ।
शिल्प उत्पादन के लिए सामग्री प्राप्त करने की दो विधियाँ:-

1. उन्होंने नागेश्वर, शॉर्टुघई और बालाकोट जैसी बस्तियों की स्थापना की।

2. उन्होंने राजस्थान के खेतड़ी क्षेत्र (तांबे के लिए) दक्षिण भारत (सोने के लिए) जैसे क्षेत्रों में अभियान भेजे होंगे|

प्रश्न 6. हड़प्पा सभ्यता का अध्ययन करते समय कनिंघम के मन में क्या भ्रम थे?

उत्तर: 1.उन्होंने चीनी बौद्ध तीर्थयात्रियों द्वारा छोड़े गए वृतान्तो का इस्तेमाल किया, जिन्होंने उपमहाद्वीप चौथी और सातवीं शताब्दी ई.दौरा किया था

2.उन्होंने सोचा कि भारतीय इतिहास की शुरुआत गंगा घाटी के पहले शहरों से हुई थी।

3. वास्तव में, कनिंघम की मुख्य रुचि प्रारंभिक ऐतिहासिक ईसा पूर्व-चौथी शताब्दी सीई) से (सी. छठी शताब्दी और बाद की अवधि) के पुरातत्व में थी।

प्रश्न 7. "सिंधु घाटी सभ्यता के बारे में हमारा ज्ञान अन्य सभ्यताओ की तुलना में कम है"। इसे अपने तर्कों द्वारा स्पष्ट करें?

उत्तर हाँ, सिंधु घाटी सभ्यता के बारे में हमारा ज्ञान दूसरों की तुलना में कम है क्योंकि

1. उस सभ्यता की लिपि अब तक समझी नहीं जा सकी है।

2. मिस्र जैसी अन्य सभ्यताओं के बारे में ज्ञान प्राप्त करने का आसान तरीका,मेसोपोटामिया, चीन आदि उनकी लिपियों का गूढ़ रहस्य था,जो की जान लिया गया है ।

3. लिपियाँ वह एकमात्र आधार है जिसके द्वारा हम किसी भी सभ्यता का कला, साहित्य, रीति-रिवाजों, पहनावे, समारोह और धर्म के बारे में ज्ञान के माध्यम से इकट्ठा कर सकते हैं आदि

प्रश्न 8. हड़प्पावासियों की जल निकासी व्यवस्था पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर इस शहर की एक खास बात एक सुनियोजित जल निकासी व्यवस्था थी।

1.नालियाँ मोर्टार, चूने और जिप्सम से बनाई गई थी

2. नालियाँ बड़ी-बड़ी ईटों और पत्थरों से ढके हुए थे जो कि नालों को साफ करने के लिए आसानी से उठाया जा सकता था |

3.गलियों के दोनों ओर घरों से छोटी नालियां आ गईं,और ईंटो से बने मुख्य चैनल में शामिल हो जाती थी।

4.बारिश के पानी को साफ करने वाले बड़े-बड़े नाले ढाई फीट और परिधि में 5 फीट तक थे।

5.घरों से निकलने वाले सीवेज के लिए सड़क के दोनों ओर गड्ढों की व्यवस्था की गई थी।

यह सब दिखाता है कि सिंधु घाटी के लोगों ने अपने शहरों को साफ रखने के लिए बहुत सावधानी बरती जाती थी

प्रश्न 9 हड़प्पा सभ्यता में जीवन निर्वाह प्रणाली पर प्रकाश डालिए|

उत्तर हड़प्पावासी पौधों और पशु उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला पर निर्भर थे।

ii. हड़प्पा स्थलों पर पाए जाने वाले जानवरों की हड्डियों में मवेशी, भेड़, बकरी, भैंस और सुअर शामिल हैं।

iii. पाई गई जंगली प्रजातियों की हड्डियों से पता चलता है कि हड़प्पा के लोग इन जानवरों का खुद शिकार करते थे या अन्य शिकार समुदायों से मांस प्राप्त करते थे। मछली और मुर्गी की हड्डियाँ भी पाई जाती हैं।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्नोत्तर (8 अंक)

प्रश्न 1. आप कैसे कह सकते हैं कि हड़प्पा संस्कृति नगरीय थी।

उत्तर हम कह सकते हैं कि हड़प्पा संस्कृति शहरी थी, निम्नलिखित कारणों से:

1. शहर सुनियोजित और घनी आबादी वाले थे।
2. सड़कें सीधी और चौड़ी थीं।
3. घर पकी हुई ईंटों के बने होते थे और इनमें एक से अधिक मंजिलें होती थीं।
4. हर घर में एक कुआँ और एक स्नानागार था।
5. घर की नालियों के सड़क की नालियों में खाली होने के साथ जल निकासी व्यवस्था उत्कृष्ट थी।
6. हड़प्पा के दुर्ग में सार्वजनिक भवन थे
7. लोथल एक गोदी और महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था।
8. हड़प्पा संस्कृति के पतन के बाद, नगर नियोजन को भुला दिया गया और वहाँ था
9. लगभग हजारों वर्षों से शहरी जीवन का अस्तित् था।

प्रश्न 2. चर्चा करें कि पुरातत्वविद् अतीत का पुनर्निर्माण कैसे करते हैं।

उत्तर पुरातत्वविदों को भौतिक साक्ष्य मिट्टी के बर्तन, उपकरण, आभूषण, घरेलू सामान आदि की मदद से प्राचीन जीवन को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है

2. पुरातात्विक उद्यम की कलाकृतियों को पुनर्प्राप्त करना अभी शुरुआती दौर में है,उनका वर्गीकरण एवं विश्लेषण करना शेष है|

3. पुरातत्वविदों को यह तय करना ओर अधिक जटिल कार्य हो जाता है, कि कोई कलाकृति एक उपकरण है या एक आभूषण है, या दोनों, या अनुष्ठान के लिए किसी विशेष संदर्भ में है:

4. किसी शिल्पकृति के कार्य की समझ अक्सर उसके द्वारा वर्तमान समय की चीजों से समानता आकार दी जाती है| - मोती, क्वर्न, पत्थर के ब्लेड और बर्तन इसके स्पष्ट उदाहरण हैं।

5. पुरातत्त्वविद उस संदर्भ की जांच करके एक कलाकृति के कार्य की पहचान करने का प्रयास करते हैं जहाँ वह पाई गई है

6. धार्मिक प्रथाओं के पुनर्निर्माण की व्याख्या पुरातत्ववेत्ताओं के लिए सबसे बड़ी समस्या है|

7. मुहरों की जांच कर धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं के पुनर्निर्माण का भी प्रयास किया गया है,

जिनमें से कुछ अनुष्ठान दृश्यों को चित्रित करते प्रतीत होते हैं। इसके आलावा पौधे के रूपांकनों को , प्रकृति

पूजा के साथ जोड़ा जाता है

8. हड़प्पा के धर्म के पुनर्निर्माण को बाद की परंपराओं को पहले वाले के साथ समानता की धारणा पर निर्धारित किया जाता है । ऐसा इसलिए है क्योंकि पुरातत्वविद अक्सर ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ते हैं
अर्थात् वर्तमान से भूतकाल तक।

9. भोजन की पहचान के लिए फसलों के अवशेष, पाए गए बीज या उपलब्ध गड्ढो का अध्ययन किया जाता है।

10. पुरातत्वविद स्थल की विभिन्न परतों का निरीक्षण करते हैं और विभिन्न चीजों का पता लगाने की कोशिश करते हैं |जो पिछले लोगों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों, धर्मों और सांस्कृतिक जीवन की जानकारी उपलब्ध कराती है|

प्रश्न 3. हड़प्पावासियों की कृषि प्रौद्योगिकी पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर अनाज की खोज से संकेत मिलता हैहड़प्पावासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। कृषि की व्यापकता थी । लेकिन वास्तविक कृषि पद्धतियों का पुनर्निर्माण करना अधिक कठिन है।

1. पुरातत्वविदों को कालीबंगा में एक जोते हुए खेत के प्रमाण मिले हैं।
2. मुहरों पर अभ्यावेदन और टेराकोटा की मूर्तिकला से संकेत मिलता है कि बैल को जाना जाता था, और पुरातत्वविद् इस बात का अनुमान लगाते हैं कि बैलों का उपयोग जुताई के लिए किया जाता था।
3. हल के टेराकोटा मॉडल चोलिस्तान और बनावली के स्थलों पर पाए गए हैं।
4. खेत में एक दूसरे से समकोण पर खांचे के दो सेट थे, यह सुझाव देते हुए कि दो विभिन्न फसलें एक साथ उगाई जाती थीं।
5. अधिकांश हड़प्पा स्थल अर्ध-शुष्क भूमि में स्थित हैं, जहां शायद कृषि के लिए सिंचाई की आवश्यकता थी। हड़प्पा सभ्यता में अफगानिस्तान के शॉर्टुघई स्थल से नहरों के निशान मिले हैं।
6. यह भी संभावना है कि कुओं से खींचे गए पानी का उपयोग सिंचाई के लिए किया जाता था।
7. इसके अलावा, धोलावीरा में पाए गए जलाशयों का उपयोग कृषि के लिए पानी के भंडारण के लिए किया जाता होगा ।

प्रश्न 4 मोहनजोदड़ो: एक नियोजित शहर था| समझाइए

उत्तर मोहनजोदड़ो में बस्ती दो भागो में विभाजित थी|

I. दुर्ग क्षेत्र :

1. इसका निर्माण मिट्टी की ईंट के चबूतरे पर किया गया था और इसके चारो ओर दीवार बनाई गई थी, जिसका अर्थ था कि यह निचले शहर से भौतिक रूप से अलग था
2. इनमें गोदाम शामिल हैं - एक विशाल संरचना जिसमें से निचला हिस्सा ईंट से बना हुआ हैं।
3. ऊपरी भाग, शायद लकड़ी का, था
4. महान स्नानागार- यह आंगन में चारों तरफ एक गलियारे से घिरा हुआ एक बड़ा आयताकार जलाशय था। विद्वानों ने यह सुझाव दिया है कि यह किसी विशेष प्रकार के अनुष्ठान या स्नान के लिए था।

द्वितीय. निचला शहर

1. इसने सावधानीपूर्वक जल निकासी व्यवस्था की योजना बनाई थी।
2. सड़कों और सड़कों को एक अनुमानित "ग्रिड" पैटर्न के साथ तैयार किया गया था।
3. आवासीय भवनों के उदाहरण - यह एक आंगन पर केंद्रित थे, जिसके चारों तरफ कमरे थे।
4. प्रत्येक घर का अपना बाथरूम पक्की ईटों से बना हुआ था, जिसमें नालियां दीवार के माध्यम से गली की नालियों से जुड़ी हुई थीं।

प्रश्न 5 हड़प्पा सभ्यता में शिल्प उत्पादन को समझाइए

उत्तर चन्हुदड़ो एक छोटी सी बस्ती थी जो विशेष रूप से शिल्प उत्पादन के लिए समर्पित है, जिसमें बीड-मेकिंग, शेल-कटिंग, मेटल-वर्किंग, सील-मेकिंग और वेट-मेकिंग शामिल हैं।

1. मोतियों को बनाने के लिए प्रयुक्त सामग्री की विविधता उल्लेखनीय है।
2. मोतियों को बनाने की तकनीक सामग्री के अनुसार भिन्न होती थी ।
3. नोड्यूल्स को खुरदुरे आकार में काट जाता था , और फिर अंतिम रूप में बारीक रूप से फ्लेक किया गया।
4. चन्हुदड़ो, लोथल और हाल ही में धोलावीरा में कार्यस्थल के विशेष अवशेष पाए गए हैं।
5. नागेश्वर और बालाकोट शैल वस्तुएं बनाने के लिए विशेष केंद्र थे - जिसमें चूड़ियाँ, करछुल और जड़ना शामिल हैं।
6. उत्पादन केंद्र: पुरातत्वविदों ने कच्चे माल और इस्तेमाल किए गए औजारों की तलाश में उत्पादन केंद्रों की पहचान की।
7. अपशिष्ट शिल्प कार्य के सर्वोत्तम संकेतकों में से एक है। कभी-कभी, छोटी वस्तुओं को बनाने के लिए बड़े कचरे के टुकड़ों का उपयोग किया जाता था।
8. इन निशानों से पता चलता है कि छोटे, विशिष्ट केंद्रों के अलावा, मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे बड़े शहरों में भी शिल्प उत्पादन किया गया था।

प्रश्न 6 हड़प्पा सभ्यता में कच्चा माल प्राप्त करने की रणनीतियों का उल्लेख कीजिए

उत्तर उपमहाद्वीप और उसके बाहर से प्राप्त: हड़प्पावासियों ने विभिन्न तरीकों से शिल्प उत्पादन के लिए सामग्री की खरीद की।

1. बैलगाड़ियों के टेराकोटा खिलौना मॉडल बताते हैं कि यह माल और लोगों को भूमि मार्गों पर ले जाने का एक महत्वपूर्ण साधन था।
2. कच्चे माल की खरीद के लिए एक और रणनीति अभियान भेजने की हो सकती है, जिसने स्थानीय समुदायों के साथ संचार स्थापित किया।
3. दूर देशों से संपर्क: पुरातात्विक खोजों से पता चलता है कि तांबा भी संभवतः अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पूर्वी सिरे पर ओमान से लाया गया था।
4. तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के मेसोपोटामिया के ग्रंथों में मगान नामक क्षेत्र से आने वाले तांबे का उल्लेख है, जो कि शायद ओमान का नाम था ।
5. अन्य पुरातात्विक खोजों में हड़प्पा की मुहरें, बाट, पासा और मोती शामिल हैं जो दिलमुन (शायद बहरीन द्वीप), मगान और मेलुहा, संभवतः हड़प्पा क्षेत्र नामक क्षेत्रों के साथ संपर्क का सुझाव देते हैं।
6. यह संभावना है कि ओमान, बहरीन या मेसोपोटामिया के साथ संपर्क समुद्र के द्वारा किया गया था। मेसोपोटामिया के ग्रंथ मेलुहा को नाविकों की भूमि के रूप में संदर्भित करते हैं।
7. इसके अलावा, हम मुहरों पर जहाजों और नावों के चित्रण पाते हैं।

स्त्रोत आधारित प्रश्न (4 अंक)

निम्नलिखित स्त्रोत को ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिए एवं निचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए|

1. कलाकृतियों की पहचान कैसे की जाती है

भोजन के प्रसंस्करण के लिए आवश्यक पीसने वाले उपकरण के साथ-साथ मिश्रण और खाना पकाने के लिए सामानों की आवश्यकता होती है । ये पत्थर, धातु के बने होते थे,और टेराकोटा। यह प्रारंभिक रिपोर्टों में से एक

का एक अंश है

मोहनजोदड़ो में उत्खनन, सबसे प्रसिद्ध हड़प्पा स्थल: अवतल चक्कियां …काफी संख्या में पाए जाते हैं ... और ऐसा लगता है कि वे केवल एक ही थे अनाज पीसने के लिए उपयोग में आने वाले साधन। एक नियम के रूप में, वे मोटे तौर पर कठोर से बने होते थे,किरकिरा, आग्नेय चट्टान या बलुआ पत्थर और ज्यादातर कठिन उपयोग के लक्षण दिखाते हैं। जैसा उनके आधार आमतौर पर उत्तल होते हैं, वे पृथ्वी में या अंदर स्थापित किए गए होंगे उनके रॉकिंग को रोकने के लिए कीचड़। दो मुख्य प्रकार पाए गए हैं: वे पर जिसे एक और छोटा पत्थर धक्का दिया गया था या इधर-उधर घुमाया गया था, और अन्य के साथ जो एक दूसरे पत्थर को पाउंडर के रूप में इस्तेमाल किया गया था, अंततः एक बड़ा बना रहा था नीचे के पत्थर में गुहा। पूर्व प्रकार के क्वर्न्स शायद इस्तेमाल किए गए थे केवल अनाज के लिए; दूसरा प्रकार संभवतः केवल जड़ी बूटियों और मसालों को तेज़ करने के लिए करी बनाने के लिए। वास्तव में, इस बाद के प्रकार के पत्थरों को "करी" कहा जाता है पत्थर" हमारे कामगारों द्वारा और हमारे रसोइए ने एक से एक का ऋण मांगा रसोई में उपयोग के लिए संग्रहालय। अर्नेस्ट मैके से, आगे की खुदाई मोहनजोदड़ो, 1937।

1.मोहनजोदड़ो में खुदाई से प्राप्त अवतल चक्कियों के क्या उपयोग था? 1

उत्तर : ऐसा लगता है कि अनाज पीसने के लिए वे एकमात्र साधन थी|

2.'फरदर एक्स केवेसन एट मोहेनजोदड़ो 1937' के लेखक कौन थे? 1

उत्तर : अर्नेस्ट मेक्के

3. अवतल चक्कियों का आधार बनाने के लिए किस सामग्री का उपयोग किया गया था? 2

उत्तर : वे मोटे तौर पर कठोर, किरकिरा, आग्नेय चट्टान या बलुआ पत्थर से बने होते थे और ज्यादातर कठोर उपयोग के संकेत दिखाते थे। चूंकि उनके आधार आमतौर पर उत्तल होते हैं, इसलिए उन्हें हिलने से रोकने के लिए उन्हें मिट्टी या कीचड़ में स्थापित किया जाना चाहिए|

निम्नलिखित स्त्रोत को ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिए एवं निचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए|

2. एक आक्रमण के साक्ष्य

जॉन मार्शल, मोहनजो-दारो और सिंधु सभ्यता, 1931 से।

मृत्यु के समय पहने हुए आभूषणों के साथ लोगों के सोलह कंकाल थे1925 में मोहनजोदड़ो के इसी हिस्से से मिला था। बहुत बाद में, 1947 में, R.E.M. एएसआई के तत्कालीन महानिदेशक व्हीलर ने इसे सहसंबंधित करने का प्रयास किया ऋग्वेद के साथ पुरातात्विक साक्ष्य, उपमहाद्वीप में सबसे पुराना ज्ञात पाठ। वह लिखा है: ऋग्वेद में पुर का उल्लेख है, जिसका अर्थ है प्राचीर, किला या गढ़। इन्द्र, आर्यों का वारगोड है पुरम दारा, किला-विनाशक कहा जाता है। कहाँ हैं - या थे - ये गढ़? यह अतीत में रहा है माना जाता है कि वे पौराणिक थे ... हड़प्पा की हालिया खुदाई के बारे में माना जा सकता है तस्वीर बदल दी। यहां हमारे पास अनिवार्य रूप से गैर-आर्य प्रकार की एक अत्यधिक विकसित सभ्यता है, अब बड़े पैमाने पर किलेबंदी करने के लिए जाना जाता है ... इस दृढ़ता से बसे सभ्यता को किसने नष्ट किया? जलवायु, आर्थिक या राजनीतिक गिरावट ने भले ही इसे कमजोर कर दिया हो, लेकिन इसका अंतिम विलुप्त होना है जानबूझकर और बड़े पैमाने पर विनाश से पूरा होने की अधिक संभावना है। यह केवल नहीं हो सकता है संभावना है कि मोहनजोदड़ो के अंतिम काल में पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को ऐसा प्रतीत होता है वहां नरसंहार किया। परिस्थितिजन्य साक्ष्य के आधार पर इंद्र आरोपी हैं।

आर.ई.एम से व्हीलर, "हड़प्पा 1946", प्राचीन भारत, 1947।

1960 के दशक में एक पुरातत्वविद् ने मोहनजोदड़ो में हुए नरसंहार के साक्ष्य पर सवाल उठाया था जॉर्ज डेल्स नाम दिया। उन्होंने प्रदर्शित किया कि स्थल पर पाए गए कंकाल के नहीं थे वही अवधि: जबकि उनमें से कुछ निश्चित रूप से एक वध का संकेत देते हैं,....अधिकांश हड्डियों को उन सन्दर्भों में पाया गया था जो सबसे ढीले और सबसे अपरिवर्तनीय प्रकृति के दफन का सुझाव देते थे। वहां शहर की नवीनतम अवधि को कवर करने वाला कोई विनाश स्तर नहीं है, व्यापक जलने का कोई संकेत नहीं है, कोई शव नहीं है|

योद्धाओं के कवच में लिपटे और युद्ध के हथियारों से घिरे। गढ़, एकमात्र गढ़वाले शहर का हिस्सा, अंतिम बचाव का कोई सबूत नहीं मिला।

जी.एफ से डेल्स, "मोहनजो-दारो में पौराणिक नरसंहार", अभियान, 1964।

प्रश्न 1. यह अंश हड़प्पा सभ्यता के विनाश के किस तर्क की ओर संकेत करता है? 1

उत्तर यह प्रयोग इंगित करता है कि हड़प्पा सभ्यता विदेशी आक्रमण से नष्ट हो गई थी।

प्रश्न 2. इस प्रमाण का ऋग्वेद के साथ सह-सम्बन्ध कौन करता है? क्यों ? 1

उत्तर आर.ई.एम. व्हीलर। क्योंकि, ऋग्वेद में पुर का उल्लेख है, जिसका अर्थ है प्राचीर, किला या गढ़। इंद्र, आर्य युद्ध-देवता को पुरम दारा, किला-विनाशक कहा जाता है।

प्रश्न 3. इसके विपरीत सिद्धांत किसने और कैसे प्रतिपादित किया? 2

उत्तर जॉर्ज डेल्स,वह यह मानने से हिचकिचाता है कि यह आक्रमण आर्यों द्वारा किया गया था। . उन्होंने प्रदर्शित किया कि साइट पर पाए गए कंकाल एक ही अवधि के नहीं थे: जबकि उनमें से कुछ निश्चित रूप से एक वध का संकेत देते प्रतीत होते हैं, हड्डियों का बड़ा हिस्सा उन संदर्भों में पाया गया था जो सबसे ढीले और सबसे अपमानजनक प्रकृति के दफन का सुझाव देते थे। व्यापक रूप से जलने का कोई संकेत नहीं है, योद्धाओं का कोई शव नहीं है जो कवच में लिपटे हुए हैं और युद्ध के हथियारों से घिरे हुए हैं|

मानचित्र आधारित प्रश्न

एन.सी.ई.आर.टी. इतिहास की पुस्तक के पृष्ठ 2, अध्याय 1 पर दिए गए मानचित्र में निम्नलिखित मदों में से निम्नलिखित स्थल पूछे जाएंगे।

परिपक्व हड़प्पा स्थल:

1. हड़प्पा, 2. बनवाली, 3. कालीबंगा, 4. बालाकोट, 5. राखीगढ़ी, 6. धोलावीरा, 7. नागेश्वर, 8. लोथल, 9. मोहनजोदड़ो, 10. चन्हुदड़ो, 11. कोटदीजी

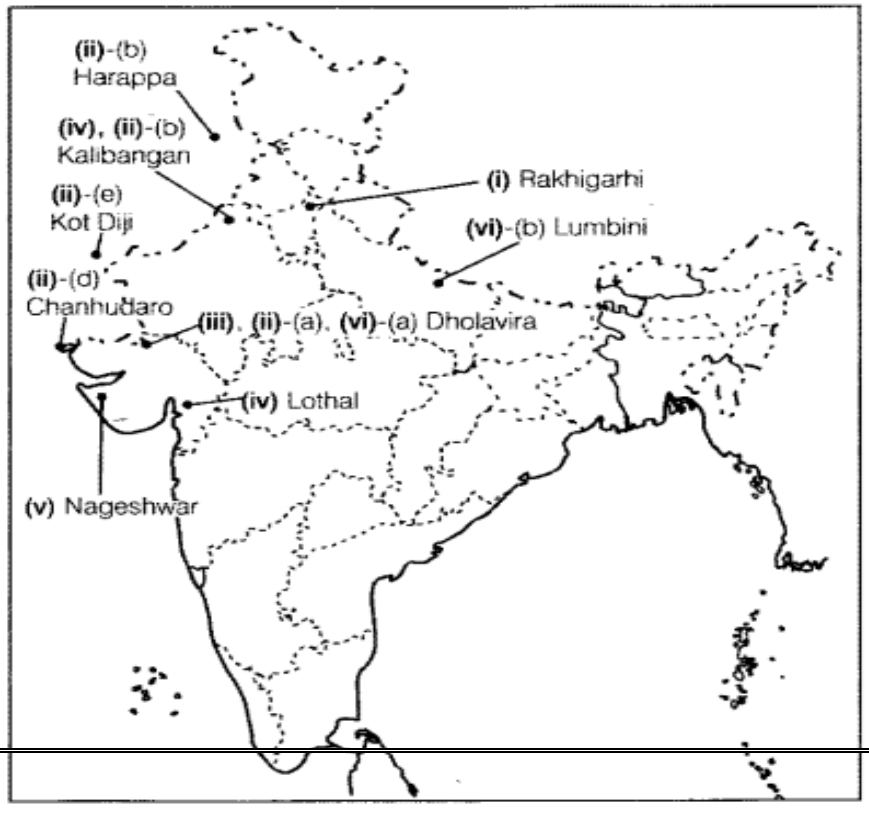

==========xxxxxxx=========

2.राजा किसान और शहर

मुख्य अवधारणाएँ: प्रिंसेप और पियदस्सी

➢वह ईस्ट इंडिया कंपनी में एक अधिकारी थे।

➢उन्होंने अशोक के शिलालेख में प्रयुक्त ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि का अर्थ निकाला।

➢प्रिन्सेप को पता चला की अधिकांश अभिलेखों और सिक्कों पर पियदस्सी यानि मनोहर मुखाकृति वाले रजा का नाम लिखा है |

प्रारंभिक राज्य:

❖ 600 ईसा पूर्व एक महत्वपूर्ण मोड़

➢आरंभिक राज्यों की स्थापना हुई।

➢नए नगरों का विकास |

➢लोहे का उपयोग बढ़ा।

➢सिक्कों का विकास हुआ।

➢विचारों की विविध प्रणाली विकसित हुई।

➢बौद्ध धर्म और जैन धर्म का विकास हुआ।

➢महाजनपद के रूप में जाने जाने वाले सोलह राज्य विकसित हुए।

❖सोलह महाजनपद

➢राजाओं द्वारा शासित थे

➢कुछ कुलीनतंत्र थे।

➢राजधानी नगर की किलेबंदी की गई।

➢उनके पास एक प्रारंभिक सेना और नौकरशाही थी।

➢शासक आमतौर पर क्षत्रिय थे।

❖सोलह महाजनपदों में प्रथम : मगध

मगध के सबसे शक्तिशाली महाजनपद होने के कारक:

➢अधिशेष कृषि उत्पादन।

➢सुलभ लोहे की खदानें ।

➢गंगा और उसकी सहायक नदियों द्वारा सस्तासंचार प्रदान करना ।

➢महत्वाकांक्षी राजा और उनके सहायक मंत्री।

➢हाथियों की उपलब्धता |

❖मौर्यवंश के बारे में जानकारी -

➢मेगस्थनीज की इंडिका द्वारा

➢कौटिल्य के अर्थशास्त्र द्वारा ।

➢संस्कृत साहित्यिक पुस्तकों द्वारा ।

➢बौद्ध,जैन और पौराणिक साहित्य द्वारा।

➢अभिलेखों द्वारा ।

➢मूर्तिकलाओं द्वारा।

❖साम्राज्य का प्रशासन-

➢पाँच प्रमुख राजनीतिक केंद्र- तक्षशिला,उज्जैन, पाटलिपुत्र, तोसली और सुवर्णगिरि

➢राजा एकमात्र अधिकारी था जिसे मंत्री-समूह परामर्श देता था था। मंत्रियों को अध्यक्षों द्वारा पुर्णतः सहयोग दिया जाता था ।

➢प्रांतीय सरकार के प्रमुख राज्यपाल होते थे जो सामान्यतः राजपरिवार के पुत्र होते थे।

➢मेगस्थनीज ने सैन्य गतिविधि के समन्वय के लिए एक समिति का उल्लेख किया है जिसमें छह उपसमितियां होती थीं |

➢गंगा और सोन नदियों द्वारा परिवहन की सुलभता ।

➢धम्म महामात्तों की नियुक्ति।

राजधर्म के नवीन सिद्धांत (दक्षिण के राजा और सरदार)

➢ दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक, नए प्रमुख और राज्यों का उदय हुआ ।

➢ सबसे महत्वपूर्ण रूप से तमिलकम में चोल, चेर और पांड्य की सरदारियाँ थीं ।

➢ उपमहाद्वीप के दक्कन में सातवाहन और उत्तर-पश्चिमी भाग में शक।

दैविक राजा:

➢ कुषाणों ने उच्च स्थिति प्राप्त करने के लिए विभिन्न देवताओं के साथ पहचान बनाना चाहा|

➢ उन्होंने देवपुत्र या "भगवान का पुत्र" की उपाधि अपनाई।

➢ समुद्रगुप्त के दरबारी कवि हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति।

बदलता हुआ देहात

- जातक और पंचतंत्र ने प्रजा-राजा संबंधों की झलक दी।
- राजा उच्च करों की मांग करके अपने खजाने भरते थे, और किसानों को विशेष रूप से ऐसी मांगें दमनकारी लगती थीं।

उपज बढ़ाने के तरीके

- अधिक कर प्राप्त करने के लिए उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से कुछ तरीके जैसे लोहे के फाल वाले हल, चावल की रोपाई आदि|
- कृषि उत्पादन बढ़ाने के एक और रणनीति कुओं, तालाबों और नहरों के माध्यम से सिंचाई थी।

'गहपति' घर का मालिक, स्वामी या मुखिया, वेल्लालर अर्थात बड़े जमींदार, हलवाहा या उझावर और दास या अड़ीमई थे।

भूमिदान और नए संभ्रांत ग्रामीण :

ईसवी की आरंभिक शताब्दियों से ही भूमिदान के प्रमाण मिलते हैं |
भूमिदान साधारण तौर पर संस्थाओं या ब्राह्मणों को दिया गया।
चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त ने कुछ भूमि दान की।
कारण :कृषि क्षेत्रों को बढ़ाने, सामंतों पर नियंत्रण करने और प्रजा की दृष्टि में स्वयं को उत्कृष्ट मानव दिखाने के लिए राजा द्वारा भूमि अनुदान दिया जाता था ।

नगर एवं व्यापार

- सभी प्रमुख नगर संचार के मार्गों पर स्थित थे-
- पाटलिपुत्र- नदी मार्ग।
- उज्जयनी- भूमि मार्ग
- पुहार- समुद्र तटीय मार्ग।
- गिल्ड की श्रेणियाँ- यह शिल्प उत्पादकों और व्यापारियों का संगठन था|
- इनका कार्य कच्चे माल की खरीद, उत्पादन को विनियमित करना और तैयार उत्पाद का विपणन करना था ।
- व्यापार का क्षेत्र - उपमहाद्वीप और उससे आगे- मध्य एशिया, पश्चिम एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया, चीन और उत्तरी अफ्रीका में व्यापार।
- कई तरह के सामान एक जगह से दूसरी जगह ले जाए जाते थे- मसाले, नमक, अनाज, कपड़ा, धातु अयस्क और तैयार उत्पाद, पत्थर, लकड़ी, औषधीय पौधे, आदि।

सिक्के और राजा

मुद्राशास्त्र: सिक्कों का अध्ययन।

- सिक्कों की शुरूआत से विनिमय सुगम हुआ। चांदी और तांबे से बने आहत सिक्के।
- आहत सिक्कों पर प्रतीकों को विशिष्ट शासक राजवंशों के साथ पहचानने का प्रयास किया गया।
- शासकों के नाम और चित्र वाले पहले सिक्के इंडो-यूनानियों द्वारा जारी किए गए थे।
- पहला सोने का सिक्का कुषाणों द्वारा पहली शताब्दी ई.पू. में जारी किया गया था।
- पंजाब और हरियाणा के यौधेय जैसे आदिवासी गणराज्यों द्वारा भी ताम्बे के सिक्के जारी किए गए थे।

ब्राह्मी लिपि का अध्ययन -

➢भारतीय विद्वानों ने यूरोपीय विद्वानों की मदद की।
➢अंग्रेजों ने पांडुलिपियों के अक्षरों की प्राचीन अक्षरों के नमूनों से तुलना शुरू की ।
➢अथक परिश्रम के बाद जेम्स प्रिन्सेप ने अशोक कालीन ब्राह्मी लिपि का 1838 ई. में अर्थ निकाल लिया |

खरोष्ठी लिपि को कैसे पढ़ा गया?

➢यह इंडो-यूनानी राजाओं के सिक्कों पर लिखा है।
➢यूरोपीय विद्वानों ने उनके अक्षरों के प्रतीकों की तुलना की।
➢प्रिंसेप ने खरोष्ठी शिलालेखों की भाषा को प्राकृत के रूप में पहचाना।

शिलालेख साक्ष्य की सीमाएँ---

➢तकनीकी सीमाएँ-अक्षर बहुत फीके ढंग से उकेरे गए हैं।
➢शिलालेख क्षतिग्रस्त हो सकते हैं और अक्षर लुप्त हो सकते हैं।

➢शिलालेखों में कई महत्वपूर्ण बातें दर्ज नहीं होती थीं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

Q.1 निम्नलिखित में से कौन अशोक के धम्म की मुख्य विशेषताओं में से एक नहीं है?

(ए) बड़ों का सम्मान करें और ब्राह्मणों के प्रति उदार रहें।

(बी) अपने धर्म को अन्य धर्मों से श्रेष्ठ मानें।

(सी) गहपति को परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों, नौकरों, गरीबों और दासों का सम्मान करना चाहिए।

(डी) अहिंसा का पालन करें।

उत्तर- (b) अपने धर्म को अन्य धर्मों से श्रेष्ठ समझें।

Q.2 व्यापारियों और शिल्पकारों के संघों को क्या कहा जाता था?

(ए) श्रेणी (बी) उर (सी) आदिमई (डी) उझावरी

उत्तर- (ए) श्रेणी

Q.3 भारतीय पुरालेख के विकास में जेम्स प्रिंसेप का क्या योगदान है?

(ए) उन्होंने अशोक के अधिकांश शिलालेखों में प्रयुक्त ब्राह्मी लिपि को समझ लिया।

(बी) उन्होंने अशोक के अधिकांश शिलालेखों में प्रयुक्त खरोष्ठी लिपि को समझ लिया।

(सी) दोनों 'ए' और 'बी' (डी) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (सी) दोनों 'ए' और 'बी'

Q.4 शासकों के नाम वाले सिक्के सबसे पहले किसने जारी किए?

(ए) मौर्य (बी) गुप्त (सी) हिन्द-यूनानी (डी) सातवाहन

उत्तर- (c) हिन्द-यूनानी

Q.5 अशोक का उल्लेख उसके अभिलेखों में किन उपाधियों से मिलता है?

(ए) अशोक, पियदस्सी (बी) मसत्तुवन, अशोक

(सी) देवानामपिय, पियदस्सी (डी) देवपुत्र, पियदस्सी

उत्तर- (c) देवानामपिय, पियदस्सी

Q.6 उन भाषाओं के नाम बताइए जिनमें अशोक के शिलालेख लिखे गए थे।

(ए) पाली, प्राकृत, और ग्रीक (बी) पाली, संस्कृत, और अरामाइक

(सी) प्राकृत, अरामाइक, और ग्रीक (डी) पाली, संस्कृत, और ग्रीक

उत्तर- (c) प्राकृत, अरामाइक और ग्रीक

Q.7 धम्म महामात्त कौन थे?

(ए) अशोक द्वारा कर संग्रह के लिए नियुक्त विशेष राजस्व अधिकारी

(बी) राज्य में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए अशोक द्वारा नियुक्त विशेष अधिकारी

(c) अशोक द्वारा धम्म का संदेश फैलाने के लिए नियुक्त विशेष अधिकारी

(d) धम्म के प्रसार को रोकने के लिए अशोक द्वारा नियुक्त विशेष अधिकारी

उत्तर- (c) अशोक द्वारा धम्म का संदेश फैलाने के लिए नियुक्त विशेष अधिकारी

Q.8 छठी शताब्दी ईसा पूर्व को अक्सर भारतीय इतिहास में एक प्रमुख मोड़ क्यों माना जाता है?

(ए) राज्यों, शहरों और कस्बों का उदय : लोहे का प्रयोग

(बी) राज्यों, शहरों और कस्बों का उदय : हिंदू धर्म का प्रभुत्व

(सी) हिंदू धर्म का प्रभुत्व : लोहे का प्रयोग

(डी) बौद्ध धर्म और जैन धर्म का उदय : तांबे का व्यापक उपयोग

उत्तर- (ए) राज्यों, शहरों और कस्बों का उदय : लोहे का प्रयोग

Q.9 समुद्रगुप्त की प्रशंसा में प्रयाग प्रशस्ति की रचना किसने की?

(ए) प्रभावती गुप्ता (बी) हरिषेण (सी) कौटिल्य (डी) बाणभट्ट

उत्तर- (बी) हरिषेण

प्रश्न 10 संस्कृत में एक शिलालेख के अनुसार, दूसरी शताब्दी ईस्वी सन् के आसपास रचित, सुदर्शन झील की मरम्मत किस राजा द्वारा की गई थी

(ए) इंडो-ग्रीक (बी) कुषाण (सी) सातवाहन (डी) रुद्रदामन I

उत्तर-(डी) रुद्रदामन

Q. 11 मगध के विकास की परिणति 321 ईसा पूर्व में एक साम्राज्य के उदय के रूप में हुई, जिसने उत्तर-पश्चिम अफगानिस्तान और बलूचिस्तान तक नियंत्रण बढ़ाया। इस साम्राज्य के उदय के पीछे निम्नलिखित में से किस शासक का हाथ था?

(ए) अशोक (बी) बिंबिसार (सी) अजातशत्रु (डी) चंद्रगुप्त

उत्तर- (डी) चंद्रगुप्त

Q.12 निम्नलिखित में से कौन सा राज्य तमिलकम क्षेत्र का हिस्सा नहीं था?

(ए) चोल (बी) चेर (सी) चालुक्य (डी) पांडेय

उत्तर-(c) चालुक्य

Q.13 मौर्य साम्राज्य के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. साम्राज्य में 5 प्रमुख राजनीतिक केंद्र थे।
2. मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक इंडिका में मौर्य साम्राज्य के बारे में लिखा।
3. अशोक ने 321 ई.पू. में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।
4. अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने संसाधनों का इस्तेमाल किया।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(ए) 1, 2 और 3 (बी) 1, 2 और 4

(सी) 2, 3 और 4 (डी) 1, 3 और 4

उत्तर- (बी) 1, 2 और 4

प्रश्न 14 निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

ए) प्रभावती गुप्त दक्कन के शक्तिशाली वाकाटक राजा की पुत्री थी।

बी) उनका विवाह शक्तिशाली गुप्त वंश में, चंद्रगुप्त द्वितीय और ध्रुवदेवी के पुत्र से हुआ था।

सी) चक्रदास द्वारा उत्कीर्ण एक ताम्रपत्र शिलालेख इंगित करता है कि उसके पास उस भूमि तक पहुंच थी जो प्रभावती ने दान दी थी।

(ए) केवल ए (बी) केवल बी

(सी) केवल सी (डी) उपरोक्त सभी

उत्तर- (सी) केवल सी

Q. 15 इनमें से कौन मौर्य साम्राज्य के प्रांतीय केंद्र हैं?

(ए) तक्षशिला और उज्जैनी (बी) लुंबिनी और गया

(सी) तोसली और स्वर्णगिरी (डी) सोपारा और सन्नाति

(i) ए और सी (ii) ए और सी (iii) बी और डी (iv) सी और डी

उत्तर- (II) ए और सी

Q.16 सही मिलान की पहचान करें-

ए) मनुस्मृति i- दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व और दूसरी शताब्दी सीई तक

बी) धर्मसूत्र ii- छठी शताब्दी ई.पू

सी) पंच मार्क सिक्का iii- छठी शताब्दी ईसा पूर्व के बाद

डी) पहला सोने का सिक्का iv- पहली शताब्दी सीई

(i) ए और बी (ii) ए, बी और सी (iii) ए, बी, सी और डी (iv) सभी गलत हैं

उत्तर- (iii) ए,बी,सी और डी

Q.17 बलुआ पत्थर की मूर्ति किस राजवंश के शासक से संबंधित है-

(ए) गुप्त (बी) कुषाण (सी) मौर्य (डी) सुंग

उत्तर-(बी) कुषाण

Q.18 यह **छवि** कहाँ से पाई गई है**?**

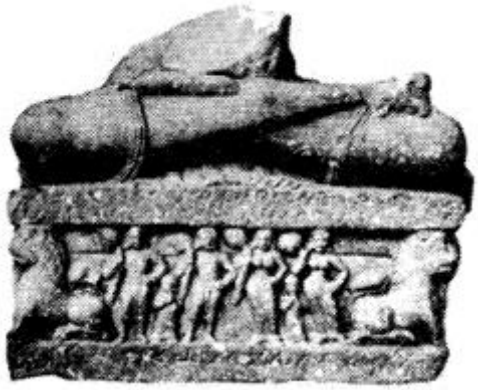

(ए) मथुरा (बी) मगध (सी) भरतपुर (डी) दिल्ली

उत्तर- (ए) मथुरा

Q.19 संगम ------- -- भाषा का साहित्य है !

(ए) तमिल (बी) मलयालम (सी) संस्कृत (डी) मराठी

उत्तर- (ए) तमिल

Q. 20 मगध की प्रथम राजधानी कौनसी थी?

(ए) पाटलिपुत्र (बी) कलिंग

(सी) राजगृह (डी) उपरोक्त में से कोई नहीँ

उत्तर- (सी) राजगृह

लघु उत्तरीय प्रश्न

Q.1 मगध के उदय के लिए उत्तरदायी कारकों की चर्चा कीजिए |

उत्तर: • शक्तिशाली शासक- बिंबिसार और अजातशत्रु |

• लोहे की उपलब्धता।

• उपजाऊ मिट्टी

• जंगल में हाथियों की उपलब्धता।

• मजबूत और सुरक्षित राजधानी - राजगृह और पाटलिपुत्र

Q.2 महाजनपदों की पांच विशेषताओं का वर्णन करें?

उत्तर: • अधिकतर महाजनपद राजाओं द्वारा शासित होते हैं लेकिन कुछ गणों या संघों द्वारा शासित होते हैं।

• प्रत्येक महाजनपद की अपनी सुद्रढ़ राजधानी होती थी।

• किसानों से स्थायी सेना की भर्ती और नियमित नौकरशाही ।

• धर्मसूत्रों ने राजाओं और अन्य लोगों के लिए मानदंड निर्धारित किए।राजा का कार्य लोगों से कर वसूलना और भेट लेना ।

Q.3: अशोक के धम्म की मुख्य विशेषताएं बताएं?

उत्तर: • बड़ों का सम्मान, सेवको और दासों के साथ उदार व्यवहार।

• अन्य धर्मों के प्रति धार्मिक सहिष्णुता।

• ब्राह्मणों, श्रमणों के प्रति उदार नीतियां।

• धम्म महामत्तों की नियुक्ति।

Q.4: 600 ईसा पूर्व से 600 सीई के बीच की अवधि के दौरान कृषि में महत्वपूर्ण परिवर्तनों का वर्णन करें

उत्तर: • कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए लोहे की नोक वाले हल का उपयोग।

• फसल (धान) की रोपाई की वजह से उत्पादन में वृद्धि।

• कुओं, तालाबों और नहरों से सिंचाई।

• पंजाब, राजस्थान के अर्ध-शुष्क भागों और उत्तर-पूर्वी और मध्य भागों में पहाड़ी इलाकों में कुदाल की खेती।

• जमींदार और गाँव के मुखिया अधिक शक्तिशाली थे और किसानों पर उनका नियंत्रण था।

• नए क्षेत्रों में कृषि का विस्तार करने के लिए राजाओं द्वारा भूमि अनुदान।

Q.5: अभिलेख इतिहास के पुनर्निर्माण में किस प्रकार सहायता करते हैं?

उत्तर: • शासकों और उनकी उपलब्धियों के बारे में ज्ञान।

• उस समय की लिपियाँ और भाषा।

• भूमि अनुदान और आर्थिक स्थिति

• साम्राज्य का विस्तार।

• राज्य की सामाजिक और धार्मिक स्थिति

Q.6: मौर्यों के बारे में जानने के लिए स्रोत क्या हैं?

उत्तर: मौर्य साम्राज्य के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए इतिहासकारों ने विभिन्न स्रोतों का उपयोग किया है।

1. साहित्य स्रोत: -कौटिल्य का अर्थशास्त्र, मेगस्थनीज की 'इंडिका, बौद्ध, जैन, पुराण और संस्कृत साहित्य।

2. पुरातात्विक खोज:- चट्टानों और स्तंभों पर अशोक के शिलालेख।

निबंधात्मक प्रश्न

Q.1 छठी शताब्दी ईसा पूर्व को प्रारंभिक भारतीय इतिहास में एक प्रमुख मोड़ क्यों माना जाता है?

उत्तर: • यह प्रारंभिक अवस्थाओं, शहरों, लोहे के बढ़ते उपयोग, सिक्कों के विकास आदि से जुड़ा एक युग है।

• इसने बौद्ध धर्म और जैन धर्म सहित विचार की विविध प्रणालियों के विकास को भी देखा।

प्रारंभिक बौद्ध और जैन ग्रंथों (अध्याय 4 भी देखें) में सोलह राज्यो का उल्लेख है जिन्हें महाजनपद के रूप में जाना जाता है। राज्यों के कुछ नाम जैसे वज्जी, मगध, कौशल, कुरु, पांचाल, गांधार और अवंती अक्सर आते हैं।

• स्पष्ट रूप से, ये सबसे महत्वपूर्ण महाजन पद थे।

जबकि अधिकांश महाजनपद राजाओं द्वारा शासित थे, कुछ, जिन्हें गण या संघ के रूप में जाना जाता था, कुलीन वर्ग थे, जहां कई पुरुषों द्वारा शक्ति साझा की जाती थी, जिन्हें अक्सर सामूहिक रूप से राजा कहा जाता था। महावीर और बुद्ध दोनों (अध्याय 4) ऐसे समूहों के थे।

• कुछ मामलों में, जैसा कि वज्जि संघ के मामले में, राजाओं ने शायद सामूहिक रूप से भूमि जैसे संसाधनों को नियंत्रित किया। प्रत्येक महाजनपद की एक राजधानी होती थी, जिसे अक्सर किलेबंद किया जाता था

• इन दुर्ग वाले शहरों को बनाए रखने के साथ-साथ किले, सेना और नौकरशाही को आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराना।

• छठी शताब्दी ईसा पूर्व से, ब्राह्मणों ने धर्मसूत्रों की रचना करना शुरू कर दिया।

ये शासकों (साथ ही अन्य सामाजिक श्रेणियों के लिए) के लिए निर्धारित मानदंड थे, जिनसे आदर्श रूप से क्षत्रिय होने की उम्मीद की जाती थी।

• कुछ राज्यों ने स्थायी सेनाओं का अधिग्रहण किया और नियमित नौकरशाही बनाए रखी। अन्य राज्य नागरिक सेना पर निर्भर रहे।

Q.2 मुद्राशास्त्र से आप क्या समझते हैं? सिक्कों के अध्ययन ने मुद्राशास्त्रियों को संभावित वाणिज्यिक नेटवर्क के पुनर्निर्माण में कैसे मदद की है?

उत्तर: * मुद्राशास्त्र सिक्कों का अध्ययन है, जिसमें दृश्य तत्वों जैसे कि लिपियों और छवियों, धातुकर्म विश्लेषण और वे संदर्भ जिनमें वे पाए गए हैं, शामिल हैं। सिक्कों के अध्ययन ने मुद्राशास्त्रियों को निम्नलिखित तरीकों से संभावित वाणिज्यिक नेटवर्क के पुनर्निर्माण में मदद की है:

*व्यापार सुविधा के लिए सिक्कों की शुरूआत: कुछ हद तक, सिक्कों की शुरूआत से आदान-प्रदान को सुगम बनाया गया था। नमक, अनाज, कपड़ा, धातु अयस्क और तैयार उत्पाद, पत्थर, लकड़ी, औषधीय पौधे आदि जैसे सामानों की एक विस्तृत श्रृंखला को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता था। इन्हें निश्चित रूप से विनिमय के लिए किसी प्रकार की मुद्रा की आवश्यकता होती है। इसलिए, इनसे व्यापारिक संस्कृतियों में सिक्कों का विकास हुआ।

* उपमहाद्वीप में आहत सिक्कों की खुदाई: चांदी और तांबे (16 वीं शताब्दी ईसा पूर्व के बाद) से बने आहत सिक्के सबसे पहले ढाले और इस्तेमाल किए जाने वाले थे। ये पूरे उपमहाद्वीप में कई स्थलों पर खुदाई से प्राप्त हुए हैं। मुद्राशास्त्र ने संभावित वाणिज्यिक नेटवर्क के पुनर्निर्माण के लिए इन और अन्य सिक्कों का अध्ययन किया है।

* जारीकर्ता प्राधिकरण के रूप में राजा, व्यापारी और बैंकर: मौर्य सहित विशिष्ट शासक राजवंशों के साथ आहत सिक्कों पर प्रतीकों की पहचान करने के प्रयास से पता चलता है कि ये राजाओं द्वारा जारी किए गए थे। यह भी संभावना है कि व्यापारियों, बैंकरों और कस्बों के लोगों ने इनमें से कुछ सिक्के जारी किए हों। * यूनानियों और पार्थियनों के साथ कुषाण सिक्कों की समानता: पहले सोने के सिक्के कुषाणों द्वारा पहली शताब्दी ईस्वी में जारी किए गए थे। ये समकालीन रोमन सम्राटों द्वारा जारी किए गए वजन के समान थे और ईरान के पार्थियन शासक उत्तर भारत और मध्य एशिया के कई स्थलों से पाए गए हैं।रोमन साम्राज्य के साथ घनिष्ठ संबंध: सोने के सिक्कों का व्यापक उपयोग होने वाले लेनदेन के भारी मूल्य को इंगित करता है। इसके अलावा, दक्षिण भारत में पुरातात्विक स्थलों से रोमन सिक्कों के ढेर मिले हैं। यह स्पष्ट है कि व्यापार के नेटवर्क राजनीतिक सीमाओं के भीतर सीमित नहीं थे। दक्षिण भारत रोमन साम्राज्य का हिस्सा नहीं था, लेकिन व्यापार के माध्यम से संबंध थे।

Q. 3 मौर्य प्रशासन की मुख्य विशेषताएं क्या थी ?

उत्तर: • केंद्रीय प्रशासन- राजा का विधायी, कार्यपालिका, न्यायपालिका, सेना और वित्त पर नियंत्रण होता था।

• प्रांतीय प्रशासन- साम्राज्य कई प्रांतों में विभाजित था।

• स्थानीय सरकार- पाटलिपुत्र में नियम-कायदों को बनाए रखने के लिए 30 सदस्यों की एक समिति थी।

• राजा उच्च अधिकारियों की सहायता से प्रशासन चलाते थे। साम्राज्य में पांच प्रमुख राजनीतिक केंद्र।

• कानून और व्यवस्था प्रणाली की स्थापना।

• संगठित सेना- सैन्य गतिविधियों के समन्वय के लिए छह उपसमितियों वाली एक समिति।

• धम्म का प्रसार करने के लिए, धम्म महामात्र की नियुक्ति।

• अधिकारियों को भू-राजस्व, सिंचाई और सड़कों के प्रबंधन के लिए नियुक्त किया गया था

• जासूसों की संस्था बहुत मजबूत थी और प्रभावी ढंग से काम कर रही थी।

Q.4 दैवीय राजाओं की स्थिति पर चर्चा करें

उत्तर: • 1. उच्च पद का दावा करने का एक साधन विभिन्न देवताओं के साथ पहचान करना था।

• 2. राजत्व की जो धारणाएँ वे पेश करना चाहते थे, वे शायद उनके सिक्कों और मूर्तियों में सबसे अच्छी तरह से प्रमाणित हैं।

• 3. कुषाण शासकों की मूर्तियाँ मथुरा के पास एक मंदिर में स्थापित पाई गई हैं

• 4.इसी तरह की मूर्तियाँ अफगानिस्तान के एक धर्मस्थल में भी मिली हैं। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि यह इंगित करता है कि कुषाण स्वयं को ईश्वर के समान मानते थे।

• 5.शासकों ने देवपुत्र, या "ईश्वर के पुत्र" की उपाधि धारण की, संभवतः चीनी शासकों से प्रेरित थी जो स्वंय को स्वर्ग के पुत्र कहते थे।

• 6.कई राज्य सामंतों पर निर्भर थे, जो लोग भूमि पर नियंत्रण सहित स्थानीय संसाधनों के माध्यम से खुद को बनाए रखते थे।

• 7. उन्होंने श्रद्धांजलि अर्पित की और शासकों को सैन्य सहायता प्रदान की। शक्तिशाली सामंत राजा बन सकते थे: इसके विपरीत, कमजोर शासक खुद अधीनस्थ शासक बन जातें थे !

स्रोत- आधारित प्रश्न

सम्राट के अधिकारी क्या-क्या कार्य करते थे?

मेगस्थनीज़ के विवरण का एक अंश दिया गया है:

साम्राज्य के महान अधिकारियों में से कुछ नदियों की देख-रेख और भूमि मापन का काम करते हैं जैसा कि मिस्त्र में होता था। कुछ प्रमुख नहरों से उपनहरों के लिए छोड़े जाने वाले पानी के मुखद्वार का निरीक्षण करते हैं

ताकि हर स्थान पर पानी की समान पूर्ति हो सके। यही अधिकारी शिकारियों का संचालन करते हैं और शिकारियों के कृत्यों के आधार पर उन्हें इनाम या दंण्ड देते हैं। वे कर वसूली करते हैं और भूमि से जुड़े सभी व्यवसायों का निरीक्षण करते हैं। साथ ही लकड़हारों, बढ़ई, लोहारों, और खननकर्ताओं का भी निरीक्षण करते हैं।

Q.1- राज्य के अधिकारियों के कर्तव्यों की व्याख्या करें।

उत्तर- 1. कुछ नदियों का निरीक्षण, भूमि की माप की और उन नालों का निरीक्षण किया करते थे जिनके द्वारा मुख्य नहरों से अपनी शाखाओं में पानी छोड़ा जाता था, ताकि सभी को इसकी समान आपूर्ति हो सके।

2. उनके पास शिकारियों का भी प्रभार था, जिन्हें उनके कृत्यों के अनुसार उन्हें पुरस्कृत करने या दंडित करने की शक्ति सौंपी गई थी।

3. वे कर वसूल करते थे, और भूमि से जुड़े व्यवसायों का पर्यवेक्षण करते थे; जैसे लकड़हारे, बढ़ई, लोहार और खनिक।

Q.2 सैन्य गतिविधियों के संचालन के लिए उप-समितियों की भूमिका की व्याख्या करें।

उत्तर) 1. मेगस्थनीज ने सैन्य गतिविधियों के संचालन के लिए छह उपसमितियों वाली एक समिति का उल्लेख किया।

2. वे नौसेना, यातयात और खान-पान, पैदल सैनिकों, अश्वरोहियों, रथों और हाथियों का संचालन करते थे।

3. दूसरी समिति को उपकरण ले जाने के लिए बैलगाड़ियों की व्यवस्था करनी थी, सैनिकों के लिए भोजन और जानवरों के लिए चारा खरीदना और सैनिकों की देखभाल के लिए सेवको और शिल्पकारो की भर्ती करना था।

Q.3 अशोक ने अपने साम्राज्य की एकता बनाये रखने के लिए क्या किया?

उत्तर) 1. अशोक ने धम्म का प्रचार करके अपने साम्राज्य को एक साथ रखने की कोशिश की।

2. धम्म के संदेश को फैलाने के लिए धम्म महामात्त नामक विशेष अधिकारीयो की नियुक्ति की गईं।

मानचित्र आधारित प्रश्न

1.1 भारत के दिए गए राजनीतिक मानचित्र पर, निम्नलिखित को उपयुक्त चिह्नों के साथ खोजें और लेबल करें:

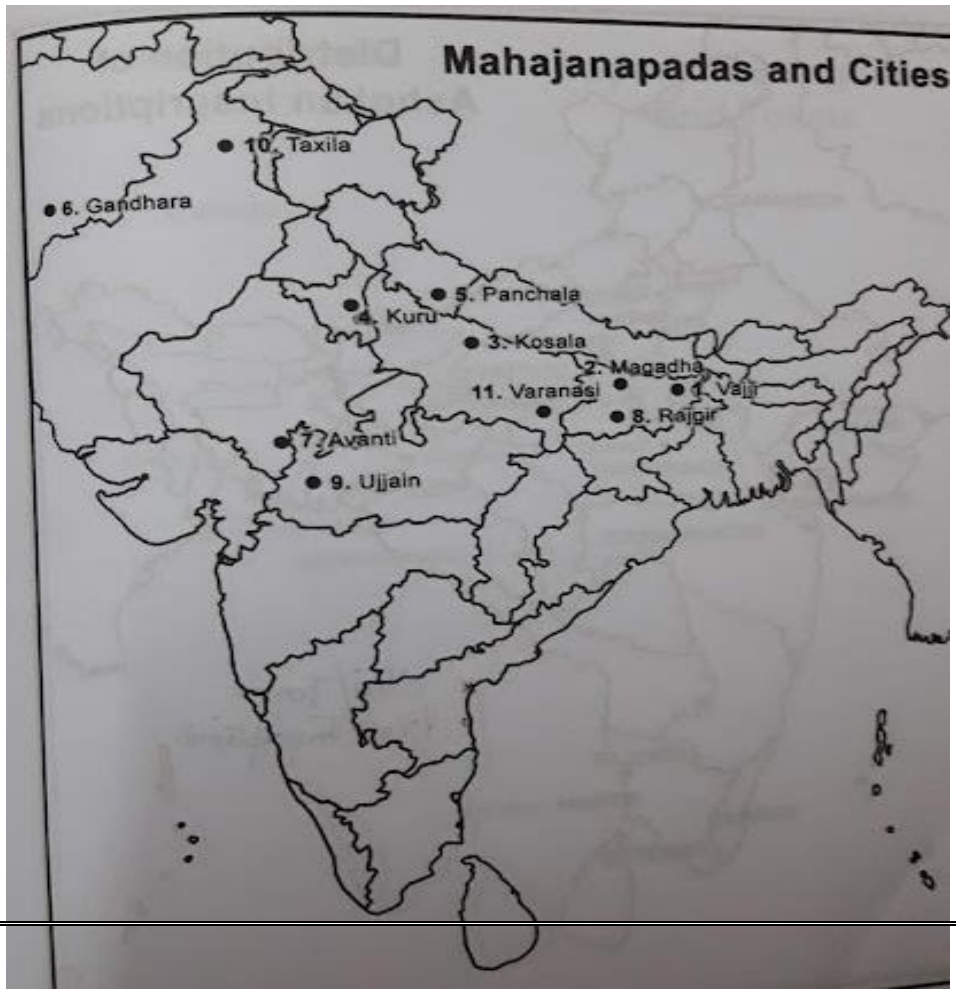

I. महाजनपद और नगर: वज्जी, मगध, कोसल, कुरु, पांचाल, गांधार, अवंती, राजगीर, उज्जैन, तक्षशिला, वाराणसी।

II. अशोक के शिलालेख: स्तंभ शिलालेख - सांची, टोपरा, मेरठ स्तंभ और कौशांबी।

=========xxxxxx=========

3. बंधुत्व, जाति तथा वर्ग

मुख्य अवधारणाएँ: -

➢सामाजिक इतिहास को जमीनी इतिहास के रूप में संदर्भित किया जाता है क्योंकि यह नेतृत्वकर्ता के बजाय,रोजमर्रा के लोगों, जनता और उनके इतिहास को कैसे आकार देते हैं, से संबंधित है।

➢इस पाठ में हम जाति, वर्ग, सामाजिक समूह, नातेदारी, परिवार और लिंग जैसे सामाजिक इतिहास के मुद्दे का अध्ययन करेंगे।

❖महाभारत की केंद्रीय कहानी

➢विशाल महाकाव्य महाभारत अपने वर्तमान स्वरूप में 100,000 से अधिक छंदों में रचित है। यह सामाजिक श्रेणियों और स्थितियों की एक विस्तृत श्रृंखला को दर्शाता है।

➢महाभारत, अन्य महाकाव्यों की तरह, युद्ध, जंगलों, महलों और बस्तियों का विशद वर्णन करता है।

➢महाभारत की केंद्रीय कहानी युद्धरत चचेरे भाइयों के दो समूहों- कौरवों और पांडवों के बारे में है।यह भूमि और सत्ता के लिए संघर्ष का वर्णन करता है।

➢कुरु जनपद पर प्रभुत्व रखने वालेकौरव और पांडव कुरु वंश के ही शासक परिवार से थे।

➢संघर्ष एक युद्ध में समाप्त हुआ जिसमें पांडव विजयी हुए। उसके बाद, पितृवंशीय उत्तराधिकार की घोषणा की गई।

❖महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण

➢1919 में संस्कृत के विद्वान वी.एस. सुकथंकर द्वारा महाभारत का आलोचनात्मक संस्करण शुरू किया गया था।

➢इस परियोजना को पूरा करने के लिए, उन्होंने संस्कृत के विभिन्न विद्वानों का एक दल बनाया|

➢विद्वानों के इस दल ने देश के विभिन्न हिस्सों से विभिन्न लिपियों में लिखे गए पाठ की संस्कृत पांडुलिपियाँ एकत्र कीं।

➢उन्होंने प्रत्येक पांडुलिपि से श्लोकों की तुलना की और उन श्लोकों का चयन किया जो अधिकांश संस्करणों में समान दिखाई दिए।

➢उन्होंने इन श्लोकों को 13,000 पृष्ठों में कई पृष्ठों में फैले अनेक ग्रन्थ खंडों में प्रकाशित किया। यह परियोजना 47 वर्षों में पूरी हुई।

➢संस्कृत के कई पाठों के अनेक अंशों में समानता थी।

➢महाभारत के प्रेषण में अनेक क्षेत्रीय भिन्नताएँ भी उभर कर सामने आयीं|

➢महाभारत की विविधताएँ समाज की जटिल प्रक्रिया को दर्शाती हैं।

बंधुता एवं विवाह:

परिवार से तात्पर्य है - वे लोग भोजन और अन्य संसाधनों को साझा करते हैं, और एक साथ रहते हैं, काम करते हैं और अनुष्ठान करते हैं।

परिवार एक बड़े समूह का हिस्सा होते हैं जिन्हें हम **सम्बन्धी** कहते हैं | अधिक तकनीकी शब्द का उपयोग करने पर हम सम्बन्धियों को *जाति समूह* कह सकते हैं है।
पारिवारिक संबंधों को अक्सर "प्राकृतिक" और रक्त पर आधारित माना जाता है।
पितृवंश का अर्थ है पिता से पुत्र, पौत्र प्रपौत्र आदि से चलती है ।
मातृवंश वह शब्द है जिसका उपयोग तब किया जाता है जब वंश परम्परा माँ से जुड़ी होती है|

❖विवाह के प्रकार

➢अंतर्विवाह: अंतर्विवाह का अर्थ है अपने जतिकुल या जाति के भीतर विवाह करना।
➢बहिर्विवाह: बहिर्विवाह का अर्थ है अपने गोत्र से बाहर विवाह करना।
➢बहुपत्नी प्रथा : इसका अर्थ है वह विवाह जिसमें एक पुरुष की कई पत्नियाँ होती हैं।
➢बहुपति प्रथा : बहुपतित्व उस प्रथा को कहते हैं जिसमें एक स्त्री के एक से अधिक पति हो सकते हैं।

❖स्त्री का गोत्र

➢गोत्र का अर्थ है एक विशेष समूह के लोगों को उनके पूर्वज के रूप में वैदिक ऋषि के नाम पर दिया गया नाम ।
➢गोत्र प्रणाली का महिलाओं के लिए महत्व था।
▪महिलाओं से अपेक्षा की जाती थी कि वे विवाह के बाद अपने पति का गोत्र अपना लें और अपने पिता का गोत्र छोड़ दें। (अपवाद- सातवाहन)
▪एक ही गोत्र के सदस्य आपस विवाह सम्बन्ध नहीं रख सकते थे।

सामाजिक विषमताएं : वर्ण व्यवस्था के दायरे में और उससे परे

❖मनुस्मृति

➢इसे सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है जिसमें व्यक्ति, परिवार और समाज के लिए नियमों का वर्णन किया गया है।
➢इसे 200 ईसा पूर्व से 200 ईसवी के बीच संकलित किया गया था।
➢यह सामाजिक जीवन को नियंत्रित करने वाले नियमों को निर्धारित करता है।

❖जाति

➢जाति *धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रों* में निर्धारित पदानुक्रमित सामाजिक श्रेणियों के एक समूह को संदर्भित करती है।
➢ब्राह्मणों का मानना था कि इस व्यवस्था में उन्हें पहला दर्जा प्राप्त है और शूद्रों को सबसे नीचे।
➢ब्राह्मणों ने दावा किया कि यह व्यवस्था ईश्वर द्वारा निर्धारित की गई थी।

❖उचित जीविका

➢धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रों ने चार श्रेणियों या वर्णों के आदर्श व्यवसायों के बारे में नियमों का वर्णन किया।
➢ब्राह्मणों को वेदों का अध्ययन और अध्यापन करना, यज्ञ करना और करवाना, दान देना और लेना होता था।
➢ क्षत्रियों को युद्ध करना, लोगों की रक्षा करना और न्याय करना, वेदों का अध्ययन करना, यज्ञ करवाना और दान देना होता था।

- वैश्यों से कृषि, पशुपालन और व्यापार के अलावा दान देने, यज्ञ करवाने और वेदों का अध्ययन करने की अपेक्षा की जाती थी।
- शूद्रों को तीन 'उच्च' वर्णों की सेवा करने का काम सौंपा गया था।

❖वर्ण व्यवस्था को लागू करने की नीतियाँ

➢ब्राह्मणों ने वर्ण व्यवस्था को लागू करने के लिए दो-तीन नीतियाँ अपनाईं|

सबसे पहले, ब्राह्मणों ने दावा किया कि वर्ण व्यवस्था दैवीय उत्पत्ति है|

- दूसरे, ब्राह्मणों ने राजा को सलाह दी कि वे राज्यों में वर्ण व्यवस्था का पालन सुनिश्चित करें |
- तीसरे, ब्राह्मणों ने लोगों को यह समझाने का प्रयास किया कि उनकी स्थिति जन्म से निर्धारित होती है।

❖गैर-क्षत्रिय राजा

➢शास्त्रों के अनुसार, केवल क्षत्रिय ही राजा हो सकते थे।

➢लेकिन यह देखा गया है कि कोई भी व्यक्ति जो समर्थन और संसाधन जुटाने में सक्षम है उन्हें जन्म के सिद्धांत पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है।

उदाहरण के लिए, मौर्यों की उत्पत्ति के बारे में अलग-अलग राय हैं।

बाद के बौद्ध ग्रंथों से पता चलता है कि वे क्षत्रिय थे, किन्तु ब्राह्मणीय शास्त्र उनको निम्न कुल का मानते हैं।

❖चार वर्णों से परे: एकीकरण

➢उपमहाद्वीप की विविधताओं की वजह से यहाँ हमेशा से ऐसे समुदाय रहें हैं जिनपर ब्राह्मणवादी विचारों का कोई प्रभाव नहीं रहा है जैसे निषाद तथा खानाबदोश चरवाहे, आदि।

➢इन लोगों के बीच विचारों और विश्वासों का आदान-प्रदान होता था।

अधीनता और संघर्ष

- ब्राह्मण कुछ सामाजिक श्रेणियों को "अछूत" मानते थे।
- कुछ कर्म मुख्य रूप से उन अनुष्ठानों के संपादन से जुड़े थे जिन्हें वे "पुनीत और पवित्र" मानते थे। इसलिए, वे 'अछूतों' से भोजन लेने से बचते थे।
- इनमें शवों और मृत जानवरों को छूने वाले को **चांडाल** कहा जाता था।कुछ गतिविधियों जैसे उन्हें छूना और देखना "दूषित" माना जाता था।
- उन्हें सामाजिक पदानुक्रम में सबसे नीचे रखा गया था।
- मनु स्मृति ने चांडालों के कर्तव्यों को निर्धारित किया।
- उन्हें गाँव के बाहर रहना पड़ता था, फेंके हुए बर्तनों का इस्तेमाल करना पड़ता था, मृतकों के कपड़े और लोहे के आभूषण पहनने पड़ते थे।
- वे रात्रि में गाँवों और नगरों में नहीं चल-फिर नहीं सकते थे।
- उन्हें उन लोगों के शवों का अंत्येष्ठी करना पड़ता था जिनके कोई सम्बन्धी नहीं थे और वधिक के रूप में भी काम करना पड़ता था।

संपत्ति पर स्त्री-पुरुष के भिन्न अधिकार

- पुरुषों और महिलाओं के बीच सामाजिक अंतर को संसाधनों तक पहुँच ने और भी गहरा कर दिया।
- मनु स्मृति के अनुसार, महिलाएँ पैतृक संपत्ति में हिस्सा लेने की पात्र नहीं थीं।

- माता-पिता की मृत्यु के बाद पैतृक संपत्ति बेटों के बीच विभाजित की जाती थी, जिसमें सबसे बड़े बेटे को विशेष हिस्सा दिया जाता था।
- हालाँकि, महिलाएँ विवाह के अवसर पर प्राप्त उपहार को स्त्रीधन के रूप में अपने पास रख सकती थीं।
- यह उसके बच्चों को विरासत में मिल सकता था, लेकिन पति का इस पर कोई अधिकार नहीं था।
- मनुस्मृति के अनुसार स्त्रियों को अपने पति की आज्ञा के विरुद्ध पारिवारिक संपत्ति अथवा स्वयं के कीमती सामान का गुप्त संचय नही करना चाहिए |
- अभिलेखीय और पाठ्य साक्ष्य दोनों ही बताते हैं कि उच्च वर्ग की महिलाओं के पास संसाधनों तक पहुँच हो सकती थी, लेकिन भूमि, मवेशी और धन पर आम तौर पर पुरुषों का नियंत्रण होता था।

वर्ण और संपत्ति के अधिकार

- शूद्रों के लिए निर्धारित एकमात्र "जीविका" सेवा था, जबकि पहले तीन वर्णों के पुरुषों के लिए कई तरह के जीविका सूचीबद्ध किए गए थे।
- राजाओं को लगभग हमेशा धनी के रूप में दर्शाया जाता है; पुजारियों को भी आम तौर पर धनी दिखाया जाता है, हालाँकि कभी-कभी गरीब ब्राह्मणों का चित्रण भी होता है।

सामाजिक विषमताओं की व्याख्या: एक सामाजिक अनुबंध

- बौद्धों ने समाज में फैली विषमताओं के सन्दर्भ में एक अलग अवधारणा प्रस्तुत की, लेकिन इन्हें नैसर्गिक या परिवर्तनीय नहीं माना। उन्होंने जन्म के आधार पर स्थिति के दावों के विचार को अस्वीकार कर दिया।
- कुछ अन्य संभावनाएँ भी थीं; ऐसी स्थितियाँ जहाँ उदार पुरुषों का सम्मान किया जाता था, जबकि कंजूस लोगों की आलोचना की जाती थी।
- बौद्धों ने सामाजिक असमानताओं और सामाजिक संघर्ष को विनियमित करने के लिए आवश्यक संस्थानों की एक वैकल्पिक समझ विकसित की।
- राजत्व की संस्था मानवीय पसंद पर आधारित थी, जिसमें राजा द्वारा दी गई सेवाओं के लिए करों का भुगतान किया जाता था।

साहित्यिक स्रोतों का इस्तेमाल: इतिहासकार और महाभारत

- महाभारत कई भाषाओं में लिखा गया था।
- महाकाव्य के संस्करण लिखने वाले लोगों ने अपने इलाकों में उत्पन्न या प्रसारित कहानियों को भी जोड़ दिया ।
- महाकाव्य की केंद्रीय कहानी को अक्सर कई तरीकों से दोहराया जाता था। कथानक को मूर्तिकला और चित्रकला में दर्शाया गया था।

भाषा एवं विषय वस्तु

- महाभारत में प्रयुक्त संस्कृत वेदों की तुलना में कहीं अधिक सरल है।
- इतिहासकार आमतौर पर इस ग्रन्थ की विषयवस्तु को दो व्यापक शीर्षकों के अंतर्गत वर्गीकृत करते हैं - वे खंड जिनमें कहानियाँ होती हैं, जिन्हें ***आख्यान*** कहा जाता है, और वे खंड जिनमें सामाजिक मानदंडों का चित्रण है, उन्हें ***उपदेशात्मक*** कहा जाता है।

➢ यह विभाजन किसी भी तरह से एकांकी नहीं है - उपदेशात्मक खंडों में भी कहानियाँ शामिल हैं, और आख्यान में भी अक्सर एक सामाजिक संदेश होता है।

लेखक (एक या कई) और तिथियाँ

➢ मूल कथा के रचयिता भाट-सारथी जिन्हें सूत कहा जाता थाजो क्षत्रिय योद्धाओं के साथ युद्ध के मैदान में जाते थे और उनकी विजय और अन्य उपलब्धियों के बारे में कविताएँ लिखते थे।

➢ ये रचनाएँ मौखिक रूप से प्रसारित की गईं। पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व तक, ब्राह्मणों ने इस कथा पर अपना अधिकार कर लिया |

➢ यह भी संभव है कि इस समय सामाजिक मूल्यों में होने वाली उथल-पुथल को नए मानदंडों द्वारा प्रतिस्थापित किया जा रहा था, जो महाभारत में परिलक्षित होता है ।

➢ एक और चरण, लगभग 200 ईसा पूर्व से 200 ईसवी तक का है जब विष्णु की पूजा बढ़ रही थी और कृष्ण की पहचान विष्णु के रूप में की जा रही थी।

➢ इन सभी परिवर्धनों के कारण यह ग्रन्थ 10,000 से कम श्लोकों से शुरू होकर कालांतर में 100,000 श्लोकों तक पहुँच गया। साहित्यिक परंपरा में इस वृहद् रचना के रचयिता ऋषि वेद व्यास माने जाते हैं ।

❖महाभारत: एक गतिशील ग्रन्थ

➢ महाभारत के अनेक पाठांतर भिन्न भिन्न भाषाओं में लिखे गए।

➢ महाकाव्य के संस्करण लिखने वाले लोगों ने अपने इलाकों में जनित या प्रचलित कहानियों को जोड़ा।

➢ महाकाव्य की मुख्य कथा की अनेक पुनार्व्यख्याए की गई इसके प्रसंगों को मूर्तिकला और चित्रकला में भी दर्शाया गया |

➢ इस महाकाव्य नें नाटकों और नृत्यकलाओं के लिए भी विषयवस्तु प्रदान की |

बहुविकल्पीय प्रश्न

Q.1.कौन से अभिलेख में लाट प्रदेश से गए रेशम के बुनकरों की श्रेणी का उल्लेख मिलता है?

(ए) एहोल अभिलेख (बी) जूनागढ़ अभिलेख

(सी) मंदसौर अभिलेख (डी) विदिशा अभिलेख

उत्तर -(सी) मंदसौर अभिलेख

Q.2. मातंग जातक कौनसी भाषा में लिखा गया था?

(ए) प्राकृत (बी) पाली

(सी) संस्कृत (डी) अवधि

उत्तर -(बी) पाली

Q.3. कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में महिलाओ द्वारा सत्ता के प्रयोग का उदाहरण है?

(ए) अरुंधती गुप्त (बी) करुवाकी मौर्य

(सी) कलावती गुप्त (डी) प्रभावती गुप्त

उत्तर - (डी) प्रभावती गुप्त

Q.4.गौतमी पुत्त, वसिथि पुत्त जैसे विरुद किस वंश के शासकों द्वारा अपने नाम के आगे प्रयुक्त किये जाते थे?

(ए) राष्ट्रकूट (बी) गजपति

(सी) सातवाहन (डी) चालुक्य

उत्तर (सी) सातवाहन

Q.5.क्षत्रियों के दर्प का हनन करने वाला शासक किसे कहा गया है?

(ए) कनिष्क (बी) रुद्रदामन

(सी) गौतमी –पुत्त-शातकर्णी (डी) मिनांडर

उत्तर – (सी) गौतमी –पुत्त-शातकर्णी (पेज 63)

Q.6. निम्नलिखित में से यह किसने किस चीनी यात्री ने कहा था की वधिक और सफाई करने वालों को नगर से बाहर रहना पड़ता था ?

(ए) ह्वेनसांग (बी) फाह्यान

(सी) इत्सिंग (डी) इनमे से कोई नहीं

उत्तर – (ए) ह्वेनसांग

Q.7. किस बौध भिक्षु ने कहा था की "अस्पृश्यों को सड़क पर करताल बजाकर चलना पड़ता था" ?

(ए) ह्वेनसांग (बी) इत्सिंग

(सी) काओ सेंग चुआन (डी) फा -शिएन

उत्तर –(डी) फा -शिएन

Q.8.निम्नलिखित में से कौनसी एक तमिल संगम साहित्य की पद्यावली है?

(ए) पुरुनारुरु (बी) तमिलकम

(सी) मज्झिमनिकाय (डी) कुदरईचेत्तिस

उत्तर – (ए) पुरुनारुरु

Q.9. महाभारत का फारसी अनुवाद किस नाम से किया गया ?

(ए) रस्मनामा (बी) रज्मनामा

(सी) आइन इ अकबरी (डी) तवारीख इ फिरोजशाही

उत्तर –(बी) रज्मनामा

Q.10. निम्नलिखित को कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिये |

(i) रुद्रदामन का संस्कृत अभिलेख

(ii) प्रभावती गुप्त का दान अभिलेख

(iii) ह्वेनसांग की तीर्थयात्रा

(iv) ऋग्वेद की रचना

(ए) IV-I-III-II (बी) IV- III-I-II

(सी)I-IV-II-III (डी) IV-I-II-III

उत्तर – (डी) IV-I-II-III

Q.11. यह कथन किस विद्वान् ने लिखा था की " चूँकि महाभारत सम्पूर्ण साहित्य का प्रतिनिधित्व करता है ....बहुत सारी और अनेक प्रकार की चीजे इसमें निहित हैं ...वह भारतीयों की आत्मा की अगाध गहराई को एक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है |'' ?

(ए) जॉन मार्शल (बी) वराहमिहिर

(सी) मार्टिमर व्हीलर (डी) मौरिस विंटरविट्ज़

उत्तर – (डी) मौरिस विंटरविट्ज़

Q.12. ''कुंती ओ निषादी'' की रचना किसने की?

(ए) महादेवी वर्मा (बी) महाश्वेता देवी

(सी) सरोजिनी नायडू (डी) दुशाला

उत्तर – (बी) महाश्वेता देवी

Q.13. गांधार मूर्तिकला किन दो शैलियों का मिश्रण है ?

(ए) भारतीय और चीनी (बी) भारतीय और यूनानी

(सी) भारतीय और ईरानी (डी) भारतीय और अफगानी

उत्तर (बी) भारतीय और यूनानी

Q.14. महाभारत के आलोचनात्मक संस्करण के अंग्रेजी अनुवाद का आरम्भ किसने किया ?

(ए) सर जॉन मार्शल (बी) जे ए बी वेन बियुतेनेन

(सी) विन्सेंट स्मिथ (डी) मौरिस विंटरविट्ज़

उत्तर (बी) जे ए बी वेन बियुतेनेन

Q.15. निम्नलिखित में से कौनसा कथन गलत है ?

(ए) महाभारत एक गतिशील ग्रन्थ है |

(बी) प्राचीन भारत में सामाजिक भेदभाव व्याप्त था |

(सी) आरम्भिक संस्कृत परम्पराओं में महाभारत को इतिहास की श्रेणी में रखा गया है |

(डी) सरदार और उसके अनुयायी की मूर्ति अमरावती (तेलंगाना) से प्राप्त हुई है |

उत्तर (डी) सरदार और उसके अनुयायी की मूर्ति अमरावती (तेलंगाना) से प्राप्त हुई है |

Q16 नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन के रूप में निर्देशित किया गया है

दूसरे को कारण के रूप में इंगित किया गया:

कथन (ए): महिलाओं से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने पिता के गोत्र को छोड़ दें और शादी के बाद पति का गोत्र अपना लें |

कारण (आर): सातवाहन शासकों से शादी करने वाली महिलाओं ने अपने पति के गोत्र नाम से व्युत्पन्न नामों को अपनाने के बजाय उनके पिता के गोत्र को बरकरार रखा |

(ए) दोनों (ए) और (आर) सही हैं और (आर) (ए) की सही व्याख्या है।

(बी) दोनों (ए) और (आर) सही हैं और (आर) (ए) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(सी) (ए) सही है लेकिन (आर) सही नहीं है।

(डी) (आर) सही है लेकिन (ए) सही नहीं है।

उत्तर-(ए) और (आर) दोनों सही हैं और (आर) (ए) की सही व्याख्या नहीं है।

Q.17.निम्नलिखित का मिलान करें

(i) अंतर्विवाह	(ए) इकाई के बाहर विवाह को संदर्भित करता है
(ii) बहिर्विवाह	(बी) एक पुरुष की कई पत्नियां रखने की प्रथा को संदर्भित करता है
(iii) बहुविवाह	(सी) कई पति वाली एक महिला की प्रथा को संदर्भित करता है
(iv) बहुपतित्व	(डी) इकाई के भीतर विवाह का संदर्भ लें सही विकल्प चुनें:

सही विकल्प चुने

(ए) i- बी, ii - सी, ii - ए, iv - डी

(बी) i - ए, ii - बी, iii - डी, iv - सी

(सी) i - सी, ii - ए, iii-बी, iv - डी

(डी) i- डी, ii - ए, iii - बी, iv - सी

उत्तर-(डी) i- डी, ii - ए, iii - बी, iv – सी

प्रश्न 18 : पाँचवी शताब्दी ईसवी से संबंधित मूर्ति किस स्थल से प्राप्त हुयी है ?

ए. हस्तिनापुर में एक मंदिर की दीवारों से

बी. मथुरा में एक मंदिर की दीवारों से

सी. वाराणसी में एक मंदिर की दीवारों से

डी. अहिच्छत्र (उत्तर प्रदेश) में एक मंदिर की दीवारों से

उत्तर –डी. अहिच्छत्र (उत्तर प्रदेश) में एक मंदिर की दीवारों से।

प्र.19.कथन- महाभारत के महत्वपूर्ण संस्करण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. दर्जनों विद्वानों की एक टीम ने महाभारत का एक महत्वपूर्ण संस्करण तैयार करने का कार्य शुरू किया।

II. प्रारंभ में, इसका अर्थ देश के विभिन्न हिस्सों से विभिन्न लिपियों में लिखी गई पाठ की संस्कृत पांडुलिपियों को इकट्ठा करना था।

III. टीम ने प्रत्येक पांडुलिपि से छंदों की तुलना करने की एक विधि पर काम किया।

निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

ए. I

बी. I और II

सी. I और III

डी. उपरोक्त सभी

उत्तर: डी

20. कथन (ए): दक्षिण भारत में पहली और दूसरी शताब्दी ईस्वी के कई रोमन सोने और चांदी के सिक्के खोजे गए हैं।

कारण (R) : इस अवधि के दौरान दक्षिण भारत के कुछ हिस्से रोमन कब्जे में थे।

(ए) ए और आर दोनों सही हैं और आर ए की सही व्याख्या है

(बी) ए और आर दोनों सही हैं लेकिन आर ए की सही व्याख्या नहीं है

(सी) ए सही है लेकिन आर गलत है

(डी) ए गलत है लेकिन आर सही है

उत्तर : (सी)

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. महाभारत के दूसरे चरण में घरों के बारे में बी बी लाल ने क्या उल्लेखित किया?

उत्तर- बी बी लाल ने दूसरे चरण में मकानों का वर्णन दिया है। उन्होंने कहा कि कि खुदाई किए गए सीमित क्षेत्र के भीतर, घरों की कोई निश्चित योजना प्राप्त नहीं हुई थी,लेकिन मिट्टी की बनी दीवारें और कच्ची मिट्टी की ईंटें प्राप्त हुईं हैं । मिट्टी के पलस्तर की खोज सरकंडे की छाप के निशान के साथ यह इशारा करती है कि कुछ घरों कि दीवारें सरकंडों की बनी थी जिन दीवारो पर मिट्टी का पलस्तर चढ़ा दिया जाता था ।

क्यू 2. सामाजिक अनुबंध का बौद्ध सिद्धांत पुरुष सूक्त से व्युत्पन्न समाज का ब्राह्मणवादी दृष्टिकोण से किस प्रकार भिन्न था?

उत्तर- (I) पुरुष सूक्त कहता है कि एक विशाल पुरुष के विभिन्न अंगों से चार वर्णों का उदय हुआ ।

(II) ये वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र थे ।

(III) ब्राह्मणों को समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था।

(IV) क्षत्रिय प्रशासन चलाते थे।

(IV) वैश्य व्यापार में संलग्न थे। शूद्र उपरोक्त तीन वर्णों की सेवा करने के लिए नियत थे ।

(V) केवल जन्म ही समाज में हैसियत और सम्मान का आधार था।

बौद्ध धर्म ने इस अवधारणा को स्वीकार नहीं किया। उनका मानना है कि समाज असमान, कृत्रिम और अस्थायी था। उन्होंने जन्म को सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार मानने को खारिज कर दिया।

प्रश्न 3. ब्राह्मणवादी ग्रन्थों में उल्लेखित वर्ण पद्धति और व्यवसाय के बीच संबंध को समझाइए ?

ब्राह्मणों ने इन्हें कैसे सुदृढ़ किया?

उत्तर: ब्राह्मणवादी ग्रंथों के अनुसार वर्ण व्यवस्था और व्यवसाय के बीच संबंध:

(1) ब्राह्मण- वेदों का अध्ययन, उपदेश देना तथा यज्ञ करना ।

(II) क्षत्रिय - युद्ध में संलग्न होकर लोगों की रक्षा तथा न्याय का प्रशासन की स्थापना ।

3) वैश्य-कृषि और व्यापार में संलग्न।

(IV) शूद्रों को एक ही व्यवसाय सौंपा- वह था, तीन उच्च वर्णों की सेवा करना।

ब्राह्मणों ने निम्नलिखित तर्कों के द्वारा इस व्यवस्था को लागू करने का प्रयास किया :

(क) दिव्य उत्पत्ति।

(ख) राजाओं को आदेश लागू करने की सलाह देना।

(ग) जन्म के आधार पर जाति निर्धारित होना ।

प्रश्न 4 महिलाओं को उनका गोत्र कैसे प्राप्त होता था ?

उत्तर : 1. लोगों को वर्गीकृत करने के लिए एक ब्राह्मणवादी प्रथा गोत्रों के संदर्भ में थी।

2. प्रत्येक गोत्र का नाम एक वैदिक द्रष्टा के नाम पर रखा गया था, और जो एक ही गोत्र से संबंधित थे उन सभी को उनके वंशजों के रूप में माना जाता था ।

3. गोत्र के बारे में दो नियम विशेष रूप से महत्वपूर्ण थे: महिलाओं से अपने पिता के गोत्र को विवाह उपरांत छोड़ने की उम्मीद की जाती थी और समान गोत्र के सदस्य आपस में विवाह नहीं कर सकते थे ।

4. सातवाहन शासकों के गोतम और वशिष्ठ जैसे गोत्रों से व्युत्पन्न नाम थे

5. उन्होंने स्पष्ट रूप से अपने पति के गोत्र से व्युत्पन्न नामों को अपनाने के बजाय इन नामों को बनाए रखा

प्रश्न 5. प्राचीन समाज में अनुसरण किए जाने वाले विवाह के नियमों की व्याख्या कीजिए।

1. पितृवंश को आगे बढ़ाने के लिए पुत्रों को पुत्रियों से भिन्न देखा जाता था ।

2. गोत्र के बाहर के परिवारों में इनकी शादी करना वांछनीय माना जाता था।

3. इस प्रथा को बहिर्विवाह कहा जाता था (शाब्दिक रूप से, गोत्र के बाहर विवाह करना) था । ऊंचे समान्नित परिवारों वालों की कम उम्र की कन्याओं और स्त्रियों का जीवन बहुत सावधानी से नियमित किया जाता था जिससे उचित समय और उचित व्यक्ति से उनका विवाह किया जा सके ।

4. यह विश्वास कि कन्यादान या विवाह में बेटी का उपहार पिता का महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्य था ।

5. ब्राह्मणों ने समाज के लिए विस्तृत आचार सहिंताएं तैयार की ।

6. ब्राह्मणों को इन आचार संहिताओं का विशेष पालन करना होता था जिन्हें धर्मसूत्र और धर्मशास्त्र के रूप में जाना जाता था।

7. मनुस्मृति, धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रों ने विवाह के आठ रूपों को मान्यता दी। इनमें से पहले चार "अच्छा" माना जाता था जबकि शेष की निंदा की गई।

प्रश्न 6 चांडालों के कर्तव्य क्या थे?

1. ब्राह्मणों ने कुछ सामाजिक श्रेणियों को "अछूत" के रूप में वर्गीकृत करके एक सामाजिक विभाजन को विकसित किया

2. जो लोग खुद को पवित्र मानते थे, वे उन लोगों से भोजन लेने से बचते थे जिन्हें उन्होंने "अछूत" के रूप में नामित किया था।

3. कुछ गतिविधियों को विशेष रूप से "दूषित " माना जाता था।

4. इनमें लाशों की अन्त्येष्टि और मृत जानवरों को छूना शामिल था। जिन लोगों ने ऐसे कार्य किए, उन्हे चांडाल के रूप में नामित किया गया था,एंव उन्हें सामाजिक क्रम में बहुत नीचे रखा गया था।

5. उनका स्पर्श और कुछ मामलों में, यहां तक कि उन्हें देखना भी उन लोगों द्वारा "दूषित " माना जाता था जिन्होंने सामाजिक व्यवस्था के शीर्ष पर होने का दावा किया था।

6. मनुस्मृति ने चांडालों के "कर्तव्यों" को निर्धारित किया। उन्हें गाँव के बाहर रहना पड़ता था, बेकार बर्तनों का उपयोग करना पड़ता था, और मृतकों के कपड़े और लोहे के गहने पहनने पड़ते थे।

7. वे रात में गांवों और शहरों में नहीं चल सकते थे।

8. उन्हें उन लोगों के शवों का निपटान करना पड़ता था जिनका कोई रिश्तेदार नहीं था और वधिक के रूप में सेवा करते थे।

प्रश्न 7 महाभारत की भाषा और विषय-वस्तु की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : महाभारत नामक महाकाव्य कई भाषाओं में उपलब्ध है लेकिन वास्तव में संस्कृत में लिखा गया था। इस महाकाव्य में प्रयुक्त संस्कृत वेदों या प्रशस्तियों में प्रयुक्त संस्कृत की तुलना में कहीं अधिक सरल है। यही कारण है कि हम कह सकते हैं कि यह शायद व्यापक रूप से समझा गया था।

सामग्री: इस महाकाव्य की सामग्री को आम तौर पर दो भागों – आख्यान और उपदेशात्मक के तहत वर्गीकृत किया जाता है। आख्यान अनुभाग में कहानियां हैं और उपदेशात्मक अनुभाग में सामाजिक आचार विचार के मानदंडों के बारे में हैं। लेकिन यह विभाजन अपने आप में स्पष्ट नहीं है क्योंकि उपदेशात्मक खंड में कहानियां शामिल हैं और आख्यान में एक सामाजिक संदेश है। हालांकि, आम तौर पर, इतिहासकार इस तथ्य से सहमत हैं कि यह महाकाव्य एक नाटकीय कथानक था जिसमें उपदेशात्मक भागों को बाद में जोड़ा गया । इस महाकाव्य को प्रारंभिक संस्कृत परंपरा के भीतर एक 'इतिहास' के रूप में वर्णित किया गया है। इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है “ऐसा ही था” । इतिहासकारों के महाभारत के युद्ध के बारे में अलग-अलग विचार हैं। कुछ इतिहासकार यह मानते हैं कि स्वजनों के बीच हुये युद्ध की स्मृति ही महाभारत का मुख्य कथानक है ,जबकि कुछ इतिहासकार मानते हैं कि युद्ध का कोई अन्य साक्ष्य नहीं है।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

प्र.1 महाभारत एक गतिशील ग्रंथ है। समझाइए

उत्तर : महाभारत में किसी भी प्रमुख महाकाव्य की तरह, लड़ाई, जंगलों, महलों और बस्तियों के जीवंत वर्णन शामिल हैं । यह राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों से भी संबंधित है जो हमेशा के लिए उपयुक्त हैं

1. महाभारत के जिस संस्करण पर हम विचार कर रहे हैं, वह संस्कृत में है।

2. महाभारत प्रयुक्त संस्कृत वेदों की तुलना में कहीं अधिक सरल है,

3. इतिहासकार वर्तमान पाठ की सामग्री को दो व्यापक शीर्षकों के तहत वर्गीकृत करते हैं , आख्यान जिनमें कहानियां होती हैं ।

4. वे अनुभाग जिनमें सामाजिक मानदंडों के बारे में आचार विचार थे, उन्हे उपदेशात्मक के रूप में नामित किया जाता है।

इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि महाभारत एक नाटकीय कथानक था और उपदेशात्मक अंशों को संभवतः बाद में जोड़ा गया था।

लेखक और तिथियाँ

1. मूल कहानी संभवतः भाट सारथियों द्वारा रचित थी, जिन्हें सूत के रूप में जाना जाता था जो आम तौर पर युद्ध के मैदान में क्षत्रिय योद्धाओं के साथ गए और उनकी जीत और अन्य उपलब्धियों का जश्न मनाते हुए कविताओं की रचना की।

2. पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व के रूप में, ब्राह्मणों ने इस कथा परंपरा पर अपना अधिकार कर लिया और इसे लिखने के लिए प्रतिबद्ध करना शुरू कर दिया। यह वह समय था जब कुरु और पांचाल मात्र सरदारी से राजतंत्र के रूप में उभर रहे थे। यह भी संभव है कि उथल-पुथल जो अक्सर इनकी स्थापना के साथ होती थी, जहां पुराने सामाजिक मूल्यों को अक्सर नए मानदंडों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता था, जिनका इस कहानी के कुछ हिस्सों में वर्णन मिलता है।

ग्रंथ की संरचना में एक और चरण 200 ईसा पूर्व और 200 ईसवी के बीच था। यह वह अवधि थी जब विष्णु की पूजा का महत्व बढ़ रहा था, और महाकाव्य के महत्वपूर्ण पात्रों में से एक कृष्ण की पहचान विष्णु के साथ होने वाली थी। 200 और 400 ईसवी के बीच, मनुस्मृति से मिलते-जुलते बड़े उपदेशात्मक वर्गों को जोड़ा गया था। इन परिवर्तनों के साथ, एक पाठ में लगभग 100,000 छंद शामिल हो गए। इस विशाल रचना को पारंपरिक रूप से व्यास नामक एक ऋषि को जिम्मेदार ठहराया जाता है।

प्रश्न 2. प्राचीन काल में ब्राह्मणवादी ग्रंथों के नियमों का सार्वभौमिक रूप से पालन नहीं किया गया था। पांच साक्ष्य देकर उपरोक्त वाक्य को उचित ठहराएं।

उत्तर : प्राचीन काल में ब्राह्मणवादी ग्रंथों का सार्वभौमिक रूप से पालन नहीं किया गया था:

(i) महिलाओं से अपेक्षा की जाती थी कि वे विवाह के पश्चात पिता का गोत्र त्याग दें। हालाँकि सातवाहन शासकों से शादी करने वाली महिलाओं के नाम दूसरों के गोत्र से प्राप्त होते रहे। उन्होंने पति का गोत्र नहीं अपनाया।

(ii) शास्त्रों के अनुसार केवल क्षत्रिय ही शासक बन सकते थे। लेकिन कई शासक परिवार थे जो ब्राह्मण या वैश्य होने का दावा करते थे।

(iii) निषाद, घुमंतू पशुपालकों की ऐसी आबादी थीं जिनकी प्रथाएँ ब्राह्मणवादी विचारों से प्रभावित नहीं थीं।

(iv) एक ही जाति के व्यवसायों जैसे मंदसौर के रेशम बुनकरों के उदाहरण थे।

(v) ब्राह्मण कुछ लोगों को शास्त्रों में वर्णित वर्ण व्यवस्था के बाहर मानते थे उदाहरण चांडाल ।

(vi) आम तौर पर विवाह जाति के भीतर होता था। कभी-कभी भीम और हिडिंबा जैसे जाति के बाहर विवाह का भी उल्लेख मिलता है ।

(vii) महिलाओं को अपने पिता की संपत्ति साझा करने की अनुमति नहीं थी परंतु प्रभावती गुप्त जैसे अपवाद भी प्राप्त होते हैं ।

प्रश्न 3 प्राचीन काल के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करने के लिए महाभारत एक अच्छा स्रोत है। कैसे ?

उत्तर : जी हां, महाभारत प्राचीन काल के सामाजिक मूल्य का अध्ययन करने का एक अच्छा स्रोत है।

(I) महाभारत में संबधित काल के सामाजिक मूल्यों का जीवंत वर्णन प्राप्त होता है यह दो परिवारों के बीच हुए युद्ध का चित्रण है । इस ग्रंथ के कुछ भाग विभिन सामाजिक समुदायों के आचार व्यवहार के मानदंड तय करते हैं ।

(II) पितृवंशिक व्यवस्था के आदर्श पर जोर दिया गया

(III) महाभारत कहानियों के माध्यम से जाति और व्यवसाय के बीच संबंधों को मजबूत करता है धर्मशास्त्रों में निर्धारित जाति और व्यवसाय के बीच आचार संहिता का भी उल्लेख मिलता है उदाहरण के लिए, एकलव्य की कहानी।

(IV) महाभारत में जाति व्यवस्था और विभिन्न जाति समूह के परस्पर संबंधों का जीवंत वर्णन किया गया है भीम के साथ हिडिंबा के विवाह की कहानी से यह स्पष्ट है।

(V) महाभारत पितृसत्तात्मक समाज का भी प्रमाण देता है, उदाहरण के लिए युधिष्ठिर द्वारा अपनी पत्नी द्रौपदी को पासों के खेल में खड़ा करना ।

(VI) कन्यादान या विवाह में पुत्री की भेंट पिता का एक महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्य माना जाता था।

(VII) समाज में विभिन्न प्रकार के विवाह की पद्धतियों के प्रचलन का उल्लेख मिलता है ।

(VIII) महाभारत वर्णों और विभिन्न व्यवसायों के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

(IX) परिवार में बड़ों का वर्चस्व था।

प्रश्न 4 इतिहासकारों द्वारा महाभारत का विश्लेषण करने के लिए विचार किए गए तत्वों का वर्णन कीजिए । महाभारत के आलोचनात्मक संस्करण की तैयारी के लिए वीएस सुकथंकर और उनकी टीम के प्रयासों को बताएं।

उत्तर: महाभारत उपमहाद्वीप के सबसे विशाल महाकाव्यों में से एक है। अपने वर्तमान स्वरूप में इस महाकाव्य में एक लाख से अधिक श्लोक हैं। यह सामाजिक श्रेणियों और स्थितियों की एक विस्तृत श्रृंखला को भी दर्शाता है। यह लगभग 1000 वर्षों (500 ईसा पूर्व के बाद) की अवधि में रचित था। इसकी कुछ कहानियां पहले भी प्रचलन में हो सकती हैं। महाभारत की केंद्रीय कहानी युद्धरत चचेरे भाइयों के दो परिवारों के बारे में है। इसमें विभिन्न सामाजिक समूहों के लिए व्यवहार के मानदंड निर्धारित करने वाले खंड भी शामिल हैं। इस महाकाव्य के प्रमुख पात्र कभी-कभी इन मानदंडों का पालन करते हुये प्रतीत होते है।

महाभारत का आलोचनात्मक संस्करण को तैयार करने हेतु प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान वी.एस. सुकथांकर के नेतृत्व में 1919 ईसवी में एक बहुत ही महत्वाकांक्षी परियोजना शुरू की गई थी। कई विद्वानों ने सामूहिक रूप से महाभारत का आलोचनात्मक संस्करण तैयार करने का निर्णय लिया। प्रारंभ में, विभिन्न लिपियों और देश के विभिन्न हिस्सों में लिखी गई महाकाव्य की संस्कृत पांडुलिपियों को एकत्र किया गया था।

विद्वानों की इस टीम ने प्रत्येक पांडुलिपि के छंदों की तुलना करने की एक विधि तैयार की। उन्होंने उन सभी छंदों का चयन किया जो सभी पांडुलिपियों में आम दिखाई दिए। उन्होंने इन सभी को 13,000 पृष्ठों के कई खंडों में प्रकाशित किया। इस परियोजना को पूरा करने में लगभग 47 साल लगे थे। पूरी प्रक्रिया में दो चीजें स्पष्ट हो जाती हैं।

1. पहली यह कि कहानी के संस्कृत संस्करण के कई तत्वों में समानताएं थीं। यह समानता उत्तर में कश्मीर और नेपाल से लेकर दक्षिण में केरल, तमिलनाडु तक समूचे उपमहाद्वीप में फैली सभी पांडुलिपियों में पाई गई।

2. दूसरी यह कि कई क्षेत्रीय विविधताएं उन तरीकों के सामने आईं जिनमें महाकाव्य सदियों से प्रेषित किया गया था। इन विविधताओं को मुख्य ग्रंथों के फुटनोट और परिशिष्ट के रूप में लिखा गया था। कुल पृष्ठों में से आधे से अधिक इन विविधताओं के लिए समर्पित हैं जब उन्हें एक साथ लिया गया था।

दरअसल, इन विविधताओं को पूरी प्रक्रिया में परिलक्षित किया जा सकता है जिसने प्रमुख परंपराओं और लचीले स्थानीय विचारों और प्रथाओं के बीच संवाद के माध्यम से शुरुआती और बाद के सामाजिक इतिहास को आकार दिया। इन संवादों को संघर्ष के क्षणों के साथ-साथ सर्वसम्मति से चित्रित किया गया है।

इन सभी प्रक्रियाओं के बारे में हमारी जानकारी मुख्य रूप से उन संस्कृत ग्रंथों पर आधारित है जो ब्राह्मणों द्वारा अपने लिए लिखे गए थे। इतिहासकारों ने 19 वीं और 20 वीं शताब्दी में, पहली बार, सामाजिक इतिहास के विभिन्न मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए इन ग्रंथों का पता लगाया। उनका मानना था कि ग्रंथों में जो कुछ भी लिखा गया है, वास्तव में व्यवहार में लाया जा सकता था। बाद में विद्वानों ने पाली, प्राकृत और तमिल ग्रंथों की मदद से अन्य परंपराओं का भी अध्ययन किया। इन अध्ययनों से संकेत मिलता है कि मानक संस्कृत ग्रंथों में निहित विचारों को आधिकारिक के रूप में मान्यता दी गई थी, लेकिन उन पर भी सवाल उठाया गया था और कभी-कभी अस्वीकार भी कर दिया

स्रोत आधारित प्रश्न

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

द्रौपदी का विवाह

पांचाल के राजा द्रुपद ने एक प्रतियोगिता का आयोजन किया जहां शर्त रखी गयी कि धनुष की चाप चढ़ाकर एक निशाने पर तीर मारा जाए लक्ष्य को मारने की थी: विजेता उनकी पुत्री द्रौपदी से शादी करने के लिए चुना जाएगा। अर्जुन ने यह प्रतियोगिता जीती और द्रौपदी ने उन्हें माला पहनाई। पांडव उसे लेकर अपनी माँ कुंती के पास गए , जिन्होने बिना देखे ही उन्हे लायी गयी वस्तु को आपस में बाँट लाने को कहा .जब उसने द्रौपदी को देखा तो उसे अपनी गलती का एहसास हुआ, लेकिन उसकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया जा सकता था । काफी विचार-विमर्श के बाद युधिष्ठिर ने निश्चय किया कि द्रुपदी उन पांचों की पत्नी होंगी।

द्रुपद को जब इस बारे में बताया गया तो उन्होंने विरोध किया। किन्तु ऋषि व्यास ने उन्हें इस तथ्य से अवगत कराया कि पांडव वास्तव में इंद्र के अवतार थे, जिनकी पत्नी का द्रौपदी के रूप में पुनर्जन्म हुआ था अतः नियति ने उन सबका साथ निश्चित कर दिया था ।

व्यास ने यह भी बताया कि एक युवती ने पति के लिए शिव से प्रार्थना की थी, और अपने उत्साह में, एक के बजाय पांच पति मांग लिए । इस स्त्री का पुनर्जन्म द्रौपदी के रूप में हुआ था और शिव ने उसकी इच्छा परिपूर्ण किया है इन कथाओं से सहमत होकर द्रुपद ने विवाह के लिए सहमति प्रदान की।

(i) पांचाल राजा द्रुपद ने अपनी पुत्री के विवाह के लिए कौन सी प्रतियोगिता आयोजित की थी?

(II) राजा द्रुपद को द्रौपदी को पांडवों की सामान्य पत्नी होने के लिए मनाने के लिए व्यास द्वारा दिया गया कोई भी एक स्पष्टीकरण लिखिए?

(III) द्रौपदी का पांडवों से किस प्रकार का विवाह हुआ था? इतिहासकारों के दो विचार दें

उत्तर -(i) द्रुपद ने एक प्रतियोगिता का आयोजन किया जहाँ चुनौती धनुष को चाप चढ़ाने और एक लक्ष्य को मारने की थी।

उत्तर-(ii) व्यास ने बताया कि पांडव वास्तव में इंद्र के अवतार थे। उन्होंने यह भी बताया कि भगवान शिव का आशीर्वाद पाने वाली एक महिला का अब द्रौपदी के रूप में पुनर्जन्म हो चुका है।

उत्तर -(III) यह बहुविवाह का उदाहरण था। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि इस तरह की शादी शायद समाज के कुछ वर्गों में प्रचलित थी। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि हिमालय क्षेत्र में ऐसी परंपरा मौजूद थी।

प्रश्न 2. दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

उत्तम पुत्रों का प्रजनन

यहाँ ऋग्वेद के एक मंत्र का एक अंश दिया गया है, जो इस ग्रंथ में संभवतः 1000 ईसा पूर्व में सम्मिलित किया गया था। इसे विवाह संस्कार का संचालन करते समय पुजारी द्वारा पढ़ा जाता था। आज भी कई हिंदू विवाहों में इसका प्रयोग होता है।

मैं इसे यहाँ से मुक्त करता हूँ किन्तु वहाँ से नहीं। मैंने उसे वहां मजबूती से स्थापित किया है जिससे इंद्र के अनुग्रह से इसके उत्तम पुत्र हों और पति का प्रेम का सौभाग्य इसे प्राप्त हों ।

इंद्र वीरता, युद्ध और वर्षा के प्रमुख देवता थे। "यहाँ" और "वहाँ" क्रमशः पिता और पति के गृह को संदर्भित करते हैं।

(i) मंत्र के सन्दर्भ में वर-वधू के दृष्टिकोण से विवाह के उद्धेश्य पर चर्चा कीजिए।

(ii) क्या मंत्र के निहितार्थ समान हैं या मतभेद हैं?

(iii) इंद्र कौन थे ? लोगों ने उनसे किस लिए प्रार्थना की?

उत्तर (i) : दुल्हन से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह अच्छे पुत्रों को जन्म देगी। लेकिन दूल्हे से उम्मीद की जा रही थी कि वह अपनी पत्नी से प्यार करे।

उत्तर (ii) : इन मंत्रों का अर्थ समान के साथ-साथ भिन्न-भिन्न बातों से भी है। वे समान हैं क्योंकि पति और उसकी पत्नी का आपसी प्यार उत्तम पुत्रों के जन्म में मदद कर सकता है। यह समान नहीं है क्योंकि पुत्रियों से अच्छी पुत्रियों को जन्म देने की उम्मीद नहीं की जाती थी ।

उत्तर (iii) : इंद्र हिंदू पौराणिक कथाओं के मुख्य देवताओं में से एक थे। वह वीरता, युद्ध और वर्षा के देवता थे। लोगों ने इंद्र से उत्तम पुत्रों का आशीर्वाद देने की प्रार्थना की

==========

4. विचारक, विश्वास और इमारतें

मुख्य अवधारणाएँ: -सांची की एक झलक

❖सांची के स्तूप को संरक्षित करने में भोपाल की बेगमों की भूमिका

➢सांची स्तूप की खोज 1818 में हुई थी। उस समय टीला और तीन तोरण द्वार अच्छी स्थिति में थे; केवल चौथा तोरण द्वार मौके पर गिरा हुआ था।

➢ 19वीं शताब्दी मेंयूरोपीय, पहले फ्रांसीसी और बाद में अंग्रेज, स्तूप के पूर्वी प्रवेश द्वार को पेरिस और लंदन के संग्रहालयों में ले जाना चाहते थे |

➢भोपाल की शाहजहां बेगम ने यूरोपीय लोगों को खुश करने के लिए प्लास्टर की प्रतिकृतियां बनाने का एक बुद्धिमानी भरा निर्णय लिया। इसके परिणामस्वरूप मूल प्रतिमा राज्य में ही रह गई।

➢भोपाल की शासक शाहजहां बेगम और उनकी उत्तराधिकारी सुल्तान जहां बेगम ने प्राचीन स्थल के संरक्षण के लिए अनुदान दिया |

➢सुल्तान जहां बेगम ने संग्रहालय, अतिथिगृह बनाने के लिए अनुदान दिया और जॉन मार्शल के खंडों के प्रकाशन हेतु अनुदान दिया |

➢आज यह जगह भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के एक सफल मरम्मत और संरक्षण का जीता जागता उदाहरण है |

यज्ञ और विवाद

❖विश्व इतिहास में सांस्कृतिक विकास

➢ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दी (500 ईसा पूर्व) का काल विश्व इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाता है, विशेष रूप से धार्मिक और सांस्कृतिक विकास में।

➢इस काल में ईरान में जरथूस्त्र जैसे चिन्तक,चीन में खुन्गत्सी, यूनान में सुकरात, प्लेटो और अरस्तू, भारत में महावीर और गौतम बुद्ध जैसे कई चिंतकों का उद्भव हुआ |

➢उन्होंने जीवन के रहस्यों और इंसानों और विश्व व्यवस्था के बीच संबंधों को समझने की कोशिश की।

➢भारत में यह वह समय भी था जब गंगा घाटी में शहर और राज्य विकसित हो रहे थे और सामाजिक एवं आर्थिक जीवन कई तरह से बदल रहा था।

➢भारत के ये मनीषी इस बदले हालात को भी समझने की कोशिश कर रहे थे |

यज्ञों की परम्परा :

- ऋग्वेद लगभग 1500 और 1000 ईसा पूर्व के बीच संकलित जिससे पूर्व वैदिक परंपरा की जानकारी मिलती है ।
- ऋग्वेद में विभिन्न देवताओं, विशेष रूप से अग्नि, इंद्र और सोम की स्तुति का संग्रह है ।

- यज्ञों के समय इन स्त्रोतों का उच्चारण किया जाता था, जहाँ लोग मवेशियों, बेटों, स्वास्थ्य, लंबी आयु आदि के लिए प्रार्थना करते थे।
- शुरू शुरू में यज्ञ सामूहिक रूप से किए जाते थे।
- बाद में कुछ यज्ञ घर के मुखिया द्वारा कल्याण के लिए किए जाने लगे। राजसूय और अश्वमेध जैसे जटिल यज्ञ, सरदार और राजाओं द्वारा किए जाते थेइनके अनुष्ठान के लिए उन्हें ब्राह्मण पुरोहितों पर निर्भर रहना पड़ता था ।

❖**नए प्रश्न:** इस समय, कई विचारकों ने कई प्रश्न उठाने शुरू किए, जिन्हें शुरुवात की पुस्तक उपनिषद में संकलित किया गया।

➢लोग जीवन का अर्थ, मृत्यु के बाद का जीवन और पुनर्जन्म के बारे में जानने के लिए उत्सुक थे।

➢वैदिक परंपरा से बाहर के दार्शनिक यह सवाल उठा रहे थे की परम सत्य एक होता है या अनेक ।

➢लोग यज्ञों के महत्व के बारे में भी चिंतन करने लगे।

वाद-विवाद और चर्चाएँ :

➢ कई विचारकयज्ञ परंपराओं, वेदों और परम सत्य के बारे में प्रश्न उठाते हैं। इसलिए विभिन्न विचारकों के बीच जीवंत चर्चाओं और विवादों की झलक मिलती है|

➢ ये चर्चाएँ कुटागरशालाओं (जिसका अर्थ है नुकीली छत वाली झोपड़ी) या ऐसे उपवनों में जहाँ घुमक्कड़ मनीषी ठहरा करते थे ।

➢ इन कुटागरशालाओं में शिक्षक एक-दूसरे को समझाने की कोशिश करते थे|अगर कोई अपने किसी प्रतिद्वंद्वी को समझाने में सफल हो जाता थातो वह अपने अनुयायियों के साथ उसका शिष्य बन जाता था। उस समय लगभग 64 संप्रदाय थे।

➢ महावीर और बुद्ध जैसे कई शिक्षकों ने वेदों के प्रभुत्व पर सवाल उठाए।

➢ उन्होंने माना कि जीवन के दुखों से मुक्ति पाने का प्रयास हर व्यक्ति स्वयं कर सकता है। जबकि ब्राह्मणवाद यह मानता था कि किसी व्यक्ति का अस्तित्व उसके विशिष्ट जाति या लिंग से निर्धारित होता है।

❖महावीर का संदेश (जैन शिक्षण और दर्शन)

➢ जैन धर्म एक प्राचीन धर्म है। ऋषभदेव पहले तीर्थंकर थे। तीर्थंकर वे शिक्षक होते हैं जो पुरुषों और महिलाओं को जीवन की नदी के पार पहुंचाते थे।

➢ वर्धमान महावीर 24वें तीर्थंकर थे।

➢महावीर की मुख्य शिक्षाएँ / दर्शन

सम्पूर्ण विश्व प्राणवान है: यह माना जाता है कि पत्थर, चट्टानें और जल में भी जीवन होता है।

- जीवन के प्रति अहिंसा खासकर मनुष्यों, जानवरों, पेड़-पौधों और कीड़े-मकौडों को न मारना | (अहिंसा)।
- जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्म के द्वारा निर्धारित होता है।
- कर्म के चक्र से मुक्ति के लिए त्याग और तपस्या की आवश्यकता होती है।
- यह संसार के त्याग से ही संभव है ; इसलिए, मुक्ति के लिए विहारों में निवास करना एक अनिवार्य नियम बन गया |

शिक्षाएँ:

- जैन भिक्षुओं और भिक्षुणियों को पाँच व्रत लेने चाहिए।

- हत्या न करना ।
- चोरी न करना।
- झूठ न बोलना ।
- संपत्ति संग्रह न करना ।
- ब्रह्मचर्य का पालन करना।

बुद्ध और आत्मज्ञान की खोज

➢ बुद्ध अपने समय के सबसे प्रभावशाली शिक्षकों में से एक थे। उनके संदेश उपमहाद्वीप और उससे आगे मध्य एशिया होते हुए चीन, कोरिया और जापान तक, और श्रीलंका से होते हुए समुद्र के पार म्यांमार, थाईलैंड और इंडोनेशिया तक फैले ।

➢ हमें बुद्ध के बारे में बौद्ध ग्रंथों और उनके अनुयायियों द्वारा लिखी गई जीवनी से पता चलता है|

➢ परंपराओं के अनुसार बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था और वे शाक्य कबीले के मुखिया के पुत्र थे। उन्हें जीवन के कटु यथार्थों से दूर उन्हें महल की चारदीवारी के अन्दर सब सुखों के बीच बड़ा किया गया |

➢ एक दिन वे एक शहर की यात्रा पर निकले जो उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ, जब उन्होंने एक बूढ़े व्यक्ति, एक बीमार व्यक्ति और एक लाश को देखा तो वे बहुत दुखी हुए।

➢ यह वह क्षण था जब उन्हें एहसास हुआ कि मानव शरीर का क्षय निश्चित है|

➢ उन्होंने एक गृह त्याग किए हुए सन्यासी को भी देखा, उसे मनो बुढ़ापे, बीमारी और मृत्यु से कोई परेशानी नहीं थी और उसने शांति प्राप्त कर ली थी।

➢ इसके तुरंत बाद, सिद्धार्थ ने सत्य की खोज में महल छोड़ दिया। उन्होंने वैराग्य सहित कई रास्ते खोजे।

➢ उन्होंने अतिवादी मार्ग को त्याग दिया और कई दिनों तक ध्यान करने के बाद अंततः ज्ञान प्राप्त किया और बुद्ध या प्रबुद्ध व्यक्ति के रूप में जाने गए। अपने जीवन के बाकी समय में उन्होंने धर्म या सम्यक जीवनयापन की शिक्षा दी|

❖बुद्ध की मुख्य शिक्षाएँ

- बुद्ध की शिक्षाएँ कहानियों के रूप में सुत्त पिटक से ली गई हैं। कुछ कहानियाँ उनकी अलौकिक शक्तियों का वर्णन करती हैं | दूसरी कहानियां दिखाती हैं कि बुद्ध ने अलौकिक शक्ति के बजाय विवेक और तर्क के आधार पर समझाने का प्रयास किया |
- उनकी मुख्य शिक्षाएँ इस प्रकार थीं-
- विश्व अनित्य है और लगातार बदल रहा है।
- यह आत्माविहीन है क्योंकि यहाँ कुछ भी स्थायी या शाश्वत नहीं है।
- इस क्षणभंगुर दुनिया में दुःख मनुष्य के जीवन का अन्तर्निहित तत्व है।
- घोर तपस्या और विषयासक्ति के बीच मध्य मार्ग का अनुसरण करके ही मनुष्य दुनिया दुखों से मुक्ति पा सकता है|
- बौद्ध धर्म के प्रारंभिक परम्पराओं में ईश्वर का होना या न होना अप्रासंगिक था।

- बौद्ध मत के अनुसार समाज का निर्माण इंसानों ने किया था न कि इश्वर ने इसीलिए उन्होंने राजाओं और गृहपतियों को दयावान और आचारवान होने की सलाह दी।
- बुद्ध ने पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति,आत्मज्ञान और निर्वाण के लिए व्यक्तिकेंद्रित हस्तक्षेप और सम्यक कर्म की कल्पना की |
- बौद्ध धर्म निर्वाण पर जोर देता है जिसका शाब्दिक अर्थ है अहंकार और इच्छाओं का शमन और इससे गृह त्याग करने वालों के दुःख के चक्र का अंत हो सकता था |
- बुद्ध का अपने शिष्यों के लिए अंतिम निर्देश था : "तुम सब अपने लिए खुद ही ज्योति बनो क्योंकि तुम्हें खुद ही अपनी मुक्ति का रास्ता ढूँढना है"

बुद्ध के अनुयायी

❖बौद्ध संघ

➢बुद्ध के शिष्यों का एक दल तैयार हुआ जिसे संघ के रूप में जाना जाता था। ये भिक्षुक धम्म के शिक्षक बन गए तथा सदा जीवन बिताने लगे ।

➢बुद्ध के अनुयायी कई सामाजिक समूहों से आए थे जैसे राजा, धनी व्यक्ति और गहपति, श्रमिक, दास और शिल्पकार आदि। लेकिन संघ में शामिल होने के बाद सभी को समान माना जाता था।

➢वे बहुत ही सादा जीवन जीते थे और उनके पास जीवित रहने के लिए केवल आवश्यक चीजें होती थीं|जैसे कि आम लोगों से दिन में एक बार भोजन प्राप्त करने के लिए एक कटोरा रखते थे । वे भिक्षा पर निर्भर रहते थे, इसलिए उन्हें भिक्खु कहा जाता था।

➢बाद में कई महिलाएँ संघ में शामिल हुईं | महाप्रजापति गौतमी पहली भिक्खुनी बनी जो बाद में महिलाओं की उपदेशिका बन गई| आगे चलकर वह थेरी बनी अर्थात जिन्होंने निर्वाण प्राप्त कर लिया हो |

➢सभी भिक्खु और भिक्खुनियों को संघ के नियमों का पालन करना होता है जिनका उल्लेख विनय पिटक पुस्तक में किया गया है।

स्तूप:

स्तूप क्यों बनाए जाते थे ?

➢वह पवित्र स्थान या टीले जहाँ बुद्ध के अवशेष जैसे उनके शरीर के अवशेष या उनके द्वारा इस्तेमाल की गई वस्तुएँ दफनाए गए थे, उन्हें स्तूप कहा जाता था।

➢अशोकवदन ग्रंथ के अनुसार, अशोक ने बुद्ध के अवशेषों के कुछ हिस्से हर महत्वपूर्ण शहर में वितरित किए और उन पर स्तूपों के निर्माण का आदेश दिया।

➢भरहुत, साँची और सारनाथ में स्तूपों का निर्माण दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ था।

स्तूपों कैसे बनाए गए

➢शिलालेखों से हमें पता चलता है कि स्तूपों के निर्माण के लिए सातवाहन आदि राजाओं द्वारा दान दिया गया था।

- कुछ दान व्यापारियों के श्रेणियों द्वारा दिए गए थे, जैसेकि हाथीदांत के कारीगरों द्वारा, जिन्होंने साँची के एक प्रवेश द्वार के हिस्से का वित्तपोषण किया था।
- सैकड़ों महिलाओं और पुरुषों ने दान के अभिलेखों में अपने नाम का उल्लेख किया है और कभी-कभी उस स्थान का नाम भी जोड़ा जहाँ से वे आए थे।
- भिक्खु और भिक्खुनियों ने इन स्मारकों के निर्माण में दान दिया।

स्तूप की संरचना

➢स्तूप (संस्कृत अर्थ टीला) का जन्म एक अर्ध गोलार्द्ध लिए हुए मिटटी के ढेर से हुआ जिसे अंड कहा गया |

➢बाद में, स्तूप गोलाकार, वर्गाकार आदि जैसी विभिन्न संरचनाओं में विकसित हुए।

➢अंड के ऊपर एक हर्मिका होती थी | यह छज्जे जैसा ढांचा देवताओं के निवास का प्रतिनिधित्व करता था |

➢हर्मिका से एक मस्तूल निकलता था जिसे यष्टि कहा जाता था जिसपर अक्सर एक छतरी लगी होती थी |

➢टीले के चारों ओर एक वेदिका थी, जो पवित्र स्थान को सामान्य दुनिया से अलग करती थी।

स्तूपों की खोज

अमरावती और सांची की नियति

➢अमरावती का महाचैत्य अब एक छोटा सा महत्वहीन टीला मात्र रह गया है, जिसका पूर्व स्वरूप पूरी तरह से नष्ट हो चुका है।

➢सांची स्तूप प्राचीन काल का सबसे संरक्षित स्मारक है। यह सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध केंद्र है जिसने शुरुआती बौद्ध धर्म को समझने में मदद की।

➢सांची स्तूप आज भी अच्छी स्थिति में पाया जाता है, लेकिन अमरावती नष्ट हो गया |

कारण :

- अमरावती की खोज थोड़ी पहले हो गई थी| विद्वान् इस खोज के पुरातात्विक महत्व को नहीं समझ पाए |
- पुरातत्वविद् एच एच कोल द्वारा मूल स्थान पर संरक्षण के लिए की गई अपील को सांची में स्वीकार किया गया, लेकिन अमरावती में इसे नहीं अपनाया गया।
- सांची स्तूप को रेलवे ठेकेदारों, बिल्डरों और यूरोप के संग्रहालयों में ले जाने के लिए खोज करने वालों की नज़रों से बचने में भी सफलता मिली, लेकिन अमरावती में ऐसा नहीं हुआ।
- अधिकारियों ने अमरावती स्तूप को संरक्षित करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया, लेकिन शासकों ने सांची के स्मारक को संरक्षित करने के लिए कई कदम उठाए हैं।

महायान बौद्ध मत का विकास

➢पहली शताब्दी ई. के बाद, बौद्ध विचारों और प्रथाओं में परिवर्तन हुए। चिंतन की इस नई परंपरा को महायान कहा जाता था| शाब्दिक रूप से; "बड़ा वाहन" क्योंकि पुराने बौद्ध धर्म में हीनयान या थेरवाद या लघुयान माना जाता था। इस दौरान महायान बौद्ध धर्म में कई बदलाव हुए |

➢प्रारंभिक बौद्ध शिक्षाओं (हीनयान) ने निर्वाण प्राप्त करने में आत्म-प्रयास को बहुत महत्व दिया था।

➢इसमें बुद्ध को एक मनुष्य के रूप में समझा जाता था। धीरे धीरे एक मुक्तिदाता के रूप में बुद्ध की कल्पना की जाने लगी |

➢यह माना जाता था कि वह वही है जो मोक्ष सुनिश्चित कर सकते थे ।

➢साथ ही, बोधिसत्व की अवधारणा भी विकसित हुई। बोधिसत्वों को अत्यधिक करुणामय जीव माना गया जो दूसरों को निर्वाण प्राप्त करने में मदद कर सकते थे।

➢बुद्ध और बोधिसत्वों की छवियों की पूजा इस परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई।

➢महायान बौद्ध धर्म के अनुयायियों ने पुरानी परंपरा को हीनयान या "लघुयान" के रूप में वर्णित किया।

पौराणिक हिंदू धर्म का उदय

➢इस समय हिंदू धर्म में मूर्ति पूजा का विकास हुआ। इस मूर्ति पूजा ने भक्त और भगवान के बीच प्रेम और भक्ति का बंधन बनाया जिसे भक्ति के रूप में जाना जाता है। पौराणिक हिंदू धर्म के भीतर दो महत्वपूर्ण परंपराएँ विकसित हुईं।

- **वैष्णववाद** हिंदू धर्म का एक रूप है जिसमें विष्णु को मुख्य देवता के रूप में पूजा जाता है। वैष्णववाद के मामले में; भगवान विष्णु के विभिन्न अवतारों या अवतारों के इर्द-गिर्द पंथ विकसित हुए। वैष्णववाद के अनुसार विष्णु के दस अवतार हैं।
- **अवतार:** यह माना जाता था की पापियों के बढ़ते प्रभाव से विश्व को बचाने के लिए देवता ने अवतार रूप धारण किया था|
- देश के विभिन्न हिस्सों में राम, कृष्ण, वराह, मीन, वामन आदि जैसे विभिन्न अवतार लोकप्रिय थे।
- शैव धर्म एक परंपरा है जिसके अंतर्गत शिव को मुख्य देवता माना जाता है।
- शिव का प्रतीक लिंग था, हालाँकि उन्हें कभी-कभी मानव आकृति के रूप में भी दर्शाया जाता था।
- इनमें से कुछ देवताओं को मूर्तियों में अलग-अलग प्रतीकों द्वारा दर्शाया गया था।
- इन मूर्तियों के अर्थ को समझने के लिए इतिहासकारों को पुराणों से परिचित होना पड़ता है।

मंदिरों का निर्माण

➢जब सांची जैसे स्थलों पर स्तूप अपना वर्तमान स्वरूप ले रहे थे, उसी समय देवी-देवताओं की मूर्तियों को रखने वाले पहले मंदिर भी बनाए जा रहे थे।

➢प्रारंभिक मंदिर एक छोटा चौकोर कमरा था, जिसे गर्भगृह कहा जाता था, जिसमें उपासक पूजा करने के लिए भीतर प्रविष्ट हो सकता था |

➢धीरे-धीरे, केंद्रीय मंदिर के ऊपर एक ऊंची संरचना, जिसे शिखर के रूप में जाना जाता है, का निर्माण किया गया।

➢मंदिर की दीवारों को अक्सर भित्तिचित्र उत्कीर्ण किए जाते थे |

➢सभा भवन (मंडप), विशाल दीवारें, प्रवेशद्वार और जल आपूर्ति की व्यवस्था ने बाद के मंदिरों को और भी अधिक विस्तृत बना दिया।

➢आरंभिक मंदिरों की एक अनूठी विशेषता यह थी कि इनमें से कुछ को कृत्रिम गुफाओं के रूप में विशाल चट्टानों को काट करके बनाया गया था।

➢उदाहरण के लिए, बराबर गुफा (बिहार) का निर्माण तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में अशोक द्वारा आजीविक संप्रदाय के लिए किया गया था। एलोरा महाराष्ट्र में स्थित कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण 8वीं शदी में पूरी पहाड़ी को काटकर किया गया था |

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. स्तूप में बालकनी (छज्जा) जैसी संरचना क्या होती है?

A) अंड
B) हर्मिका
C) यष्टि
D) छतरी

उत्तर – B- हर्मिका

2. स्तूप में रिक्त सीट किसका प्रतीक है?

A) बुद्ध का प्रथम उपदेश
B) बुद्ध के जीवन की एक घटना
C) बुद्ध की बुद्धिमता
D) बुद्ध का ध्यान

उत्तर – D- बुद्ध का ध्यान

3. किस बोद्ध ग्रंथों के अनुसार अशोक ने बुद्धा के अवशेषों को अलग अलग शहरों में बाँट दिया जिससे स्तूप बना सके?

A) अशोकावदान
B) महापरिनिब्बन
C) सुत्त पीटक
D) वेस्संतारा जातक

उत्तर – A- अशोकावदान

4. हैजियोग्राफी किसकी जीवनी होती है?

A) राजा
B) ब्राह्मण
C) विद्वान
D) संत

उत्तर – D- संत

5. ईसा पूर्व में ज़रथुस्त्र धार्मिक दर्शन कहाँ प्रचलित था?

A) यूनान
B) चीन
C) भारत
D) ईरान

उत्तर – D- ईरान

6. बोद्ध धर्म बुद्ध के जीवित रहते हुए और मृत्यु के बाद भी तेजी से क्यों फैला?

A) बुद्ध और उनके शिष्यों ने संस्कृत में शिक्षा दी
B) बोद्ध धर्म में धार्मिक विश्वासों को महत्त्व दिया गया
C) लोग पहले से चली आ रही सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था से असंतुष्ट थे
D) संघ में केवल पुरुषो को ही अनुमति थी

उत्तर – C- लोग पहले से चली आ रही सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था से असंतुष्ट थे

7. किस बोद्ध ग्रन्थ में बोद्ध धर्म का दर्शन निहित है?

A) विनय पिटक
B) सुत्त पिटक
C) अभिधम्म पिटक
D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर – C- अभिधम्म पिटक

8. किस देश में दीपवंश पुस्तक लिखी गयी?

A) श्रीलंका
B) नेपाल
C) चीन
D) इनमे से कोई नहीं

उत्तर – A- श्रीलंका

9. 1854 में अमरावती के अवशेषों की खोज किसने की?

A) वाल्टर इलियट
B) एच एच कोल
C) दोनों
D) इनमे से कोई नहीं

उत्तर- A- वाल्टर इलियट

10. साँची स्तूप में हाथी की मूर्ति किस मानवीय मूल्य को प्रस्तुत करती है?

A) ख़ुशी
B) लालच

C) आलस D) शक्ति और बुद्दिमता

उत्तर- D- शक्ति और बुद्दिमता

11.कथन (A) साँची का स्तूप जीवित है जबकि अमरावती का नहीं|

कारण (R) साँची स्तूप को 1818 में खोजा गया था उसका महत्ता विद्वानों द्वारा समझी गयी जबकि अमरावती की खोज 1796 में की गयी और वह अपनी जगह पर नहीं है|

A) A और R दोनों सही है R A का सही स्पष्टीकरण है

B) A और R दोनों सही है R A का सही स्पष्टीकरण नहीं है

C) A सही है R गलत है

D) A गलत है R सही है

उत्तर - A और R दोनों सही है R A का सही स्पष्टीकरण है

12. कथन (A) स्तूपों से मूर्तियों को निकाल कर चीन भेजा गया था|

कारण (R) उन मूर्तियों में जो सुन्दर और कीमती थी वे अपने लिए रखना चाहते थे|

A) A और R दोनों सही है R A का सही स्पष्टीकरण है

B) A और R दोनों सही है R A का सही स्पष्टीकरण नहीं है

C) A सही है R गलत है

D) A गलत है R सही है

उत्तर - A गलत है R सही है

13. कथन (A) छठी शताब्दी ईसा पूर्व में भारत में नए धर्मो का उदय हुआ |

कारण (R) लोगो ने अनुमान लगाना शुरू किया की वैदिक परम्परा में कर्मकांडों की रीति थी |

A) A और R दोनों सही है R A का सही स्पष्टीकरण है

B) A और R दोनों सही है R A का सही स्पष्टीकरण नहीं है

C) A सही है R गलत है

D) A गलत है R सही है

उत्तर - A और R दोनों सही है R A का सही स्पष्टीकरण है|

14. मथुरा से प्राप्त प्रतिमा का अध्ययन करे और सही उत्तर का चयन करे|

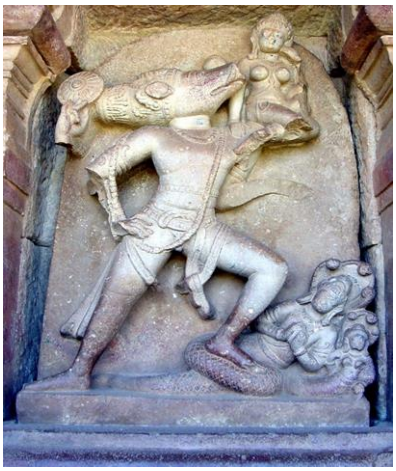

भगवान विष्णु पृथ्वी को क्यों बचा रहे है?

A) भगवान विष्णु विश्व के रक्षक है जो बचाने के लिए अवतार लेते है जब विनाश और विकार जन्म लेता है

B) वराह या बोअर विष्णु के दस अवतारों में से एक है |

C) पृथ्वी बुरी ताकतों के प्रभाव में आ चुकी थी |

D) उपर्युक्त सभी |

उत्तर – D- उपर्युक्त सभी

15. वैष्णववाद और शैववाद के बीच मुख्य अंतर क्या थे?

A) वैष्णववाद हिंदू धर्म से संबंधित था, शैववाद की जड़ें बौद्ध विचारधारा में हैं।

B) वैष्णववाद में, विष्णु को एक सैद्धांतिक देवता के रूप में पूजा जाता था, जबकि शैव धर्म में, शिव को मुख्य देवता माना जाता था।

C) वैष्णववाद उत्तर भारत में लोकप्रिय था जबकि शैववाद दक्षिण भारत में लोकप्रिय है।

D) इनमे से कोई भी नहीं।

उत्तर – B- वैष्णववाद में, विष्णु को एक सैद्धांतिक देवता के रूप में पूजा जाता था, जबकि शैव धर्म में, शिव को मुख्य देवता माना जाता था।

16. मिलान कीजिये-

	सूची I	सूची II
A	संसार क्षणिक है	आत्म-दंड
B	संसार निष्प्राण है	अनात
C	संसार दु: खों से भरा है	अनिक्का
D	संयम का मार्ग	दुक्ख

	A	B	C	D
A)	1	2	3	4
B)	2	1	4	3
C)	3	2	4	1
D)	3	2	1	4

उत्तर – C- 3 2 4 1

17 . मिलान कीजिये

	सूची I	सूची II
A	इसका अर्थ है महान यान	1.वैष्णववाद
B	इसका अर्थ है छोटा यान	2.हीनयान
C	यह भोपाल के पास धार्मिक शहर है	३. महायान
D	यह हिंदू धर्म का एक रूप है	4. सांची

	A	B	C	D
A)	1	3	4	2
B)	3	2	4	1
C)	3	2	1	4
D)	4	1	3	2

उत्तर B - 3 2 4 1

18. मिलान कीजिये

	सूची I	सूची II
A	चैत्य	1.बुद्ध के अवशेष शामिल हैं
B	विहार	2.बौद्ध भिक्षुओं के लिए प्रार्थना कक्ष
C	संघ	3.निवास स्थान बौद्ध भिक्षु

D स्तूप 4.साधुओं का संगठन

	A	B	C	D
A)	1	2	4	3
B)	1	3	4	2
C)	2	3	4	1
D)	3	4	2	1

उत्तर – C- 2 3 4 1

19. साँची स्तूप के संरक्षण ……ने धन प्रदान किया|

A) जॉन मार्शल B) भोपाल की बेगमों

C) एलेग्जेंडर कनिंगघम D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर – B- भोपाल की बेगमों

20. पहली बौद्ध भिक्षुणी ..... थी|

A) प्रभावती गुप्ता B) महाप्रजापति गौतमी

C) द्रोपदी D) सभी

उत्तर – B- महाप्रजापति गौतमी

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

Q1. छठी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान उत्पन्न हुए धार्मिक संप्रदायों को कितनी श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है ?

उत्तर- छठी शताब्दी ईसा पूर्व के धार्मिक संप्रदाय को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

1. वे धर्म जो खुले तौर पर वैदिक धर्म के विरुद्ध थे,

2. जिन धर्मों ने खुले तौर पर वैदिक धर्म का विरोध नहीं किया, लेकिन पूजा के नए सिद्धांतों और नए या पुराने देवत्व का प्रचार किया |

Q.2. पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व के मध्य को अक्सर विश्व इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ क्यों माना जाता है?

1. इसने ईरान में जरथुस्त्र, चीन में कोंग ज़ी, सुकरात, प्लेटो और ग्रीस में अरस्तू, और भारत में महावीर और गौतम बुद्ध जैसे विचारकों का उदय देखा।

2.यह वह समय भी था जब गंगा घाटी में नए राज्य और शहर विकसित हो रहे थे और सामाजिक और आर्थिक जीवन बदल रहा था .

प्रश्न 3. महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का उल्लेख करें?

उत्तर - बौद्ध दर्शन के अनुसार संसार क्षणभंगुर है और इसमें निरंतर परिवर्तन होता रहता है

साथ ही आत्माविहीन (आत्मा) है क्योंकि इसमें कुछ भी स्थायी या शाश्वत नहीं है। इस क्षणभंगुर संसार के भीतर, दुःख मानव जीवन के लिए अन्तर्निहित तत्व है। घोर तपस्या और आत्म भोग के बीच संयम के मार्ग का अनुसरण करके ही मनुष्य इन सांसारिक परेशानियों से ऊपर उठ सकता है। बुद्ध ने सामाजिक दुनिया को दैवीय उत्पत्ति के बजाय मनुष्यों की रचना के रूप में माना। बौद्ध परंपरा के अनुसार, उनके अनुयायियों के लिए उनके अंतिम शब्द थे: "अपने आप के लिए दीपक बनो क्योंकि आप सभी को अपनी मुक्ति स्वयं करनी होगी"।

प्रश्न 4. बुद्ध संघ क्या था? इसकी विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

1. बुद्ध ने "संघ" नामक भिक्षुओं के संगठन की स्थापना की।

2. इन भिक्षुओं ने "धम्म" के शिक्षक के रूप में कार्य किया। वे श्रमण सादा जीवन की पालना करते थे।

3. उनके पास केवल जीवन के लिए अति आवश्यक वस्तुओं के अलावा कुछ नहीं था ।

4. पहले केवल पुरुषों को 'संघ' में शामिल होने की अनुमति थी, उपरांत में संघ में प्रवेश हेतु महिलाओं को अनुमति दी गई थी

5. संघ में सभी सदस्यों को समान माना जाता था।

प्रश्न 5. बौद्ध साहित्य कैसे तैयार और संरक्षित किया गया था?

उत्तर : बुद्ध वाद-विवाद और चर्चा के माध्यम से शिक्षा देते थे। पुरुषों , महिलाओं और बच्चों ने इन चर्चाओं में भाग लिया और उन्होंने जो सुना, उस पर चर्चा की। अपने जीवन काल के दौरान उनकी कोई शिक्षा लिपिबद्ध नहीं की गयीं उनकी मृत्यु के बाद, उनके अनुयायियों ने वैशाली में एक परिषद बुलाई। इस परिषद ने उनकी सभी शिक्षाओं को संकलित किया। इस संकलन को त्रिपिटक के रूप में जाना जाता था जिसका शाब्दिक अर्थ है विभिन्न प्रकार के शिक्षाओं को रखने के लिए तीन टोकरियाँ। पहले उन्हें मौखिक रूप से प्रसारित किया गया और फिर उनकी विषय वस्तु और लंबाई के अनुसार लिखित और वर्गीकृत किया गया । जब बौद्ध धर्म नए क्षेत्रों में फैल गया तब श्रीलंका जैसे देशों में महावंश और दीपवंश जैसे अनेक ग्रंथ लिखे गए फा हियान और हवेनसांग जैसे तीर्थयात्रियों ने बुद्ध की शिक्षाओं का प्रसार करने के लिए बौद्ध ग्रंथों को अपने साथ रखा।

Q.6.महायान और हीनयान के बीच अंतर का वर्णन करें।

पहली शताब्दी ईस्वी तक, बौद्ध विचारों और प्रथाओं में परिवर्तन देखा गया। प्रारंभिक बौद्ध शिक्षाओं ने निर्वाण प्राप्त करने में आत्म-प्रयास को बहुत महत्व दिया था। बुद्ध ने आत्मज्ञान और निर्वाण अपने प्रयासों के माध्यम से प्राप्त किया । हालांकि, धीरे-धीरे एक मुक्तिदाता का विचार उभरा। यह माना जाता था कि वह वही था जो मोक्ष अथवा मुक्ति सुनिश्चित कर सकता थे । साथ साथ ही बोधिसत्व की अवधारणा भी विकसित हुयी । बोधिसत्वों को परम करुणामयी जीव के रूप में माना जाता था जो अपने सत्कार्यों से पुण्य कमाते थे लेकिन इसका उपयोग उन्होंने निर्वाण प्राप्त करने के लिए नहीं बल्कि दूसरों की सहायता करने के लिए किया। बुद्ध और बोधिसत्व की मूर्तियों की पूजा इस परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गईं। चिंतन की इस नवीन परंपरा को महायान कहा गया । पुरानी परंपरा को हीनयान के रूप में वर्णित किया गया ।

Q.7.बौद्ध धर्म में प्रतीकों के महत्व का वर्णन करें।

उत्तर : कई प्रारंभिक मूर्तिकारों ने बुद्ध को मानव रूप में नहीं दिखाया वरन , उन्होंने उनकी उपस्थिति प्रतीकों के माध्यम से दर्शाई रिक्त स्थान बुद्ध के ध्यान को इंगित करने के लिए था,और स्तूप महापरिनिर्वाण का प्रतिनिधित्व करने के लिए था प्राय: इस्तेमाल किया जाने वाला प्रतीक चक्र था। यह सारनाथ में दिए गए बुद्ध के पहले उपदेश का प्रतीक था । वृक्ष केवल एक वृक्ष नहीं था वरन वह बुद्ध के जीवन की एक घटना का प्रतीक था । ऐसे प्रतीकों को समझने के लिए, उन लोगों की परंपराओं से खुद को परिचित करना होगा जिन्होंने कला के इन कार्यों का निर्माण किया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Q1. चर्चा करें कि स्तूप कैसे और क्यों बनाए गए थे?

1. स्तूपों की रेलिंग और सजाये जाने हेतु निर्मित स्तंभों पर मिले शिलालेखों में भवन निर्माण के लिए दिए गए दान का उल्लेख है

2. कुछ दान सातवाहन जैसे राजाओं द्वारा किए गए तो कुछ दान शिल्पकारों और व्यापारियों की श्रेणियों द्वारा किये गए

3. उदाहरण के लिए सांची के एक तोरण द्वार का हिस्सा हाथी दांत का काम करने वाले शिल्प कारों के दान से बनाया गया था

4. सैकड़ों महिलाओं और पुरुषों ने दान के अभिलेखों में अपना नाम बताया है

5. कभी-कभी वह अपने गांव या शहर का नाम बताते हैं और कभी-कभी अपना पेशा और रिश्तेदारों के नाम भी बताते हैं

5. इन स्मारकों के निर्माण में भिक्षुओं और भिक्खुनियों ने भी योगदान दिया।

6. ऐसे अन्य स्थान भी थे जिन्हें पवित्र माना जाता था। ऐसा इसलिए था क्योंकि बुद्ध के अवशेष
जैसे कि उनके शरीर के अवशेष या उनके द्वारा इस्तेमाल की गई वस्तु को वहीं दफनाया गया था। ये टीले थे जिन्हें . स्तूप के रूप में जाना जाता था

7. स्तूपों को खड़ा करने की परंपरा भले ही बौद्ध-पूर्व रही हो, लेकिन उपरान्त में बौद्ध धर्म के साथ संबद्ध हो गईं।

8. चूंकि स्तूपों में पवित्र माने जाने वाले अवशेष थे, इसलिए पूरे स्तूप की पूजा की जाने लगी

9. दूसरी शताब्दी तक, भरहुत, सांची और सारनाथ सहित कई स्तूप निमित हो चुके थे ।

Q.2.महावीर की शिक्षाओं और जैन धर्म के विस्तार पर चर्चा करें

उत्तर : जैन धर्म का मूल दर्शन उत्तर भारत में महावीर के जन्म से पहले ही अस्तित्व में था
छठी शताब्दी ईसा पूर्व में वर्धमान, जिन्हें महावीर के नाम से जाना जाने लगा। जैन परंपरा के अनुसार महावीर से पहले 30 शिक्षक हो चुके थे उन्हें तीर्थंकर कहा जाता है यानी कि वे महापुरुष जो पुरुषों और महिलाओं को जीवन की नदी के पार पहुंचाते हैं

1. जैन धर्म में सबसे महत्वपूर्ण विचार यह है कि पूरी दुनिया प्राणवान है: यहां तक कि पत्थर, चट्टानें और जल में भी जीवन है।

2. जीवो के प्रति अहिंसा खासकर इंसान, और जानवरों, पेड़ पौधों और कीड़े मकोड़ों को ना मारना जैन दर्शन का केंद्र बिंदु है वस्तुतः जैन अहिंसा के सिद्धांत ने संपूर्ण भारतीय चिंतन परंपरा को प्रभावित किया है

3 जैन मान्यता के अनुसार जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्म के द्वारा निर्धारित होता है

4. कर्म के चक्र से मुक्त होने के लिए तप और त्याग की आवश्यकता होती है।

5. मुक्ति के लिए विहारों में निवास करना एक अनिवार्य नियम बन गया

6. जैन साधु और साध्वी पांच व्रत करते थे - हत्या ना करना, चोरी नहीं करना, झूठ ना बोलना, ब्रह्मचर्य और धन संग्रह ना करना

जैन धर्म का प्रसार

धीरे-धीरे जैन धर्म भारत के कई हिस्सों में फैल गया बौद्धों की तरह ही जैन विद्वानों ने प्राकृत, संस्कृत ,तमिल जैसी अनेक भाषाओं में काफी साहित्य का सृजन किया सैकड़ों वर्षो से इन ग्रंथों की पांडुलिपियाँ मंदिरों से जुड़े पुस्तकालय में संरक्षित है धार्मिक परंपराओं से जुड़ी हुई सबसे प्राचीन मूर्तियों में जैन तीर्थंकरों के उपासकों द्वारा बनवाई गई मूर्तियां भारतीय उपमहाद्वीप के कई हिस्सों में पाई गई है

Q.3 हिंदू धर्म के विकास में पुराणों की भूमिका का वर्णन करें।

मुक्तिदाता की कल्पना सिर्फ बौद्ध धर्म तक सीमित नहीं थी. हम पाते हैं कि इसी तरह के विश्वास एक अलग ढंग से उन परंपराओं में भी विकसित हो रहे थे जिन्हें आज हिंदू धर्म के नाम से जाना जाता है. इसमें वैष्णव और शैव परंपरा शामिल है. इन के अंतर्गत एक विशेष देवता की पूजा को खास महत्व दिया जाता था. इस प्रकार की आराधना में उपासना और ईश्वर के बीच का रिश्ता प्रेम और समर्पण का रिश्ता माना जाता था .इसे ही भक्ति कहते हैं. वैष्णववाद में कई अवतारोंके इर्द गिर्द पूजा पद्धतियां विकसित हुई. इस परंपरा के अंदर दस अवतारों की कल्पना है. संभवत : अलग-अलग अवतार देश के विभिन्न हिस्सों में लोकप्रिय थे. इन सभी स्थानीय देवताओं को विष्णु का रूप मान लेना एकीकृत धार्मिक परंपरा के निर्माण का एक महत्वपूर्ण तरीका था .कई

अवतारों को मूर्तियों के रूप में दिखाया गया है. दूसरे देवताओं की भी मूर्तियां बनी. शिव को उनके प्रतीक लिंग के रूप में बनाया जाता था लेकिन उन्हें कई बार मनुष्य के रूप में भी दिखाया गया है. यह सारे चित्रण देवताओं से जुड़ी हुई मिश्रित अवधारणाओं पर आधारित थे. उनकी खूबियों और प्रतीकों को उनके शिरों वस्त्र, आभूषण, आयुध और हाथ में धारण किए गए अन्य शुभ अस्त्र और बैठने की शैली से इंगित किया जाता था इन मूर्तियों के अंकन का मतलब समझने के लिए इतिहासकारों को इनसे जुड़ी कहानियों से परिचित होना पड़ता है. पुराणों की ज्यादातर कहानियां लोगों के आपसी मेल मिलाप से विकसित हुई. पुजारी, व्यापारी और सामान्य स्त्री पुरुष एक से दूसरी जगह आते जाते हुए अपने विश्वासों और अवधारणाओं का आदान प्रदान करते थे .उदाहरण के लिए हम यह जानते हैं कि वासुदेव कृष्ण मथुरा इलाके के महत्वपूर्ण देवता थे. कई शताब्दियों के दौरान उनकी पूजा देश के दूसरे इलाकों में भी फैल गई

प्र.4.प्रारम्भिक मंदिरों की स्थापत्य कला का वर्णन कीजिए।

उत्तर : जिस समय सांची जैसे जगहों में स्तूप अपने विकसित रूप में आ गए थे. उसी समय देवी देवताओं की मूर्तियों को रखने के लिए सबसे पहले मंदिर भी बनाए गए . शुरू के मंदिर एक चौकोर कमरे के रूप में थे जिन्हें गर्भगृह कहा जाता था . इनमें एक दरवाजा होता था, जिसमें उपासक मूर्ति की पूजा करने के लिए भीतर प्रविष्ट हो सकता था. धीरे-धीरे गर्भ गृह के ऊपर ऊंचा ढांचा बनाए जाने लगा जिसे शिखर कहा जाता था. मंदिर की दीवारों पर अक्सर भित्ति चित्र उत्कीर्ण किए जाते थे बाद के युग में मंदिरों के स्थापत्य का काफी विकास हुआ. अब मंदिरों के साथ विशाल सभा स्थल, ऊंची दीवारें और तोरण भी जुड़ गए. जलापूर्ति का भी इंतजाम किया जाने लगा. शुरु-शुरु के मंदिरों की एक खास बात यह थी कि इनमें से कुछ पहाड़ियों को काटकर खोखला कर के कृत्रिम गुफाओं के रूप में बनाए गए थे कृत्रिम गुफाएं बनाने की परंपरा काफी पुरानी थी सबसे पुरानी कृत्रिम गुफाएं ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में अशोक के आदेश से आजीवक संप्रदाय के संतों के लिए बनाई गई थी. यह परंपरा अलग-अलग चरणों में विकसित होती रही. इसका सबसे विकसित रूप में आठवीं शताब्दी के कैलाश नाथ के मंदिर के रूप में नजर आता है .जिसमें पूरी पहाड़ी काटकर उसे मंदिर का रूप दे दिया गया था .एक ताम्रपत्र अभिलेख एलोरा के प्रमुख तक्षक द्वारा इसका निर्माण समाप्त करने के बाद उसके आश्चर्य को व्यक्त करता है "हे भगवान यह मैंने कैसे बनाया"

स्त्रोत आधारित प्रश्न

Q1. दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्न का उत्तर दीजिए

स्तूप का निर्माण क्यों कराया गया?

यह विवरण महापरिनिब्बान से लिया गया है, जो सुत्त पिटक का हिस्सा है

परिनिर्वाण से पूर्व आनंद ने पूछा "भगवान हम तथागत के अवशेषों का क्या करेंगे?" बुद्ध ने कहा "तथागत के अवशेषों को विशेष आदर देकर खुद को मत रोको. धर्म उत्साही बनो. अपनी भलाई के लिए प्रयास करो"

लेकिन विशेष आग्रह करने पर बुद्ध बोले " उन्हें तथागत के लिए चार महापथों के चौक पर थुप बनाना चाहिए जो भी वहां धूप या माला चढ़ायेगा या वहां सिर नवायेगा या वहां पर हृदय में शांति लाएगा उन सबके लिए वह चिरकाल तक सुख और आनंद का कारण बनेगा.

प्रश्न 1 स्तूप क्या हैं?

उत्तर : स्तूप पवित्र स्थान थे। उन्होंने बुद्ध के शरीर के अवशेषों को संरक्षित किया इन सभी चीजों को स्तूपों में दफनाया गया था।

प्रश्न 2. यह अंश बौद्ध ग्रन्थ के किस अध्याय से लिया गया है?

उत्तर: यह अंश "महापरिनिर्वाण सुत्त" से लिया गया है।

Q3. तथागत कौन थे? उन्होंने स्तूप के महत्व के बारे में क्या बताया था?

उत्तर: तथागत बुद्ध का दूसरा नाम था। उन्होंने अच्छे कर्मों के महत्व पर जोर दिया। पवित्र स्थानों पर स्तूपों को स्थापित किया जाए। जो भी वहां धूप या माला चढ़ायेगा या वहां सिर नवायेगा या वहां पर हृदय में शांति लाएगा उन सबके लिए वह चिरकाल तक सुख और आनंद का कारण बनेगा.

(मानचित्र आधारित प्रश्न)

प्रश्न : C पर अंकित बौद्ध स्थल को पहचानो

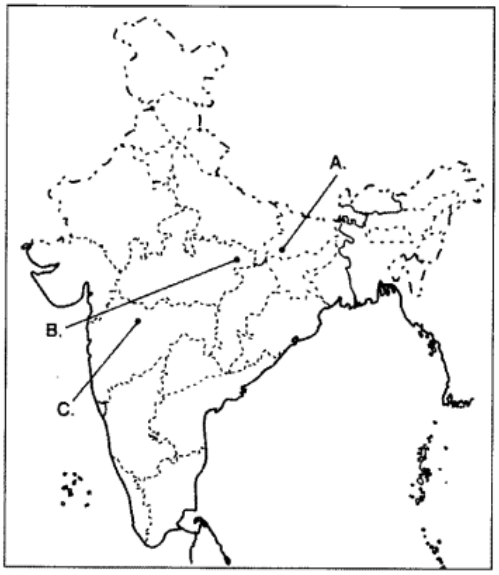

A) अजंता B)बोधगया C)साँची D)इनमे से कोई नहीं

उत्तर – A- अजंता

प्रश्न A पर अंकित बोद्ध स्थल को पहचानो जहाँ बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ

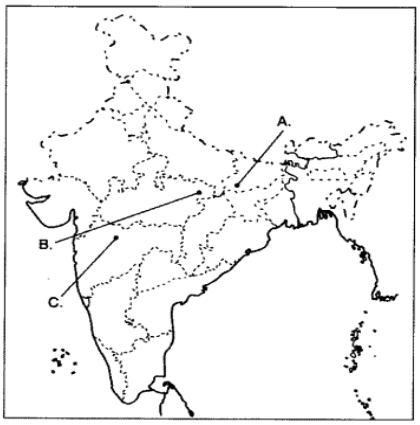

A) अजंता B)बोधगया C) साँची

D) इनमे से कोई नहीं

उत्तर – B- बोधगया

प्रश्न बोद्ध स्थल को पहचानो जहाँ बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ

A) कुशीनारा

B) भरहुत

C) अजंता

D) इनमे से कोई नहीं

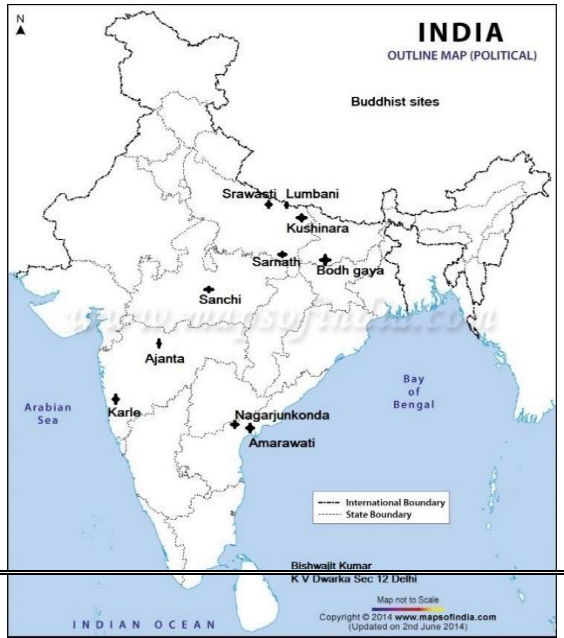

=========xxx========

5.यात्रियों के नजरिए से

(समाज के बारे मे उनकी समझ)

❖ अल-बिरूनी तथा किताबुल हिन्द :-

- अलबरूनी का जन्म **973 ई०**में ख्वारिज्म (आधुनिक उजबेकिस्तान) में हुआ।
- ख़्वारिज्म शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र था और अलबरूनी ने उस समय उपलब्ध सबसे अच्छी और बेहतर शिक्षा प्राप्त की थी।
- वह कई भाषाओं का ज्ञाता था जिनमें **सीरियाई, फारसी, हिब्रू तथा संस्कृत** शामिल हैं।
- हालाँकि वह यूनानी भाषा का जानकार नहीं था पर फिर भी वह प्लेटो तथा अन्य यूनानी दार्शनिकों के कार्यों से पूरी तरह परिचित था| जिन्हें उसने अरबी अनुवादों के माध्यम से पढ़ा था।
- सन्1017 ई० में ख़्वारिज्म पर आक्रमण के पश्चात सुल्तान महमूद गजनवी यहाँ के कई विद्वानों तथा कवियों को अपने साथ अपनी राजधानी गजनी ले गया।जिसमे अलबरूनी उज्बेकिस्तान से बंधक के रूप में आया था।
- **70 वर्ष की आयु** में अपनी मृत्यु तक वह गजनी में ही शेष जीवन बिताया| गजनी में ही अलबरूनी को भारत के प्रति रुचि विकसित हुई।

किताब-उल-हिंद

➢अल-बरूनी के पुस्तक का नाम किताब-उल-हिंद या तहकीक-ए-हिंद है|

➢किताब-उल-हिंद अरबी भाषा में लिखी गई है और इसे **80** अध्यायों में विभाजित किया गया है |

➢इसमें धर्म और दर्शन, त्यौहार, खगोल विज्ञान, कीमिया (जादुई शक्ति जो चीजों को बनाती है), रीति-रिवाज, सामाजिक जीवन, वजन और माप, मूर्तिकला, विज्ञान, कानून और माप तंत्र विज्ञान (माप का विज्ञान) जैसे विषयों पर चर्चा की गई है ।

➢वह प्रत्येक अध्याय की शुरुआत एक प्रश्न से करता है|जिसके बाद संस्कृतियों का वर्णन और तुलना की जाती है।

➢विद्वानों ने इस पद्धति को उसके गणितीय अभिरूचि का परिणाम माना है |

❖भारतीय समाज को समझने में बाधाएँ

➢अल-बरूनी ने कई अवरोधों की चर्चा की है जो भारतीय समाज को समझने में बाधा डालती थीं।

➢इनमें से पहला अवरोध भाषा थी। उसके अनुसार संस्कृत, अरबी और फारसी से इतनी भिन्न थी कि विचारों और सिद्धांतों को एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवादित करना आसन नहीं था |

➢उसके द्वारा चिन्हित दूसरा अवरोध धार्मिक अवस्था और प्रथा में भिन्नता थी |

❖अल-बरूनी का जाति व्यवस्था का वर्णन

➢अल-बरूनी ने भारतीय जाति व्यवस्था की तुलना अन्य समुदायों से करके उसे समझाने की कोशिश की।

➢उन्होंने कहा कि प्राचीन फारस में चार सामाजिक श्रेणियाँ थीं:

- ♦ घुड़सवार और शासक वर्ग
- ♦ अनुष्ठानिक पुरोहित और चिकित्सक,
- ♦ खगोलशास्त्री और अन्य वैज्ञानिक।
- ♦ किसान और कारीगर

➢उन्होंने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जैसे चार वर्णों के बारे में बताया। उन्होंने यह समझने की कोशिश की कि सामाजिक विभाजन सिर्फ़ भारत तक सीमित नहीं थे।

➢उन्होंने बताया कि इस्लाम में सभी लोगों को समान माना जाता था और अंतर सिर्फ़ धर्मपरायणता के पालन पर आधारित था।

➢लेकिन उन्होंने अपवित्रता की ब्राह्मणवादी धारणा को स्वीकार नहीं किया।

➢उन्होंने कहा कि जो भी चीज अपवित्रता की स्थिति में आती है, वह अपनी मूल पवित्रता की स्थिति को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करती है और सफल होती है। जैसे सूर्य हवा को शुद्ध करता है, और समुद्र में नमक पानी को प्रदूषित होने से बचाता है।

➢उनके अनुसार, जाति व्यवस्था में अंतर्निहित अपवित्रता की धारणा प्रकृति के नियमों के विरुद्ध थी।

➢अल-बिरूनी का जाति व्यवस्था का वर्णन मानक संस्कृत ग्रंथों से उनके परिचित होने से गहराई से प्रभावित था, जिसमें ब्राह्मणों के दृष्टिकोण से व्यवस्था को नियंत्रित करने वाले नियम निर्धारित किए गए थे।

इब्न बतूता की भारत यात्रा

➢उन्होंने **1332-33** में भारत की यात्रा शुरू की और **1333** में सिंध पहुँचे।

➢उन्होंने दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के बारे में सुना था, जो कला और साहित्य के उदार संरक्षक थे, इसलिए वे दिल्ली के लिए रवाना हुए।

➢सुल्तान इब्न बतूता की विद्वता से प्रभावित हुआ और उसे दिल्ली का काजी या न्यायाधीश नियुक्त किया।

इब्न बतूता और भारतीय शहर

- शहर उन लोगों को अवसर प्रदान करते थे जिनके पास आवश्यक प्रेरणा, संसाधन और कौशल थे।शहर घनी आबादी वाले और समृद्ध थे। अधिकांश शहरों में भीड़-भाड़ वाली सड़कें और चमकीले और रंगीन बाज़ार थे।

- इब्न बतूता ने दिल्ली को एक विशाल शहर बताया, जिसकी आबादी बहुत ज़्यादा थी, जो भारत में सबसे बड़ा था। दौलताबाद (महाराष्ट्र में) भी कम नहीं था, और आकार में दिल्ली से मुकाबला करता था।

संचार की एक अनूठी प्रणाली (डाक प्रणाली)

घोड़े पर	पैदल
1. इसे ***उलुक*** के नाम से जाना जाता था।	1. इसे ***दावा*** के नाम से जाना जाता था।
2. इस चौकी में हर 4 मील की दूरी पर शाही घोड़े तैनात रहते थे।	2. इस चौकी में प्रति मील तीन स्टेशन थे।
3. यह दावा से धीमी है।	3. यह उलुक से तेज़ है।

फ्रांस्वा बर्नियर

➢फ्रांस्वा बर्नियर जन्म से फ्रांसीसी और पेशे से डॉक्टर था। वे एक राजनीतिक, दार्शनिक और इतिहासकार था।

➢वह अवसरों की तलाश में मुगल साम्राज्य में आया था।

➢वह 1656 से 1668 तक बारह वर्षों तक भारत में रहा।

➢वह सम्राट शाहजहाँ के सबसे बड़े बेटे राजकुमार दारा शिकोह का चिकित्सक था और बाद में मुगल दरबार में अर्मेनियाई कुलीन दानिशमंद खान के साथ बुद्धिजीवी और वैज्ञानिक के रूप में रहा ।

❖मुगलसाम्राज्यमेंयात्राएँऔरपूर्वसेपश्चिमकीतुलना

➢मुगल साम्राज्य में बर्नियर की यात्राएँ विस्तृत अवलोकन और आलोचनात्मक अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।

➢उन्होंने अपना प्रमुख लेखन फ्रांस के राजा लुई XIV को समर्पित किया।

➢उन्होंने मुगल भारत की तुलना समकालीन यूरोप से की।

➢उन्होंने यूरोपीय समाज की श्रेष्ठता पर जोर दिया और भारत को पश्चिमी दुनिया से दयनीय बताया।

❖भूमि स्वामित्व का प्रश्न

➢बर्नियर के अनुसार, मुगल भारत और यूरोप के बीच एक बुनियादी अंतर भारतीय समाज में निजी भूस्वामित्व का अभाव था।

➢उन्हें निजी संपत्ति के गुणों में दृढ़ विश्वास था।

➢भूमि पर राजकीय स्वामित्व को राज्य और उसके निवासियों, दोनों के लिए हानिकारक माना।

➢उनका मानना था कि मुगल सम्राट सारी भूमि का मालिक था और उसे कुलीनों में बांटता था।

➢उन्होंने तर्क दिया कि राजकीय स्वामित्व के कारण अपने बच्चों को भूमि नहीं दे सकते थे ।

➢इसलिए, वे उत्पादन के निर्वाह और विस्तार के स्तर को बनाए रखने के लिए किसी भी दीर्घकालिक निवेश के खिलाफ थे।

➢निजी संपत्ति की अनुपस्थिति ने भूमि को बेहतर बनाए रखने और सुधारने के लिए यूरोप की तरह 'सुधार करने वाले' जमींदारों के वर्ग को उभरने से रोका।

➢इसने कृषि को बर्बाद कर दिया और किसानों पर अत्याचार किया तथा समाज में सभी वर्गों के जीवन स्तर में गिरावट आई, सिवाय शासक और अभिजात वर्ग के।

❖प्राच्य निरंकुशता पर विचार

➢भूमि स्वामित्व के बारे में बर्नियर के विवरण ने 18वीं शताब्दी के बाद से पश्चिमी विचारकों को प्रभावित किया।

➢उदाहरण के लिए, फ्रांसीसी दार्शनिक मोंटेस्क्यू ने बर्नियर के विवरण का उपयोग किया और प्राच्य निरंकुशवाद के सिद्धांत को विकसित किया।

➢इस विचार के अनुसार एशिया (ओरिएंट या पूर्व) में राजा अपने विषयों प्रजा पर पूर्ण अधिकार रखते थे और सभी भूमि के मालिक थे।

➢कोई निजी संपत्ति नहीं थी। राजा और आमिर वर्ग को छोड़कर सभी लोग जीवित रहने के लिए संघर्ष करते थे।

❖एशियाई उत्पादन पद्धति की अवधारणा: ➢कार्ल मार्क्स ने एशियाई उत्पादन पद्धति के रूप में प्राच्य निरंकुशता के विचार को और विकसित किया।

➢मार्क्स ने देखा कि उपनिवेशवाद से पहले, अधिशेष का अधिग्रहण राज्य द्वारा होता था।

➢इससे एक ऐसे समाज का उदय हुआ जो बड़ी संख्या में स्वायत्त और समतावादी ग्राम समुदायों से बना था।

➢जब तक अधिशेष की आपूर्ति निर्बाध रूप से जारी रहती थी इनकी स्वायत्तता का सम्मान किया जाता था |

➢लेकिन वास्तव में, ग्रामीण समाज की यह तस्वीर सच्चाई से बहुत दूर थी। 16-17वीं शताब्दी के दौरान ग्रामीण समाज में बड़े पैमाने पर सामाजिक और आर्थिक भेदभाव था। समाज के एक छोर पर बड़े ज़मींदार थे जिन्हें ज़मीन पर अधिकार प्राप्त थे और दूसरी तरफ़ भूमिहीन मज़दूर और बीच में बड़े किसान थे जो मज़दूरों को काम पर रखते थे।

महिलाए: दासियां, सती तथा श्रमिक

दास:

- दासों को बाज़ारों में खुलेआम बेचा जाता था। किसी भी अन्य वस्तु की तरह, दासों का आदान-प्रदान उपहार के रूप में किया जाता था।
- जब इब्न बतूता सिंध पहुँचा तो उसने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के लिए उपहार के रूप में "घोड़े, ऊँट और दास" खरीदे।
- दासों के बीच काफ़ी विभेद था।
- सुल्तान की सेवा में कुछ महिला दासियाँ संगीत और नृत्य में निपुण थीं।
- सुल्तान द्वारा अपने रईसों पर नज़र रखने के लिए भी महिला दासों का इस्तेमाल किया जाता था।
- दासों का इस्तेमाल घरेलू काम के लिए किया जाता था। इब्न बतूता ने उल्लेख किया है कि पुरुष और महिला दास पालकी या डोला ढोते थे।
- दासों, विशेष रूप से घरेलू काम के लिए आवश्यक महिला दासों की कीमत बहुत कम थी।

➢सती प्रथा

- बर्नियर ने अपने लेख में सती प्रथा का विस्तृत विवरण दिया है।
- उन्होंने उल्लेख किया कि जहाँ कुछ महिलाएँ खुशी-खुशी मौत को गले लगाती थीं, वहीं अन्य को मरने के लिए बाध्य किया जाता था।

▪ उन्होंने लाहौर में बाल सती प्रथा पर भी ध्यान दिया, जहाँ एक बारह वर्षीय युवा विधवा ने बलि दी थी।

➢महिला श्रमिक

▪ कृषि और गैर-कृषि उत्पादन दोनों में महिला श्रम महत्वपूर्ण था।

▪ व्यापारी परिवारों की महिलाएँ वाणिज्यिक गतिविधियों में भाग लेती थीं।

▪ इसलिए, यह असंभव लगता है कि महिलाओं को उनके घरों के निजी स्थानों तक ही सीमित रखा गया था।

वस्तुनिस्ठ प्रश्नोत्तर (1 अंक)

1. कुशल डाक व्यवस्था की जानकारी हमें किसके वृतांत से मिलती है?

ए. अल बिरुनी　　बी. इब्न -बतूता

सी. बर्नियर　　डी. फाहयान

उत्तर : बी

2. हिंदुस्तान को 'रोमांचक अवसरों से भरा उपमहाद्वीप' किसने कहा?

ए. अल्बिरुनी　　बी. बर्नियर

सी. इब्न बतूता　　डी. इनमे से कोई भी नहीं

उत्तर : सी

3. निम्नलिखित में से किस यात्री को मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा दिल्ली का काजी या न्यायाधीश नियुक्त किया गया था?

ए. अल बिरूनी　　बी. गजनवी के महमूद

सी. ए और बी दोनों　　डी. इब्न-बतूता

उत्तर : डी

4. निम्नलिखित में से भारत में अल-बिरूनी द्वारा सामना किया जाने वाले मुख्य अवरोध कोनसे थे|

ए. भाषा　　बी. धार्मिक अभ्यास

सी. ए और बी दोनों　　डी. इनमें से कोई भी नहीं

उत्तर : सी

5. किताब-उल-हिंद किसने लिखी?

ए. फ्रेंकोइस बर्नियर　　बी. इब्न बतूता

सी. अल बरुनी　　डी. सुल्तान मोहम्मद

उत्तर : सी

6. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिएः

1- किताब-उल हिंद: अल-बिरूनी

2- रिहाला : इब्न बतूता

3- आइन-ए-अकबरी : अब्दुल रज्जाक समरकंदी

उपरोक्त में से कौन सी पुस्तक उनके लेखकों से सही सुमेलित है/हैं?

ए. केवल 1 और 2　　बी. केवल 2

सी. केवल 3　　डी . केवल 2 और 3

उत्तर : ए

7. बर्नियर के अनुसार, भूमि के राजकीय स्वामित्व का एक दुष्परिणाम था :

1. किसानों का भूमि का स्वामी होना

2. किसानों को भूमि के स्वामित्व का अभाव

3. खराब कृषि उत्पादन

4. बड़ी मात्रा में निवेश

उपरोक्त विकल्पों में से कौन सा सही है?

ए. 1 और 2 बी. 2 और 3

सी. 3 और 4 डी. 2 और 4

उत्तर : बी

8. नगर सेठ कौन थे?

ए. व्यापारी समुदाय के प्रमुख बी. ग्राम समुदाय के मुखिया

सी. ग्राम पंचायत के मुखिया डी. इनमे से कोई भी नहीं

उत्तर :ए

9. फ्रांस्वा बर्नियर ने किस राजा को अपनी प्रमुख रचनाएँ समर्पित कीं?

ए. लुई XIII बी. लुई XIV

सी. लुई XV डी. लुई XVI

उत्तर : बी

10. एक विदेशी यात्री इब्न-बतूता द्वारा दिए गए दो कथन नीचे दिए गए हैं:

एक को अभिकथन (ए) और दूसरे को कारण (आर) के रूप में अंकित किया गया है।

ए) भारतीय शहर बहुत समृद्ध थे।

आर) भारतीय शहरों में रोमांचक अवसरों की भरमार है।

ए. (ए) और (आर) दोनों सही हैं और (आर) (ए) की सही व्याख्या है

बी. (ए) और (आर) दोनों सही हैं, लेकिन (आर) (ए) की सही व्याख्या नहीं है

सी. (ए) सही है, लेकिन (आर) सही नहीं है

डी. (आर) सही है, लेकिन (ए) सही नहीं है

उत्तर :ए

11. इब्न बतूता ने भारत की जिन दो चीजों को असामान्य माना –

ए.दूध तथा अंडे बी.नारियल तथा पान

सी.पपीता तथा टमाटर डी. खरबूजा तथा तरबूजा

उत्तर.बी

12.इब्न बतूता जिस देश से आया था, उसका नाम था?

ए. मोरक्को बी.उज्बेकिस्तान

सी. हेरात डी. पुर्तगाल

उत्तर:ए

13.मुगलकालीन शहरों को शिविर नगर किसने कहा था ?

ए.बर्नियर ने बी.मोटेस्क्यु ने

सी.इब्नन बतूता डी.इनमे से कोई नही

उत्तर:ए

14.भारत की जिन तीन भाषाओं के ग्रंथों के अरबी भाषा में हुए अनुवादों से अल-बिरूनी परिचित था वह थीं ?

ए.संस्कृत, पाली तथा प्राकृत　　बी. हिन्दी, संस्कृत तथा तमिल

सी.हिन्दी, उर्दू तथा संस्कृत　　डी.संस्कृत, तेलगू, मलयालम

उत्तर: ए

15.अल-बिरूनी की कृति किताब अल-हिन्द जिस भाषा में मूलतः लिखी गई, वह थी ?

ए.अरबी भाषा　　बी.संस्कृत भाषा

सी.यूनानी भाषा　　डी.हिबू भाषा

उत्तर: ए

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक)

1. किताब-उल-हिंद पर एक टिप्पणी लिखिए।

- उत्तर: किताब-उल-हिंद अल-बिरूनी द्वारा लिखा गया था।
- इसे तहकीक -ए -हिंद के नाम से भी जाना जाता था।
- यह अरबी में लिखा गया था।
- इसे 80 अध्यायों में बांटा गया है।
- उन्होंने हिंदू धर्मों और दर्शन, त्योहारों, रीति-रिवाजों और परंपरा, लोगों के सामाजिक और आर्थिक और राजनीतिक जीवन पर विस्तृत प्रकाश डाला है।
- प्रत्येक अध्याय में उन्होंने एक विशिष्ट शैली को अपनाया और शुरुआत में एक प्रश्न किया। इसके बाद संस्कृत परंपरा पर आधारित वर्णन किया गया।
- अंत में उन्होंने भारतीय संस्कृति की तुलना अन्य संस्कृतियों से की।
- उन्होंने जिस ज्यामितीय संरचना का अनुसरण किया, वह अपनी सटीकता और पूर्वानुमेयता के लिए जानी जाती है।
- इस संरचना का मुख्य कारण अल-बिरूनी का गणितीय अभिविन्यास था।

2. इब्न बतूता द्वारा उपलब्ध कराए गए दासता के प्रमाणों का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर: बतूता ने भारत में प्रचलित दास प्रथा का विस्तृत विवरण दिया है।

- दिल्ली के सुल्तान-मुहम्मद बिन तुगलक के पास बड़ी संख्या में गुलाम थे।
- इनमें से अधिकांश दासों को आक्रमणों के दौरान जबरन पकड़ लिया गया था।
- बहुत से लोगों ने घोर गरीबी के कारण अपने बच्चों को दास के रूप में बेच दिया।
- इस दौरान दासों को उपहार के रूप में भी चढ़ाया जाता था।
- बतूता जब उससे मिलने आया, तो सुल्तान के लिए उसे पेश करने के लिए कई घोड़े, ऊंट और दास भी लाया। सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक ने स्वयं एक धार्मिक उपदेशक नसीरुद्दीन को दो सौ दास भेंट किए थे।
- उन दिनों नोबेल का इस्तेमाल गुलाम रखने के लिए किया जाता था। इन दासों के माध्यम से सुल्तान को कुलीनों की गतिविधियों तथा साम्राज्य की अन्य सभी महत्वपूर्ण घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती थी।
- दासियाँ अमीरों (रईसों) के घर में दासी का काम करती थीं। इन महिलाओं ने सुल्तान को अपने आकाओं (अर्थात् कुलीनों) की गतिविधियों के बारे में सूचित किया।

- अधिकांश दास घरेलू काम करते थे और इन दासों और दरबारी दासों की स्थिति में बहुत अंतर था।

3. सती प्रथा के ऐसे कौन से तत्व थे जिन्होंने बर्नियर का ध्यान आकर्षित किया?

उत्तर: बर्नियर के अनुसार सती प्रथा ने पश्चिमी और पूर्वी समाज में महिलाओं के व्यवहार में अंतर दिखाया।

- उन्होंने देखा कि कैसे एक बाल विधवा को चिता पर चिल्लाते हुए जबरदस्ती जला दिया गया था, जबकि कई बड़ी उम्र की महिलाओं को उनके भाग्य भरोसे छोड़ दिया गया था।

निम्नलिखित तत्वों ने उनका ध्यान आकर्षित किया।

- इस क्रूर प्रथा के तहत एक जीवित विधवा को उसके पति की चिता पर जबरन बिठाया गया।
- लोगों को उसके प्रति कोई सहानुभूति नहीं थी।
- विधवा स्त्रिया सती प्रथा की अनिच्छुक शिकार होती थी। उसेउन्हेंसती होने के लिए मजबूर किया जाता था।

4. अल-बिरूनी के भारत आने का उद्देश्य क्या था?

(1) उन लोगों की मदद करना जो उनके साथ धार्मिक प्रश्नों पर चर्चा करना चाहते हैं।

(2) उन लोगों के लिए सूचना के भंडार के रूप में जो उनके साथ जुड़ना चाहते हैं।

5.मध्ययुगीन काल (11वीं से 17वीं सदी) के दौरान भारत आने वाले किन्हीं दो यात्रियों के नाम बताइए?

1. उज्बेकिस्तान से अल बिरूनी (11वीं सदी)

2. इब्न-बतूता (14वीं शताब्दी) उत्तर पश्चिमी अफ्रीका, मोरक्को से।

3. फ्रांस से फ्रेंकोइस बर्नियर (17 वीं शताब्दी)।

6. मुग़ल साम्राज्य में बर्नियर की नज़र में अधिक जटिल सामाजिक वास्तविकता क्या थी?

उत्तर। (i) उन्होंने महसूस किया कि कारीगरों को अपने निर्माताओं की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए प्रोत्साहन नहीं मिला क्योंकि लाभ राज्य द्वारा विनियोजित किया गया था। इस प्रकार उत्पादन गिरावट के कगार पर था।

(ii) साथ ही, उन्होंने स्वीकार किया कि भारी मात्रा में भारत से निर्यात होने के कारण दुनिया की कीमती धातुएं (सोना और चांदी) का में भारत में प्रवाह हो रहा था|

7. अल-बिरूनी ने किन "बाधाओं" की चर्चा की, जिसने उन्हें भारत को समझने में बाधा डाली?

उत्तर। भारत को समझने में उन्हें निम्नलिखित बाधाओं का सामना करना पड़ा -

1. भाषा की समस्याएं - उनके अनुसार संस्कृत अरबी और फारसी से इतनी अलग थी कि विचारों और अवधारणाओं का एक भाषा से अनुवाद आसानी से नहीं किया जा सकता था।

2. धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं में अंतर - वह मुस्लिम थे और उनकी धार्मिक मान्यताएं और प्रथाएं भारत से काफी अलग थीं।

3. स्थानीय आबादी का आत्म-अवशोषण और क्षेत्रीयता - उनके अनुसार तीसरा अवरोध भारतीयों की अलगाव नीति थी।

8. बर्नियर ने पूर्व और पश्चिम की तुलना कैसे की?

• बर्नियर ने देश के कई हिस्सों की यात्रा की, और भारत की तुलना यूरोप की स्थिति से करते हुए अक्सर लिखा।

• उन्होंने अपना प्रमुख लेखन फ्रांस के राजा लुई XIV को समर्पित किया, और उनके कई अन्य कार्य प्रभावशाली अधिकारियों और मंत्रियों को पत्रों के रूप में लिखे गए।

• उन्होंने हर मामले में भारत को यूरोप की तुलना में कमजोर (अवांछित) के रूप में देखा।

• लेकिन उनका आकलन हमेशा सटीक नहीं होता। हालाँकि, बाद में उनकी रचनाएँ बेहद लोकप्रिय हुईं।

9. भारत में डाक व्यवस्था के बारे में इब्न बतूता के विवरण का वर्णन करें।

• इब्न बतूता डाक प्रणाली की दक्षता से भी चकित था जिसने व्यापारियों को न केवल सूचना भेजने और लंबी दूरी तक हुंडी भेजने की अनुमति दी, बल्कि अल्प सूचना पर आवश्यक सामान भेजने की भी अनुमति दी।

• डाक व्यवस्था इतनी कुशल थी कि सिंध से दिल्ली पहुंचने में जहां पचास दिन लगते थे, वहीं जासूसों की खबरें डाक व्यवस्था के जरिए सुल्तान तक महज पांच दिनों में पहुंच जाती थीं।

• उन्होंने दो प्रकार की डाक प्रणाली का उल्लेख किया -1 'उलुक' नामक अश्व डाक व्यवस्था - शाही घोड़ों द्वारा चलाया जाता था और दूसरी पैदल डाक व्यवस्था में प्रति मील 3 स्टेशन होते थे जिन्हें 'दावा' कहा जाता था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंक)

1. "इब्न बतूता ने उपमहाद्वीप में शहरों को रोमांचक अवसरों से भरे पाया" |उनके द्वारा दिए गए कथन का सबूतों के साथ जवाब दें?

• इब्न बतूता ने उपमहाद्वीप में शहरों को उन लोगों के लिए रोमांचक अवसरों से भरा पाया जिनके पास आवश्यक कला संसाधन और कौशल थे।

• वे घनी आबादी वाले और समृद्ध थे

• इन शहरों में गलियां और बाजार हैं जहां तरह-तरह के सामान हैं।

• दिल्ली एक विशाल शहर, बड़ी आबादी वाला ओर भारत में सबसे बड़ा शहर् था।

• दौलताबाद (महाराष्ट्र में) भी कम नहीं था, और आकार में दिल्ली को आसानी से टक्कर देता था।

• बाज़ार न केवल आर्थिक लेन-देन के स्थान थे, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का भी केंद्र थे। अधिकांश बाज़ारों में एक मस्जिद और एक मंदिर था, और उनमें से कुछ में नर्तकों, संगीतकारों और गायकों द्वारा सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए स्थान चिह्नित किए गए थे।

• इतिहासकारों ने उसके वृत्तांत का उपयोग यह सुझाव देने के लिए किया है कि कस्बों ने अपनी संपत्ति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा गांवों से प्राप्त किया है।

• उपमहाद्वीप भारतीय निर्माताओं के साथ व्यापार और वाणिज्य के अंतर-एशियाई नेटवर्क के साथ अच्छी तरह से एकीकृत था।

• भारतीय कपड़ा, सूती कपड़ा, महीन मलमल, रेशम, ब्रोकेड और साटन, अंतरराष्ट्रीय बाजार में बहुत मांग में थे।

2. भारत में भूमि संपत्ति के स्वामित्व के बारे में बर्नियर की धारणा की व्याख्या करें।

उन्होंने लगातार मुगल भारत की तुलना समकालीन यूरोप से की, आमतौर पर बाद की श्रेष्ठता पर जोर दिया। उन्होंने कथित मतभेदों को क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित (व्यवस्थित) किया, ताकि भारत पश्चिमी दुनिया से हीन दिखाई दे

भारत में निजी संपत्ति का अभाव

• बर्नियर के अनुसार, मुगल भारत और यूरोप के बीच मूलभूत अंतरों में से एक भारत में भूमि में निजी संपत्ति की कमी थी। वह निजी संपत्ति के गुणों में दृढ़ विश्वास रखता था, और देखता था कि ताज का स्वामित्व राज्य और उसके लोगों दोनों पर था।

सभी भूमि का राजकीय स्वामित्व

• उन्होंने सोचा कि मुगल बादशाह के पास सारी जमीन का स्वामित्व है और इसे अपने रईसों में बांट दिया, इसका अर्थव्यवस्था और समाज के लिए विनाशकारी परिणाम थे।

कोई विरासत नहीं कोई निवेश नहीं

• भूमि के ताज के स्वामित्व के कारण, भूमिधारक अपनी भूमि अपने बच्चों को नहीं दे सकते थे। इसलिए उत्पादन के निर्वाह और विस्तार में कोई दीर्घकालिक निवेश था।

भूमि का कोई सुधार नहीं

• भूमि में निजी संपत्ति की अनुपस्थिति ने "सुधार" जमींदारों के वर्ग के उद्भव को रोका था, जीवन स्तर में गिरावट आई थी

• इससे कृषि की एकसमान बर्बादी, पूर्वी क्षेत्र का अत्यधिक उत्पीड़न और समाज के सभी वर्गों के जीवन स्तर में लगातार गिरावट आई थी। हे

शासक वर्ग द्वारा गरीब लोग

• इसके विस्तार के रूप में, बर्नियर ने भारतीय समाज को एक अमीर और शक्तिशाली शासक वर्ग के अल्पसंख्यक के अधीन गरीब लोगों से मिलकर बताया।

• बर्नियर ने पूरे विश्वास के साथ कहा कि, "भारत में कोई मध्य राज्य नहीं था।" और राजा "भिखारियों और बर्बरों" का राजा था; इसके शहर और कस्बे बर्बाद हो गए थे और "खराब हवा" से दूषित हो गए थे; और उसके खेत, झाड़ियों से फैले हुए" और महामारी के दलदल से भरे हुए हैं।

संप्रभुता का पारिश्रमिक

• उदाहरण के लिए, अकबर के शासनकाल के सोलहवीं शताब्दी के आधिकारिक इतिहासकार अबुल फजल ने भू-राजस्व को "संप्रभुता के पारिश्रमिक" के रूप में वर्णित किया है।

• यूरोपीय यात्री ऐसे दावों को लगान मानते थे क्योंकि भू-राजस्व की मांग अक्सर बहुत अधिक होती थी। हालाँकि, यह फसल पर एक कर था।

3. अल-बिरूनी द्वारा जाति व्यवस्था पर वर्णन के बारे में संक्षेप में बताएं

• उत्तर। अल-बिरूनी ने अन्य समाजों में समानता की तलाश करके जाति व्यवस्था को समझाने की कोशिश की।

• उन्होंने कहा कि प्राचीन फारस में, चार सामाजिक श्रेणियों को मान्यता दी गई थी।

• वे थे (1) शूरवीरों और राजकुमारों;

• (2) भिक्षु, अग्नि-पुजारी और

• (3) वकील; चिकित्सक, खगोलविद और अन्य वैज्ञानिक; और अंत में

• (4) किसान और कारीगर।

• लेकिन उनका सुझाव है कि सामाजिक विभाजन भारत के लिए अद्वितीय नहीं थे। साथ ही उन्होंने कहा कि इस्लाम के भीतर सभी पुरुषों को समान माना जाता है।

• हालांकि अल-बिरूनी ने जाति व्यवस्था के ब्राह्मणवादी विवरण को स्वीकार किया, लेकिन उन्होंने प्रदूषण की धारणा को अस्वीकार कर दिया।

• उनका कहना है कि जो कुछ भी अशुद्धता में पड़ता है वह अपनी पवित्रता की मूल स्थिति को पुनः प्राप्त कर लेता है।

• सूरज हवा को शुद्ध करता है, और समुद्र में नमक पानी को प्रदूषित होने से रोकता है।

• यदि ऐसा न होता तो पृथ्वी पर जीवन असंभव होता। उनके अनुसार सामाजिक प्रदूषण की अवधारणा प्रकृति के नियमों के विपरीत थी।

स्रोत आधारित प्रश्न (4 अंक)

निम्नलिखित स्त्रोत को ध्यानपूर्वक अध्ययन कीजिए एवं निचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए|

1. घोड़े पर और पैदल

इस प्रकार इब्न बतूता ने डाक प्रणाली का वर्णन किया: भारत में डाक प्रणाली दो प्रकार की होती है: 'उलुक' नामक घोड़े की चौकी को शाही घोड़ों द्वारा हर चार मील की दूरी पर तैनात किया जाता है। फुट पोस्ट में तीन स्टेशनों का परमिट है। इसे 'दावा' कहा जाता है, यानी एक मील का एक तिहाई ..... अब, एक मील के हर तिहाई पर अच्छी तरह से आबादी वाला गांव है, जिसके बाहर तीन मंडप हैं जिनमें पुरुषों को कमर कस कर शुरू करने के लिए तैयार किया जाता है। उनमें से प्रत्येक के पास एक छड़ है, जिसकी लंबाई दो हाथ है और शीर्ष पर तांबे की घंटियाँ हैं। जब कुरियर नगर से प्रस्थान करता है, तब वह एक हाथ में चिट्ठी, और दूसरी ओर घंटियों समेत छड़ी को थामे रहता है; और वह जितनी तेजी से दौड़ सकता है दौड़ता है। मंडप में बैठे लोग घंटी बजने की आवाज सुनते ही तैयार हो जाते हैं। जैसे ही कूरियर उनके पास पहुंचता है उनमें से एक उससे पत्र लेता है और तेज गति से दौड़ता है जब तक कि वह अगले दावे तक नहीं पहुंच जाता। और यही प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक कि पत्र अपने गंतव्य तक नहीं पहुंच जाता। यह पदधारी अश्व-पद से भी तेज है; और अक्सर इसका उपयोग खुरासान के फल के परिवहन के लिए किया जाता है जो भारत में बहुत वांछित हैं।

(i) डाक प्रणाली के दो प्रकारों के नाम लिखिए।

उत्तर : डाक व्यवस्था दो प्रकार की होती थी - घोड़ा डाक व्यवस्था और पैदल डाक व्यवस्था।

(ii) बताएं कि पैदल डाक व्यवस्था कैसे काम करती थी|

उत्तर : पैदल डाक सेवा में तीन चरण होते थे। जिन्हें दावा कहा जाता था।

(iii) इब्न-बतूआ क्यों सोचता था कि भारत में डाक व्यवस्था कुशल थी?

उत्तर : इब्न बतूता के अनुसार सिंध से दिल्ली की यात्रा पचास दिनों में पूरी हुई थी। दूसरी ओर, गुप्तचरों द्वारा दी गई सारी जानकारी राजा के पास पाँच दिनों के भीतर पहुँच गई; इब्न बतूता पाँच दिनों के भीतर राजा तक पहुँचे जासूसों की दक्षता पर काफी चकित था।

2. वर्ण व्यवस्था

यह अल-बिरूनी का वर्ण व्यवस्था का लेखा-जोखा है: उच्चतम जाति ब्राह्मण हैं, जिनके बारे में हिंदुओं की किताबें हमें बताती हैं कि वे ब्राह्मण के सिर से बनाई गई थीं। और चूंकि ब्रह्म प्रकृति नामक शक्ति का ही दूसरा नाम है, और सिर …… शरीर का सबसे ऊंचा हिस्सा है, ब्राह्मण पूरे जीनस का पसंद हिस्सा हैं। इसलिए, हिंदू उन्हें मानव जाति में सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। अगली जाति क्षत्रिय हैं, जैसा कि वे कहते हैं, ब्राह्मण के कंधों और हाथों से बनाया गया था। उनकी डिग्री ब्राह्मण से बहुत नीचे नहीं है। उनके बाद वैश्य का अनुसरण करें, जो ब्राह्मण की जांघ से उत्पन्न हुए थे। शूद्र जो उनके चरणों से उत्पन्न हुए थे। 59 बाद के दो वर्गों के बीच कोई बहुत बड़ी दूरी नहीं है। हालाँकि, ये वर्ग एक-दूसरे से भिन्न होने के कारण, वे एक ही कस्बों और गाँवों में एक साथ रहते हैं, एक ही घरों और आवासों में मिश्रित होते हैं।

i) अल-बिरूनी के वर्ण व्यवस्था के विवरण की व्याख्या कीजिए।

उत्तर। (i) अल-बिरूनी के अनुसार, उच्च जाति वे ब्राह्मण हैं जिन्हें ब्रह्म के सिर से बनाया गया था। हिंदू उन्हें मानव जाति में सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। दूसरी जाति क्षत्रिय हैं जो ब्राह्मण के कंधों और हाथों से बनी हैं। उनके बाद वैश्य हैं, जो ब्रह्म की जांघ से बने हैं। अंतिम जाति शूद्र थी जो उनके पैरों से उत्पन्न हुई थी।

ii) क्या आप इस प्रकार के विभाजन को उचित मानते हैं? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर (ii) नहीं, इस प्रकार का विभाजन उचित नहीं है क्योंकि कोई भी जन्म से ऊँचा या नीचा नहीं होता है। मनुष्य अपने कर्मों से ऊंच-नीच बनते हैं।

iii)। वास्तविक जीवन में व्यवस्था को कठोर कैसे नहीं छोड़ा गया? समझाना।

उत्तर (iii) यह सही है कि यह व्यवस्था वास्तविक जीवन में काफी कठोर नहीं थी क्योंकि ये जातियां एक ही कस्बों और गांवों में एक साथ रहती हैं, एक ही घर और आवास में मिश्रित होती हैं।

========xxxx======

6.भक्ति-सूफी परंपराएँ

मुख्य अवधारणाएँ:

❖प्रारंभिक भक्ति परंपराएँ

सगुण (गुणों सहित) निर्गुण (गुणरहित)।

(i) सगुण में भक्ति परंपराएँ शामिल थीं जो शिव, विष्णु और उनके अवतारों (अवतारों) और देवी या देवी के रूपों जैसे विशिष्ट देवताओं की पूजा पर केंद्रित थीं।

(ii) उदाहरण - अलवार, नयनार, वीरशैव

(i) निर्गुण भक्ति में ईश्वर की अमूर्त रूप में पूजा की जाती है ।

(ii) उदाहरण- कबीर पंथी, सूफी संत, योगी, नाथपंथी, मदारी, कन्नड़

❖ पूजा प्रणालियों का समन्वय

इतिहासकारों के अनुसार पंथों के समन्वय की दो प्रक्रियाएँ थीं:

1. ब्राह्मणवादी विचारों के प्रसार की प्रक्रिया। उदाहरण के लिए, सभी पौराणिक ग्रंथों को सरल संस्कृत पद्य में रचित, संकलित और संरक्षित किया गया था और महिलाओं और शूद्रों को उनका अध्ययन करने की अनुमति दे दी गई थी।

2. ब्राह्मणों ने अन्य सामाजिक श्रेणियों की मान्यताओं और प्रथाओं को स्वीकार किया और उनमें बदलाव किया। उदाहरण के लिए, उड़ीसा के पुरी में, विष्णु के प्रमुख देवता की पहचान जगन्नाथ के रूप में की गई| देवी की पूजा को मुख्य पुरुष देवताओं की पत्नी के रूप में पौराणिक ढांचे में शामिल किया गया, जैसे कि विष्णु की पत्नी के रूप में लक्ष्मी और शिव की पत्नी के रूप में पार्वती।

❖ "महान" और "लघु" परंपराएँ

• ये शब्द रॉबर्ट रेडफील्ड नामक समाजशास्त्री द्वारा गढ़े गए थे।

• पुजारी और शासकों सहित प्रमुख सामाजिक श्रेणियों में होने वाले अनुष्ठान और रीति-रिवाज, एक महान परंपरा के हिस्से के रूप में वर्गीकृत किए गए।

• स्थानीय प्रथाएँ जो ज़रूरी नहीं कि महान परंपरा से मेल खाती हों, उन्हें छोटी परंपरा की श्रेणी में शामिल किया गया।

❖ उपासना की कविताएँ: प्रारंभिक भक्ति परंपराएँ

- कवि-संत नेता के रूप में उभरे, जिनके इर्द-गिर्द भक्तों का एक समुदाय विकसित हुआ।
- धर्म के इतिहासकार अक्सर भक्ति परंपराओं को दो व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत करते हैं:
- सगुण (विशेषण सहित) निर्गुण (विशेषण विहीन)

❖तमिलनाडु के अलवार और नयनार संत

➢छठी शताब्दी के दौरान, दक्षिण भारत में कुछ भक्ति आंदोलनों का नेतृत्व अलवारों और नयनारों ने किया था।

➢अलवर का शाब्दिक अर्थ है वे लोग जो विष्णु की भक्ति में लीन हैं।

➢नयनार शब्द का अर्थ है वे लोग जो शिव के भक्त थे।

➢वे अपने ईष्ट की स्तुति में तमिल में भजन गाते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते थे।

➢कुछ इतिहासकारों के अनुसार, अलवारों और नयनारों ने जाति व्यवस्था और ब्राह्मणों की प्रभुता के खिलाफ़ विरोध का आंदोलन शुरू किया और व्यवस्था को सुधारने का प्रयास किया।

➢भक्त विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि से आते थे जैसे कारीगर, किसान और यहाँ तक कि ऐसी जाति से भी जिन्हें "अछूत" माना जाता था

❖ स्त्री भक्त

- महिलाओं की उपस्थिति इस परंपरा की सबसे बड़ी विशिष्टता थी |उदाहरण के लिए, एक महिला अलवार, अंडाल की भक्ति गीत की रचनाएँ व्यापक रूप से गाई गईं (और आज भी गाई जाती हैं)।
- अंडाल खुद को विष्णु की प्रेमिका के रूप में देखती थी; उनके छंद अपने ईष्ट के प्रति उनके प्रेम को व्यक्त करते हैं।
- एक अन्य महिला, करईकल अम्मैयार, शिव की भक्त थी, जिसने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या का मार्ग अपनाया।

❖राज्य के साथ संबंध

➢चोल शासकों ने भक्ति परंपराओं का समर्थन किया और शिव और विष्णु के लिए मंदिर बनवाए।

➢चोल शासकों ने अक्सर दैवीय सहायता का दावा करने और अपनी सत्ता के प्रदर्शन करने के लिए मंदिरों का निर्माण किया और लोकप्रिय संतों के परिकल्पना को दर्शाने के लिए उन मंदिरों को पत्थर और धातु की मूर्तियों से सजाया।

➢उन्होंने कांस्य मूर्तिकला में शिव के शानदार चित्रण किए।

➢चोल राजाओं ने शाही संरक्षण में तमिल शैव भजनों के गायन का प्रचालन मंदिरों में भी की|उन्हें एक ग्रन्थ (तेवरम) में एकत्र करने और व्यवस्थित करने की पहल की।

➢इन संतों के मूर्तियों को त्योहारों के दौरान जुलूस के रूप में ले जाया जाता था।

❖ कर्नाटक में वीरशैव परंपरा

➢बारहवीं शताब्दी के दौरान, कर्नाटक में वीरशैव आंदोलन की शुरुआत बसवन्ना (1106-68) नामक एक ब्राह्मण ने की थी।

➢वह प्रारंभ में जैन थे और चालुक्य राजा के दरबार में मंत्री थे।

➢उनके अनुयायी वीरशैव (शिव के वीर) या लिंगायत (लिंग धारण करने वाले) के रूप में जाने जाते थे|

लिंगायत और उनकी मान्यताएँ

▪लिंगायत आज भी एक महत्वपूर्ण समुदाय हैं। वे शिव की पूजा लिंग के रूप में करते हैं।

▪वे बाएं कंधे पर चांदी के पिटारे में एक छोटा शिवलिंग पहनते हैं।

▪जंगम या घुमक्कड़ साधुओं का सम्मान किया जाता था।

▪लिंगायतों का मानना है कि मृत्यु के बादभक्त शिव में लीं हो जायेंगे और वे इस दुनिया में वापस नहीं आएँगे ।

▪इसलिए, वे धर्मशास्त्रों में बताए गए दाह संस्कार जैसे अंतिम संस्कार नहीं करते हैं। इसके बजाय, वे अपने शव को औपचारिक रूप से दफनाते हैं।

जाति व्यवस्था को चुनौती

▪लिंगायतों ने जाति के विचार और ब्राह्मणों द्वारा कुछ समूहों को "दूषित" होने के विचार को चुनौती दी|

▪उन्होंने पुनर्जन्म के सिद्धांत पर भी सवाल उठाया।

▪इसीलिए ब्राह्मणवादी सामाजिक व्यवस्था के भीतर हाशिए पर पड़े कई अनुयायी भी इस भक्ति परंपरा की ओर आकर्षित हुए।

▪लिंगायतों ने उन विचारों का भी पालन किया, जिन्हें धर्मशास्त्रों ने अस्वीकार कर दिया थाजैसे कि यौवन के बाद विवाह और विधवाओं का पुनर्विवाह।

▪वीरशैव परंपरा के बारे में हमारा ज्ञान, आंदोलन में शामिल होने वालों के द्वारा कन्नड़ में रचित वचनों (शाब्दिक रूप से, कहावतों) से आता है।

❖ इस्लामी परम्पराएं

• 711 में मुहम्मद कासिम नामक एक अरब जनरल ने सिंध पर विजय प्राप्त की, जो खलीफा के क्षेत्र का हिस्सा बन गया।

• बाद में तुर्क और अफगानों ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की। इस्लाम कई क्षेत्रों में शासकों का एक स्वीकृत धर्म था, यह स्थिति मुगल साम्राज्य की स्थापना के साथ-साथ कई क्षेत्रीय राज्यों में भी जारी रहा।

• लोगों ने जजिया नामक कर का भुगतान किया और मुसलमानों द्वारा संरक्षित होने का अधिकार प्राप्त किया।

• लोक प्रचालन में इस्लाम की लोकप्रिय प्रथा

• इस्लाम अपनाने वाले सभी लोगों ने आस्था के पाँच मुख्य बातों को स्वीकार किया:

- एक ईश्वर है-अल्लाह, और पैगंबर मुहम्मद उनके दूत (शाहद) हैं।
- दिन में पाँच बार नमाज़ अदा करना (नमाज़/सलात)।
- दान (ज़कात) देना।
- रमज़ान (सौम) के महीने में रोजा रखना।
- मक्का की तीर्थयात्रा (हज) करना।

• समुदायों के नाम

• लोगों को कभी-कभी उस क्षेत्र के संदर्भ में पहचाना जाता है जहाँ से वे आए थे।

- तुर्की शासकों को **तुरुश्क** के रूप में नामित किया गया था।
- ताजिकिस्तान से आये लोगों को **ताजिक** कहा जाता था।

- **पारसिक** फारस के लोग को कहा जाता था।
- तुर्क और अफ़गानों को **शक** और **यवन** कहा जाता था।
- प्रवासी समुदायों के लिए सामान्य शब्द **म्लेच्छ** था।

❖इस्लामी शब्दावली

●उल्मा-इस्लामिक अध्ययन के विद्वान, जो इस्लामी परंपराओं को संरक्षित करने के लिए विभिन्न धार्मिक, न्यायिक और शिक्षण कार्य करते हैं।

●शरिया-वह कानून जो मुस्लिम समुदाय को निर्देशित करता है। इसमें शामिल हैं-

●कुरान-पवित्र पुस्तक

●हदीस-पैगंबर की परंपराएँ

●क़ियास-सदृश्यता के आधार पर तर्क

●इजमा-समुदाय की आम सहमति।

●ज़िम्मी का अर्थ है "संरक्षित" और यह अरबी शब्द ज़िम्मा, सुरक्षा से लिया गया है।

सूफ़ीमत का विकास: इस्लाम में रहस्यवादी अध्यात्मिक विचारधारा वाले लोगों के समूह को सूफ़ी कहा जाता था। यह एक अंग्रेज़ी शब्द है। इस्लाम में सूफ़ीवाद के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द तसव्वुफ़ है।

➢इतिहासकारों ने सूफ़ी शब्द को कई तरीकों से परिभाषित किया है-

▪यह सूफ़ से लिया गया है जिसका अर्थ है ऊन जो सूफ़ियों द्वारा पहने जाने वाले मोटे ऊनी कपड़े की ओर इंगित करता है।

▪यह पैगंबर की मस्जिदों के बाहर के मंच से भी लिया गया भी हो सकता है जिसे सफा कहते थे जहाँ अनुयायी आस्था के बारे में जानने के लिए इकट्ठा होते थे।

➢वे कुरान की व्याख्या करने की हठधर्मी परिभाषाओं और विद्वत्तापूर्ण तरीकों की आलोचना करते थे।

➢उन्होंने ईश्वर के प्रति गहन भक्ति और प्रेम के माध्यम से उनके आदेश का पालन करके मुक्ति प्राप्त करने पर ज़ोर दिया।

➢उन्होंने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कुरान की व्याख्या पर ज़ोर दिया।

❖खानकाह

➢खानकाह या धर्मशालाएँ धार्मिक स्थान थे जहाँ सूफी संत अपने अनुयायियों को शिक्षा देते थे और अभ्यास करते थे। खानकाह का नियंत्रण एक पीर, शेख या मुर्शिद के अधीन था। उन्होंने विभिन्न कर्तव्यों का पालन किया-

▪उन्होंने अपने शिष्यों (मुरीदों) को नामांकित किया और एक उत्तराधिकारी (खलीफा) नियुक्त किया

▪उन्होंने आध्यात्मिक आचरण और लोगों और गुरु के बीच बातचीत के लिए नियम स्थापित किए।

❖सिलसिला

➢सिलसिला का शाब्दिक अर्थ एक श्रृंखला है जो गुरु और शिष्य के बीच एक सतत कड़ी को दर्शाता है, जो पैगंबर मुहम्मद तक जुडी हुई है।

➢इस कड़ी के माध्यम से आध्यात्मिक शक्ति और आशीर्वाद भक्तों तक पहुँचाया जाता है।

➢सूफी सिलसिले बारहवीं शताब्दी के आसपास इस्लामी दुनिया के विभिन्न हिस्सों में दिखाई देने लगे।

बा-शरिया और बे-शरिया सूफी

बा-शरिया	बे-शरिया
1.बा-शरिया वे सूफी थे जो शरीयत का पालन करते थे	1.बे-शरिया वे थे जो शरीयत की अनदेखी करते थे|
2. उन्होंने खुद को खानकाहों के इर्द-गिर्द संगठित किया।	2. उन्होंने खानकाहों का बहिष्कार किया और भिक्षावृत्ति अपनाई तथा ब्रह्मचर्य का पालन किया|
3. उन्हें वली कहा जाता था।	3. उन्हें अलग-अलग नामों से जाना जाता था- क़लंदर, मदारी, मलंग, हैदरी आदि।

❖उपमहाद्वीप में चिश्ती सिलसिला

➢चिश्ती भारत में सबसे प्रभावशाली समूह थे। **चिश्ती खानकाह में जीवन:** ▪खानकाह सामाजिक जीवन का केंद्रबिंदु था। इसमें कई छोटे कमरे और एक बड़ा हॉल शामिल था जहाँ सहवासी और आगंतुक रहते थे और प्रार्थना करते थे। ▪शेख हॉल की छत पर एक छोटे से कमरे में रहते थे, जहाँ वे सुबह और शाम आगंतुकों से मिलते थे।

▪वहाँ एक खुली रसोई (लंगर) थी। सुबह से शाम तक सभी क्षेत्रों के लोग विभिन्न मामलों में शेख से आशीर्वाद लेने आते थे।

▪अन्य आगंतुकों में अमीर हसन सिजजी और अमीर खुसरू जैसे कवि और दरबारी इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी शामिल थे और उन सभी ने शेख के बारे में लिखा था।

▪चिश्तियों ने अपने खानकाह में अलग-अलग प्रथाएँ अपनाईं जैसे

●शेख के सामने झुकना

●आगंतुकों को पानी पिलाना

●दीक्षा लेने वालों के सिर मुंडवाना

●योगिक व्यायाम

चिश्ती उपासना : ज़ियारत और कव्वाली

• सूफी संतों की आध्यात्मिक कृपा (बरकत) प्राप्त करने के लिए संतों के मजारों पर जियारत नामक तीर्थयात्रा की जाती थी।

• सबसे अधिक पूजनीय दरगाहों में से एक ख्वाजा मुईनुद्दीन की दरगाह है, जिन्हें "गरीब नवाज़" (गरीबों को सांत्वना देने वाला) के नाम से जाना जाता है।

• मुहम्मद बिन तुगलक इस दरगाह पर आने वाले पहले सुल्तान थे।

• मकबरे के निर्माण के लिए सबसे पहले पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में मालवा के सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी ने धन मुहैया कराया था।

• अकबर ने चौदह बार इस मकबरे का दौरा किया, उसने 1580 तक इस परंपरा को कायम रखा।

• सूफी लोग ईश्वर को ज़िक्र (ईश्वरीय नाम) पढ़कर या समा (शाब्दिक रूप से, "श्रवण") या आध्यात्मिक संगीत के माध्यम से उपासना में विश्वास रखते थे\|

• समा चिश्तियों के उपासना पद्धति का अभिन्न अंग थाऔर स्थानीय भक्ति परंपराओं के साथ जुड़ने से सम्बंधित था।

भाषा और संपर्क

• दिल्ली में, चिश्ती सिलसिले से जुड़े लोग हिंदवी में बातचीत करते थे, जो आम लोगों की भाषा थी।
• बाबा फ़रीद जैसे अन्य सूफ़ियों ने स्थानीय भाषा में छंदों की रचना की, जिन्हें गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया गया।
• मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित प्रेम-आख्यान, पद्मावत चित्तौड़ के राजा पद्मिनी और रतनसेन के प्रेम के इर्द-गिर्द घूमता है।
• अन्य रचनाएँ लोरीनामा या लोरी और शादीनामा या विवाह गीतों के रूप में थीं।

सूफ़ी और राज्य

➢चिश्ती परंपरा की विशेषता संयम और सादगी का जीवन था |जिसमे सत्ता से दूर रहने पर बल दिया जाता था |
➢सूफ़ियों ने राजनीतिक अभिजात वर्ग से बिना मांगे अनुदान और दान स्वीकार किया। सुल्तानों ने धर्मार्थ ट्रस्ट (औकाफ़) की स्थापना की, जो धर्मशालाओं के लिए दान के रूप में थे और कर-मुक्त भूमि (इनाम) प्रदान करते थे।
➢चिश्ती नकद और वस्तु के रूप में दान स्वीकार करते थे और भोजन, कपड़े, रहने के लिए व्यवस्था और समा जैसी अनुष्ठानिक आवश्यकताओं के लिए इसका उपयोग करते थे। सूफियों की नैतिक उच्च स्थिति ने सभी क्षेत्रों के लोगों को आकर्षित किया।
➢राजा सूफियों को सम्मान देकर उनका समर्थन प्राप्त करना चाहते थे।
➢शासक सूफियों के साथ न केवल अपना संपर्क रखना चाहते थे अपितु उनके समर्थन के भी आकांक्षी थे|
➢जब तुर्कों ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की, तो सूफियों ने राज्य कानून के रूप में शरिया लागू करने के उलेमा के आग्रह का विरोध किया क्योंकि उन्हें अपने विषयों से विरोध की आशंका थी।
➢यह भी माना जाता है कि औलिया मध्यस्थ के रूप में ईश्वर से लोगों की ऐहिक और आध्यात्मिक दशा में सुधार लाने का कार्य करते हैं | शायद इसीलिए शासक अपनी कब्रें सूफी दरगाहों और खानकाहों के नजदीक बनाना चाहते थे |
हालाँकि, सुल्तानों और सूफियों के बीच संघर्ष के कई उदाहरण भी थे।
अपनी सत्ता कायम रखने के लिए दोनों ही कुछ खास रस्में निभाते थे जैसे सजदा करना और पैर चूमना आदि।
सूफी शेख को ऊंची-ऊंची उपाधियों से संबोधित किया जाता था। उदाहरण के लिए, निजामुद्दीन औलिया को उनके शिष्य सुल्तान-उल-मशेख कहकर संबोधित करते थे।

नवीनभक्ति पंथ : उत्तरी भारत में संवाद और असहमति

➢चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी के दौरान, कई महत्वपूर्ण संत लोकप्रिय हुए-
▪कबीर दास
▪गुरु नानक देव
▪मीरा बाई

❖ दैवीय वस्त्र की बुनाई: कबीर दास

➢हम कबीर दास के जीवन के बारे में बहुत कम जानते हैं। ऐसा माना जाता है कि उनका जन्म हिंदू परिवार में हुआ था और उनका पालन-पोषण मुस्लिम जुलाहा परिवार में हुआ था। उनकी रचनाओं को उनके अनुयायियों ने उनकी मृत्यु के बाद संकलित किया।

➢वैष्णव परंपरा के भीतर की जीवनी बताती है कि उन्हें एक गुरु, रामानंद द्वारा भक्ति में दीक्षित किया गया था। कबीर की कविताओं में गुरु और सतगुरु शब्दों का इस्तेमाल किया गया है, लेकिन किसी विशिष्ट गुरु का नाम नहीं बताया गया है। इतिहासकारों ने बताया कि यह स्थापित करना बहुत मुश्किल है कि रामानंद और कबीर समकालीन थे।

➢कबीर दास की रचनाएँ

▪कबीर बीजक को वाराणसी और उत्तर प्रदेश में कबीरपंथ (कबीर का मार्ग या संप्रदाय) द्वारा संरक्षित किया गया है।

▪कबीर ग्रंथावली राजस्थान में दादूपंथ से जुड़ी है और उनकी कई रचनाएँ आदि ग्रंथ साहिब में पाई जाती हैं।

▪कबीर की कविताएँ कई भाषाओं और बोलियों में और कभी-कभी निर्गुण कवियों (संत भाषा) की विशेष भाषा और उलटबांसी (उल्टी-सीधी बातें) के साथ बची हुई हैं

➢कबीर की शिक्षाएँ:

▪कबीर ने परम सत्य को वर्णित करने के लिए अनेक परिपाटीयों का सहारा लिया |इस्लामिक दर्शन की तरह वे इस सत्य को परम सत्य अल्लाह, खुदा, हज़रत और पीर कहते थे। उन्होंने ब्रह्म और आत्मा जैसे कुछ वैदिक शब्दों का भी इस्तेमाल किया।

▪उन्होंने शब्द (ध्वनि) या शून्य (शून्यता) जैसे कुछ योगिक पारंपरिक शब्दों का भी इस्तेमाल किया। कबीर की कुछ कविताओं में परस्पर विरोधी और विविध विचार व्यक्त किए गए हैं।

▪कुछ कविताओं ने हिंदू बहुदेववाद और मूर्ति पूजा पर हमला किया और अन्य ने नाम-सिमरन (भगवान के नाम का स्मरण) की हिंदू प्रथा को व्यक्त करने के लिए ज़िक्र और इश्क (प्रेम) की सूफी अवधारणा का उपयोग किया।

▪इतिहासकारों ने इन कविताओं की भाषा, शैली और विषय-वस्तु का विश्लेषण करने की कोशिश की है। कबीर जन्म से हिंदू थे या मुसलमान, इस बारे में बहसें जीवनी में अच्छी तरह से परिलक्षित होती हैं।

❖ बाबा गुरु नानक और पवित्र शब्द:

➢बाबा गुरु नानक का जन्म 1469 में पंजाब में रावी के पास ननकाना साहिब नामक गाँव में हुआ था।

➢उन्होंने अकाउंटेंट बनने की ट्रेनिंग ली और फ़ारसी का अध्ययन किया। उनकी शादी कम उम्र में ही हो गई थी, लेकिन उन्होंने अपना ज़्यादातर समय सूफ़ियों और भक्तों के बीच बिताया। उन्होंने व्यापक रूप से यात्राएँ भी कीं।

शिक्षाएँ:

▪उनकी शिक्षाएँ उनके भजनों में अच्छी तरह से परिलक्षित होती हैं। इन भजनों से पता चलता है कि उन्होंने निर्गुण भक्ति के एक रूप की वकालत की। उन्होंने बलिदान, अनुष्ठान स्नान, मूर्ति पूजा और हिंदुओं और मुसलमानों के धर्मग्रंथों को अस्वीकार कर दिया।

▪उनके अनुसार, परम पूर्ण या 'रब' का कोई लिंग या आकार नहीं था। उन्होंने दरब नाम को याद करके रब से जुड़ने का एक सरल तरीका प्रस्तावित किया।

▪उन्होंने पंजाबी, क्षेत्र की भाषा में "शबद" नामक भजनों के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए और विभिन्न रागों के साथ गाया।

▪उन्होंने अपने अनुयायियों को एक समुदाय में संगठित किया। उन्होंने सामूहिक उपशाना (संगत) के लिए नियम स्थापित किए। उन्होंने अपने शिष्यों में से एक, अंगद को अपने उत्तराधिकारी के रूप में नियुक्त किया। गुरु नानक एक नया धर्म स्थापित नहीं करना चाहते थे।

▪उनकी मृत्यु के बाद, उनके अनुयायियों ने एक अलग समुदाय बनाने के लिए अपनी प्रथाओं को समेकित किया।

▪पाँचवें गुरु, अर्जनदेव जी ने गुरु नानक के भजनों और उनके चार उत्तराधिकारियों के साथ ही बाबा फ़रीद, रविदास और कबीर जैसे अन्य धार्मिक कवियों के साथ आदि ग्रंथ साहिब में संकलित किया। इन भजनों को "गुरबानी" कहा जाता है, जो विभिन्न भाषाओं में रचित हैं।

▪दसवेंगुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी ने नौवेंगुरु तेग बहादुर जी की रचनाओं को भी इसमे शामिल किया और इस ग्रंथ को गुरु ग्रंथ साहिब कहा गया । गुरु गोबिंद सिंह ने खालसा पंथ (पवित्र लोगों की सेना) की नींव भी रखी। उन्होंने इसके पाँच प्रतीक भी परिभाषित किए:

●बिना कटे हुए केश

●कृपाण

●एक कच्छा

●एक कंघी और

●लोहे का कड़ा

▪गुरुगोबिंदसिंहकेनेतृत्वमेंयहसमुदायएकसामाजिक-धार्मिकऔरसैन्यशक्तिबनगया।

❖ मीराबाई, एक भक्तिमय राजकुमारी

➢मीराबाई भक्ति परंपरा की सबसे प्रसिद्ध महिला कवियत्री थीं।

➢वह मारवाड़ के मेड़ता जिले की एक राजपूत राजकुमारी थीं।

➢उनकी शादी उनकी इच्छा के विरुद्ध मेवाड़ के सिसोदिया वंश के एक राजकुमार से हुई थी। उसने अपने पति की अवहेलना करते हुए पत्नी और माँ की पारंपरिक भूमिका को निभाने से इनकार किया।

➢उसने भगवान विष्णु के अवतार कृष्ण को अपना पति स्वीकार किया । उनके ससुराल वालों ने उसे ज़हर देने की कोशिश कीलेकिन वह बच निकली और एक परिव्राजिका संत के रूप में रहने लगी और भावनाओं की तीव्र अभिव्यक्ति वाले अनेक गीत की रचना की।

▪उसके गुरु रैदास थे जो एक चर्मकार थे। यह जाति और समाज के मानदंडों के प्रति उनकी अवहेलना को दर्शाता है।

▪उन्होंने ऐश्वर्य त्याग कर विधवा के सफ़ेद वस्त्र या सन्यासिनी के भगवा वस्त्र धारण किए। हालाँकि उन्होंने किसी संप्रदाय या अनुयायियों के समूह को आकर्षित नहीं किया, लेकिन उन्हें सदियों से प्रेरणा के स्रोत के रूप में पहचाना जाता रहा है।

▪हमें उनके बारे में जानकारी उनके द्वारा गाए गए भजनों से मिलती है।

धार्मिक परंपराओं के इतिहास का पुनर्निर्माण

➢इतिहासकारों ने धार्मिक परंपराओं के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए विभिन्न स्रोतों का उपयोग किया। इसमें स्तूप, मठ और मंदिर शामिल हैं।

➢इतिहासकार भक्ति साहित्य और पवित्र जीवन-चरित्रों सहित पाठ्य स्रोतों का भी सहारा लेते हैं। ये स्रोत इतिहासकारों को कुछ धार्मिक विश्वासों को समझने में सक्षम बनाते हैं|

बहुविकल्पीय प्रश्न (1 अंक)

Q.1 दी गई छवि को किस स्थान से सम्बंधित है -

ए. तंजावुर
बी. मदुरै
सी. पुरी
डी. मैसूर

उत्तर . सी. पुरी

Q. 2 मंदिरों में तमिल शैव भजनों के गायन की शुरुआत किन शासकों ने की?

ए. पांड्य राजा
बी. चेरा राजा
सी. चोल राजा
डी. उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर: सी. चोल राजा

प्रश्न 3. 12वीं शताब्दी के दौरान कर्नाटक के घुमंतू भिक्षुओं को _____ कहा जाता है

ए. जंगम
बी. लिंग
सी. वीरशैववादी
डी. वचना

उत्तर. सी. वीरशैववादी

प्रश्न 4. कीर्तन-घोष की रचना किसने की?

ए. शंकर देव
बी. सुरदास
सी. कबीर दास
डी. सुंदर मूर्ति

उत्तर. ए. शंकर देव

प्रश्न 5. शेख निजामुद्दीन की खानकाह में कई छोटे कमरे और एक बड़ा हॉल शामिल था जिसे कहा जाता है-

ए. जमात खाना
बी. लंगर
सी. कलंदर
डी. ज़ियारती

उत्तर.ए. जमात खाना

प्रश्न 6. कराईकल अम्मैयार किसकी अनुयायी थी|

ए. कृष्णा
बी. राम
सी. शिव
डी. ब्रह्मा

उत्तर. सी. शिव

Q.7 "नलयिरादिव्यप्रबंधम" _____ द्वारा सम्बंधित है

क) नयनार
b) अलवार
ग) बौद्ध
d) पांड्य

उत्तर. बी. अलवार

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से कौन इस्लाम का स्तंभ नहीं है:

ए. हज
बी. रमजान के दौरान उपवास
सी. प्रतिदिन पांच बार प्रार्थना करना
डी. मूर्तिपूजा

उत्तर.डी. मूर्तिपूजा

प्र.9. निम्नलिखित में से कौन विशिष्ट देवताओं की पूजा से संबंधित है?

ए. सगुण भक्ति
बी. निर्गुण भक्ति
सी. ए और बी दोनों
डी. उनमें से कोई नहीं
उत्तर. ए. सगुण भक्ति
प्र.10. सही विकल्प चुनें:
दावा (ए): अलवार और नयनार ने जाति व्यवस्था के खिलाफ,विरोध करने के लिए एक आंदोलन शुरू किया
कारण (आर): इस प्रकार दावा किया गया कि अलवार संतो द्वारा रचनाओं के प्रमुख संकलन, नलयिरदिव्यप्रबंधम को अक्सर ऋग्वेद के रूप में वर्णित किया गया, पाठ था| ब्राह्मणों द्वारा संस्कृत में चार वेदों को महत्वपूर्ण के रूप में पोषित किया गया था।
ए. A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
बी. A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
सी. A सही है लेकिन R गलत है।
डी. आर सही है लेकिन ए गलत है।
उत्तर. सी. A सही है लेकिन R गलत है।
प्रश्न11. वीरशैव किसके अनुयायी कहलाते हैं?
ए. मीराबाई
बी. गुरु गोविंद
सी. कबीर
डी. बसवन्ना
उत्तर. डी. बसवन्ना
प्रश्न 12. आमतौर पर वैदिक शिक्षा से किसे बाहर रखा गया था?
ए. ब्राह्मण
बी. महिला और शूद्र
सी.बच्चे और बूढ़े
डी. विष्णु भक्त
उत्तर. बी. महिला और शूद्र
Q 13 गैर-मुस्लिमों को _____ नामक एक धार्मिक कर का भुगतान करना पड़ता था
(ए) जकात
(बी) शुक्राना
(सी) जजिया
(डी) इनमें से कोई नहीं
उत्तर. (सी) जजिया
Q.14 आदि ग्रंथ का संकलन किसने किया?
(ए) गुरु तेग बहादुर जी
(बी) गुरु अर्जुन देव जी
(सी) गुरु नानक दे जी
(डी) गुरु गोबिंद सिंह जी
उत्तर. (बी) गुरु अर्जुन देव जी
Q15 विट्ठल मंदिर के प्रमुख देवता विट्ठल थे। विट्ठल को किस भगवान के अवतार के रूप में जाना जाता था?
(ए) ब्रह्मा
(बी) विष्णु
(सी) शिव
(डी) गणेश
उत्तर. (बी) विष्णु
Q.16 कबीर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. कबीर के श्लोक तीन अलग-अलग परंपराओं में संकलित हैं।
2. कबीर की कविताएँ केवल उर्दू भाषा में उपलब्ध हैं।
3. कबीर ने परम वास्तविकता का वर्णन करने के लिए कई परंपराओं का इस्तेमाल किया।

4. कबीर ने परम सत्य को ही अल्लाह कहा है।

दिए गए कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?

(ए) 1, 2, 3 (बी) 2, 4

(सी) 1, 4 (डी) 3, 4

उत्तर. (बी) 2,4

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक)

1: संत जीवनी से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर: हैजीयोग्राफी का अर्थ है संतों या धार्मिक उपदेशकों की जीवनी।

- इतिहासकार धर्म या संप्रदाय के उदय के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए अनुयायियों द्वारा लिखी गई आत्मकथाओं से जानकारी एकत्र करते हैं।
- उदाहरण के लिए शेख मुइन्ददीन चिश्ती पर जहाँआरा द्वारा रचित मुनीस अल अरवाह।

2: **8वी से 18वीं शताब्दी के दौरान पूजा प्रणालियों के समन्वय के लिए किन दो मुख्य प्रक्रियाओं ने काम किया?**

उत्तर: कम से कम दो प्रक्रियाएं थीं जो **पूजा प्रणालियों के समन्वय** के लिए काम करती थीं।

- **ब्राह्मणवादी विचारों का प्रसार**:- परिणामस्वरूप पुराण, वेद, रामायण और महाभारत जैसे ब्राह्मणवादी ग्रंथों को सरल संस्कृत छंदों में संकलित और रचित किया गया, जिससे निम्न वर्ग के लोगों और महिलाओं को इसकी पहुंच प्राप्त हुई। इसे **महान परंपरा** कहा जाता था
- इसके अलावा, ब्राह्मणों ने अन्य सामाजिक श्रेणियों की मान्यताओं, प्रथाओं और परंपराओं को स्वीकार किया और उन पर फिर से काम किया। उदाहरण के लिए जगन्नाथ पंथ का विकास। इन्हें लघु परंपरा कहा गया|

3: महान एंव लघु परंपरा से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: महान और लघु परंपराएं रॉबर्ट रेडफील्ड नामक समाजशास्त्री द्वारा गढ़ी गई थीं जिन्होंने किसान समाजों की सांस्कृतिक प्रथाओं का वर्णन किया था।

- प्रमुख सामाजिक श्रेणियों से आने वाले अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों को महान परंपराओं के रूप में वर्गीकृत किया गया था।
- उदाहरण के लिए पुराणों, महाकाव्यों जैसे ब्राह्मण ग्रंथों की रचना, सरल संस्कृत छंदों में संकलित की गई, जिससे आम पुरुषों और महिलाओं को वैदिक साहित्य की अधिकता मिली।
- इसी तरह, किसानों ने भी उन प्रथाओं का पालन किया जो जरूरी नहीं कि महान परंपरा के अनुरूप हों।
- ब्राह्मणों ने अन्य सामाजिक श्रेणियों के विश्वासों और प्रथाओं को भी स्वीकार किया और फिर से काम किया, जिन्हें छोटी परंपराएं कहा जाता है, उदाहरण के लिए। भगवान जगन्नाथ जो ओड़िया के प्रमुख देवताओं में से एक हैं, उन्हें पहले एक आदिवासी समूह, सबारा द्वारा नीलामाधव के रूप में पूजा जाता था।

4: तांत्रिक पूजा प्रणाली से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: बंगाल, उत्तर पूर्वी राज्यों जैसे देश के कई हिस्सों में तांत्रिक प्रथाएं व्यापक रूप से फैली हुई थीं जो पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए खुली थीं।

- यह प्रथा का एक रूप था जिसमें अनुष्ठान के संदर्भ में जाति और वर्ग के अंतर को नजरअंदाज करते हुए देवी की किस्मों की पूजा की जाती थी।

- तांत्रिक विभिन्न प्रकार के रोगों को ठीक करने के साथ-साथ चमत्कारी शक्ति को जादू के आकर्षण और मंत्र के माध्यम से ठीक करते थे।
- जो लोग तांत्रिक साधना में लगे हुए थे, वे अक्सर वेदों के अधिकार की उपेक्षा करते थे।

5. भक्तिवाद की मुख्य विशेषताओं पर चर्चा करें:

उत्तर: भक्ति का अर्थ है ईश्वर के प्रति समर्पण और समर्पण की भावना।

- भक्ति आंदोलन पूजा के तरीकों के खिलाफ एक आंदोलन था।
- आंदोलन आम तौर पर एकेश्वरवादी था चाहे वह निराकार ईश्वर हो या एक रूप वाला ईश्वर।
- सगुण और निर्गुण भक्ति दोनों उपनिषदों के दर्शन पर निर्भर हैं।
- दक्षिण और उत्तर भारत के संतों ने भक्ति के लिए ज्ञान या ज्ञान को आवश्यक उपकरण माना है।
- भक्ति आंदोलन एक समतावादी आंदोलन था। इस आंदोलन ने जाति और पंथ के मतभेदों का विरोध किया था।
- आंदोलन ने पुजारियों और ब्राह्मणों की श्रेष्ठता का विरोध किया।
- भक्ति आंदोलन के संतों ने स्थानीय लोगों की भाषा पर उपदेश दिया।
- इस आंदोलन ने भारतीय प्रायद्वीप को व्यापक रूप से प्रभावित किया और लोगों में भाईचारे और एकता की भावना विकसित की।

6. अलवार और नयनार कौन थे?

उत्तर: भक्तिवाद दक्षिण भारत में लगभग तीन शताब्दियों में अपने दो सुपरिभाषित शाखाओं यानी अलवार और नयनार के माध्यम से फला-फूला।

- अलवार विष्णु के अनुयायी थे और नयनार शिव के अनुयायी थे।
- भक्तों ने अपने भगवान की स्तुति में तमिल में भजन गाते हुए जगह-जगह यात्रा की और कांचीपुरम में मिले जहां उन्होंने एक-दूसरे के साथ अपने विचारों का आदान-प्रदान किया।
- अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने अपने चुने हुए देवताओं के निवास के रूप में कुछ मंदिरों की पहचान की और पवित्र स्थानों पर बड़े मंदिरों का निर्माण किया।

7. 8वीं से 18 वीं सदी की अवधि के दौरान नाथों, जोगियों और सिद्धों ने कैसे लोकप्रियता हासिल की?

उत्तर: नाथ, जोगी और सिद्ध आम तौर पर बुनकरों जैसे कारीगर समूहों से थे।

- संगठित शिल्प उत्पादन के विकास ने कारीगरों की स्थिति में वृद्धि की।
- इसी तरह शहरी केंद्रों के विकास और मध्य एशिया और पश्चिम एशिया के साथ लंबी दूरी के व्यापार ने भी कारीगरों की स्थिति को बढ़ाया।
- सबसे ऊपर उन्होंने वेदों के अधिकार पर सवाल उठाया और आम लोगों की भाषाओं में व्यक्त किया।

8: उलेमा कौन थे?

उत्तर: उलेमा इस्लामी विद्वान हैं जिन्हें शरीयत पर गहरा ज्ञान है। यह आलिम का बहुवचन रूप है।

- उन्होंने विभिन्न धार्मिक, न्यायिक और शिक्षण कार्य किए।
- मुस्लिम शासक आमतौर पर उलेमा द्वारा निर्देशित होते थे।

9: जिम्मी से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: ज़िम्मी अरबी शब्द ज़िम्मा से बना है जिसका अर्थ है सुरक्षा। तो, ज़िम्मी का अर्थ है संरक्षित नागरिक जिन्होंने यहूदी और ईसाई, हिंदू और अन्य गैर-मुसलमानों जैसे मतों का पालन करने वाले लोगों के लिए प्रयुक्त किया जाता रहा।

- उन्हें मुसलमानों से सुरक्षा प्राप्त करने और राज्य के हस्तक्षेप के बिना अपने स्वयं के विश्वास का अभ्यास करने के लिए जजिया कर का भुगतान करने के लिए कहा गया था।

10. शरीयत से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: शरिया एक इस्लामी धार्मिक कानून है जो न केवल धार्मिक अनुष्ठानों को नियंत्रित करता है, बल्कि इस्लाम में दिन-प्रतिदिन के जीवन के पहलुओं को नियंत्रित करता है।

- शरिया, का शाब्दिक अर्थ है "रास्ता।" आज मुस्लिम समाजों में और उनके भीतर शरिया की व्याख्या और कार्यान्वयन के तरीके में अत्यधिक भिन्नता है।
- यह कुरान, हदीस, क़ियास और इज्मा से विकसित हुआ है।

11: स्थानीय रीति-रिवाजों और प्रथाओं ने इस्लाम को कैसे प्रभावित किया? दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर: स्थानीय रीति-रिवाजों और प्रथाओं ने भारत में इस्लाम को बहुत प्रभावित किया।

- इस्माइल (शिया संप्रदाय) की एक शाखा, खोजाह ने स्वदेशी और साहित्यिक शैलियों के माध्यम से संचार के तरीके विकसित किए। इनमें जिनन (ज्ञान), पंजाबी में भक्ति कविताएं, मुल्तानी, सिंधी, हिंदी, गुजराती, और दैनिक प्रार्थना सभाओं के दौरान विशिष्ट रागों में गाने शामिल थे।
- केरल में बसने वाले अरब मुस्लिम व्यापारी ने स्थानीय भाषा मलयालम को अपनाया और स्थानीय रीति-रिवाजों जैसे मातृवंश और मातृसत्तात्मक निवास को अपनाया।
- इसी तरह केरल में मोपला किसानों ने पांच बार के बजाय तीन बार नमाज अदा की।

12: इस्लामी वास्तुकला स्थानीय परंपराओं से कैसे प्रभावित थी?

उत्तर: स्थानीय परंपराओं ने भी भारत के विभिन्न हिस्सों में इस्लामी वास्तुकला को अत्यधिक प्रभावित किया। यह शायद मस्जिदों की वास्तुकला में सबसे अच्छा उदाहरण है।

- श्रीनगर में शाह हमदान मस्जिद कश्मीरी लकड़ी की वास्तुकला के सबसे अच्छे उदाहरणों में से एक है जहाँ किसी को विशिष्ट मकबरे और मीनारें नहीं मिल सकती हैं। इसी तरह केरल में 13वीं सदी में बनी एक मस्जिद में शिखर जैसी छतें हैं। बांग्लादेश के मयमनसिंह जिले में अतिया मस्जिद का निर्माण ईंटों से किया गया था।
- हालाँकि मिहराब और मीनार का निर्माण सार्वभौमिक पैटर्न के साथ किया गया था और उन्मुखीकरण मक्का की ओर था।

13: म्लेच्छ कौन थे?

उत्तर: म्लेच्छ वे लोग थे जो जाति, समाज और बोली जाने वाली भाषाओं के मानदंडों का पालन नहीं करते थे जो संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुए थे।

- कभी-कभी, इस शब्द का प्रयोग अपमानजनक अर्थ के रूप में किया जाता था।
- मध्यकाल के दौरान आम तौर पर अरबों शको जैसे विभिन्न बाहरी समुदायों के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता था।

14: बेशरिया और बा-शरिया सूफियों के बीच अंतर।

उत्तर: बे-शरीयत वे लोग थे जो जानबूझकर शरीयत की अवहेलना करते थे। उदाहरण के लिए- कलंदर, मदारिस, हैदरी और मलंग। जबकि बशरिया ने शरीयत का पालन करते थे|

- बे-शरीयतों ने कर्मकांडों की उपेक्षा की और तपस्या के चरम रूपों को देखा। लेकिन बा-शरिया ने इस्लामी सिद्धांतों को वैसे ही स्वीकार कर लिया जैसे वह है।

- कुछ बे-शरिया फकीरों ने सूफी आदर्शों की कट्टरपंथी व्याख्या के आधार पर आंदोलनों की शुरुआत की। कई लोगों ने खानकाह का तिरस्कार किया और भिक्षावृत्ति की और ब्रह्मचर्य का पालन किया। लेकिन बा-शरिया सूफियों ने इसके साथ संकलित किया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंक)

1: जाति व्यवस्था और महिलाओं के प्रति अलवार और नयनार के दृष्टिकोण की चर्चा करें।

उत्तर: अलवार और नयनार के अनुयायी ब्राह्मणों की जाति व्यवस्था और प्रभुत्व के खिलाफ थे।

- अनुयायी विविध सामाजिक समूहों जैसे कारीगरों, कृषकों और जीवन के अन्य लोगों से थे।
- उन्होंने वेदों के सत्तावादी दृष्टिकोण को त्याग दिया और नलयिरदिव्यप्रबंधन (12 अलवरों की रचनाएं), तमिल वेद की रचना की।
- अप्पर जैसे संतों, एक नयनार संत ने गोत्र और कुल को त्याग दिया और मारपेरु (भगवान शिव का निवास) जाने की सलाह दी।
- अलवार और नयनार दोनों ही महिलाओं के प्रति बहुत सम्मान रखते थे। उन्हें पुरुषों के समान स्थान दिया गया। उदाहरण के लिए अंडाल नाम की एक महिला अलवार ने कविताओं की रचना की जो आज तक गाई जाती हैं। उनके छंदों ने देवता विष्णु के प्रति उनके प्रेम को व्यक्त किया।
- इसी प्रकार, शिव के एक भक्त कराईकल अम्मैय्यार ने अत्यधिक तपस्या का मार्ग अपनाया। उनकी रचनाओं को नयनारा परंपराओं के साथ संरक्षित किया गया है।
- इस आंदोलन ने अपने सामाजिक दायित्वों को त्याग दिया और उनकी रचनाओं ने पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती दी।

2: राज्य के साथ अलवार और नयनार के संबंधों की चर्चा करें।

उत्तर: अलवार और नयनार दोनों को आम लोगों के साथ-साथ राजाओं द्वारा भी पुरस्कृत किया गया था।

- शासकों ने उनका समर्थन हासिल करने की कोशिश की क्योंकि उन्हें जनता का समर्थन प्राप्त था।
- चोल राजाओं ने विशाल मंदिरों का निर्माण किया जो दैवीय समर्थन की घोषणा करने के लिए लोकप्रिय संतों की पत्थर और धातु की मूर्तियों से अलंकृत थे।
- राजाओं ने शाही संरक्षण के तहत मंदिरों में तमिल शैव भजनों के गायन की शुरुआत की और उन्हें तेवरम या पाठ में शामिल किया।
- परंतक प्रथम जैसे चोल राजाओं ने शिव मंदिर में अप्पर, सांबंदर और सुंदरार के धातु की मुर्तिया विकसित की थी।
- इन छवियों को विभिन्न त्योहारों के दौरान जुलूसों में ले जाया जाता था।
- चोल राजाओं में राजराज जैसे महान शासक ने तंजावुर में बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण किया।
- इस अवधि के दौरान नटराज के रूप में शिव की कुछ सबसे शानदार कांस्य मूर्तियों का निर्माण कलाकारों द्वारा किया गया था और उन्हें शाही संरक्षण भी मिला था।
- सबसे ऊपर संत भी बौद्ध और जैन धर्म जैसे अन्य संप्रदायों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए शाही समर्थन प्राप्त करने में रुचि रखते थे।

3: कर्नाटक में वीरशैब परंपरा की स्थापना किसने की? विश्वासों और प्रथाओं पर एक नोट लिखें।

उत्तर: बसवना, एक ब्राह्मण और चालुक्यों के दरबार में मंत्री, कर्नाटक में वीरशैब परंपरा के संस्थापक थे।

- 12वीं शताब्दी में, उन्होंने कर्नाटक में इस शक्तिशाली आंदोलन की शुरुआत की, जिसके अनुयायी वीरशैबा या शिव या लिंगायत के नायक के रूप में जाने जाते थे, जो लिंग के पहनने वाले थे।

- अनुयायी शिव की पूजा लिंग के रूप में करते हैं और आम तौर पर बाएं कंधे पर चांदी के मामले में एक छोटा लिंग पहनते हैं।
- लिंगायतों का मानना है कि मृत्यु पर, भक्त शिव के साथ एक हो जाएगा और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त हो जाएगा। इसलिए वे दाह संस्कार जैसे अंतिम संस्कार के अधिकारों का अभ्यास नहीं करते हैं। बल्कि वे औपचारिक रूप से मृतकों को दफनाते हैं।
- उन्होंने हिंदू समाज में प्रचलित जाति और प्रदूषण के विचार को चुनौती दी।
- उन्होंने पुनर्जन्म के सिद्धांत पर सवाल उठाया और विवाह के बाद यौवन और विधवाओं के पुनर्विवाह का समर्थन किया।
- वसवना ने बचानों के माध्यम से समाज की बुराइयों पर प्रहार किया, उनके प्रसिद्ध बचना में से एक ने पत्थर या धातु में घुमावदार नाग और एक असली नाग के उदाहरणों का हवाला देते हुए अनुष्ठानों और वास्तविक दुनिया पर प्रकाश डाला।
- लिंगायतों में, जो सबसे अधिक पूजनीय हैं, उन्हें जंगमा या विस्मयकारी भिक्षु कहा जाता था।
- बसवन्ना, अल्लामा प्रभु, अक्का महादेवी, सिद्धराम, चन्नबसवन्ना, सिद्धलिंग, चामारसा, सोमनाथ और अन्य गुरुओं की शिक्षाये वचनों के रूप में संकलित की गई|

4. खानकाह का क्या अर्थ है? एक चिश्ती खानकाह में जीवन पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर: खानकाह सूफी संतों के धर्मशाला (पवित्र स्थान) थे। यह सामाजिक जीवन का केंद्र भी था।

- इसमें कई छोटे कमरे और एक बड़ा हॉल था जिसे जमात -खाना कहा जाता था।

चिश्ती खानकाह में जीवन -

- चिश्ती भारत में सबसे प्रमुख और प्रभावित सूफी सिलसिला थे।
- वे सफलतापूर्वक स्थानीय वातावरण के अनुकूल हो गए और स्थानीय भाषाओं में भी अपने लेखन की रचना की।
- अजमेर के शेख मैनुद्दीन चिश्ती या दिल्ली के निजामुद्दीन अलुइया की धर्मशाला क्रमशः अजमेर और दिल्ली में थी।
- निजामुद्दीन की धर्मशाला में कई छोटे कमरे और एक बड़ा हॉल शामिल था।
- शेख अपने परिवार के सदस्यों के परिचारकों और शिष्यों के साथ धर्मशाला में रह रहे थे।
- शेख जमात-ए-खाना की छत पर एक छोटे से कमरे में रह रहा था। वहां उन्होंने सुबह और शाम आगंतुकों को आशीर्वाद दिया।
- आंगन के चारों ओर एक बरामदा और धर्मशाला के चारों ओर एक चहारदीवारी थी। फ़ुतुह पर एक खुली रसोई चलती थी। सुबह से देर रात तक सभी क्षेत्रों के लोग - सैनिक, संत, कवि, यात्री, अमीर और गरीब, हिंदू योगी और कलंदर शेख के आशीर्वाद या उपचार शक्ति या शेख के शिष्यत्व के लिए आते थे।
- कभी-कभी आक्रमण के डर से लोग खानकाहों के अंदर भी शरण ले रहे थे।
- खानकाह के अंदर भी कई तरह की प्रथाएं अपनाई गईं जैसे शेख के सामने झुकना या उनके पैर चूमना, आगंतुकों को पानी देना, दीक्षाओं के सिर मुंडवाना, योगाभ्यास आदि नियमित रूप से किए जाते थे।
- शेख की मृत्यु के बाद, दरगाह नामक धर्मशाला के पास कब्रों का निर्माण किया गया। लोग आध्यात्मिक कृपा या बरकत पाने के लिए सूफी संतों की कब्रों पर ज़ियारत नामक तीर्थयात्रियों की व्यवस्था कर रहे थे।

- इसके अलावा ज़ियारत का एक हिस्सा संगीत और नृत्य का उपयोग है, जिसमें कव्वाल द्वारा दिव्य परमानंद को जगाने के लिए रहस्यमय मंत्रों का प्रदर्शन किया जाता है। सूफी या तो ज़िक्र का पाठ करके या समा के माध्यम से उनकी उपस्थिति का आह्वान करके भगवान को याद करते हैं।

5. गुरु नानक की शिक्षाओं पर चर्चा करें|

उत्तर: उन्होंने एक ईश्वर की महिमा, भाईचारे, एक कानून, मानव संगति और प्रेम की व्यवस्था का समर्थन किया| वह सभी धर्मों की एकता में विश्वास रखते थे|

- वे संसार के सभी शास्त्रों में सामंजस्य में मानते थे।
- वे आम आदमी की भाषा में एक ऐसे प्राचीन सत्य को महत्त्व देते थे जो सभी भविष्यवक्ताओं, प्रेरितों, संतों और ऋषियों की शिक्षाओं में समाहित था ; और यह दिखाने के लिए कि मनुष्य के सभी मंदिरों और पूजा स्थलों और संस्कारों में प्रेम की एक ही ज्योति जलती रहती है ।
- ईश्वर का प्रेम और मनुष्य का प्रेम गुरु नानक के संदेश के मूल में थे।
- सच्चे संतों का नियमत: किसी से कोई झगड़ा नहीं होता। वे धीरे से बात करते हैं और चुपचाप भगवान और मनुष्य की सेवा में काम करते हैं।
- वह परमेश्वर के नाम पर उपदेश देते रहे,
- "भगवान के दरबार में कोई जाति और पंथ मायने नहीं रखता।
- भगवान तक पहुंचने के लिए, गुरु नानक ने बताया कि प्रेम के मार्ग पर चलना चाहिए। केवल परमेश्वर से प्रेम करो, और यदि तुम दूसरों से—अपने बच्चों और मित्रों और संबंधियों से प्रेम करते हो, तो उसके लिए उन्हें प्रेम करो। अपने भीतर उसके लिए तीव्र लालसा विकसित करें।
- गुरु नानक एक सच्चे रहस्यवादी थे,
- नानक शांति और सद्भावना, सद्भाव और एकता के पैगम्बर थे। मानव जाति के प्रति प्रेममयी सेवा का उनका कार्य, अव्यक्त की अभिव्यक्ति के रूप में, उनके उत्तराधिकारियों द्वारा दृढ़ता से किया गया था।
- इस प्रकार पवित्र ग्रंथ में, उन्होंने एक महान लंगर प्रथा की नींव रखी और वहां गरीबों एवं दिन दुखियों को भोजन कराया जाता है।

6.: कबीर के जीवन और शिक्षाओं पर चर्चा करें।

उत्तर: कबीर ने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सद्भाव की भावना पैदा की।वे एक धर्मपरायण गृहस्थ थे और वस्त्र बुनकर अपनी आजीविका चलाते थे।

- उनकी शिक्षाएँ : कबीर की केंद्रीय शिक्षाएँ बहुत सरल हैं।
- उन्होंने ईमानदारी से उन सद्गुणों का प्रचार करके इस्लाम और हिंदू धर्म की एकता पर जोर देने की कोशिश की जो दोनों धर्मों के लिए समान थे।
- उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच कोई भेद नहीं किया।
- कबीर के लिए अल्लाह और राम एक ही परम सत्ता के अलग-अलग नाम थे।
- कबीर के अनुसार अच्छे कर्म करने से मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है या भक्ति या ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति के माध्यम से।
- मूर्ति पूजा के विरुद्ध : वे मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं रखते थे। वह अनुष्ठानों और अंधविश्वासों के प्रदर्शन या तथाकथित पवित्र स्थानों की तीर्थयात्रा के भी खिलाफ थे।
- जाति व्यवस्था के खिलाफ कबीर ने जाति व्यवस्था की निंदा की। उन्होंने वेद और कुरान दोनों के अधिकार को खारिज कर दिया। उन्होंने पुरुषों की समानता पर बहुत जोर दिया।

- कबीर की शिक्षाएं उनके दोहों में समाहित हैं। कबीर के भक्ति गीत या 'भजन' कबीर दोहा कहलाते हैं। वे दोहे कबीर पंथियों, कबीर के अनुयायियों की पवित्र पुस्तक बीजक में लघु कविताओं के रूप में हैं।
- कबीर ईश्वर की एकता में दृढ़ विश्वास रखते थे। उन्होंने हिंदी में लोगों के बीच अपनी शिक्षाओं का प्रचार किया। उनके भक्ति भजन या दोहा ने आम लोगों, हिंदुओं और मुसलमानों को भी सबसे ज्यादा आकर्षित किया।

स्रोत आधारित प्रश्न (4 अंक)

प्रश्न19. निम्नलिखित अंशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खम्भात में एक चर्च

यह 1598 में अकबर द्वारा जारी एक फरमान (शाही आदेश) का एक अंश है। जबकि यह हमारे प्रतिष्ठित और पवित्र नोटिस तक पहुंचा कि यीशु के पवित्र समाज के पादरी (पिता) शहर में प्रार्थना (चर्च) का घर बनाना चाहते हैं। कंबायत (गुजरात में खंभात) की इसलिए एक उच्च जनादेश….. जारी किया जा रहा है…। खम्भात शहर के गणमान्य व्यक्ति किसी भी हालत में उनके रास्ते में नहीं खड़े हों बल्कि उन्हें एक चर्च बनाने की अनुमति दें, ताकि वे अपनी पूजा में खुद को शामिल कर सकें, यह आवश्यक है कि सम्राट के आदेश का हर तरह से पालन किया जाए। .

Q1. यह अंश कहाँ से लिया गया है? 1

उत्तर। यह अंश 1598 में अकबर द्वारा जारी एक फरमान (शाही आदेश) से लिया गया है

प्रश्न 2. अकबर ने इस आदेश के माध्यम से गुजरात की जनता को क्या संदेश दिया। 1

उत्तर। इस फरमान के माध्यम से अकबर ने गुजरात के लोगों को यीशु के पवित्र समाज के पादरियों (पिताओं) द्वारा एक चर्च के निर्माण की अनुमति देने का आदेश दिया।

Q3. यह आदेश अकबर के धार्मिक स्वरूप के किस पहलू की ओर संकेत करता है? 2

उत्तर। यह आदेश अकबर की धार्मिक सहिष्णुता की नीति को इंगित करता है। हमें पता चलता है कि अकबर सभी धर्मों को समान सम्मान देता था।

---

7. एक शाही राजधानी: विजयनगर

मुख्य अवधारणाएँ: -

क्रम संख्या.	राजवंश	समय - अवधि
1-	संगम	1336- 1485 ई.
2-	सालुव	1485-1505 ई.
3-	तुलुव	1505-1570 ई.
4-	अरविदु	1570-1650 ई.

हम्पी की खोज

• हम्पी के भग्नावशेषको 1800 में कर्नल कॉलिन मैकेंज़ी नामक एक अभियंता और पुरातत्वविद् द्वारा प्रकाश में लाया गया था, जो अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी का एक कर्मचारी था।

• उन्हें जो प्रारंभिक जानकारी मिली वह विरुपाक्ष मंदिर और पंपादेवी के मंदिर के पुजारियों की यादों पर आधारित थी।

• 1836 की शुरुआत में ही अभिलेखशास्त्रियों ने हम्पी के इस और अन्य मंदिरों में पाए गए कई दर्जन शिलालेखों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया था और इतिहासकारों ने इन स्रोतों से विदेशी यात्रियों के विवरण और तेलुगु, कन्नड़, तमिल और संस्कृत में लिखे गए अन्य साहित्य के साथ जानकारी एकत्र की।

राय, नायक और सुल्तान

• दो भाइयों हरिहर और बुक्का ने 1336 में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की।

• अपने उत्तरी सीमाओं पर, विजयनगर के राजाओं ने समकालीन शासकों - दक्कन के सुल्तानों और उड़ीसा के गजपति शासकों के साथ प्रतिस्पर्धा की।

• इतिहासकार विजयनगर साम्राज्य शब्द का उपयोग करते हैं, समकालीन लोगों ने इसे कर्नाटक साम्राज्यमु के रूप में वर्णित किया था।

• इस साम्राज्य के कई भागों ने पहले कुछ क्षेत्रों में शक्तिशाली राज्यों जैसे तमिलनाडु में चोलों और कर्नाटक में होयसलों राज्य का विकास देखा था।

• शासक अभिजात वर्ग ने तंजावुर में बृहदीश्वर मंदिर और बेलूर में चेन्नाकेशव मंदिर जैसे विस्तृत मंदिरों को संरक्षण प्रदान किया।

• हाथी, घोड़े और मनुष्य

• गजपति एक शासक वंश का नाम था जो पंद्रहवीं शताब्दी में उड़ीसा में बहुत शक्तिशाली था। दक्कन के सुल्तानों को अश्वपति या घोड़ों का स्वामी कहा जाता है और रायों को नरपति या मनुष्यों का स्वामी कहा जाता है।

शासक और व्यापारी:

• अरब और मध्य एशिया ने युद्धों के लिए महत्वपूर्ण घोड़ों के व्यापार को नियंत्रित किया। कुदिरई चेट्टी या घोड़े के व्यापारी घोड़ों के व्यापार में भाग लेते थे।

• 1498 से, पुर्तगाली, जो उपमहाद्वीप के पश्चिमी तट पर पहुंचे और व्यापारिक और सामरिक केंद्र स्थापित करने का प्रयास किया।

• विजयनगर मसालों, वस्त्रों और रत्नों के अपने बाजारों के लिए भी प्रसिद्ध था।

राज्य का चरमोत्कर्ष और पतन:

• चार राजवंशों - संगम, सालुव, तुलुव और अराविदु ने साम्राज्य पर शासन किया।

• कृष्णदेव राय तुलुव वंश के थे। उनके शासन की चारित्रिक विशेषता विस्तार और सुदृढ़ीकरण थी।

• तुंगभद्रा और कृष्णा नदियों के बीच की भूमि, रायचूर दोआब को 1512 में हासिल किया गया, 1514 में उड़ीसा के शासकों का दमन किया और 1520 में बीजापुर के सुल्तान को बुरी तरह पराजित किया।

• कृष्णदेव राय को कुछ बेहतरीन मंदिरों के निर्माण और कई महत्वपूर्ण दक्षिण भारतीय मंदिरों में प्रभावशाली गोपुरम जोड़ने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने विजयनगर के पास अपनी मां के नाम पर नागलपुरम नामक एक उपनगरीय शहर भी बसाया।

• 1542 तक केंद्र पर नियंत्रण एक अन्य शासक वंश, अरविदु के पास चला गया था। विजयनगर के शासकों के साथ-साथ दक्कन सल्तनत के शासकों की सैन्य महत्वाकांक्षाओं के कारण गठबंधन में बदलाव आया।

• 1565 में विजयनगर के मुख्यमंत्री राम राय ने राक्षसी-तंगड़ी (जिसे तालिकोटा के नाम से भी जाना जाता है) में सेना का नेतृत्व किया, जहाँ उनकी सेनाओं को बीजापुर, अहमदनगर और गोलकुंडा की संयुक्त सेनाओं ने परास्त कर दिया।

• सुल्तानों की सेनाएँ विजयनगर शहर के विनाश के लिए जिम्मेदार थीं

• कृष्णदेव राय ने सल्तनत में सत्ता के कुछ दावेदारों का समर्थन किया और "यवन साम्राज्य के संस्थापक" की उपाधि पर गर्व किया।

राय तथा नायक: सैन्य प्रमुख जो आमतौर पर किलों को नियंत्रित करते थे और जिनके पास सशस्त्र समर्थक होते थे, उन्हें नायक के रूप में जाना जाता था और वे आमतौर पर तेलुगु या कन्नड़ बोलते थे।

• अमर-नायक प्रणाली विजयनगर साम्राज्य का एक प्रमुख राजनीतिक नवाचार था, इस प्रणाली की कई विशेषताएं दिल्ली सल्तनत की इक्ता प्रणाली से ली गई थीं।

• वे सैन्य कमांडर थे जिन्हें राया द्वारा शासन करने के लिए क्षेत्र दिए गए थे। वे कर और अन्य बकाया राशि एकत्र करते थे, राजस्व का कुछ हिस्सा निजी उपयोग के लिए रखते थे और घोड़ों और हाथियों की एक निर्धारित टुकड़ी को बनाए रखते थे।

• वे राजा को सालाना श्रद्धांजलि भेजते थे और अपनी वफादारी व्यक्त करने के लिए उपहारों के साथ शाही दरबार में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होते थे। राजा कभी-कभी उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित करके उन पर अपना नियंत्रण स्थापित करते थे।

❖ विजयनगर: राजधानी तथा उसके परिप्रदेश

जल संपदा

• उत्तर-पूर्व दिशा में बहने वाली तुंगभद्रा नदी द्वारा निर्मित प्राकृतिक कुंड ।

• सबसे महत्वपूर्ण ऐसा टैंक पंद्रहवीं शताब्दी के शुरुआती वर्षों में बनाया गया था और अब इसे कमलापुरम टैंक कहा जाता है। इसके पानी से न केवल आस-पास के खेतों की सिंचाई होती थी, बल्कि एक चैनल के माध्यम से "राजकीय केंद्र" तक भी पहुँचाया जाता था।

• हिरिया नहर में तुंगभद्रा पर बने बांध से पानी लाया जाता था और सिचाई के किए उपयोग किया जाता था, जो "धार्मिक केंद्र" को "शहरी केंद्र" से अलग करती थी।

किलेबंदिया और सड़कें

• पंद्रहवीं शताब्दी में फारस के शासक द्वारा कालीकट में भेजे गए राजदूत अब्दुर रज्जाक किलेबंदी से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने किलों की सात पंक्तियों का उल्लेख किया।

• न केवल शहर बल्कि इसके कृषि क्षेत्र और जंगलों को भी घेरा लिया। सबसे बाहरी दीवार शहर के आसपास की पहाड़ियों को जोड़ती थी।

• निर्माण में कहीं भी गारे या जोड़ने की किसी भी वस्तु का निर्माण में इस्तेमाल नहीं कियाथा।

• अब्दुर रज्जाक ने उल्लेख किया कि “पहली, दूसरी और तीसरी दीवारों के बीच खेती के खेत, बगीचे और घर हैं”।

• पेस ने कहा: “इस पहली परिधि से लेकर शहर में प्रवेश करने तक एक बड़ी दूरी है, जिसमें खेत हैं जिनमें वे चावल बोते हैं और कई बगीचे और बहुत सारा पानी है, जिसमें दो झीलों से पानी आता है।”

• मध्ययुगीन घेराबंदी का उद्देश्य रक्षकों को भूखा रखकर अधीनता में लाना था, जो कई महीनों और कभी-कभी सालों तक भी चल सकता था। आम तौर पर शासक किलेबंद क्षेत्रों के भीतर बड़े-बड़े अन्न भंडार बनाकर ऐसी स्थितियों के लिए तैयार रहने की कोशिश करते थे।

शहरी केंद्र: आम लोगों के घरों के बहुत कम पुरातात्विक साक्ष्य हैं। पुरातत्वविदों को कुछ क्षेत्रों में परिष्कृत चीनी मिट्टी के बर्तन मिले हैं, जो बताते हैं कि इन क्षेत्रों पर अमीर व्यापारियों का कब्ज़ा रहा होगा।

• सोलहवीं शताब्दी के पुर्तगाली यात्री बारबोसा ने आम लोगों के घरों का वर्णन किया है, जो अब नहीं बचे हैं।

• क्षेत्रीय सर्वेक्षणों से पता चलता है कि पूरा इलाका कई मंदिरों और छोटे मंदिरों से भरा हुआ था, जो विभिन्न प्रकार के पंथों के प्रचलन की ओर इशारा करते हैं।

राजकीय केंद्र

• यह बस्ती के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित था, इसमें 60 से अधिक मंदिर शामिल थे।

• लगभग तीस भवन परिसरों की पहचान महलों के रूप में की गई है। अपेक्षाकृत बड़ी संरचनाएँ जो अनुष्ठान कार्यों से जुड़ी हुई नहीं लगती हैं।

महानवमी डिब्बा

• महानवमी डिब्बा को दशहरा डिब्बा भी कहा जाता है। डोमिंगो पेस ने इसे "विजय का भवन" कहा है।

• महानवमी डिब्बा एक विशाल मंच है जो लगभग 11,000 वर्ग फीट के आधार से 40 फीट की ऊँचाई तक जाता है। संरचना से जुड़े अनुष्ठान संभवतः महानवमी के साथ मेल खाते थे।

• इस अवसर पर किए जाने वाले समारोहों में मूर्ति की पूजा, राजकीय घोड़े की पूजा, तथा भैंसों और अन्य पशुओं की बलि देना शामिल था। नृत्य, कुश्ती प्रतिस्पर्धातथा शोभायात्रा, साथ ही मुख्य नायकों और अधीनस्थ राजाओं द्वारा राजा और उनके अतिथियों के समक्ष अनुष्ठान प्रस्तुतियाँ इस अवसर की विशेषता थीं।

राजकीय केंद्र में स्थित अन्य भवन

• राजकीय केंद्र में सबसे सुंदर इमारतें लोटस महल हैं, जिसका उपयोग परिषद कक्ष के रूप में किया जाता था, यह वह स्थान था जहाँ राजा अपने सलाहकारों से मिलते थे।

• इनमें से सबसे शानदार इमारतों में से एक हजारा राम मंदिर के रूप में जाना जाता है, जिसका उपयोग संभवतः केवल राजा और उनके परिवार द्वारा किया जाता था।

• केंद्रीय मंदिर में प्रतिमाएँ गायब हैं; हालाँकि, दीवारों पर नक्काशीदार पैनल बचे हुए हैं। इनमें आंतरिक दीवारों पर रामायण के दृश्य शामिल हैं।

धार्मिक केंद्र

राजधानी का चयन

• स्थानीय परंपरा के अनुसार, शहर के चट्टानी उत्तरी छोर पर रामायण में वर्णित बाली और सुग्रीव का वानर साम्राज्य था। अन्य परंपराओं से पता चलता है कि स्थानीय मातृ देवी पंपादेवी ने विरुपाक्ष से विवाह करने के लिए इन पहाड़ियों में तपस्या की थी।

• इस क्षेत्र में मंदिर निर्माण का इतिहास बहुत पुराना है, जो पल्लव, चालुक्य, होयसल और चोल जैसे राजवंशों तक जाता है।

• यह संभावना है कि विजयनगर के स्थल का चयन विरुपाक्ष और पंपादेवी के मंदिरों के अस्तित्व से प्रेरित था।

• विजयनगर के राजाओं ने भगवान विरुपाक्ष की ओर से शासन करने का दावा किया। सभी शाही आदेशों पर आमतौर पर कन्नड़ लिपि में "श्री विरुपाक्ष" लिखा होता था। शासकों ने "हिंदू सुरताना" शीर्षक का उपयोग करके देवताओं के साथ अपने घनिष्ठ संबंधों का भी संकेत दिया।

• गोपुरम और मंडप

ये अक्सर केंद्रीय मंदिरों पर स्थित मीनारों को बौना बना देते थे, और बहुत दूर से मंदिर की उपस्थिति का संकेत देते थे।

- संभवतः राजाओं की शक्ति की याद दिलाने के लिए, जो इन विशाल प्रवेश द्वारों के निर्माण के लिए आवश्यक संसाधनों, तकनीकों और कौशल को नियंत्रित करने में सक्षम थे।
- अन्य विशिष्ट विशेषताओं में मंडप तथा लंबे स्तंभों वाले गलियारे शामिल हैं जो अक्सर मंदिर परिसर के भीतर मंदिरों के चारों ओर चलते थे, देवताओं के विवाह का जश्न मनाने के लिए उपयोग किए जाते थे, और फिर भी अन्य देवताओं के झूलने के लिए थे।
- मुख्य मंदिर के सामने का हॉल कृष्णदेव राय ने अपने राज्याभिषेक को चिह्नित करने के लिए बनवाया था। विभिन्न उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता है।

- विठ्ठल मंदिर परिसर की एक विशिष्ट विशेषता रथ मार्ग हैं जो मंदिर के गोपुरम से एक सीधी रेखा में विस्तारित होते हैं।
- डोमिंगो पेस राजा (कृष्णदेव राय) का वर्णन करते हैं: मध्यम ऊंचाई, और गोरा रंग और अच्छी आकृति, बल्कि पतले की तुलना में मोटा; उसके चेहरे पर चेचक के निशान हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न.1 विजयनगर साम्राज्य की स्थापना कब व किसने की ?

ए. (1336, हरिहर एवं बुक्का) बी. (1333 बुक्का एवं हरिहर)

सी. (1339 रामराय एवं राजा) डी. (1565 कृष्णदेवराय)

उत्तर : ए

प्रश्न.2 विजयनगर के संदर्भ मे वंशो का सही क्रम है ?

ए. संगम, सुलूव, तुलुव, अरविदु, बी. संगम, तुलुव, अरविदु, सुलूव,

सी. संगम, तुलुव, सुलूव, अरविदु, डी. सुलूव, संगम, तुलुव, अरविदु,

उत्तर: ए

प्रश्न.3 विजयनगर साम्राज्य के तीन महत्वपूर्ण भाग थे ?

ए.कमल महल, महानवमी डिब्बा, पवित्र केंद्र, बी.शहरी केंद्र, पवित्र केंद्र, राजकीय केंद्र,

सी.शहरी केंद्र, मंदिर परिसर, राजकीय केंद्र, डी.परिषदीय कक्ष, हाथियो का कक्ष, राजकीय केंद्र,

उत्तर: बी

प्रश्न.4.हज़ार राम मंदिर के संबंध मे सही नहीं है?

ए.मंदिर की दीवारों पर रामायण के चित्र प्रदर्शित है

बी.यह राजकीय केंद्र का हिस्सा था न कि पवित्र केंद्र का

सी.इस मंदिर के मुख्य देवता की मूर्ति अच्छी अवस्था मे मिली है

डी.यह विश्वास किया जाता है कि इसमे शासक ही पूजा करते थे

उत्तर: सी

प्रश्न.5 कोनसा विजयनगर का जल संसाधन का स्त्रोत नहीं था?

ए. कमलपुरम बी हिरिया

सी. तुंगभद्रा डी. नागलपुरम

उत्तर: डी

प्रश्न.6 किसने सभा कक्ष ओर महानवमी डिब्बा को विजय का घर कहा था?

ए. डोमिंगो पाइस बी. बारबोसा

सी. अब्दुरज्जाक डी. नूनीज़

उत्तर: ए

प्रश्न.7 अमर नायक व्यवस्था कहाँ से ली गयी थी?

ए. दक्षिण कि जमींदारी व्यवस्था से बी. दिल्ली सुल्तानों की इक्ता व्यवस्था से

सी. मुग़लो की मानसबदारी व्यवस्था से डी. दक्षिण की इक्ता व्यवस्था से

उत्तर: बी

प्रश्न.8 विजयनगर शासको के द्वारा जारी राजकीय आदेशो पर किस देवता के हस्ताक्षर होते थे?

ए. विट्ठल बी. विरूपाक्ष

सी. पंपादेवी डी. ब्रहदीश्वर

उत्तर: बी

प्रश्न.9 कौन सा जोड़ा सही नहीं है?

ए. अब्दुर्रज्जाक - फारस

बी. अफनसी निकितीन- फ़्रांस

सी. निकोलो दी कोनती- इटली

डी. डोमिंगो पेस- पुर्तगाल

उत्तर: बी

प्रश्न.10कृष्णदेवराय के बारे में कौनसा सही नहीं है?

ए. वह सुलुव वंश के थे

बी. उन्होने अमूक्त्माल्यद पुस्तक तेलगु में लिखी|

सी. उन्हे यवन राज्य का संस्थापक माना जाता है| डी. उन्होने 1514 मे उड़ीसा के गजपति राजा को हराया

उत्तर: ए

प्रश्न.11 निम्न मे से कोनसा सुमेलित नहीं है

ए. अमरनायक व्यवस्था --- विजयनगर

बी. हरिहर एवं बुक्का --- विजयनगर के संस्थापक

सी. महानवमी डिब्बा --- राजकीय मंच

डी. हज़ार राम मंदिर --- आम लोगो के लिए मंदिर

उत्तर: डी

प्रश्न.12 गजपति का अर्थ है हाथियो का देवता, इस नाम के शासक वंश .....राज्य मे शक्तिशाली थे I

ए. उड़ीसा

बी. दक्कन

सी. केरल

डी. कर्नाटक

उत्तर: ए

प्रश्न.13. विजयनगर मे कोंनसी नदी जल का प्रमुख स्त्रोत था

(ए) कावेरी

(बी) कृष्णा

(सी) तुंगभद्रा

(डी) महानदी

उत्तर: सी

प्रश्न.14 महानवमी डिब्बा के सम्बंध मे कौनसा कथन सही है

(ए). यह एक उंचा मंच था जिसमे निरन्तर अंतराल पर लकड़ी के स्तम्भ थे

(बी) यह एक बडा मंच था जो कि शहर के उंचे हिस्से मे स्थित था

(सी) यह वह स्थान था जहाँ राजा के लिए अमरनायाक भेट लाते थे|

(डी) उक्त सभी

उत्तर: डी

प्रश्न.15 - दक्षिण भारतीय मंदिरो मे गोपुरम दर्शाते है :-

(ए)मुख्य मंदिर से जुड़े राजकीय प्रवेश द्वार

(बी)मंदिर परिसर के चारो और स्थित लम्बे स्तम्भ आधारित कोरिडोर

(सी) मंदिर के उपर पिरामिडनुमा लम्बा शिखर

(डी)प्रदक्षिणा पथ

उत्तर: ए

प्रश्न. 16 गोपुरम बनवाने का मुख्य कारण था:-

(ए) लम्बी दुरी से ही मंदिर होने का संकेत

(बी)यह राजा की सम्पती,शक्ति और संसाधन को दर्शाता है

(सी)मंदिरो को आक्रमणकरियो से बचाने के लिये

(डी)अ और ब दोनो

उत्तर: डी

प्रश्न. 17 नीचे दो कथन दिये गए है (A) कथन है ओर अन्य (R)कारण है, सही उत्तर चुनिये-

कथन (A) पुरातत्वविदों ने सुझाया है की शहरी केंद्र के उत्तर पूर्व मे धनी व्यापारी निवास करते थे

कारण (R) यहा पर अनेकों गुंबद, मस्जिदे ओर चीनी मिट्टी के बर्तन मिले है

ए) कथन A ओर R दोनों सही है औरR, A की सही व्याख्या करता है |

(बी) (A)कथन A ओर R दोनों सही है औरR ,A की सही व्याख्या नहीं करता है |

(सी) कथन A सही है परंतु R सही नहीं है |

(डी) कथन R सही है परंतु A सही नहीं है |

उत्तर: ए

प्रश्न.18 कथन (A) 1529 मे कृष्णदेवराय की मृत्यु के बाद विजयनगर के साम्राज्यिक ढांचे मे बदलाव आने लगा

कारण (R) उसके उत्तराधिकारी विद्रोही नायकों और अमरनायकों को नियंत्रण मे लाने मे असफल रहे

ए) कथन A ओर R दोनों सही है और R , A की सही व्याख्या करता है |

बी) कथन ए ओर R दोनों सही है और R, A की सही व्याख्या नहीं करता है |

(सी) कथन A सही है परंतु R सही नहीं है|

(डी) कथन R सही है परंतु A सही नहीं है |

उत्तर: ए

प्रश्न.19 कथन (A) विजयनगर की किलेबंदी मे खेती वाली जमीनो को शामिल किया गया था

कारण (R) शासक आने वाले खतरो और उनके परिणामो से अवगत थे

ए) कथन A ओर R दोनों सही है और R , A की सही व्याख्या करता है |

बी) कथन ए ओर R दोनों सही है और R, A की सही व्याख्या नहीं करता है |

सी) कथन A सही है परंतु R सही नहीं है

(डी) कथन R सही है परंतु A सही नहीं है

उत्तर: ए

प्रश्न 20: निम्नलिखित कथनो के बारे मे विचार कीजिये

I. मंदिरो को आर्थिक गतिविधियो का केंद्र् माना जाता था

II. स्तम्भो पर आधारित बरामदे बनाये गये थे जिनमे व्यापारी दुकाने जमा सके

सही विकल्प चुनिये

ए) कथन 1 सही है बी) कथन 2 सही है

सी) 1 और 2 दोनो सही है डी) 1 और 2 दोनो सही नही है

उत्तर: सी

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक)

प्रश्न 1: विजयनगर के इतिहास को जानने के लिए विभिन्न स्रोतों पर चर्चा करें।

- 1800 में कर्नल कॉलिन मैकेंज़ी ने पहली बार हम्पी शहर को प्रकाश में लाया।
- इसके बाद, इतिहासकार विजयनगर के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए रुचि पैदा करते हैं।

- विरुपाक्ष और पंपदेवी के पुजारियों के बयानों की तरह मौखिक गवाही हमें विजयनगर शहर की एक झलक देती है।
- इतिहासकार डोमिंगो पेस, अब्दुर रज्जाक, बारबारोसा और कई अन्य जैसे विदेशी यात्रियों से भी जानकारी एकत्र कर रहे हैं।
- इसी तरह तेलुगु, तमिल और संस्कृत साहित्य भी विजयनगर के इतिहास के पुनर्निर्माण में बहुत मदद कर रहे हैं। उदाहरण के लिए तेलुगु में कृष्णदेव राय का अमुक्तमलयादा।
- हम्पी के सभी ऐतिहासिक अवशेष जैसे महानबामिडिब्बा, कमल महल, हजार राम मंदिर आदि विजयनगर के गौरवशाली अतीत के मूक और मूक गवाह के रूप में खड़े हैं।

प्रश्न2: कर्नल कॉलिन मैकेंज़ी कौन थे? विजयनगर की खोज में उनके योगदान की विवेचना कीजिए।

- कर्नल कॉलिन मैकेंज़ी, 1754 में पैदा हुए, एक प्रसिद्ध इंजीनियर, सर्वेक्षक, मानचित्रकार और एक पुरातात्त्विक थे।
- 1815 में उन्हें भारत के पहले सर्वेक्षक जनरल के रूप में नियुक्त किया गया था जो उन्होंने 1821 तक जारी रखा।
- 1800 में, उन्होंने साइट का पहला सर्वेक्षण नक्शा तैयार करके हम्पी के अवशेषों को प्रकाश में लाया।
- महासर्वेक्षक के कार्यकाल के दौरान, उन्होंने बहुत सारी सामग्री एकत्र की और पम्पा देवी और विरुपाक्ष मंदिर के पुजारियों द्वारा दिए गए चित्रणों को ठीक करने का प्रयास किया।

प्रश्न 3 : विजयनगर को पानी उपलब्ध कराने वाले दो सबसे महत्वपूर्ण जल कार्यों का उल्लेख कीजिए।

- चूंकि विजयनगर पहाड़ी क्षेत्रों में स्थित था, रायस ने विभिन्न तालाबों और नहरों के निर्माण में गहरी रुचि ली थी।
- हिरिया नहर जो तुंगभद्रा और कमलापुरम जलाशय पर एक बांध से पानी खींचती थी, जो शाही केंद्र को पानी प्रदान कर रही थी, विजयनगर साम्राज्य के दो सबसे प्रमुख जल कार्य थे।
- इसी प्रकार, कृष्णा देव राय द्वारा दो पहाड़ियों के मुहाने पर निर्मित एक तालाब और तटबंधों के माध्यम से बनाए गए जलाशयों से भी विजयनगर को पानी मिलता है।

प्रश्न 4 : विजयनगर को राजधानी के रूप में क्यों चुना गया?

तुंगभद्रा के तट पर विजयनगर को राजधानी के रूप में निम्नलिखित कारण से चुना गया था:
कारण:-

- स्थानीय परंपरा के अनुसार ये पहाड़ियाँ बाली और सुग्रीव का राज्य थीं, अर्थात किस्किंदा जैसा कि रामायण में वर्णित है।
- देवी माँ के रूप में इस स्थान का धार्मिक महत्व भी है; पम्पा देवी ने भगवान शिव के एक रूप विरुपाक्ष से विवाह करने के लिए तपस्या की थी।
- ये पहाड़ियां कई पवित्र परंपराओं से भी जुड़ी हुई हैं, क्योंकि कई जैन मंदिर पूर्व विजयनगर काल के पाए जाते हैं।
- शहर ग्रेनाइट की पहाड़ियों पर था जहाँ से कई धाराएँ तुंगभद्रा नदी में बहती थीं, इसलिए पानी की प्रचुरता ने भी शासकों को अपनी राजधानी स्थापित करने के लिए प्रेरित किया।
- सबसे ऊपर शहर के सामरिक महत्व ने विजयनगर शासकों को प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान की, इसलिए शहर को राजधानी के रूप में चुना गया।

प्रश्न 5: गोपुरम से आप क्या समझते हैं?

- गोपुरम दक्षिण भारतीय मंदिरों का प्रवेश द्वार है।
- विजयनगर काल के दौरान शाही सत्ता को चिह्नित करने के लिए, बड़े पैमाने पर रॉयल गेटवे का निर्माण किया गया था।
- ये द्वार अक्सर सांस्कृतिक चमक के रूपों को दर्शाते हैं।
- गोपुरमों ने दूर से ही मंदिरों की उपस्थिति का संकेत दिया।
- इसका अर्थ राजाओं की शक्ति, आदेश देने में सक्षम और इन टावरों के निर्माण के लिए आवश्यक संसाधनों, तकनीकों और कौशल की याद दिलाना भी था।
- कई अमर नायक और नायकों ने भी गोपुरम का निर्माण किया था।

प्रश्न 6 : आप क्यों सोचते हैं कि मध्यकाल में कृषि क्षेत्रों की किलेबंदी की गई थी?

- मध्ययुगीन काल के दौरान कृषि क्षेत्रों को दृढ़ किया गया था क्योंकि:
- मध्यकालीन युद्ध की रणनीति कृषि भूमि की घेराबंदी और विपक्ष को भुखमरी के डर से आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर करना था।
- चूंकि युद्ध लंबे समय से चल रहा था इसलिए राजा अपने संसाधनों पर नियंत्रण रखने की कोशिश कर रहे थे।
- राजा एक विस्तृत रणनीति के लिए पहल कर रहे थे जिससे राज्य के संसाधन दुश्मन के हाथों में न पड़ें।

प्रश्न 7 विजय नगर साम्राज्य के पतन के क्या कारण हैं?

- कृष्ण देव राय के उत्तराधिकारी विद्रोही नायक या सेना से कमजोर एव परेशान थे
- प्रमुख प्रशासन में लोगों की कोई भूमिका नहीं थी। इसलिए संकट के समय उन्होंने साथ नहीं दिया।
- इस अवधि के दौरान, विजयनगर के शासकों के साथ-साथ दक्कन सल्तनत के की सैन्य महत्वाकांक्षाएं बढ़ी,परिणामस्वरूप संरक्षण में बदलाव आया।
- 1565 में विजयनगर के मुख्यमंत्री राम राय ने सेना का युद्ध में नेतृत्व किया, जिसे तालिकोटा की लड़ाई के रूप में जाना जाता है,लेकिन उसकी सेना को बीजापुर, अहमदनगर और गोलकुंडा। की संयुक्त सेनाओं ने पराजित कर दिया,विजयी सेनाओं ने विजयनगर शहर को लूट लिया। कुछ वर्षों में शहर को पूरी तरह से त्याग दिया।

प्रश्न 8. "कृष्णदेव राय के शासन की विशेषता विस्तार और सुदृढ़ीकरण" थी। व्याख्या करें|

- कृष्णदेव राय विजयनगर साम्राज्य के सबसे महान शासक थे।
- वह तुलुव वंश के थे।
- उनके शासन में विस्तार और सुदृढ़ीकरण की विशेषता थी
- यह वह समय था जब तुंगभद्रा और कृष्णा नदियों (रायचूर नदी) के बीच की भूमि दोआब) का अधिग्रहण किया गया था (1512), उड़ीसा के शासकों को वश में कर लिया गया (1514)। बीजापुर के सुल्तान (1520) को भारी पराजय मिली।
- राज्य शांति और समृद्धि के साथ फला-फूला।
- कृष्ण देव राय को कुछ बेहतरीन मंदिरों के निर्माण और प्रभावशाली जोड़ने का श्रेय दिया जाता है
- कई महत्वपूर्ण दक्षिण भारतीय मंदिरों के लिए गोपुरम।
- उन्होंने अपनी मां के नाम पर नागलपुरम नामक एक शहर की भी स्थापना की।
- 1529 में कृष्णदेव राय की मृत्यु हो गई।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंक)

प्र.1 आपके विचार से शहर के किलेबंद क्षेत्र में कृषि भूमि को घेरने के क्या फायदे और नुकसान थे?

- विजयनगर साम्राज्य के किलेबंद क्षेत्र में कृषि भूमि को घेरने के कई फायदे और नुकसान हैं।

<u>लाभ</u>

- अब्दुर रज्जाक ने उल्लेख किया कि "पहली, दूसरी और तीसरी दीवारों के बीच खेती के खेत, बगीचे और घर हैं।
- विस्तृत बयानों की वर्तमान पुरातत्वविदों द्वारा पुष्टि की गई है, जिन्होंने पवित्र केंद्र और शहरी कोर के बीच एक कृषि पथ के प्रमाण भी पाए हैं। .
- हम विभिन्न स्रोतों से जानते थे कि विजयनगर साम्राज्य और अन्य दक्षिणी साम्राज्य में कृषि क्षेत्रों को दुर्ग वाले क्षेत्रों में शामिल किया गया था।
- अक्सर, मध्ययुगीन घेराबंदी का उद्देश्य रक्षकों को अधीनता में लाना था। ये घेराबंदीर कई महीनों और कभी-कभी वर्षों तक भी रह सकती थी।
- आम तौर पर शासकों ने दुर्ग वाले क्षेत्रों के भीतर बड़े अन्न भंडारों का निर्माण करके प्रतिकूल परिस्थितियों या प्राकृतिक आपदाओं के लिए तैयार रहने की कोशिश की। विजयनगर के शासकों ने कृषि क्षेत्र की रक्षा के लिए एक अधिक महंगी और विस्तृत रणनीति अपनाई।

हानि

- जब भी, लड़ाई के समय दुश्मनों द्वारा राज्य पर हमला किया गया था किसानों की सूखी फसल को वे आसानी से नुकसान पहुंचा सकते थे, लेकिन ये खेत जंगली जानवरों से सामान्य स्थिति में सुरक्षित थे |

प्रश्न: -2 आपको क्या लगता है कि महानवमी डिब्बे से जुड़े अनुष्ठान का क्या महत्व था?

शहर में उच्चतम बिंदु, "महानवामी डिब्बा" एक विशाल मंच है जो आधार से उठकर 40 फीट की ऊंचाई तक 11000 वर्ग फुट के क्षेत्र में विस्त्रत था ।

- संरचना से जुड़े अनुष्ठान संभवतः मेल खाते हैं कि शरद ऋतु के महीनों के दौरान दस दिवसीय हिंदू त्योहार की महानवमी (सचमुच महान नौवां दिन) सितंबर और अक्टूबर में, जिसे दशहरा (उत्तरी भारत), दुर्गा पूजा (बंगाल में) के रूप में जाना जाता है।और नवरात्रि या महानवमी (प्रायद्वीपीय भारत में)।
- विजयनगर के राजाओं ने इस अवसर पर अपनी सत्ता और आधिपत्य प्रतिष्ठा का प्रदर्शन किया करते थे।
- इस अवसर पर किए गए समारोहों में मूर्ति की पूजा, राजकीय घोड़े की पूजा शामिल थी|
- भैंसों और अन्य जानवरों की बलि दी जाति थी ।
- नर्तक, कुश्ती के मैच, और शोभायमान घोड़ों, हाथियों और रथों के जुलूस और सैनिकों, साथ ही प्रमुख नायकों अधीनस्थ राजाओं द्वारा राजा और उनके मेहमानों के सामने अनुष्ठान, प्रस्तुतियां दी जाती थी । ये समारोह उत्सव के अंतिम दिन गहरे प्रतीकात्मक अर्थों से ओत-प्रोत थे
- इस अवसर पर राजा एक खुले मैदान में एक भव्य समारोह में अपनी सेना और नायकों की सेनाओं का निरीक्षण करता था।
- इस अवसर पर नायक राजा के लिए समृद्ध उपहार के साथ-साथ निर्धारित उपहार भी लाते थे।

प्रश्न.3:- विजयनगर साम्राज्य के उदय में अमर नायक व्यवस्था के महत्व का मूल्यांकन कीजिए।

विजयनगर साम्राज्य के उदय में इस प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका है।

जिसके प्रमुख बिन्दु निम्न है :

- अमर-नायक प्रणाली विजयनगर साम्राज्य का एक प्रमुख राजनीतिक नवाचार था।

- यह संभावना है कि इस प्रणाली की कई विशेषताएं दिल्ली सल्तनत की इक्ता प्रणाली से ली गई थीं
- अमर-नायक सैन्य कमांडर थे जिन्हें राय द्वारा शासन करने के लिए क्षेत्र दिए जाते थे।
- किसानों से कर और अन्य बकाया एकत्रित करते थे ।
- राजस्व का एक हिस्सा सिंचाई कार्यों और मंदिरों के रखरखाव के लिए खर्च किया गया था।
- अमर नायक ने व्यक्तिगत उपयोग के लिए और घोड़ों और हाथियों की टुकड़ी बरकरार रखने के लिए राजस्व का एक हिस्सा रखा करते थे
- इन टुकड़ियों ने विजयनगर के राजाओं को एक प्रभावी युद्ध शक्ति प्रदान की जिसके साथ उन्होंने पूरे दक्षिणी प्रायद्वीप को अपने नियंत्रण में ले लिया।
- अमर-नायकों ने राजा को प्रतिवर्ष अपनी वफादारी व्यक्त करने के लिए उपहारों के साथ व्यक्तिगत रूप से शाही दरबार में उपस्थित होते थे ।
- राजाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित करके कभी-कभी उन पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लेते थे|
- इनमें से कई नायकों ने 17वीं शताब्दी में स्वतंत्र राज्यों की स्थापना की।

प्रश्न.4. विजयनगर में किलेबंदी और सड़कों की व्याख्या करें।

- पंद्रहवीं शताब्दी में फारस के शासक द्वारा एक राजदूत अब्दुर रज्जाक को कालीकट भेजा गया था
- वह किलेबंदी से बहुत प्रभावित हुए, और किलों की सात पंक्तियों का उल्लेख किया।
- इन दीवारों ने न केवल शहर को बल्कि इसकी कृषि भूमि और जंगलों को भी घेर लिया था।
- सबसे बाहरी दीवार शहर के चारों ओर की पहाड़ियों को जोड़ती है।
- निर्माण में कहीं भी मोर्टार या सीमेंटिंग एजेंट नहीं लगाया गया था।
- इस्तेमाल किए गए पत्थर के ब्लॉक थे दीवारों का भीतरी भाग मलबे से भरी हुई मिट्टी का था
- पहली, दूसरी और तीसरी दीवारों के बीच खेती के खेत, बगीचे और घर हैं।
- पेस के अनुसार, पहले सर्किट और शहर के बीच काफी दूरी होती है, जिसमें मैदान होते हैं जिसमें वे चावल बोते हैं, और उनके पास बहुत से बगीचे और बहुत सारा पानी है, जिसमें दो झीलों से पानी आता है
- किलेबंदी की एक दूसरी पंक्ति शहरी परिसर के भीतरी भाग और तीसरी पंक्ति के चारों ओर बनाई गई थी|
- शाही केंद्र से घिरा हुआ था, जिसके भीतर प्रमुख इमारतों का प्रत्येक समूह अपने आप से ऊंची दीवारों से घिरा हुआ था।
- किले में अच्छी तरह से संरक्षित द्वारों के माध्यम से प्रवेश किया जाता था, जो शहर को प्रमुख सड़कों से जोड़ता था।
- तुर्की सुल्तानों द्वारा प्रवेश द्वार विशिष्ट वास्तुशिल्प विशेषताएं से बने थे जो की किलेबंद बस्ती में जाने वाले प्रवेश द्वार पर मेहराब को पेश की गई वास्तुकला की विशिष्ट विशेषताओं के रूप में माना जाता है
- कुछ सबसे महत्वपूर्ण सड़कें मंदिर के प्रवेश द्वारों से फैली हुई थीं, और बाज़ारों से घिरी हुई थीं।

प्रश्न 5. चर्चा करें कि क्या "शाही केंद्र" शब्द शहर के उस हिस्से का उपयुक्त विवरण है,जिसके लिए इसका इस्तेमाल किया जाता था।

मुझे लगता है कि शाही केंद्र शब्द शहर के उस हिस्से के लिए उपयुक्त वर्णन है जिसके लिए यह है उपयोग किया गया।

i) शाही केंद्र में सबसे खूबसूरत इमारतों में से एक कमल महल है, इसलिए इसका नाम रखा गया है नाम निश्चित रूप से रूमानी है, इतिहासकारों को पूरी तरह से यकीन नहीं है कि इमारत का इस्तेमाल किस लिए किया गया था | मैकेंज़ी द्वारा खींचे गए नक्शे में पाया गया सुझाव यह है कि यह एक परिषद कक्ष, एक स्थान हो सकता है |
जहां राजा ने अपने सलाहकारों से मुलाकात की।
ii) जबकि अधिकांश मंदिर पवित्र केंद्र में स्थित थे, शाही केंद्र में कई मंदिर थे इनमें से सबसे शानदार में से एक हजारा राम मंदिर के रूप में जाना जाता है। शायद इसका इस्तेमाल केवल राजा और उसके परिवार द्वारा किया जाना था।
iii) केंद्रीय मंदिर में चित्र गायब हैं: हालांकि दीवारों पर तराशे हुए पैनल बच गए हैं। इन मंदिर की भीतरी दीवारों पर उकेरी गई रामायण के दृश्यों को शामिल किया गया था ।
iv) जबकि विजयनगर में कई महलनुमा संरचनाओं के निर्माण की परंपराओं को नायकों द्वारा जारी रखा गया था जब शहर को नष्ट कर दिया गया था,इनमें से कई इमारतें बच गई थी।
v) शाही केंद्र बस्ती के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित था। हालांकि यह एक शाही केंद्र के रूप में नामित है किन्तु इसमें 60 से अधिक मंदिर शामिल थे। स्पष्ट रूप से मंदिरों और धर्म को राजकीय संरक्षण था| शासकों के लिए महत्वपूर्ण था, जो अपने अधिकार को स्थापित करने और वैध बनाने की कोशिश कर रहे थे।

स्त्रोत आधारित प्रश्न (4 अंक)

निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यान से पढ़ें और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें।

बाजार

पेस बाजार का एक विशद विवरण देते हैं: आगे जाकर, आपके पास एक चौड़ी और सुंदर सड़क है, इस गली में कई व्यापारी रहते हैं, और वहां आपको सभी प्रकार के माणिक, और हीरे, और पन्ना, और मोती, और बीज-मोती मिलेंगे। और वस्त्र, और सब प्रकार की वस्तुएं जो पृथ्वी पर हैं, और कि तुम मोल लेना चाहो। फिर वहाँ हर शाम तुम्हारे पास एक मेला लगता है, जहाँ वे बहुत से आम घोड़े और नाग, और बहुत से नीबू, और नीबू, और संतरे, और अंगूर, और हर तरह की उद्यान सामग्री, और लकड़ी बेचते हैं; आपके पास इस गली में सब कुछ है।अधिक आम तौर पर, उन्होंने शहर को "दुनिया में सबसे अच्छा प्रदान किया जाने वाला शहर" के रूप में वर्णित किया, "चावल, गेहूं, अनाज, भारतीय मकई और जौ और सेम, मूंग, दालें और घोड़े की एक निश्चित मात्रा जैसे प्रावधानों के साथ भंडारित"। -ग्राम" जो सभी सस्ते और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे। फर्नाओ नुनिज़ के अनुसार, विजयनगर के बाजार "फलों, अंगूरों और संतरे, नीबू, अनार, कटहल और आमों की बहुतायत से भरे हुए थे और सभी बहुत सस्ते थे।"
मांस भी बाजारों में खूब बिकता था। नुनिज़ ने "मटन, सूअर का मांस, हिरन का मांस, तीतर, खरगोश, कबूतर, बटेर और सभी प्रकार के पक्षियों, गौरैयों, चूहों और बिल्लियों और छिपकलियों" का वर्णन बिसनागा के बाजार में बेचा जा रहा है।
प्रश्न .1 यह बाजार किस शहर में पाया गया था?
उत्तर: विजयनगर
प्रश्न.2 पेस के मुताबिक वहां से क्या खरीदा जा सकता है?
उत्तर: चावल, गेहूं, अनाज, भारतीय मक्का और एक निश्चित मात्रा में जौ और सेम, मूंग, दाल और घोड़ा-चना जैसे प्रावधान "

प्रश्न.3 फर्नाओ नुनिज के अनुसार, विजयनगर के बाजारों की क्या विशेषताएं थीं?

उत्तर: विजयनगर के बाजार "फलों, अंगूरों और संतरे, नीबू, अनार, कटहल और आमों की बहुतायत से भरे हुए थे और सभी बहुत सस्ते थे।"

2. कॉलिन मेकेंज़ी

1754 में जन्मे कॉलिन मैकेंज़ी एक प्रसिद्ध इंजीनियर, सर्वेक्षक और मानचित्रकार बन गए। 1815 में उन्हें भारत का पहला सर्वेक्षक जनरल नियुक्त किया गया। 1821 में अपनी मृत्यु तक एक पद पर रहे। उन्होंने भारत के अतीत को बेहतर ढंग से समझने और उपनिवेश के शासन को आसान बनाने के लिए स्थानीय इतिहास एकत्र करना और ऐतिहासिक स्थलों का सर्वेक्षण करना शुरू किया। उनका कहना है कि "यह मृत प्रबंधन के दुखों के तहत लंबे समय तक संघर्ष करता रहा...। इससे पहले कि दक्षिण ब्रिटिश सरकार के प्रभाव में सौम्य था।" विजयनगर खड़े होकर, मेकेंज़ी का मानना था कि ईस्ट इंडिया कंपनी "इन संस्थानों, कानूनों और रीति-रिवाजों में से कई के बारे में बहुत उपयोगी जानकारी हासिल करेगी, जिनका प्रभाव अभी भी कायम है। इस तिथि तक जनसंख्या के सामान्य द्रव्यमान का निर्माण करने वाले मूल निवासियों की विभिन्न जनजातियों में से।

(i) कॉलिन मैकेंज़ी कौन थे?

उत्तर: कॉलिन मैकेंज़ी ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी में काम करते थे। उनका जन्म 1754 में हुआ था। वे एक प्रसिद्ध इंजीनियर, सर्वेक्षक और मानवतावादी थे ।

(ii) कॉलिन मेकेंज़ी ने किस प्राचीन शहर की खोज की थी?

उत्तर: हम्पी

(iii) उन्होंने सर्वेक्षण क्यों शुरू किया?

उत्तर: उन्होंने भारत के अतीत को बेहतर ढंग से समझने और उपनिवेश के शासन को आसान बनाने के लिए सर्वेक्षण शुरू किया।

मानचित्र आधारित प्रश्न

भारत के मानचित्र में निम्नलिखित मदों को चिन्हित कीजिए।

बीदर,	गोलकुंडा,	बीजापुर,	विजयनगर,
चंद्रगिरि,	कांचीपुरम,	मैसूर,	तंजावुर,
कोलार,	तिरुनेलवेली		

=====xxxx=====

8. किसान, ज़मींदार और राज्य

मुख्य अवधारणाएँ: -

- भूमि - खेती व्यक्तिगत स्वामित्व के सिद्धांत पर आधारित थी।
- मानसून भारतीय कृषि की रीढ़ बना रहा।
- दो प्रमुख फ़सल चक्र थे - खरीफ़ और रबी,
- कारीगरों के पर्याप्त सदस्यों का अस्तित्व।
- ग्रामीण असमानताएँ जाति और लिंग पर आधारित थीं।
- जनजातियाँ - बसे हुए गाँवों से परे, आजीविका वन उपज इकट्ठा करने, शिकार करने और खेती करने से आती थी, जंगल एक अच्छी सुरक्षा प्रदान करते थे।

• 16वीं और 17वीं शताब्दी के दौरान भारत की लगभग 85 प्रतिशत आबादी ग्रामीण थी।
• कृषि समाज की मूल इकाई गाँव थी।
• पंचायत के मुखिया को मुकद्दम या मंडल के नाम से जाना जाता था।
• ज़मींदारों के पास व्यापक व्यक्तिगत भूमि थी, जिसे मिल्कियत कहा जाता था, जिसका अर्थ है संपत्ति।
• 1690 के आसपास भारत से गुज़रने वाले इतालवी यात्री जोआन्नीकारेरी की गवाही इस बात का एक स्पष्ट विवरण देती है कि चांदी किस तरह दुनिया भर में यात्रा करके भारत पहुँची।
• आइन पाँच पुस्तकों (दफ़्तरों) से बना है, जिनमें से पहली तीन पुस्तकें प्रशासन का वर्णन करती हैं।
• आइन इस परंपरा से पूरी तरह अलग था क्योंकि इसमें साम्राज्य और भारत के लोगों के बारे में जानकारी दर्ज की गई थी। इस प्रकार यह सत्रहवीं शताब्दी के अंत में भारत का अध्ययन करने के लिए एक मापदंड का निर्माण करता है।

किसान और कृषि उत्पादन

• **स्रोत**: सबसे महत्वपूर्ण इतिहास आइन-ए अकबरी (संक्षेप में आइन) था, जिसे अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फ़ज़ल ने लिखा था।
• खेती को सुनिश्चित करने, राज्य की एजेंसियों द्वारा राजस्व संग्रह को सक्षम करने और राज्य और ग्रामीण दिग्गजों, ज़मींदारों के बीच संबंधों को विनियमित करने के लिए राज्य द्वारा की गई व्यवस्थाओं को दर्ज किया गया।
• आइन के लेखक की नज़र में मुगल राज्य के खिलाफ़ कोई भी विद्रोह या स्वायत्त सत्ता का दावा, असफल होने के लिए पूर्वनिर्धारित था। किसानों, ज़मींदारों और राज्य के बीच संघर्ष के उदाहरणों को दर्ज करते है।

किसान और उनकी ज़मीन:

किसान को दर्शाने के लिए सबसे ज़्यादा इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द रैयत (बहुवचन, रियाया) या मुज़ारियान या किसान या असामी थे। सत्रहवीं सदी में दो तरह के किसानों का ज़िक्र मिलता है - खुद-काश्त (वे उस गाँव के निवासी थे जहाँ उनकी ज़मीन थी) और पाहि-काश्त (वे गैर-निवासी किसान थे जो अनुबंध के आधार पर कहीं और ज़मीन पर खेती करते थे)।
• अपनी मर्ज़ी से: जब लोगों को लगान की शर्तें उनके अनुकूल लगीं तो उन्होंने पाहि -काश्त बनना स्वीकार कर लिया।
• मजबूरी से: जब अकाल या आर्थिक संकट ने उन्हें कहीं भी काम खोजने के लिए मजबूर किया तो लोग पाहि -काश्त बन गए ताकि उन्हें काम मिल सके।
• किसान अन्य संपत्ति स्वामियों की तरह अपनी ज़मीनें खरीदते और बेचते थे।
• किसान अक्सर ऐसी तकनीक का इस्तेमाल करते थे जो मवेशियों की ऊर्जा का दोहन करती थी।
• दो प्रमुख मौसमी चक्र थे- खरीफ (शरद ऋतु) और रबी (वसंत)।

सिंचाई और तकनीक

• भूमि की प्रचुरता, उपलब्ध श्रम और किसानों की गतिशीलता तीन कारक थे जो कृषि के निरंतर विस्तार के लिए जिम्मेदार थे।
• मानसून भारतीय कृषि की रीढ़ बना रहा, कुछ फ़सलों को अतिरिक्त पानी की आवश्यकता होती थी। इसके लिए रहट जैसी सिंचाई की कृत्रिम प्रणाली तैयार करनी पड़ी।

• सिंचाई परियोजनाओं को राज्य का समर्थन भी मिला। उत्तर भारत में राज्य ने नई नहरों (नहर, नाला) की खुदाई की और शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान पंजाब में शाह- नहर जैसी पुरानी नहरों की मरम्मत भी की।

फसलों के प्रकार

• कृषि दो प्रमुख मौसमी चक्रों, खरीफ (शरद ऋतु) और रबी (वसंत) के इर्द-गिर्द संगठित थी।

• सबसे शुष्क या दुर्गम क्षेत्रों में साल में कम से कम दो फ़सलें (दो-फ़सला) पैदा होती थीं, जबकि कुछ क्षेत्रों में, जहाँ वर्षा या सिंचाई से पानी की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित होती थी, तीन फ़सलें भी पैदा होती थीं।

• आईन ने बताया कि आगरा के मुगल प्रांतों में दो मौसमों में 39 किस्म की फ़सलें और दिल्ली में 43 किस्म की फ़सलें पैदा होती थीं। बंगाल में अकेले चावल की 50 किस्में पैदा होती थीं।

• कपास और गन्ना जैसी फ़सलें जिन्स-ए-कामिल के रूप में बेहतरीन थीं।

• सत्रहवीं शताब्दी के दौरान दुनिया के विभिन्न हिस्सों से कई नई फ़सलें भारतीय उपमहाद्वीप में पहुँचीं। उदाहरण के लिए, मक्का (मक्का) को अफ्रीका और स्पेन के ज़रिए भारत में लाया गया जो धीरे-धीरे पश्चिमी भारत की प्रमुख फ़सलों में से एक बन गई। इस समय टमाटर, आलू और मिर्च जैसी सब्ज़ियाँ नई दुनिया (अमेरिका) से लाई गईं, साथ ही अनानास और पपीता जैसे फल भी।

ग्रामीण समुदाय

• किसान अपनी ज़मीनों पर व्यक्तिगत स्वामित्व रखते थे और सामूहिक ग्राम समुदाय का हिस्सा होते थे। इस समुदाय के तीन घटक थे - कृषक, पंचायत और ग्राम प्रधान (मुकद्दम या मंडल)।

जाति और ग्रामीणमाहौल

● जो ज़मीन जोतता था उसे नौकर या कृषि मज़दूर (मजूर) कहा जाता था।

● मुस्लिम समुदायों में हलालखोरन (मैला ढोने वाले) जैसे नौकरों को गाँव की सीमाओं के बाहर रखा जाता था।

● समाज के निचले तबके में जाति, ग़रीबी और सामाजिक स्थिति के बीच सीधा संबंध था।

● मवेशी पालन और बागवानी की लाभप्रदता के कारण अहीर, गूजर और माली जैसी जातियाँ पदानुक्रम में ऊपर उठ गईं।

पंचायतें और मुखिया

पंचायत का मुखिया एक मुखिया होता था जिसे मुकद्दम या मंडल कहा जाता था।

● पंचायत को अपना धन व्यक्तियों द्वारा एक सामान्य आम खजाना में किए गए योगदान से मिलता था।

● पंचायत का एक महत्वपूर्ण कार्य जातिगत सीमाओं को सुनिश्चित करना था।

● पंचायतों के पास जुर्माना लगाने और समुदाय से निष्कासन जैसे दंड लगाने का भी अधिकार था।

● गांव में प्रत्येक जाति या जाति की अपनी जाति पंचायत होती थी।

ग्रामीण दस्तकार:

● गांव के समाज में दस्तकारों और किसानों के बीच का अंतर बहुत हीपरिवर्तनशील था।

● किसान और उनके परिवार शिल्प उत्पादन में भी भाग लेते थे - जैसे रंगाई, कपड़ा छपाई, मिट्टी के बर्तनों को पकाना, कृषि उपकरणों को बनाना और उनकी मरम्मत करना।

एक "छोटा गणराज्य"?

• ब्रिटिश अधिकारियों ने गांव को एक "छोटा गणराज्य" के रूप में देखा, जो संसाधनों और श्रम को सामूहिक रूप से साझा करने वाले भाईचारे के भागीदारों से बना था।
• गांवों और शहरों के बीच व्यापार के माध्यम से नकदी का संबंध पहले से ही विकसित हो चुका था। मुगल गढ़ में भी, राजस्व का आकलन और संग्रह नकदी में किया जाता था।

कृषि समाज में महिलाएँ

• महिलाओं और पुरुषों को खेतों में कंधे से कंधा मिलाकर काम करना पड़ता था, इसलिए इस संदर्भ में घर (महिलाओं के लिए) और दुनिया (पुरुषों के लिए) के बीच लैंगिक अलगाव संभव नहीं था।
• लेकिन महिलाओं के जैविक कार्यों से संबंधित पूर्वाग्रह जारी रहे।
• महिलाओं को एक महत्वपूर्ण संसाधन माना जाता था क्योंकि वे बच्चे पैदा करने वाली थीं।
• कई ग्रामीण समुदायों में विवाह के लिए दुल्हन के परिवार को दहेज के बजाय वधू-मूल्य का भुगतान करना पड़ता था।
• ज़मींदारों के बीच, महिलाओं को संपत्ति विरासत में पाने का अधिकार था।
• अठारहवीं सदी के बंगाल में महिला ज़मींदार जानी जाती थीं।

जंगल और कबीले

• सघन रूप से खेती की जाने वाली भूमि के अलावा, भारत में जंगलों के विशाल क्षेत्र थे - घने जंगल (जंगल) या झाड़ियाँ (खरबंदी)।
• वाणिज्यिक कृषि का प्रसार एक महत्वपूर्ण बाहरी कारक था जो वनवासियों के जीवन पर प्रभाव डालता था।
• सामाजिक कारकों ने भी वनवासियों के जीवन में बदलाव लाए। गांव के समुदाय के "बड़े लोगों" की तरह, जनजातियों के भी अपने सरदार होते थे।

ज़मींदार: वे ज़मीन के मालिक थे, जिन्हें ग्रामीण समाज में अपनी श्रेष्ठ स्थिति के कारण कुछ सामाजिक और आर्थिक विशेषाधिकार भी प्राप्त थे।

• ज़्यादातर ज़मींदारों के पास किले (किलाचा) के साथ-साथ घुड़सवार सेना, तोपखाने और पैदल सेना की इकाइयाँ भी होती थीं।
• ज़मींदारों ने कृषि भूमि के उपनिवेशीकरण का नेतृत्व किया और किसानों को नकद ऋण सहित खेती के साधन प्रदान करके उन्हें बसाने में मदद की।
• हालाँकि इसमें कोई संदेह नहीं है कि ज़मींदार एक शोषक वर्ग थे, लेकिन किसानों के साथ उनके रिश्ते में पारस्परिकता, पितृसत्ता और संरक्षण का तत्व था।

भू-राजस्व प्रणाली

• ज़मीन से मिलने वाला राजस्व मुग़ल साम्राज्य का आर्थिक आधार था।
• इस तंत्र में दीवान का कार्यालय (दफ़्तर) शामिल था जो साम्राज्य की राजकोषीय व्यवस्था की देखरेख के लिए जिम्मेदार था।
• भू-राजस्व व्यवस्था में दो चरण शामिल थे - पहला कर निर्धारण और फिर वास्तविक वसूली।
• जमा वह राशि थी जिसका मूल्यांकन किया जाता था, जबकि हासिल वह राशि थी जो एकत्र की जाती थी।

• आमील-गुजार या राजस्व वसूली करने वाला के कर्तव्यों की सूची में, अकबर ने आदेश दिया कि उसे किसानों से नकद भुगतान करवाने का प्रयास करना चाहिए, लेकिन वही फसलों में भुगतान का विकल्प भी खुला रखना चाहिए।

• प्रत्येक प्रांत में खेती की जाने वाली और खेती योग्य दोनों तरह की भूमि को मापा जाता था। अकबर के शासन के दौरान आइन ने ऐसी भूमि का समुच्चय संकलित किया।

चांदी का बहाव

सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी के दौरान मिंग (चीन), सफ़विद (ईरान) और ओटोमन (तुर्की) सत्ता और संसाधनों पर अपनी पकड़ बनाने में सफल रहें। इन सभी साम्राज्यों द्वारा प्राप्त राजनीतिक स्थिरता ने चीन से भूमध्य सागर तक भूमि व्यापार के जीवंत नेटवर्क बनाने में मदद की।

• व्यापार के विस्तार के कारण भारत से खरीदे जाने वाले सामानों के भुगतान के लिए एशिया में भारी मात्रा में चांदी के सिक्के आए और उस सिक्के का एक बड़ा हिस्सा भारत की ओर खिंच गया ।

• इससे सिक्कों की ढलाई और अर्थव्यवस्था में धन के प्रचलन में अभूतपूर्व विस्तार हुआ और साथ ही मुगल राज्य को कर और राजस्व नकद में वसूलने की क्षमता भी मिली।

अबुल फजल की आइन-ए-अकबरी

• आइन-ए-अकबरी को सम्राट अकबर के आदेश पर अबुल फजल ने पूरा किया था।

• यह पांच संशोधनों से गुजरने के बाद सम्राट के बयालीसवें शासनकाल में 1598 में पूरा हुआ था।

• अकबरनामा के नाम से जाना जाने वाला यह इतिहास तीन जिल्दों में रचा गया। पहली दो जिल्दों ने ऐतिहासिक दास्तान पेश की।

• तीसरी जिल्द आइन-ए-अकबरी में शाही नियम कानून के सारांश और साम्राज्य के एक राज पत्र की सूरत में संकलित किया गया था।

• आइन-ए-अकबरी पाँच भागों (दफ्तर) का संकलन है जिसमे पहले तीन भाग प्रशासन का विवरण देते है।

• पहली किताब मंजिल आबादी शाही घर परिवार और उसके रख रखाव से संबंधित है ।

• दूसरा भाग सिपाह-आबादी सैनिक व नागरिक प्रशासन और नौकरों की व्यवस्था के बारे में है । इस भाग में शाही अफसरों (मनसबदार), विद्वानों , और कलाकारों की संक्षेप में जीवनी शामिल है।

• तीसरा मुल्क-आबादी वह भाग है जिसमें साम्राज्य और प्रांतों के वित्तीय पहलुओं और राजस्व की दरों के आंकड़ों के साथ बारह प्रांतों का बयान भी शामिल है।

• चौथी और पाँचवी किताबे (दफ्तर) भारत के लोगों के मजहबी, साहित्यिक और सांस्कृतिक रीति रिवाजों से तालुक रखती है। इसमें अकबर के “शुभ वचनों” का भी संग्रह है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित में से किस फसल को जिन्स-ए-कामिल माना जाता था?

(क) कपास और गन्ना
(ख) मक्का और गन्ना
(ग) चावल और गेहूं
(घ) मिर्च और आलू

उत्तर : क

2. खुद-काश्त शब्द से आप क्या समझते हैं?

(क) किसान जो गाँव के निवासी थे
(ख) अनिवासी कृषक
(ग) राजस्व संग्राहक
(घ) जाति पंचायत के मुखिया

उत्तर : क

3. ओटोमन साम्राज्य किसका था?

(क) चीन (ख) ईरान

(ग) तुर्की (घ) इराक

उत्तर : ग

प्रश्न 4 ग्राम प्रधान को क्या कहा जाता था?

(क) मुकद्दम (ख) असरी

(ग) मुजेरियन (घ) रिया

उत्तर : क

5. मुगल साम्राज्य के दौरान पंचायतों ने इसके लिए उपलब्ध धन का उपयोग कैसे किया?

(क) इसका उपयोग राजस्व अधिकारियों के मनोरंजन के लिए किया जाता था।

(ख) इसका उपयोग मुकद्दम और चौकीदार को वेतन देने के लिए किया जाता था।

(ग) इसका उपयोग सामुदायिक कल्याण के व्यय को पूरा करने के लिए किया गया था।

(घ) ये सभी।

उत्तर : घ

प्रश्न 6 आइन ए अकबरी का तीसरा भाग, 'मुल्क-अबादी' किससे संबंधित है?

(क) साम्राज्य का सामाजिक पक्ष (ख) साम्राज्य का राजकोषीय पक्ष

(ग) साम्राज्य का प्रशासनिक पक्ष (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर : ख

प्रश्न 7 _____ सिक्के मुगल साम्राज्य के दौरान अधिक प्रचलित थे।

(क) सोना (ख) तांबा

(ग) टिन (घ) चांदी

उत्तर : घ

प्रश्न 8 निम्नलिखित में से किस विधि से मुगल काल में जमींदारी समेकन किया गया था?

(क) नई भूमि का उपनिवेशीकरण (ख) अधिकारों के हस्तांतरण द्वारा

(ग) राज्य के आदेश से (घ) ये सभी

उत्तर : घ

प्रश्न 9 कृषि प्रधान समाज में महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिकाओं के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(क) स्त्रियों ने फसल बोई, खरपतवार कटाई और बुनाई की।

(ख) महिलाओं ने खेतों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया।

(ग) माह के कुछ दिनों के दौरान महिलाओं को हल को छूने की अनुमति नहीं थी।

(घ) महिलाएं व्यापार के लिए उपज को विदेशी बाजारों में ले जाती थीं।

उत्तर : घ

10 निम्नलिखित में से किस फसल को जहाँगीर द्वारा प्रतिबंधित किया गया था?

(क) पान का पत्ता (ख) मिर्च

(ग) तंबाकू (घ) मक्का

उत्तर : ग

11 वह शब्द जो मुगल काल के इंडो-फारसी स्रोतों के लिए सबसे अधिक बार इस्तेमाल किया जाता था एक किसान को निरूपित करना था:

(क) मुज़ारियन (ख) खुद-कश्ता

(ग) पाही-कश्ता (घ) रैयत

उत्तर: घ

12. साम्राज्य के दौरान ग्राम समुदाय के घटक क्या थे?

(क) कृषक (ख) ग्राम प्रधान

(ग) पंचायत (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर ; घ

13. पंचायत में प्रत्येक जाति के पास था:

(क) सभा पंचायत (ख) निचली पंचायत

(ग) जाति पंचायत (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर : ग

प्र.14 क्या कृषक, कारीगर उत्पादन में संलग्न हैं?

(क) हाँ, हमेशा (ख) हाँ, कृषि गतिविधि में ठहराव के दौरान

(ग) नहीं, कभी नहीं (घ) वे रुचि नहीं रखते थे

उत्तर ख

प्र.15 मंडल को किसकी सर्वसम्मति से चुना गया था:

(क) अधिकारी (ख) उच्च जाति के लोग

(ग) गाँव के बुजुर्ग (घ) मतदान

उत्तर ; ग

प्र.16.अभिकथन-(A)आइन अकबर द्वारा शुरू की गई ऐतिहासिक और प्रशासनिक परियोजना का हिस्सा थी

कारण- (R) यह दरबार , प्रशासन और सेना के संगठन का विस्तृत विवरण देता है।

(क) A और R दोनों सत्य हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है |

(ग) A सत्य है लेकिन R असत्य है |

(घ) A असत्य है लेकिन R सत्य है |

उत्तर – क

प्र 17 कथन- (A) स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में जमींदारी प्रथा को समाप्त कर दिया गया था।

कारण- (R) भूमि को छोड़कर सेवाओं से राजस्व प्राप्त करना मुगल साम्राज्य का मुख्य आर्थिक आधार था।

(क) A और R दोनों सत्य हैं और R ,A का सही स्पष्टीकरण है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है |

(ग) A सत्य है लेकिन R असत्य है |

(घ) A असत्य है लेकिन R सत्य है |

उत्तर – ग

प्र.18 निम्नलिखित का मिलान कीजिए

सूची 1	सूची 2
(i) अमलगुजार	(a) लेखाकार
(ii) मंडल	(b) राजस्व संग्राहक
(iii) पटवारी	(c) पंचायत प्रधान
(iv) दीवान	(d) पर्यवेक्षक

सही विकल्प चुनिए

(क) (i)-d, (ii)-c, (iii)-b, (iv)-a (ख) (i)-b, (ii)-d, (iii)-a, (iv)-c

(ग) (i)-a, (ii)-b, (iii)-c, (iv)-d (घ) (i)-b, (ii)-c, (iii) -a, (iv)-d

उत्तर – घ

प्र.19 निम्नलिखित का मिलान कीजिए-

(i) प्रधान	(क) ग्राम लेखाकार
(ii) पटवारी	(ख) बेगार
(iii) श्रम	(ग) खरबंदी
(iv) जंगल या झाड़ियाँ	(घ) मंडल

(क) (i)-b, (ii)-c, (iii)-a, (iv)-d (ख) (i)-c, (ii)-a, (iii)-b, (iv)-d

(ग) (i)-c, (ii)-d, (iii)-b, (iv)-a (घ) (i)-d, (ii)-a, (iii)-b, (iv)-c

उत्तर – घ

प्र 20 निम्नलिखित में से किसे मुस्लिम समुदाय में नीच (मेनियल) माना जाता था?

(क) मंडल (ख) हलालखोरान

(ग) मजदूर (द) जंगली

उत्तर – ख

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. पंचायत के कार्यों का वर्णन करें?

उत्तर 1.सामुदायिक कल्याण - बांध का निर्माण या नहर खोदना जो आमतौर पर किसान कर सकते थे अपने दम पर करने का जोखिम नहीं उठा सकते।

2. प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, अकाल, सूखा आदि के खिलाफ व्यवस्था करना ।

3. विवाह और जाति जैसे ग्रामीण समाजों को नियोजित करना ।

4. विभिन्न समुदायों के बीच जाति सीमाओं का निर्धारण करना

5. सजा अथवा जुर्माना लगाना ।

प्रश्न 2. आइन-ए-अकबरी की विषयवस्तु का वर्णन करें?

उत्तर: 1. अकबर के साम्राज्य का वर्णन ।

2. मजबूत शासक वर्ग ।

3. अदालत, प्रशासन और सेना का संगठन।

4. विस्तृत राजस्व रिकॉर्ड शामिल हैं

5. कृषि प्रधान समाज का उपयोगी विवरण।

प्रश्न 3. कृषि प्रधान समाज में महिलाओं की क्या भूमिका थी?

उत्तर 1. महिलाओं ने खेतों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया।

2. महिलाएं बुयायी, निराई , और फसल की कटाई आदि कार्य करती थीं ।

3. शिल्प उत्पादन - जैसे सूत कातना, मिट्टी के बर्तनों और कढ़ाई के लिए मिट्टी को छानना और सानना महिलाओं के प्रमुख कार्य थे ।

4. महीने के कुछ दिनों में कुछ प्रतिबंध – पश्चिम भारत में महिलाओं को हल या कुम्हार का पहिये को छूने की अनुमति नहीं थी .

प्रश्न4. भू-राजस्व का निर्धारण कैसे किया जाता था?

उत्तर: 1. इसमें दो चरण शामिल थे - जामा और हासिल । जमा में राशि का मूल्यांकन किया जाता था और हासिल वास्तविक एकत्र की गई राशि थी।

2. प्रत्येक प्रांत में खेती और खेती योग्य भूमि दोनों को मापा जाता था ।

3. प्रत्येक गांव में काश्तकारों की संख्या का वार्षिक रिकॉर्ड तैयार किया जाता था

4. भू-राजस्व मापने के लिए अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी।

5. दीवान, जो साम्राज्य की वित्तीय व्यवस्था की निगरानी के लिए जिम्मेदार था , को नियुक्त किया गया ।

प्रश्न5. ज़ब्ती प्रणाली की मुख्य विशेषताएं बताएं?

उत्तर :1. भूमि का मापन अनिवार्य था।

2. भूमि का वर्गीकरण पोलाज, परौती, चचर, बंजर चार प्रकार की भूमियों में किया गया था ।

3. औसत उत्पादों की गणना की जाती थी ।

4. राज्य के हिस्से का निर्धारण होता था ।

5. नकद में रूपांतरण की व्यवस्था थी ।

6. भू-राजस्व की वसूली की जाती थी ।

प्रश्न.6.16 वीं और 17वीं शताब्दी के ग्राम दस्तकारी को समझाइए।

उत्तर: गाँव का एक और दिलचस्प पहलू विभिन्न उत्पादकों के बीच आदान-प्रदान का विस्तृत संबंध था। सूत्रों का कहना है कि पर्याप्त संख्या में कारीगरों का अस्तित्व था । हालाँकि, ग्रामीण समाज में कारीगरों और किसानों के बीच का अंतर लचीला था, क्योंकि कई समूहों ने आपस के कार्यों को मिलाकर सम्पादित करते थे । खेती करने वाले और उनके परिवार शिल्प उत्पादन में जैसे रंगाई, कपड़ा छपाई, मिट्टी के बर्तनों की बेकिंग और फायरिंग, कृषि उपकरण बनाना और मरम्मत करना में भाग लेते थे । खाली समय में काश्तकार दस्तकारी उत्पादन में संलग्न हो सकते थे । कारीगरों को भुगतान फसल के एक हिस्से, या भूमि के आवंटन द्वारा किया जाता था, महाराष्ट्र में कारीगरों की ऐसी वंशानुगत जोत जागीर या वतन बन गई

सेवाओं के लिए सामान

कभी-कभी कारीगरों और किसानों ने ज्यादातर समय सेवाओं के लिए माल अथवा पारिश्रमिक की पारस्परिक रूप से समन्वय की प्रणाली को अपनाया

प्रश्न7. जमींदार कौन थे? उनके कार्य क्या थे?

उत्तर: जमींदार ग्रामीण समाज का हिस्सा थे जो कृषि उत्पादन पर निर्भर रहते थे अधिकांशत: उच्च जाति के थे। कालांतर में नए जमींदार निचली जाति से भी उभरे।

जमींदारों के कार्य:

1. राजस्व एकत्र करना ।

2. राजा और किसान के बीच मध्यस्थता स्थापित करना ।

3. सेना की व्यवस्था करना ।

4. कृषि भूमि को विकसित करना ।

5. किसानों को खेती के लिए वित्तीय सहायता देना ।

6. निजी कृषि उपज को बेचना ।

7. गांवों में साप्ताहिक या पाक्षिक बाजार की व्यवस्था करना ।

8. सड़कों और जल स्रोतों की मरम्मत की व्यवस्था करना।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. मुगल वित्तीय व्यवस्था के लिए भू-राजस्व को महत्वपूर्ण बताने वाले साक्ष्यों का परीक्षण करें|

उत्तर :- मुगल राजकोषीय व्यवस्था के लिए भू-राजस्व का महत्व :

1.कृषि उत्पादन पर नियंत्रण रखने के लिए और तेजी से फैलते साम्राज्य के तमाम इलाकों में राजस्व आकलन में वसूली के लिए यह जरूरी था कि राज्य एक प्रशासनिक तंत्र खड़ा करें

2. मुगल राज्य सर्वप्रथम कृषि क्षेत्र की सीमा और कृषि संबंधों के बारे में विशिष्ट जानकारी इकठा करने का प्रयास कर एक निर्णायक ताकत के रूप में उभरा ।

3. लोगों पर कर का बोझ निर्धारित करने से पहले मुगल राज्य ने जमीन और उस पर होने वाले उत्पादन के बारे में खास सूचनाएं इकठ्ठा करने की कोशिश करी .

4. भू राजस्व के इंतजामात के दो चरण थे पहला कर निर्धारण और दूसरा वास्तविक वसूली .जमा निर्धारित रकम थी और हासिल वास्तविक वसूल की गई रकम |

5. अकबर ने यह हुक्म दिया कि खेतिहर नगद भुगतान करें वही फसलों में भुगतान का विकल्प भी खुला रहे राजस्व निर्धारित करते समय राज्य अपना हिस्सा ज्यादा से ज्यादा रखने की कोशिश करता था मगर स्थानीय हालात की वजह से कभी-कभी सचमुच में इतनी वसूली कर पाना संभव नहीं हो पाता था

6. हर प्रांत में जुती हुई जमीन और जोतने लायक जमीन दोनों की नपाई की गई अकबर के शासन काल में अबुल फजल ने इनमें ऐसी जमीनों के सभी आंकड़ों को संकलित किया उसके बाद के बादशाहों के शासनकाल में भी जमीन की नपाई के प्रयास जारी रहे मसलन 1665 ईस्वी में औरंगजेब ने अपने राजस्व कर्मचारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि हर गांव में खेतीहरों की संख्या का सालाना हिसाब रखा जाए इसके बावजूद सभी इलाकों की नपाई सफलतापूर्वक नहीं हुई उपमहाद्वीप के कई बड़े हिस्से जंगलों से घिरे हुए थे और इनकी नपाई नहीं की गई

प्रश्न 2. 16वीं और 17वीं शताब्दी की ग्राम पंचायत के गठन और कार्यों की व्याख्या करें|

उत्तर : ग्राम पंचायत बुजुर्गों की एक सभा थी।

- आमतौर पर, गाँव के महत्वपूर्ण लोग जिनके पास अपनी संपत्ति पर वंशानुगत अधिकार होते थे, इसमें भाग लेते थे। मिश्रित जाति के गाँवों में, पंचायत में भी विविधता पाई जाती थी। लेकिन एक गांव के छोटे मोटे काम करने वाले खेतिहर मजदूरों का वहां प्रतिनिधित्व होने की संभावना नहीं थी। इन पंचायतों द्वारा लिए गए निर्णय सदस्यों के लिए बाध्यकारी होते थे।
- पंचायत का मुखिया मुकद्दम या मंडल होता था। कुछ सूत्रों का सुझाव है कि मुखिया का चुनाव गाँव के बुजुर्गों की सहमति से किया जाता था, और यह कि यह चुनाव जमींदार द्वारा अनुमोदित किया जाता था। मुखिया तब तक पद पर बने रहते थे जब तक उन पर गाँव के बुजुर्गों के विश्वास रहता था , असफल होने पर उन्हें बुजर्गों द्वारा बर्खास्त किया जा सकता था।
- मुखिया का मुख्य कार्य ग्राम लेखा तैयार करने की निगरानी करना था जिसमें उसकी सहायता पंचायत के लेखाकार या पटवारी द्वारा की जाती थी । पंचायत ने अपनाखजाना सभी व्यक्तियों द्वारा किए

गए योगदान से प्राप्त किया। इन निधियों का उपयोग समय-समय पर गाँव का दौरा करने वाले राजस्व अधिकारियों के खातिरदारी की लागत को पूरा करने के लिए किया जाता था।

- सामुदायिक कल्याण गतिविधियों के लिए व्यय जैसे प्राकृतिक आपदाओं पर ज्वार (जैसे बाढ़) भी इन निधियों से मिले थे। अक्सर इन निधियों को एक बांध या एक नहर खोदना , जिसे किसान आमतौर पर अपने दम पर नहीं कर सकते थे ,के निर्माण में भी लगाया जाता था
- पंचायत का एक महत्वपूर्ण कार्य यह सुनिश्चित करना था कि गाँव में रहने वाले विभिन्न समुदायों के बीच जाति की सीमाओं को कायम रखा जाए। ग्राम प्रधान को ग्राम समुदाय के सदस्यों के आचरण की निगरानी करना होता था पंचायतों को जुर्माना लगाना और समुदाय से निष्कासन जैसी सजा का अधिकार भी था । दंडित व्यक्ति को गांव छोड़ना पड़ता था इस दौरान वह अपनी जाति गया।और पेशे से हाथ धो बैठता था ऐसी नीतियों का मकसद जातिगत रिवाजों की अवहेलना रोकना था
- ग्राम पंचायत के अतिरिक्त गाँव में प्रत्येक जाति या जाति की अपनी एक जाति पंचायत होती थी। इन पंचायतों का ग्रामीण समाज में काफी अधिकार था। राजस्थान में जाति पंचायतों ने विभिन्न जातियों के सदस्यों के बीच नागरिक विवादों की मध्यस्थता की।उन्होंने जमीन पर विवादित दावों में मध्यस्थता की, विवाह के नियम तय किये ज्यादातर मामलों में, आपराधिक न्याय के मामलों को छोड़कर, राज्य जाति पंचायतों के फैसलों का सम्मान करता था।
- पश्चिम भारत में खासकर राजस्थान और महाराष्ट्र जैसे प्रांतों के संकलित दस्तावेजों में ऐसी कई अर्जियां हैं जिनमें पंचायत से ऊंची जातियों या राज्यों के अधिकारियों के खिलाफ जबरन कर उगाई या बेगार वसूली की शिकायत की गई है आमतौर पर यह अर्जियां ग्रामीण समुदाय के सबसे निचले तबके के लोग लगाते थे उनमें एक थी बहुत ज्यादा कर की मांग क्योंकि इससे किसानों का दैनिक गुजारा ही जोखिम में पड़ जाता था खासकर सूखे या ऐसी दूसरी विपदाओं के दौरान उनकी नजरों में जिंदा रहने के लिए न्यूनतम बुनियादी साधन उनका परंपरागत रिवाजी हक था जहां समझौते नहीं हो पाते थे वहां किसानविद्रोह के ज्यादा उग्र रास्ते अपनाते थे जैसे कि गांव छोड़कर भाग जाना खाली जमीन अपेक्षाकृत आसानी से उपलब्ध थी जबकि श्रम को लेकर प्रतियोगिता थी इस वजह से गांव छोड़कर भाग जाना खेतीहरो के हाथ में एक बड़ा प्रभावी हथियार था

प्रश्न 3 आइन-ए-अकबरी के बारे में वर्णन करें।

- उत्तर : आईने अकबरी आंकड़ों के वर्गीकरण के एक बहुत बड़े ऐतिहासिक और प्रशासनिक परियोजना का नतीजा थी जिसका जिम्मा बादशाह अकबर के हुक्म पर अबुल फजल ने उठाया था अकबर के शासन के 42 वर्ष में ,पांच संशोधनों के बाद इसे पूरा किया गया आईन इतिहास लिखने के एक वृहद् परियोजना का हिस्सा थी जिसकी पहल अकबर ने की थी इस परियोजना का परिणाम था अकबरनामा जिसे 3 जिल्दों में रचा गया पहले दो खण्डों में ऐतिहासिक दास्तान पेश की तीसरी जिल्द आईने अकबरी को शाही नियम कानून के सारांश और साम्राज्य के एक राज्य पत्र की सूरत में संकलित किया गया था
- आइन कई मसलों पर विस्तार से चर्चा करती है दरबार, प्रशासन और सेना का संगठन, राजस्व के स्त्रोत और अकबरी, साम्राज्य के प्रांतों का भूगोल और लोगों के साहित्यिक, सांस्कृतिक व धार्मिक विवाद ,अकबर की सरकार के तमाम विभागों और प्रांतों के बारे में विस्तार से जानकारी देने के अलावासूबों के बारेमें आंकड़े और सूचनाएं बड़ी बारीकी के साथ देती है इन सूचनाओं को इकट्ठा करके सिलसिलेवार तरीके से तैयार करना एक महत्वपूर्ण कार्य था इसने बादशाह को साम्राज्य के तमाम

इलाकों में प्रचलित रिवाजों और पैसों की जानकारी दी इसलिए आइन हमारी अकबर के शासन के दौरान मुगल साम्राज्य के बारे में सूचनाओं की खान है

- यह पांच भागों का संकलन है जिसके पहले तीन बार प्रशासन का ब्यौरा देते हैं
- मंजिल आबादी के नाम से पहली किताब शाही घर परिवार और उसके रखरखाव से ताल्लुक रखती है
- दूसरा भाग सिपाह आबादी सैनिक में नागरिक प्रशासन और नौकरों की व्यवस्था के बारे में
- तीसरा भाग मुल्क आबादी है जो साम्राज्य की वित्तीय पहलुओं और आंकड़ों की विस्तृत जानकारी देने के बाद 12 प्रांतों का बयान देता है
- चौथी और पांचवी किताब भारत के लोगों के मजहबी साहित्यिक और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों से ताल्लुक रखती है इनके आखिर में अकबर के शुभ वचनों का एक संग्रह भी है

स्त्रोत आधारित प्रश्न (4 अंक)

प्रश्न 1 दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़ें और नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें

नगद या जींस

आईन से यह एक और अनुच्छेद है :

अमलगुजार सिर्फ नगद लेने की आदत ना डालें बल्कि फसल भी लेने के लिए तैयार रहें यह बाद वाला तरीका कई तरह से काम में लाया जा सकता है पहला कनकुत: हिंदी जबान में कर्ण का मतलब है अनाज और कुत का मतलब है अंदाजा अगर कोई शक हो तो फसल को तीन अलग-अलग पुलिंदों में काटना चाहिए अच्छा, मध्यम और बदतर और इस तरह शक दूर करना चाहिए अक्सर अंदाज से किया गया जमीन का आकलन भी पर्याप्त रूप से सही नतीजा देता है दूसरा बटाई जिसे भावली भी कहते हैं में फसल काटकर जमा कर लेते हैं और फिर सभी पक्षों की मौजूदगी में वह रजामंदी से बंटवारा करते हैं लेकिन इसमें कई समझदार निरीक्षकों की जरूरत पड़ती है वरना दुष्ट बुद्धि और मक्कार धोखे बाजो की नियत रखते हैं तीसरे खेत बटाई जब वे बीज बोने के बाद खेत बांट लेते हैं चौथे लांग बटाई फसल काटने के बाद उसका ढेर बना लेते हैं और फिर उसे अपने में बांट लेते हैं और हर एक पक्ष अपना हिस्सा घर ले जाता है और उससे मुनाफा कमाता है

Q1. कंकूट शब्द की व्याख्या करें?

उत्तर: हिंदी भाषा में कण का अर्थ है अनाज और कूट का अर्थ है अनुमान।

प्रश्न 2. भू-राजस्व संग्रह की बटाई या भावली प्रणाली की व्याख्या करें?

उत्तर: फसल को काटा और ढेर किया जाता है और आपस में समझौते से विभाजित किया जाता है। लेकिन इसमें कई बुद्धिमान निरीक्षकों की आवश्यकता होती है।

3. लंग बटाई की प्रणाली के बारे में बताएं?

उत्तर : वे अनाज को काटने के बाद उसमें से ढेर लगाते हैं और उसे आपस में बाँट लेते हैं और हर एक पक्ष अपना हिस्सा घर ले जाता है और उससे मुनाफा कमाता है

प्रश्न 2. दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़ें और नीचे दिए गए प्रश्न का उत्तर दें

यह हिंदुस्तानी कृषि समाज की एक खासियत थी और इस खासियत में मुगल शासक बाबर की तेज निगाहों को इतना चौकाया कि उसने इसे अपने संस्मरण बाबरनामा में नोट किया

हिंदुस्तान में बस्तियां और गांव दरअसल शहर के शहर एक लमहे में ही वीरान भी हो जाते हैं और बस भी जाते हैं वर्षों से आबाद किसी बड़े शहर के बाशिंदे उसे छोड़ कर चले जाते हैं तो वे ये काम कुछ इस तरह से करते हैं कि डेढ़ दिनों के अंदर उनका हर नामो निशान मिट जाता है दूसरी और अगर वे किसी जगह पर बसना चाहते हैं तो

उन्हें पानी के रास्ते खोदने की जरूरत नहीं होती क्योंकि उनकी सारी फसलें बारिश के पानी में उगती हैं और चूँकि हिंदुस्तान की आबादी बेशुमार है लोग उमड़ते चले आते हैं .वे एक सरोवर या कुआं बना लेते हैं उन्हें घर बनाने या दीवार खड़ी करने की भी जरूरत नहीं होती खस की घास बहुतायत में पाई जाती है जंगल अपार है झोपड़ियां बनाई जाती हैं और यकायक एक गांव या शहर खड़ा हो जाता है

(क) कृषि जीवन के कोई एक पहलू का उल्लेख कीजिए जिसे बाबर ने उत्तर भारत में देखा था।

(ख) कृषि के निरंतर विस्तार के लिए उत्तरदायी कोई एक कारक का उल्लेख कीजिए ।

(ग) उत्तर भारत और गुजरात के एक औसत किसान की स्थिति क्या थी?

उत्तर-(क) मानसून भारतीय कृषि की रीढ़ की हड्डी थी, भारतीय किसान सिंचाई के लिए कुओं और टैंकों का उपयोग करते थे।

(ख) श्रमिकों की उपलब्धता और किसानों की गतिशीलता।

(ग) (i) उत्तर भारत के औसत किसान के पास एक जोड़ी बैल और दो हल से अधिक नहीं थे।

(ii) गुजरात में जिन किसानों के पास लगभग छह एकड़ भूमि थी, उन्हें धनवान माना जाता था।

मानचित्र आधारित प्रश्न

पृष्ठ 214 पर दिया गया ए। भारत के दिए गए राजनीतिक रूपरेखा मानचित्र पर निम्नलिखित का पता लगाएँ और नामांकित करें।

B. भारत के एक ही राजनीतिक रूपरेखा मानचित्र पर कुछ स्थानों को A और B के रूप में चिह्नित किया गया है, उन्हें पहचानें और उन्हें नामांकित करें।

बाबर, अकबर और औरंगजेब के अधीन क्षेत्र:

दिल्ली, आगरा, पानीपत, अंबर, अजमेर, लाहौर, गोवा।

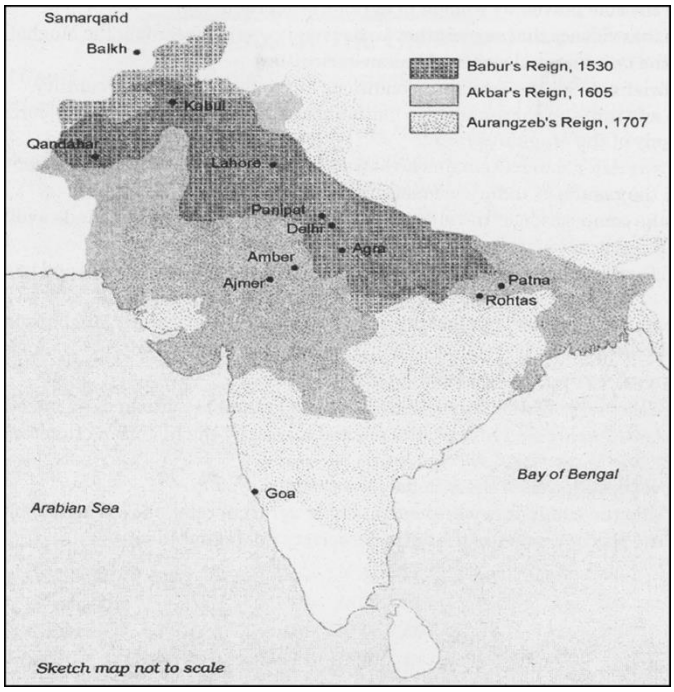

9. उपनिवेशवाद और देहात

मुख्य अवधारणाएँ: बंगाल और वहां के ज़मींदार

औपनिवेशिक शासन सबसे पहले बंगाल में स्थापित हुआ था।

•अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी ने सबसे पहले ग्रामीण समाज को फिर से व्यवस्थित करने और भूमि अधिकारों और भूमि राजस्व प्रणाली की एक नई व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास किया।

बर्दवान में की गई नीलामी की एक घटना

*1793 में, गवर्नर जनरल लॉर्ड कॉर्नवालिस ने स्थायी भूमि राजस्व बंदोबस्त की शुरुआत की।

•अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी ने ज़मींदारों को देने वाला राजस्व तय कर दिया था।तय राजस्व राशि का भुगतान करने में विफल रहने वाले ज़मींदारों की संपत्ति नीलाम कर दी गई।

•बर्दवान के राजा ने अपना बकाया भुगतान करने में विफल रहे और उनकी संपत्ति (महल) 1797 में नीलाम कर दी गई।

●ज़मींदारों की संपत्ति की नीलामी करने के ब्रिटिश प्रयास विफल रहे।
●नीलामी में संपत्ति खरीदने वाले खरीदार राजा के सेवक और एजेंट थे।
●उन्होंने अपने राजा के लिए संपत्ति खरीदी।इसलिए, संपत्ति राजा के नियंत्रण में रही। नीलामी में 95 प्रतिशत से अधिक बिक्री काल्पनिक थी।

अदा न किए गए राजस्व की समस्या-

●बंगाल की विजय के बाद से, ब्रिटिश अधिकारियों को राजस्व एकत्र करने में समस्या का सामना करना पड़ रहा था।
●उन्होंने संपत्ति के अधिकारों को सुरक्षित करके और राजस्व मांग को स्थायी रूप से तय करके ऐसा करने का प्रस्ताव रखा।
●कंपनी के अधिकारियों ने सोचा कि एक निश्चित राजस्व मांग नियमित आय सुनिश्चित करती है।
●लेकिन समस्या उस व्यक्ति की पहचान करने में थी जो कृषि उत्पादन बढ़ा सके और राज्य को राजस्व की निश्चित राशि का भुगतान कर सके।
●लंबी बहस के बाद, कंपनी ने बंगाल के राजाओं और तालुकदारों को अपने उद्देश्य के लिए अपना ठेकेदार बनाने का फैसला किया।
●राजाओं और तालुकदारों को अब ज़मींदार कहा जाता था।ज़मींदारों को राज्य द्वारा निर्धारित राजस्व मांग का भुगतान करना पड़ता था।

राजस्व राशि के भुगतान में ज़मींदार क्यों चूक करते थे?

●स्थायी बंदोबस्त के तहत, राजा और तालुकदार ज़मींदार बन गए थे।
●व्यवहार में; ज़मींदार गाँव में ज़मींदार नहीं थे, बल्कि राज्य के राजस्व संग्रहकर्ता थे। उनके नियंत्रण में लगभग 400 गाँव थे।
●कंपनी की गणना में, एक ज़मींदारी एक राजस्व एस्टेट बनाती थी।
●ज़मींदार लगान एकत्र करता था और तय राशि का भुगतान करता था और अतिरिक्त राशि को अपनी आय के रूप में रखता था।ज़मींदार अलग-अलग गाँवों से लगान एकत्र करता था।
●ज़मींदारों से कंपनी को नियमित आधार पर भुगतान करने की अपेक्षा की जाती थी।अगर वे राशि का भुगतान करने में विफल रहे तो उनकी संपत्ति की नीलामी की जाती थी।
ज़मींदार निम्नलिखित कारणों से राज्य को निर्धारित राशि का भुगतान करने में विफल रहे-
●शुरुआती माँगें बहुत अधिक थीं।
●माँगें उस समय की गई थीं जब कृषि उपज की कीमतें कम थीं और रैयत ज़मींदारों को अपना बकाया भुगतान करने में असमर्थ थे।
●राजस्व अपरिवर्तनीय था; फसल चाहे जो भी हो। अगर फसल खराब भी हो जाती तो राजस्व का भुगतान समय पर करना पड़ता था।
●सूर्यास्तकानून: इसके अनुसार, अगर किसी विशेष दिन सूर्यास्त तक राज्य को राजस्व का भुगतान नहीं किया जाता था, तो ज़मींदारी नीलाम कर दी जाती थी।

जोतदारों का उदय -

●फ्रांसिस बुकानन के सर्वेक्षण के अनुसार, उत्तर बंगाल के दिनाजपुर जिले में, धनी किसानों को जोतदार के रूप में जाना जाता था।

• 18वीं सदी के अंत में उन्होंने अपनी स्थिति मजबूत कर ली थी, जबकि कई ज़मींदारों को संकट का सामना करना पड़ रहा था।

•उन्होंने ज़मीन के एक बड़े क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लिया था और कुछ मामलों में तो कई हज़ार एकड़ तक।

•वे स्थानीय व्यापार गतिविधियों और धन उधार देने को नियंत्रित करते थे और गरीब किसानों पर उनका ज़्यादा नियंत्रण था।

•उनकी ज़मीन का बड़ा हिस्सा बटाईदारों (अधियार या बरगादार) द्वारा जोता जाता था।

•बटाईदार अपने हल खुद लाते थे और फसल कटने के बाद अपनी मेहनत और उपज का आधा हिस्सा जोतदारों को दे देते थे।

जोतदारों की शक्तियाँ

गाँव के भीतर, जोतदारों की शक्ति ज़मींदारों की तुलना में ज़्यादा प्रभावी थी।

जोतदार गाँवों में रहते थे और गरीब ग्रामीणों पर सीधा नियंत्रण रखते थे। ज़मींदार शहरी इलाकों में रहते थे।

•जोतदार ज़मींदारों के खिलाफ़ थे। जोतदारों ने गांव की जमा बढ़ाने के लिए ज़मींदारों के प्रयासों का विरोध किया।

•ज़मींदारी अधिकारियों को लगान वसूलने से रोका गया।

•जोतदारों ने ज़मींदारों के खिलाफ़ रैयतों को संगठित किया और ज़मींदारों को राजस्व के भुगतान में देरी की। जब ज़मींदारों की संपत्ति राज्य द्वारा नीलाम की जाती थी, तो अक्सर जोतदार ही खरीदार होते थे।

•उत्तर बंगाल में जोतदार सबसे शक्तिशाली थे।कुछ जगहों पर जोतदारों को हौलादार, गंटीदार या मंडल कहा जाता था।

ज़मींदारों की ओर से प्रतिरोध

•ज़मींदारों ने राज्य द्वारा उच्च राजस्व की मांग करने और राज्य द्वारा उनकी संपत्ति की नीलामी किए जाने के दबाव का सामना करने के लिए कुछ रणनीतियाँ बनाईं।काल्पनिक बिक्री ऐसी ही एक रणनीति थी।

•जमींदारों ने अपनी जमींदारी महिलाओं को हस्तांतरित कर दी, क्योंकि कंपनी ने वादा किया था कि वे महिलाओं की संपत्ति पर कब्जा नहीं करेंगे। उदाहरण के लिए, बर्दवान के राजा ने अपनी जमींदारी अपनी माँ को हस्तांतरित कर दी। नीलामी में ज़मींदार के एजेंटों द्वारा हेरफेर किया जाता था। नीलामी के समय ज़मींदार के लोगों ने इसे खरीदा और अन्य खरीदारों से ज़्यादा बोली लगाकर ज़मींदार को वापस कर दिया।

•बाहरी खरीदारों पर ज़मींदार के लठैतों ने हमला किया।उन्हें लगा कि वे वफ़ादारी की भावना के कारण ज़मींदारी नियंत्रण का हिस्सा थे।

•वे ज़मींदारों को अधिकार मानते थे और खुद को प्रोजा (प्रजा) मानतेथे।इसप्रकार, बाहरी लोग उनके द्वारा खरीदी गई सम्पदा पर कब्ज़ा नहीं कर पाते थे।

पांचवीं रिपोर्ट

•पांचवीं रिपोर्ट ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत करने के लिए तैयार की गई थी।

•पांचवीं रिपोर्ट ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन और गतिविधियों पर एक रिपोर्ट थी।

•रिपोर्ट में 1002 पृष्ठ थे।इसे 1813 में ब्रिटिश संसद को प्रस्तुत किया गया था।

•रिपोर्ट के 800 पृष्ठ परिशिष्ट थे, जिनमें जमींदारों और रैयतों की याचिकाएँ, विभिन्न जिलों के कलेक्टरों की रिपोर्टें, राजस्व रिटर्न पर सांख्यिकीय तालिकाएँ और बंगाल और मद्रास के राजस्व और न्यायिक प्रशासन पर नोट्स शामिल थे।

•कंपनी के कुशासन और कुप्रशासन के बारे में खबरों पर ब्रिटेन में गरमागरम बहस हुई और प्रेस में व्यापक रूप से प्रचारित किया गया।

•कंपनी के अधिकारियों के लालच और भ्रष्टाचार की घटनाओं पर चर्चा की गई।

•ब्रिटिश संसद ने भारत में कंपनी के शासन को विनियमित करने के लिए कई अधिनियम पारित किए।

•इसने कंपनी को भारत के प्रशासन पर रिपोर्ट तैयार करने के लिए मजबूर किया।पाँचवीं रिपोर्ट ऐसी ही एक रिपोर्ट थी।

बुकानन

•फ्रांसिस बुकानन एक चिकित्सक थे, भारत आए और बंगाल मेडिकल सर्विस में सेवा की (1794 से 1815 तक) उन्होंने भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड वेलेस्ली के सर्जन के रूप में भी काम किया।

•उन्होंने एक चिड़िया घर का आयोजन किया जो कलकत्ता अलीपुर चिड़िया घर बन गया।वे थोड़े समय के लिए बॉट निकल गार्डन के प्रभारी भी रहे।

•उन्होंने उन क्षेत्रों का विस्तृत सर्वेक्षण किया जो कंपनी के नियंत्रण में थे।

•बुकानन की पत्रिका हमें राजमहल पहाड़ियों के पहाड़ियों के बारे में जानकारी देती है।

•बुकानन ने एक परिदृश्य के बारे में लिखा और बताया कि कैसे इसे बदला जा सकता है और फसलों की खेती का सुझाव देकर इसे अधिक उत्पादक बनाया जा सकता है।

कुदाल और हल;

राजमहल की पहाड़ियों में -

•पहाड़ियां पहाड़ी लोग थे और अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राजमहल पहाड़ियों के आसपास रहते थे।

•उनकी मुख्य गतिविधियाँ वन उपज एकत्र करना और झूम खेती करना थीं।–वे झाड़ियों को काटकर और झाड़ियों को जलाकर जंगल के कुछ हिस्सों को साफ करते थे।

•ये हिस्से राख से प्राप्त पोटाश से समृद्ध थे।

•वे अपने उपभोग के लिए कई तरह की दालें और बाजरा उगाते थे । वे कुदाल से जमीन को थोड़ा-थोड़ा खुरचते थे और साफ की गई जमीन पर सालों तक खेती करते थे।

•फिर उसे उपजाऊ बनाने के लिए परती छोड़ देते थे और नए इलाकों में चले जाते थे।

•उनके मुख्य वन उत्पाद भोजन के लिए महुआ (एकफूल), बिक्री के लिए रेशम के कोकून और राल और लकड़ी का कोयला उत्पादन के लिए लकड़ी थे।

•वेशिकारी, झूम खेती करने वाले, खाद्य संग्राहक, लकड़ी का कोयला उत्पादक, रेशम कीट पालने वाले थे और जंगल से बहुत जुड़े हुए थे।

संथाल: पहले बसने वाले

•संथाल 1780 के दशक में राजमहल की पहाड़ियों में आए थे ।ब्रिटिश अधिकारियों ने उन्हें जंगल महल में बसने के लिए आमंत्रित किया।

•अंग्रेजों ने संथालों को जमीन दी और उन्हें राजमहल की तलहटी में बसने के लिए राजी किया।

• 1832 तक एक बड़े क्षेत्र को ***दामिन-ए-कोह*** के रूप में चिन्हित किया गया और इसे इसके भीतर रहने वाले संथालों की भूमि घोषित किया गया।

•सीमांकन के बाद, संथालों के बसावट वाले क्षेत्रों में तेजी से विस्तार हुआ, जो 1838 में 40 संथाल गांवों से बढ़कर 1851 तक 1,473 गांवों तक पहुंच गया।

संथाल विद्रोह -

•संथालों को जल्द ही एहसास हो गया कि जिस जमीन पर वे खेती कर रहे थे, वह उनके हाथ से निकल रही थी।

•अंग्रेजों ने उन जमीनों पर कर लगाना शुरू कर दिया और साहूकार उनसे ऊंची ब्याज दर वसूल रहे थे और चूककर्ताओं की स्थिति में उनकी जमीन पर कब्जा कर लेते थे।

• 1850 के दशक तक उन्हें एहसास हो गया कि ज़मींदारों, साहूकारों और औपनिवेशिक राज्य के खिलाफ विद्रोह करने का समय आ गया है ताकि एक आदर्श दुनिया बनाई जा सके जिस पर संथालों का ही शासन हो।

•संथाल ने 1855-56 में जमींदारों, साहूकारों और औपनिवेशिक राज्य के खिलाफ विद्रोह किया।

•सिद्धूमांझी, संथाल विद्रोह के नेता थे। ब्रिटिश सरकार संथालों द्वारा साफ की गई जमीन पर भारी कर लगा रही थी। साहूकार (दीकू) उनसे उच्च ब्याज दर वसूल रहे थे और कर्ज न चुकाने पर जमीन पर कब्जा कर लेते थे।

•संथाल विद्रोह (1855-56) के बाद ही संथाल परगना का निर्माण हुआ । परगना को भागलपुर और बीरभूम जिलों से 5,500 वर्ग मील में विभाजित किया गया था।

बुकानन के विवरण

•वह हर जगह ड्राफ्ट्समैन, सर्वेक्षक, पालकी ढोने वाले, कुली जैसे लोगों की एक बड़ी सेना के साथ मार्च करता था।

•यात्रा का खर्च ईस्ट इंडिया कंपनी ने वहन किया क्योंकि उसे बुकानन द्वारा एकत्रित की जाने वाली जानकारी की आवश्यकता थी।

•ब्रिटिश लोग ऐसे प्राकृतिक संसाधनों की तलाश में थे जिन्हें वे नियंत्रित और दोहन कर सकें।इसने भूदृश्यों और राजस्व स्रोतों का सर्वेक्षण किया, खोज यात्राओं का आयोजन किया, तथा अपने भूवैज्ञानिकों और भूगोलवेत्ताओं, वनस्पतिशास्त्रियों और चिकित्साकर्मियों को जानकारी एकत्र करने के लिए भेजा।

बुकानन, निस्संदेह एक असाधारण पर्यवेक्षक

•बुकानन जहाँ भी गया, उसने पत्थरों और चट्टानों तथा मिट्टी की विभिन्न परतों का जुनूनी ढंग से अवलोकन किया।

•उसने खनिजों और पत्थरों की खोज की जो व्यावसायिक रूप से मूल्यवान थे, उसने लौह अयस्क और अभ्रक, ग्रेनाइट और नमक के सभी संकेतों को दर्ज किया।

देहात में विद्रोह (बॉम्बे दक्कन) लेखा बहियाँ जला दी गईं :

• 12 मई 1875 को पूना जिले के सूपा में किसान आंदोलन शुरू हुआ, आस-पास के ग्रामीण इलाकों से किसान इकट्ठा हुए और दुकानदारों पर हमला किया, उनसे बही खाता (खाता बही) ऋण और साहूकारों द्वारा पैसे उधार देने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले बांड की मांग की।

•विद्रोह पुणे से अहमदनगर तक फैल गया।अगले दो महीनों में यह और फैल गया और 6,500 वर्ग किलोमीटर में फैल गया।तीस से ज़्यादा गाँव प्रभावित हुए।

•विद्रोह का पैटर्न हर जगह एक जैसा था। साहूकारों पर हमला किया गया और उनके खाते जला दिए गए । उन्होंने खातों को जला दिया, अनाज की दुकानों को लूट लिया और कुछ मामलों में साहूकारों के घरों में आग लगा दी।

•पूना से विद्रोह अहमदनगर तक फैल गया ।

•तीस से ज़्यादा गाँव प्रभावित हुए ।

एक नई राजस्व प्रणाली

• 19वीं सदी में शामिल किए गए क्षेत्रों में अस्थायी राजस्व बंदोबस्त किए गए।

• बॉम्बे दक्कन में शुरू की गई राजस्व प्रणाली को रैयतवाड़ी बंदोबस्त के रूप में जाना जाता था ।

• इस प्रणाली के तहत, राजस्व सीधे रैयत के साथ तय किया जाता था। विभिन्न प्रकार की मिट्टी से औसत आय की गणना की जाती थी। रैयत की राजस्व भुगतान क्षमता का आकलन किया जाता था। इस का एक हिस्सा राज्य के हिस्से के रूप में तय किया गया । हर 30 साल में भूमि का पुनःसर्वेक्षण किया गया और राजस्व दरों में वृद्धि की गई। उनकी राजस्व मांग अब स्थायी नहीं थी।

राजस्व की मांग और किसान का कर्ज

•जब बारिश नहीं हुई और फसल खराब हुई, तो किसानों को राजस्व का भुगतान करना असंभव लगा।• जब कोई भुगतान करने में विफल रहा, तो उसकी फसल जब्त कर ली गई और पूरे गांव पर जुर्माना लगाया गया।

•1832 के बाद कृषि उत्पादों की कीमतें तेजी से गिर गईं और डेढ़ दशक से अधिक समय तक ठीक नहीं हुईं।• 1832-34 के वर्षों में आए अकाल से ग्रामीण इलाके तबाह हो गए।•दक्कन के एक तिहाई मवेशी मारे गए और आधी मानव आबादी मर गई।• किसानों ने कर्ज लिया। लेकिन एक बार कर्ज लेने के बाद, रैयत को इसे वापस चुकाना मुश्किल हो गया।

•जैसे-जैसे कर्ज बढ़ता गया और कर्ज चुकाया नहीं गया, किसानों की साहूकारों पर निर्भरता बढ़ती गई।• अब उन्हें अपनी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने और अपने उत्पादन व्यय को पूरा करने के लिए भी ऋण की आवश्यकता थी।

- 1845 के बाद कृषि की कीमतों में लगातार सुधार हुआ।
- किसान अब अपने रकबे का विस्तार कर रहे थे, नए क्षेत्रों में जा रहे थे और चरागाहों को खेती के खेतों में बदल रहे थे।

फिर कपास की खेती में उछाल आया

- 1857 में ब्रिटेन में कॉटन सप्लाई एसोसिएशन की स्थापना की गई।
- 1859 में मैनचेस्टर कॉटन कंपनी का गठन किया गया।
- उनका उद्देश्य "दुनिया के हर उस हिस्से में कपास उत्पादन को बढ़ावा देना था जो इसके विकास के लिए उपयुक्त हो"।
- 1861 में जब अमेरिकी गृह युद्ध छिड़ा, तो ब्रिटेन में कपास के कारोबारियों में दहशत की लहर फैल गई।
- अमेरिका से कच्चे कपास का आयात सामान्य से तीन प्रतिशत से भी कम रह गया।

- बॉम्बे में, कपास के व्यापारी आपूर्ति का आकलन करने और खेती को प्रोत्साहित करने के लिए कपास के जिलों का दौरा करते थे।
- जब बाजार में उछाल होता है तो ऋण आसानी से मिल जाता है, क्योंकि ऋण देने वाले लोग अपने पैसे वापस पाने के बारे में सुरक्षित महसूस करते हैं।

• 1862 तक ब्रिटेन में कपास के आयात का 90 प्रतिशत से अधिक हिस्सा भारत से आ रहा था।

अमेरिकी गृह युद्ध

• 1861 में अमेरिकी गृहयुद्ध छिड़ गया ।अमेरिका से ब्रिटेन को कच्चे कपास की आपूर्ति 1861 में 2,000,000 गांठों से गिरकर 1862 में 55,000 गांठों पर आ गई।

•बंबई में कपास के व्यापारी किसानों को कपास की खेती के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कपास के जिलों का दौरा करते थे।

•बंबई में कपास निर्यात करने वाले व्यापारियों ने साहूकारों को अग्रिम राशि दी, जिन्होंने बदले में कपास उत्पादन के लिए ग्रामीण साहूकारों को ऋण दिया।

•इन घटनाओं ने दक्कन के इलाकों के किसानों को प्रभावित किया।

ऋण का स्रोत सूख गया

• 1865 तक गृहयुद्ध समाप्त होने के बाद, अमेरिका में कपास उत्पादन फिर से शुरू हो गया और ब्रिटेन को भारतीय कपास निर्यात में लगातार गिरावट आई।

• महाराष्ट्र में निर्यात व्यापारी और साहूकार अब दीर्घकालिक ऋण देने के लिए उत्सुक नहीं थे।

• जब ऋण सूख गया, तो राजस्व मांग 50 से 100 प्रतिशत तक बढ़ गई।

• किसानों को फिर से साहूकारों की ओर रुख करना पड़ा।

• लेकिन साहूकार ने अब ऋण देने से इनकार कर दिया।

अन्याय का अनुभव

• साहूकारों द्वारा ऋण देने से इनकार करने से रैयत क्रोधित हो गए।

• रैयतों ने साहूकारों से अन्याय का अनुभव किया |

• साहूकार रैयतों की दुर्दशा के प्रति असंवेदनशील थे |

• साहूकार ग्रामीण इलाकों के पारंपरिक मानदंडों का उल्लंघन कर रहे थे।

• एक सामान्य नियम यह था कि ब्याज मूलधन से अधिक नहीं हो सकता था। औपनिवेशिक शासन के तहत यह नियम टूट गया।

• दक्कन दंगा आयोग द्वारा जांचे गए कई मामलों में से एक में, साहूकार ने 100 रुपये के ऋण पर 2,000 रुपये से अधिक ब्याज लिया था।

• 1859 में अंग्रेजों ने एक सीमा कानून पारित किया, जिसमें कहा गया था कि साहूकारों और रैयतों के बीच हस्ताक्षरित ऋण बांड की वैधता केवल तीन साल होगी।

• यह कानून समय के साथ ब्याज के संचय को रोकने के लिए था।

• हालांकि, साहूकार ने कानून को पलट दिया, जिससे रैयत को हर तीन साल में एक नया बांड पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

दक्कन दंगा आयोग -

•दक्कन दंगों के कारणों की जांच करने के लिए बंबई सरकार द्वारा दक्कन दंगा आयोग की स्थापना की गई थी।

●आयोग ने 1878 में ब्रिटिश संसद में एक रिपोर्ट पेश की।यह इतिहासकारों को दंगों के अध्ययन के लिए कई स्रोत प्रदान करता है।

●आयोग ने उन जिलों में जांच की जहां दंगे फैले थे, रैयतों, शौकरों और प्रत्यक्षदर्शियों आदि के बयान दर्ज किए।

●आयोग से यह पता लगाने को कहा गया कि क्या राजस्व की मांग विद्रोह का कारण थी। आयोग ने रिपोर्ट दी कि सरकार की मांग किसानों के गुस्से का कारण नहीं थी।आयोग ने साहूकार को दोषी ठहराया|

बहुविकल्पीय प्रश्न (1 Marks)

1. राजमहल के पहाड़ियाओं का जीवन पूरी तरह से _____ पर निर्भर है

(A) नदी (B) स्थायी कृषि

(C) वन (D) व्यापार

उत्तर: C

2. चार्ल्स कॉर्नवालिस कौन थे?

(A) बंगाल के कर्नल जब स्थायी बंदोबस्त पेश किया गया था।

(B) एडमिरल जब स्थायी बंदोबस्त की स्थापना की गई थी।

(C) बंगाल के गवर्नर-जनरल जब स्थायी बंदोबस्त पेश किया गया था।

(D) बंगाल के कमांडर जब स्थायी बंदोबस्त पेश किया गया था।

उत्तर: C

3. ज़मींदारों द्वारा भुगतान की विफलता के निम्नलिखित में से कौन से कारण हैं?

(A) मांगें बहुत अधिक थीं। (B) कृषि उत्पादों की कीमत कम थीं।

(C) राजस्व स्थायी था। (D) उपरोक्त सभी।

उत्तर: D

4. जब स्थायी बंदोबस्त लागू किया गया तो बर्दवान का राजा कौन था?

(A) महाराजा आफताब चंद मेहताब (B) महाराजा मेहताब चंद बहादुर

(C) महाराजा उदय चंद महताबी (D) महाराजा मेहताब चंद (तेजचंद)

उत्तर: D

5. निम्नलिखित में से कौन राजमहल में पहाड़ियां लोगो के लिए खतरा बनकर उभरा?

(A) संथाल (B) भील

(C) गुज्जर (D) बकरवाल

उत्तर: A

6. पहाड़िया लोग कौन थे?

(A) शिकारी (B) स्थानान्तरी कृषक

(C) चारकोल उत्पादक (D) ऊपर के सभी

उत्तर: D

7. सिद्धू मांझी कौन थे?

(A) संथाल विद्रोह के नेता (B) गोंड विद्रोह के नेता

(C) पहाड़िया विद्रोह के नेता (D) 1857 के विद्रोह के नेता

उत्तर: A

8. "हर जगह वह गया। उन्होंने पत्थरों और चट्टानों और विभिन्न स्तरों और मिट्टी की परतों का जुनून से अवलोकन किया"- यहाँ किसका उल्लेख किया गया है?

(A) लॉर्ड क्लाइव (B) बुकानन

(C) अलेक्जेंडर कनिंघम (D) लॉर्ड डलहौजी

उत्तर: B

9. निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिएः

1. स्थायी बंदोबस्त का लागु होना

2. अमेरिकी गृहयुद्ध

3. ब्रिटिश संसद में पांचवी रिपोर्ट

4. राजमहल के पहाड़ी इलाके में पहुंचे संथाल

इन घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम है:

(A) 1, 2, 3, 4 (B) 1, 4, 3, 2

(C) 1, 3, 2, 4 (D) 1, 3, 4, 2

उत्तर: B

10. ब्रिटिश संसद में पांचवीं रिपोर्ट कब पेश की गई थी?

(A) 1770 (B) 1858

(C) 1813 (D) 1795

उत्तर: C

11. दामिन-ए-कोह का गठन _____ के लिए किया गया था

(A) संथाल (B) पहाड़िया

(C) ब्रिटिश (D) जमींदारी

उत्तर: A

12. 1862 तक अंग्रेजों के लिए _____ कपास का प्रमुख स्रोत था।

(A) अमेरिका (B) भारत

(C) चीन (D) जापान

उत्तर: A

13. निम्नलिखित विकल्पों पर विचार करें ओर सही कथन बताए |

1. पांचवीं रिपोर्ट ब्रिटिश संसद को 1813 ई. में प्रस्तुत की गई।

2. जोतदार काफी शक्तिशाली थे।

3. पहाड़ी लोगों के लिए संथाल एक बड़ा खतरा थे।

4. बंगाल में किसी जमींदारी की नीलामी नहीं की गई।

(A) 1, 2 और 3 (B) 1, 2, 3 और 4

(C) केवल 2 और 3 (D) केवल 3 और 4

उत्तर: B

14. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही कथन/कथनों की पहचान करे !

1. स्थायी बंदोबस्त 1793 ई. में शुरू किया गया था।

2. जोतदार काफी शक्तिशाली थे।

3. सभी जमींदारों ने अपना बकाया बहुत आसानी से चुका दिया।

4. रैयत साहूकारों को कुटिल और धोखेबाज के रूप में देखने आए।

(A) 1, 2 और 3 (B) 1, 2, 3 और 4

(C) 1, 2 और 4 (D) 2, 3 और 4

उत्तर: C

15. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. पूना विद्रोह बाजार केंद्र से संबंधित था।

II. पूना विद्रोह की शुरुआत 12 मई 1875 ई. को हुई

(A) I कथन सही है (B) II कथन सही है

(C) I और II दोनों कथन सही हैं (D) I और II दोनों कथन सही नहीं हैं

उत्तर: C

16. निम्नलिखित चित्र को पहचान कर नाम लिखें!

(A) बिरसा मुंडा (B) सिधु मांझी

(C) कान्हू (D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: B

17. दिए गए चित्र को पहचानिए और उसका नाम लिखिए !

(A) बिरसा मुंडा (B) तांत्या टोपे

(C) नाना साहेब (D) महाराजा महताब चंद

उत्तर: D

लघु उत्तरीय प्रश्न

Q.1 जोतदार के उदय के क्या कारण थे? इसके किन्हीं तीन कारणों का वर्णन कीजिए।

1. 19वीं शताब्दी की शुरुआत तक जोतदार ने कभी-कभी कई हजार एकड़ भूमि के विशाल क्षेत्र का अधिग्रहण कर लिया था।
2. जब राजस्व भुगतान करने में विफलता के लिए जमींदारों की संपत्ति की नीलामी की जाती थी तो जोतदार अक्सर खरीदारों में शामिल होते थे।
3. जोतदार गाँव में स्थित थे और गरीब ग्रामीणों के एक बड़े हिस्से पर उनका सीधा नियंत्रण था।
4. उन्होंने स्थानीय व्यापार के साथ-साथ साहूकार को नियंत्रित किया और क्षेत्र के गरीब किसानों पर अत्यधिक शक्ति का प्रयोग किया।

Q2. जमींदारों ने अपनी जमींदारी को बचाने के लिए कौन से कदम उठाए?

1.काल्पनिक बिक्री ऐसी ही एक रणनीति थी। जमींदारों ने अपनी जमींदारी महिलाओं को हस्तांतरित कर दी, क्योंकि कंपनी ने वादा किया था कि वे महिलाओं की संपत्ति पर कब्जा नहीं करेंगे। उदाहरण के लिए, बर्दवान के राजा ने अपनी जमींदारी अपनी मां को हस्तांतरित कर दी। नीलामियों में जमींदार के एजेंटों द्वारा हेराफेरी की गई थी।

2.नीलामी के समय जमींदार के आदमियों ने इसे खरीद लिया और अन्य खरीददारों की तुलना में जमींदार को वापस दे दिया। बाहरी खरीददारों पर जमींदारों की लाठियों ने हमला किया। उन्होंने महसूस किया कि वे वफादारी की भावना के कारण जमींदारी नियंत्रण का हिस्सा हैं।

3. वे जमींदारों को अधिकार और खुद को प्रोजा (विषय) मानते थे। इस प्रकार, बाहरी लोग उनके द्वारा खरीदी गई संपत्ति पर कब्जा करने में सक्षम नहीं थे।

Q.3.संथालों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह क्यों किया?

1-1832 तक संथाल दामिन-ए-कोह क्षेत्र में बस गए थे। उनकी बस्ती का तेजी से विस्तार हुआ। उन्हें समायोजित करने के लिए जंगलों को साफ किया गया था। अधिक से अधिक भू-राजस्व मिलने से कंपनी को भी लाभ हुआ। हालांकि, संथाल असंतुष्ट हो गए। उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह कर दिया।संथाल कंपनी की कर व्यवस्था से खुश नहीं थे। वे सोचते थे कि भू-राजस्व की दरें ऊँची और शोषक थीं।

2-जमींदारों ने संथालों द्वारा खेती के तहत लाए गए क्षेत्रों पर अधिक नियंत्रण रखना शुरू कर दिया, जाहिर तौर पर यह ब्रिटिश नीति का एक हिस्सा था। लेकिन संथालों ने इसका विरोध किया।

3-ग्रामीण क्षेत्रों में साहूकारों को संथालों द्वारा कंपनी शासन के खलनायक और एजेंट के रूप में देखा जाता था। चूककर्ता के मामले में साहूकार संथालों की भूमि की नीलामी कर सकते थे। यह सब संथालों को रास नहीं आया।

4-अंग्रेजों ने बाद में संथालों को शांत करने के लिए कदम उठाए। संथाल परगना का एक अलग जिला बनाया गया था और संथालों की रक्षा के लिए कानून बनाया गया था

प्रश्न 4. बाहरी लोगों के आने पर पहाड़ियों की प्रतिक्रिया क्या रही?

1. बाहरी लोगों और अंग्रेजों के कारण पहाड़िया और अन्य जनजातियों के बीच संघर्ष हुआ। पहाडिय़ों के बसे हुए गांवों पर छापा मारा और खाद्यान्न और मवेशियों को लूट लिया।
2. वे बहुत गरीब हो गए और खेती को स्थानांतरित करने में लिप्त हो गए।
3. ब्रिटिश नीति क्रूर विनाश और उत्पीड़न वाली थी इसलिए ये लोग जंगल के आंतरिक भाग में चले गए।
4. जंगल की सफाई के बाद पहाड़िया शिकारियों और इकट्ठा करने वालों को भी समस्याओं का सामना करना पड़ा।

Q.5 ब्रिटिश सरकार के अधीन जमींदारों ने राजस्व के भुगतान में चूक क्यों की? कोई तीन बिंदु।

या

किसानों से राजस्व वसूल करने में जमींदारों के सामने आने वाली कठिनाइयों की चर्चा कीजिए। कोई तीन बिंदु दीजिए।

1. कंपनी की प्रारंभिक मांगें बहुत अधिक थीं।जिसका भुगतान रैयतो द्वारा किया जाना मुश्किल था |
2. 1790 के दशक में कृषि उपज की कीमतों में गिरावट आई, इसलिए रैयत जमींदार को अपना बकाया भुगतान करने में असमर्थ थे।
3. रैयतों द्वारा भुगतान में देरी ताकि जमींदार किराया / राजस्व एकत्र न कर सके और कंपनी को भुगतान करने में असमर्थ हो,

Q.6. दामिन-ए-कोह क्या था? संथाल ने ब्रिटिश नीति का विरोध क्यों किया?

1. दामिन-ए-कोह -राजमहल की तलहटी के नीचे अंग्रेजों द्वारा संथालों को दिया गया सीमांकित भूमि का बड़ा क्षेत्र था। औपनिवेशिक सरकार ने उनकी जमीन पर भारी कर लगा रखा था।

2.साहूकार उच्च ब्याज दर वसूल कर उनकी जमीनें छीन रहे थे।

3.जमींदारों ने अपनी भूमि पर नियंत्रण का दावा किया।

Q7.पांचवीं रिपोर्ट क्या थी?

1.ब्रिटिश संसद को प्रस्तुत करने के लिए तैयार एक रिपोर्ट। ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन और गतिविधियों पर एक रिपोर्ट। यह रिपोर्ट 1002 पृष्ठ की थी।

2. इसे 1813 में ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत किया गया था।

3.रिपोर्ट के 800 पृष्ठ परिशिष्ट थे जो जमींदारों और रैयतों की याचिकाओं, विभिन्न जिलों के कलेक्टरों की रिपोर्ट, राजस्व रिटर्न पर सांख्यिकीय तालिकाएं और राजस्व पर नोट्स और बंगाल और मद्रास के न्यायिक प्रशासन को पुन: प्रस्तुत करते थे।

Q8. पहाड़ियों ने मैदानी इलाकों पर नियमित रूप से हमला क्यों किया?

1.पहाडियों के लिए धावे आवश्यक थे क्योंकि इनकी जीविका धावे में मिली लुट की सामग्री पर निर्भर थी।

2. मैदानी इलाकों में जमींदार, तालुकदार एवं व्यापारी उन्हें नियमित रूप से भेंट अदा करते थे जो व्यापारियों द्वारा उनके नियंत्रण में आने वाले रास्ते से गुजरने के लिए टोल टैक्स के रूप में होता था।

3.यदि वे कर का भुगतान करते हैं तो पहाड़िया प्रमुख उनकी रक्षा करते हैं और उनके लोग रास्ते में माल लूटा नहीं करते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. राजस्व संग्रह में जमींदारों के सामने आने वाली कठिनाइयों को परिभाषित करें / जमींदारों ने भुगतान में चूक क्यों की?

*शुरुआती माँगें बहुत अधिक थीं।

*1790 के दशक में कृषि उपज की कीमतों में गिरावट आई, इसलिए रैयत जमींदार को अपना बकाया भुगतान करने में असमर्थ थे।

* रैयतों द्वारा भुगतान में देरी इसलिए जमींदार किराया/राजस्व एकत्र नहीं कर सके और कंपनी का भुगतान करने में असमर्थ थे|

* फसल की परवाह किए बिना राजस्व अपरिवर्तनीय था, और समय पर भुगतान करना पड़ता था।

*वास्तव में, सूर्यास्त कानून के अनुसार, यदि निर्दिष्ट तिथि के सूर्यास्त तक भुगतान नहीं आया, तो जमींदारी की नीलामी की जा सकती थी।

* ईस्ट इंडिया कंपनी जमींदारों के अधिकार और स्वायत्तता को नियंत्रित करती है - स्थायी बंदोबस्त ने शुरू में जमींदार की शक्ति को रैयत से लगान लेने और अपनी जमींदारी का प्रबंधन करने के लिए सीमित कर दिया था।

प्रश्न 2. रैयतवाड़ी बंदोबस्त स्थायी बंदोबस्त से किस प्रकार भिन्न था?

उत्तर- **स्थायी बंदोबस्त**

यह 1793 में बंगाल में चार्ल्स कॉर्नवालिस द्वारा पेश किया गया था। बंगाल के जमींदारों (पहले के राजाओं और तालुकदारों) के साथ राजस्व / स्थायी रूप से तय किया गया था और इसे भविष्य में नहीं बदला जा सकता था। जमींदार गाँव का जमींदार नहीं था, बल्कि राज्य का राजस्व संग्रहकर्ता था। उन्हें कंपनी को निश्चित राजस्व मांग का भुगतान करना पड़ता था और अतिरिक्त को अपनी आय के रूप में रखना पड़ता था। यदि वह राशि का भुगतान करने में विफल रहता है तो उसकी संपत्ति की नीलामी की जानी थी|

रैयतवाड़ी व्यवस्था

इसे थॉमस मुनरो द्वारा 1820 में बॉम्बे, मद्रास, असम और बर्मा में पेश किया गया था। राजस्व स्थायी रूप से तय नहीं किया गया था और भविष्य में राजस्व दरों में वृद्धि की गई थी। रैयतवाड़ी बंदोबस्त सीधे रैयतों यानी वास्तविक काश्तकारों के साथ किया गया था। उन्हें कंपनी को राजस्व मांग का भुगतान करना था। रैयतवाड़ी व्यवस्था की राजस्व दर 50% सूखी भूमि और 60% सिंचित भूमि में थी

प्रश्न 3. पहाडियां लोगों की आजीविका संथालों की आजीविका से किस प्रकार भिन्न थी?

I. पहाड़िया झूम खेती करते थे और वन उत्पादन पर जीवन यापन करते थे। संथाल बसे हुए थे तथा स्थायी रूप से खेती करते थे।

II. पहाडियों की खेती कुदाल पर निर्भर थी। संथाल हल का प्रयोग करते थे।

III. कृषि के अलावा वन उत्पाद भी पहाडियों की आजीविका का साधन थे तथा घुमंतू जीवन व्यतीत करते थे । जबकि संथालों ने गतिशीलता का जीवन छोड़ दिया और स्थायी रूप से खेती करते थे।

IV. पहाड़िया अपने व्यवसायों के कारण जंगल से घनिष्ठ रूप से संबंधित थे। संथाल एक विशिष्ट क्षेत्र में बसे थे।

V. पहाड़िया नियमित रूप से भोजन, शक्ति प्रदर्शन एवं और लूट की सामग्री के लिए मैदानी इलाकों में छापेमारी करते थे। संथालों के अंग्रेजों, साहूकारों और व्यापारियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध थे।

VI. पहाड़िया वन की उपज को बाजार में बेचने के लिए इकट्ठा करना पसंद करते थे लेकिन संथालों को यह पसंद नहीं था|

प्रश्न 4. बुकानन का विवरण विस्तार से दीजिए। ईस्ट इंडिया कंपनी ने उन्हें सर्वेक्षक के रूप में क्यों नियुक्त किया? इसे समझाओ।

उत्तर (i) बुकानन ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारी थे और उन्होंने हर जगह ड्राफ्टमैन, सर्वेक्षकों के साथ मार्च किया।

(ii) बुकानन के पास विशिष्ट निर्देश थे कि उसे क्या देखना है और कंपनी की जरूरत के अनुसार क्या रिकॉर्ड करना है क्योंकि कंपनी भारतीय संसाधनों का दोहन करना चाहती थी।

(iii) बुकानन असाधारण पर्यवेक्षक थे। उन्होंने खनिजों, लोहा, अभ्रक ग्रेनाइट और साल्टपीटर के लिए खोजे गए पत्थरों और चट्टानों, विभिन्न स्तरों और मिट्टी की परतों का अवलोकन किया।

(iv) बुकानन ने लिखा कि कैसे भूमि को रूपांतरित और अधिक उत्पादक बनाया जा सकता है।

(v) कौन से शिल्प की खेती की जा सकती है, कौन से पेड़ काटे गए और कौन से उगाए गए।

(vi) बुकानन की दृष्टि और प्राथमिकताएं स्थानीय निवासियों से अलग थीं, उनका मूल्यांकन कंपनी के संबंधित वाणिज्यिक द्वारा निर्धारित किया गया था।

(vii) वह अनिवार्य रूप से वनवासियों की जीवन शैली के आलोचक थे और उन्हें लगता था कि वन भूमि को कृषि भूमि में बदल दिया जाना चाहिए। उन्होंने संथाल की जीवन शैली की जानकारी दी।

(viii) कंपनी अपनी शक्ति को समेकित करना चाहती थी और प्राकृतिक संसाधनों द्वारा अपने वाणिज्य का विस्तार करना चाहती थी जिसे वह नियंत्रित कर सकता था। इसलिए कंपनी ने बुकानन को राजमहल पहाड़ियों में भारत के प्राकृतिक संसाधनों का सर्वेक्षण करने के लिए नियुक्त किया।

स्रोत आधारित प्रश्न

प्रश्न दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़ें और नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें

1. पांचवी रिपोर्ट

जमींदारों की स्थिति और भूमि की नीलामी का उल्लेख करते हुए, पांचवीं रिपोर्ट में कहा गया है: राजस्व की वसूली समय की पाबंदी के साथ नहीं हुई थी, और भूमि काफी हद तक नीलामी द्वारा बिक्री के लिए समय-समय पर उजागर हुई थी। मूल वर्ष 1203 में, 1796-97 के अनुरूप, बिक्री के लिए विज्ञापित भूमि ने जुम्मा या सिक्का का मूल्यांकन 28,70,061 रुपये, वास्तव में बेची गई भूमि की मात्रा एक जुम्मा या 14.18,756 का आकलन, और खरीद की राशि को समझा। पैसा सिक्का 17.90,416 रुपये। 1204 में। 1797-98 के अनुरूप, भूमि का 26,66,191 रुपये में सिक्का बेचा गया था, बेची गई मात्रा 22.74.076 रुपये के लिए थी, और खरीद राशि 21.47.580 रुपये

थी। डिफॉल्टरों में देश के कुछ सबसे पुराने परिवार थे। ऐसे थे नदिया राजशाही विशनपुर (बंगाल के सभी जिलों) के राजा, और अन्य, जिनकी सम्पदा के प्रत्येक अगले वर्ष के अंत में, उन्हें गरीबी और बर्बादी का खतरा था, और कुछ मामलों में राजस्व अधिकारियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा , सार्वजनिक मूल्यांकन की राशि को कम से कम संरक्षित करने के उनके प्रयासों में

1.पांचवीं रिपोर्ट क्या थी?

उत्तर: पांचवीं रिपोर्ट ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रशासनिक गतिविधियों के बारे में 1813 में ब्रिटिश संसद को प्रस्तुत की गई थी

2. वे तीन राज्य कौन से थे जहां प्रत्येक वर्ष के अंत में किसकी सम्पदा का विखंडन होता था?

उत्तर: ये नुड्डिया, राजेशाय, बिशनपुर (बंगाल के सभी जिले) और अन्य के राजा थे, जिनकी संपत्ति का प्रत्येक वर्ष के अंत में खंडन किया गया था।

3.रिपोर्ट ने हमें क्या बताया?

उत्तर, यह रिपोर्ट यह कहने की कोशिश कर रही है कि जमींदार ने नकली नीलामी का शिकार बना लिया था और बहुत कम दर पर जमीन खरीदी थी। अंतत: पुराने मालिक ने बहुत सस्ते दामों पर जमीन खरीद ली।

प्रश्न दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़ें और नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें

वनों की बंटाई और स्थायी कृषि के बारे में

राजमहल की निचली पहाड़ियों के एक गांव से गुजरते हुए। बुकानन ने लिखा: देश का दृश्य बहुत अच्छा है, खेती, विशेष रूप से सभी दिशाओं में घुमावदार चावल की संकीर्ण घाटियां, बिखरे हुए पेड़ों के साथ साफ भूमि, और चट्टानी पहाड़ियां पूर्णता में हैं: जो कुछ चाहिए वह प्रगति की कुछ उपस्थिति है क्षेत्र में और एक व्यापक रूप से विस्तारित और बेहतर खेती, जिसके लिए देश अतिसंवेदनशील है। टेसर (टसर रेशम के कीड़ों) और लाख के लिए आसन और पलास के वृक्षारोपण को लकड़ियों के स्थान पर उस हद तक कब्जा करना चाहिए जितना कि मांग स्वीकार करेगी ; जंगल को पूरी तरह से साफ किया जा सकता है, और बड़े हिस्से की खेती की जाती है, जबकि जो इस उद्देश्य के लिए उपयुक्त नहीं है, वह प्लामिरा (पालमायरा) और मोवा (महुआ) को पाल सकता है।

(i) बुकानन के इस विचार का उल्लेख कीजिए कि कैसे राजमहल की पहाड़ियों की भूमि को अधिक उत्पादक बनाया जा सकता है।

उत्तर- टेसर (तसर रेशम के कीड़े) और लाख के लिए आसन और पलास के वृक्षारोपण; जबकि जो इस उद्देश्य के लिए उपयुक्त नहीं है, वह प्लामिरा (पालमायरा) और मोवा (महुआ) को उपयोग सकता है।

(ii) विकास पर बुकानन की दृष्टि और प्राथमिकताएँ स्थानीय निवासियों से किस प्रकार भिन्न थीं? समझाना।

उत्तर- बुकानन का मूल्यांकन कंपनी के वाणिज्यिक सरोकारों और आधुनिक पश्चिमी धारणाओं पर आधारित था। वे अनिवार्य रूप से वनवासियों की जीवन शैली के आलोचक थे और उनका मानना था कि वनों को कृषि भूमि में बदलना होगा जबकि पहाड़िया अपना परंपरागत जीवन जीना चाहते थे|

(iii) बताएं कि राजमहल पहाड़ियों के निवासी बुकानन के उत्पादन के विचारों के बारे में कैसा महसूस करते थे।

उत्तर-शांति अभियानों के अनुभव और क्रूर दमन की यादों ने राजमहल क्षेत्र में ब्रिटिश घुसपैठ की धारणा को आकार दिया। प्रत्येक श्वेत व्यक्ति एक ऐसी शक्ति का प्रतिनिधित्व करता दिखाई दिया जो उनके जीवन के तरीके और जीवित रहने के साधनों को नष्ट कर रही थी, उनके जंगलों और भूमि पर उनका नियंत्रण छीन रही थी। लोग शत्रुतापूर्ण थे, अधिकारियों से आशंकित थे और उनसे बात करने को तैयार नहीं थे। कई मामलों में वे अपने गांव छोड़कर फरार हो गए थे।

=========

10. विद्रोही और राज

मुख्य अवधारणाएँ: -

●विद्रोही और राज- 1857 का विद्रोह और उसका प्रतिनिधित्व, विद्रोह का स्वरूप

● 18वीं शताब्दी के मध्य से, नवाबों और राजाओं ने धीरे-धीरे अपनी शक्ति और अधिकार खो दिए थे। उनकी स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया गया, उनकी सशस्त्र सेनाओं को भंग कर दिया गया और उनके राजस्व और क्षेत्र छीन लिए गए।

●देहात में किसान और ज़मींदार उच्च करों और राजस्व संग्रह के कठोर तरीकों से नाराज़ थे।

•विद्रोह के केंद्र- लखनऊ, कानपुर, बरेली, मेरठ, बिहार में आरा- की दमनकारी नीतियों के प्रति अपनी नफ़रत के कारण विभिन्न क्षेत्रों के लोग विद्रोह में कूद पड़े।

•भारतीय सिपाही अपने वेतन, भत्ते और सेवा की शर्तों से नाखुश थे। कंपनी के कुछ नियम उनकी धार्मिक भावनाओं का भी उल्लंघन करते थे।

•इस प्रकार हर जगह असंतोष फैल गया।

• 1857 में, ऐसी अफ़वाह फैली कि सैनिकों को गाय और सूअर की चर्बी से लिपटे नए कारतूस दिए गए थे।

•सहायक संधि 1798 में लॉर्ड वेलेस्ली द्वारा तैयार की गई एक प्रणाली थी । हैदराबाद, अवध, मैसूर, सूरत, तंजौर शुरुआती सहायक राज्य थे।

•व्यपगत सिद्धांत-यह तत्कालीन गवर्नर जनरल डलहौजी की नीति थी । यह सिद्धांत इस विचार पर आधारित था कि यदि किसी आश्रित राज्य का शासक निःसंतान मर जाता है, तो राज्य पर शासन करने का अधिकार संप्रभु को चला जाता है।

• 1856 में लॉर्ड डलहौजी ने अवध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया था।

विद्रोह का स्वरूप; सैन्य विद्रोह कैसे शुरू हुआ?

•सिपाहियों ने शाम की बंदूक की फायरिंग या बिगुल की आवाज़ के साथ अपनी कार्रवाई शुरू की।

•उन्होंने हथियारों की घंटी जब्त कर ली और खजाना लूट लिया।

•उन्होंने सरकारी इमारतों पर हमला किया - जेल, खजाना, टेलीफोन कार्यालय, रिकॉर्ड रूम, बंगले - सभी रिकॉर्ड जला दिए।

•गोरे आदमी से जुड़ी हर चीज और हर कोई निशाना बनाया गया।कानपुर, लखनऊ और बरेली जैसे प्रमुख शहरों में, साहूकार और अमीर लोग विद्रोहियों के निशाने पर आ गए।

संचार के माध्यम

यह स्पष्ट है कि विभिन्न छावनियों की सिपाहियों की लाइनों के बीच संचार था।

अवध मिलिट्री पुलिस के कैप्टन हर्सी ने विद्रोह के दौरान अपने भारतीय अधीनस्थों द्वारा सुरक्षा प्रदान की थी।

41वीं नेटिव इन्फैंट्री, जो उसी स्थान पर तैनात थी, ने जोर देकर कहा कि चूंकि उन्होंने अपने सभी गोरे अधिकारियों को मार दिया था, इसलिए मिलिट्री पुलिस को हर्सी को भी मार देना चाहिए या उसे 41वीं को कैदी के रूप में सौंप देना चाहिए।

लेकिन सैन्य पुलिस ने ऐसा करने से इनकार कर दिया, मामला प्रत्येक रेजिमेंट से चुने गए देशी अधिकारियों से बनी पंचायत द्वारा सुलझाया जाएगा।

• चार्ल्स बॉल ने विद्रोह का सबसे पुराना इतिहास लिखा।

नेता और अनुयायी

•अंग्रेजों से लड़ने के लिए नेतृत्व और संगठन की आवश्यकता थी, और इसके लिए उन्होंने मुगल शासक बहादुर शाह की ओर रुख किया, जो विद्रोह का नाममात्र नेता बनने के लिए सहमत हुए।

•कानपुर में, सिपाहियों और शहर के लोगों ने नाना साहिब का समर्थन करने पर सहमति व्यक्त की।

•झांसी में, रानी को विद्रोह का नेतृत्व संभालने के लिए मजबूर होना पड़ा।

•बिहार के आरा में एक स्थानीय जमींदार कुंवर सिंह ने भी नेतृत्व संभाला।

•स्थानीय नेता उभरे, छोटा नागपुर के सिंहभूम के आदिवासी किसान गोनूआ, इस क्षेत्र के कोल आदिवासियों के विद्रोही नेता बन गए।

अफवाहें और भविष्यवाणियाँ

•अफवाह थी कि ब्रिटिश सरकार ने हिंदुओं और मुसलमानों की जाति और धर्म को नष्ट करने के लिए एक बहुत बड़ी साजिश रची थी।

•अफवाह थी कि अंग्रेजों ने बाजार में बिकने वाले आटे में गाय और सूअर की हड्डियों का चूर्ण मिलाया था।

•सिपाहियों और आमलोगों ने आटे को छूने से इनकार कर दिया।

•डर और संदेह था कि अंग्रेज भारतीयों को ईसाई बनाना चाहते थे।

•सिपाहियों को डर था कि गाय और सूअर की चर्बी से लिपटी गोलियां खाने से उनकी जाति और धर्म भ्रष्ट हो जाएगा।

लोग अफवाहों में विश्वास क्यों कर रहे थे?

• अंग्रेजों ने पश्चिमी शिक्षा, पश्चिमी विचारों और पश्चिमी संस्थानों को शुरू करके भारतीय समाज में सुधार लाने के उद्देश्य से नीतियां अपनाईं।

• अंग्रेजों ने सती प्रथा (1629) को समाप्त करने तथा हिंदू विधवाओं के पुनर्विवाह की अनुमति देने के लिए कानून बनाए।

• अंग्रेजों ने प्रशासन की अपनी प्रणाली, अपने कानून तथा भूमि बंदोबस्त और भू-राजस्व संग्रह के अपने तरीके लागू किए।

अवध में विद्रोह

"ये चेरी एक दिन हमारे ही मुँह में आकार गिरेगा"

• 1851 में, गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी ने अवध राज्य को "एक चेरी जो एक दिन हमारे मुँह में गिरेगी" के रूप में वर्णित किया और पाँच साल बाद इसे ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।

•अवध पर सहायक संधि लागू किया गया था।

•इस गठबंधन की शर्तों के अनुसार नवाब को ब्रिटिश सेना को भंग करना पड़ा ताकि वे अपने सैनिकों को राज्य के भीतर तैनात कर सकें और ब्रिटिशों की सलाह के अनुसार काम कर सकें।

•अपनी सशस्त्र सेनाओं से वंचित होने के कारण नवाब राज्य के भीतर कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए ब्रिटिशों पर अधिक से अधिक निर्भर हो गया।

•वह अब विद्रोही प्रमुख और तालुकदारों पर नियंत्रण नहीं रख सकता था।

सहायक संधि

सहायक संधि 1798 में लॉर्ड वेलेस्ली द्वारा तैयार की गई एक प्रणाली थी। अंग्रेजों के साथ इस तरह के गठबंधन में शामिल होने वाले सभी लोगों को कुछ नियम और शर्तें माननी पड़ती थीं:

(क) अंग्रेज अपने सहयोगी को अपनी शक्ति के लिए बाहरी और आंतरिक खतरों से बचाने के लिए जिम्मेदार होंगे।

(ख) सहयोगी के क्षेत्र में, एक ब्रिटिश सशस्त्र टुकड़ी तैनात होगी।

(ग) सहयोगी को इस टुकड़ी को बनाए रखने के लिए संसाधन उपलब्ध कराने होंगे।

(घ) सहयोगी केवल अंग्रेजों की अनुमति से अन्य शासकों के साथ समझौते कर सकता था या युद्ध में शामिल हो सकता था।

"देह से जान जा चुकी थी: "

नवाब वाजिद अली शाह को इस आधार पर गद्दी से उतार दिया गया और कलकत्ता निर्वासित कर दिया गया कि इस क्षेत्र में गलत शासन किया जा रहा था।

• ब्रिटिश सरकार ने भी गलत तरीके से मान लिया था कि वाजिद अली शाह एक अलोकप्रिय शासक थे।

• इसके विपरीत, उन्हें बहुत प्यार किया जाता था, और जब उन्होंने अपने प्रिय लखनऊ को छोड़ा, तो उनके पीछे-पीछे कानपुर तक कई लोग शोकगीत गाते हुए आए।

• नवाब के निर्वासन पर व्यापक दुःख और क्षति की भावना को कई समकालीन पर्यवेक्षकों ने दर्ज किया।

उनमें से एक ने लिखा: "शरीर से प्राण निकल गए थे, और इस शहर का शरीर बेजान रह गया था।

फिरंगी राज का आना और एक दुनिया का खात्मा

• अंग्रेजों ने नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से हटा दिया, नवाब के हटने से दरबार में मौजूद संगीतकारों, कारीगरों, रसोइयों और कामगारों की हालत खराब हो गई।

• ब्रिटिश शासन में तालुकदारों की हालत बहुत खराब हो गई।

• मुगल शासन के दौरान तालुकदार वह व्यक्ति हुआ करता था जो किसानों से कर वसूलता था।

• अवध पर अंग्रेजों के कब्जे के बाद इन तालुकदारों को हटा दिया गया। उनके सभी किले ध्वस्त कर दिए गए और उनकी सेना भी समाप्त कर दी गई।

• ब्रिटिश सरकार ने सोचा कि तालुकदारों को हटाकर जमीन सीधे किसानों को सौंप दी जाएगी, जिससे किसानों का शोषण कम हो जाएगा।

विद्रोही क्या चाहते थे?

एकता की कल्पना

•विद्रोह को एक युद्ध के रूप में देखा गया जिसमें हिंदू और मुस्लिम दोनों को समान रूप से हार या लाभ उठाना था।

•इश्तहार (सूचनाएँ),ब्रिटिश-पूर्वहिंदू-मुस्लिम अतीत की याद दिलाती थीं और मुगल साम्राज्य के तहत विभिन्न समुदायों के सह-अस्तित्व का महिमामंडन करती थीं।

• 1857 में, अंग्रेजों ने हिंदू आबादी को मुसलमानों के खिलाफ भड़काने के लिए 50,000 रुपये खर्च किए, लेकिन यह प्रयास विफल रहा।

उत्पीड़न के प्रतीकों के खिलाफ:

•भूमि राजस्व समझौतों ने बड़े और छोटे दोनों तरह के भूमि मालिकों को बेदखल कर दिया था और विदेशी व्यापार ने कारीगरों और बुनकरों को बर्बाद कर दिया था।

•ब्रिटिश शासन के हर पहलू पर हमला किया गया और फिरंगियों पर एक ऐसी जीवन शैली को नष्ट करने का आरोप लगाया गया जो जानी-पहचानी और प्रिय थी।

•घोषणाओं में व्यापक भय व्यक्त किया गया कि अंग्रेज हिंदुओं और मुसलमानों की जाति और धर्म को नष्ट करने और उन्हें ईसाई धर्म में परिवर्तित करने पर तुले हुए हैं।

•लोगों से एकजुट होने और अपनी आजीविका, अपने विश्वास, अपने सम्मान, अपनी पहचान को बचाने के लिए लड़ने का आग्रह किया गया।

वैकल्पिक सत्ता की तलाश:

विद्रोहियों ने ब्रिटिश सत्ता के केंद्रों पर कब्जा करने के बाद दिल्ली, लखनऊ और कानपुर में समानांतर प्रशासन स्थापित किया। बाद में वे असफल हो गए। दमन की ब्रिटिश नीति।

दमन

उत्तर भारत पर फिर से कब्ज़ा करने के लिए सेना भेजने से पहले, अंग्रेजों ने विद्रोह को दबाने में मदद करने के लिए कई कानून पारित किए।

मई और जून 1857 में पारित कई अधिनियमों के द्वारा, न केवल पूरे उत्तर भारत को मार्शल लॉ के अधीन कर दिया गया, बल्कि सैन्य अधिकारियों और यहाँ तक कि आम अंग्रेजों को भी विद्रोह के संदिग्ध भारतीयों पर मुकदमा चलाने और उन्हें दंडित करने का अधिकार दिया गया।

कानून और मुकदमे की सामान्य प्रक्रियाओं को स्थगित कर दिया गया और यह घोषित किया गया कि विद्रोह के लिए केवल एक ही सजा होगी - मौत।

अंग्रेजों के आक्रमण को लम्बा खींचने के लिए उत्तर भारत को एक सख्त कानून के तहत लाया गया - एक कलकत्ता से उत्तर भारत तक, दूसरा दिल्ली को पुनः प्राप्त करने के लिए पंजाब से, 27,000 मुसलमानों को फाँसी दी गई।

विद्रोह की छवियाँ: रक्षकों का अभिनन्दन

औपनिवेशिक प्रशासन और सैन्यकर्मियों के आधिकारिक खातों ने पत्रों और डायरियों, आत्मकथाओं और आधिकारिक इतिहासों में अपने संस्करण छोड़े।

ब्रिटिश समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित विद्रोह की कहानियों ने विद्रोहियों की हिंसा का भयानक विवरण दिया।

ब्रिटिश चित्रों में विभिन्न प्रकार की छवियाँ प्रस्तुत की गई हैं, जिनका उद्देश्य विभिन्न प्रकार की भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को भड़काना था।

"द रिलीफ ऑफ लखनऊ", 1859 में थॉमस जोन्स बार्कर द्वारा चित्रित की गई थी।

अंग्रेजी महिलाएँ और ब्रिटेन की प्रतिष्ठा :

1. ब्रिटिश सरकार से निर्दोष महिलाओं के सम्मान की रक्षा करने और असहाय बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कहा गया था।
2. कलाकारों ने आघात और पीड़ा के अपने दृश्य प्रतिनिधित्व के माध्यम से इन भावनाओं को व्यक्त किया और आकार दिया।

दहशत का प्रदर्शन

1. विद्रोहियों को जिस क्रूर तरीके से मार डाला गया, उसमें प्रतिशोध की इच्छा व्यक्त की गई थी।
2. उन्हें बंदूकों से उड़ा दिया गया या फांसी पर लटका दिया गया।
3. इन फांसी की तस्वीरों को लोकप्रिय पत्रिकाओं के माध्यम से व्यापक रूप से प्रसारित किया गया।
4. जब गवर्नर जनरल कैनिंग ने घोषणा की कि नरमी और दया का भाव सिपाहियों की वफादारी को वापस जीतने में मदद करेगा, तो ब्रिटिश प्रेस में उनका मजाक उड़ाया गया।

राष्ट्रवादी दृश्य कल्पना

• राष्ट्रवादी आंदोलन ने 1857 की घटनाओं से प्रेरणा ली।

• कला और साहित्य ने 1857 की यादों को जीवित रखने में मदद की थी।
• रानी (रानी लक्ष्मी बाई) की वीरता के बारे में वीरतापूर्ण कविताएँ लिखी गईं।
• झांसी की रानी को दुश्मन का पीछा करते हुए, ब्रिटिश सैनिकों को मारते हुए और अपने अंतिम समय तक बहादुरी से लड़ते हुए एक मर्दाना व्यक्ति के रूप में दर्शाया गया।
•औपनिवेशिक प्रशासन और सैन्य पुरुषों के आधिकारिक खातों ने पत्रों और डायरियों, आत्मकथाओं और आधिकारिक इतिहास में अपने संस्करण छोड़े।
•असंख्य ज्ञापनों और नोटों, स्थितियों के आकलन के माध्यम से ब्रिटिशों के बदलते दृष्टिकोण स्पष्ट थे।
•ब्रिटिश समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित विद्रोह की कहानियों में विद्रोहियों की हिंसा का भयानक विवरण दिया गया था।
• ब्रिटिश और भारतीयों द्वारा बनाए गए थे - पेंटिंग, पेंसिल चित्र, कार्टून, बाज़ार प्रिंट।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. "सहायक संधि" की शुरुआत किसने की थीं?

(A) लॉर्ड वैलेजली (B) लॉर्ड हार्डिंग
(C) लॉर्ड बेंटिक (D) लॉर्ड कैनिंग

उत्तर.- (A) लॉर्ड वैलेजली

2. मेरठ की छावनी में सिपाहियों ने विद्रोह कब शुरू किया?

(A) 24 मई 1857 (B) 13 मई 1857
(C) 10 मई 1857 (D) 20 मई 1857

उत्तर. - (C) 10 मई 1857

3. डंका शाह किसे कहा जाता था?

(A) शाहमल (B) मौलवी अहमदुल्लाह
(C) बहादुर शाह (D) बिरजिस कदर

उत्तर. - (B) मौलवी अहमदुल्लाह

4. कानपुर में विद्रोह का नेतृत्व किसने किया?

(A) बाजी राव (B) शाह मल
(C) शिवाजी (D)नाना साहब

उत्तर. - (D)नाना साहब

5. झांसी में विद्रोह का नेतृत्व किसने किया?

(A) नवाब वाजिद अली शाह (B) बिरजिस कादरी
(C) रानी लक्ष्मीबाई (D) हज साहिब

उत्तर. - (C) रानी लक्ष्मीबाई

6. किस गवर्नर जनरल ने भारतीय समाज सुधार के उद्देश्य से नीतियों को अपनाया?

(A) विलियम बेंटिंक (B) लॉर्ड कैनिंग
(C) हार्डिंग (D) हेस्टिंग्स

उत्तर. - (A) विलियम बेंटिंक

7. 'ये गिलास फल एक दिन हमारे मुह में आकर गिरेगा' यह किस राज्य के बारे कहा गया था?

(A) बंगाल (B) बिहार

(C) अवध (D) पंजाब

उत्तर. - (C) अवध

8. दिल्ली में विद्रोह का नेतृत्व किसने किया?

(A) बहादुर शाह (B) बिरजी कादरी

(C) सिराज-उद-दैला (D) बख्त खान

उत्तर. - (D) बख्त खान

9. 1857 के विद्रोह के फैलने का तात्कालिक कारण कौन सा था?

(A) सती प्रथा का उन्मूलन (B) चर्बी वाले कारतूस का प्रयोग

(C) पाश्च्यात शिक्षा (D) विधवा पुनर्विवाह

उत्तर. - (B) चर्बी वाले कारतूस का प्रयोग

10. 1857 के विद्रोह की शुरुआत सबसे पहले कहा से हुईं थीं?

(A) लखनऊ (B) दिल्ली

(C) मेरठ (D) पानीपत

उत्तर. - (C) मेरठ

11. अवध और सतारा को _____ निति के तहत हड़प लिया गया था

(A) विलय की निति (B) सहायक संधि

(C) महलवारी प्रणाली (D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर. - (A) विलय की निति

12. वाजिद अली शाह को गद्दी से हटाने के बाद किस स्थान पर निर्वासित किया गया था?

(A) आगरा (B) लाहौर

(C) कलकत्ता (D) अंडमान और निकोबार

उत्तर. - (C) कलकत्ता

13. हास्य व्यंग्य की प्रसिद्ध ब्रिटिश पत्रिका का नाम बताइए।

(A) इंजीनियर (B) पंच

(C) अटलांटिस (D) उपरोक्त सभी

उत्तर. - (B) पंच

14. 1859 में 'रिलीफ ऑफ लखनऊ' को किसने चित्रित किया?

(A) फेलिस बीटो (B) थॉमस जोन्स बार्कर

(C) कॉलिन कैंपबेल (D) हेनरी लॉरेंस

उत्तर. - (B) थॉमस जोन्स बार्कर

15. अवध पर सहायक संधि _____ में थोप दी गईं थीं !

(A) 1801 (B) 1799

(C) 1807 (D) 1808

उत्तर. - (A) 1801

16.ब्रिटिश सरकार ने हिंदू संपत्ति कानून कब पारित किया जिसके तहत ईसाई धर्म में परिवर्तित होने के बाद भी कोई अपनी पैतृक संपत्ति का उत्तराधिकारी हो सकता है।

(A) 1848 (B) 1849

(C) 1850 (D) 1851

उत्तर. - (C) 1850

17. - विद्रोह के केंद्र और उनके नेताओं में निम्नलिखित में से कौनसा सुमेलित नहीँ है?

(A) गोनू - कोल आदिवासी
(B) कानपुर - नाना साहब
(C) झांसी - रानी लक्ष्मी बाई
(D) अवध - शाह मल

उत्तर. - (D) अवध - शाह मल

18. निम्नलिखित में से कौनसी शर्त भारतीय शासक द्वारा स्वीकृत सहायक संधि की शर्तों में शामिल नहीँ थीं?

(A) शासक को अपनी सैन्य शक्ति को भंग करना पड़ा।
(B) शासक को अपने राज्य में अंग्रेजी सेना तैनात करने की अनुमति देनी पड़ी।
(C) शासक को अंग्रेजों की सलाह के अनुसार कार्य करना था।
(D) विदेशी हमले के मामले में अंग्रेज शासक की रक्षा नहीं करेंगे।

उत्तर. - (D) विदेशी हमले के मामले में अंग्रेज शासक की रक्षा नहीं करेंगे।

19. नीचे दिए गए चित्र को देखकर बताएं की इसमें किस गवर्नर जनरल को दिखाया गया है?

उत्तर. - लॉर्ड कैनिंग

20. नीचे दी गई पेंटिंग को पहचानें और उसका नाम लिखें?

उत्तर. "इन मेमोरियम", द्वारा जोसेफ नोएल पेटन 1859

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भारतीय सिपाहियों ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ विद्रोह क्यों किया?

उत्तर. भारतीय सिपाहियों ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ विद्रोह किया क्योंकि

(i) भारतीय सैनिकों के वेतन और भत्ते ब्रिटिश सैनिक से कम थे I

(ii) ब्रिटिश अधिकारी भारतीय सैनिकों को हीन समझते थे, गाली-गलौज और शारीरिक हिंसा आम बात हो गई थीI

(iii) सामान्य सेवा सूचीकरण अधिनियम - 1856- इस अधिनियम के अनुसार प्रत्येक सैनिक को विदेशों में भी सेवा करने के लिए भेजा जा सकता है। इसने भारतीयों के धार्मिक विश्वास को आहत किया कि समुद्र पार करना किसी के धर्म और जाति को नष्ट करने के लिए उत्तरदायी था।

प्रश्न 2. 1857 के विद्रोह की विफलता के क्या कारण थे?

उत्तर. 1857 के विद्रोह की विफलता के कारण निम्नलिखित हैं:

(i) यह विद्रोह सीमित क्षेत्र में फैला। दक्षिण और पश्चिम भारत अप्रभावित रहा।

(ii) मध्यम वर्ग, उच्च वर्ग और शिक्षित वर्ग ने विद्रोह का समर्थन नहीं किया।

(iii) कुशल रेलवे और परिवहन व्यवस्था ने अंग्रेजों को विद्रोह को दबाने में मदद की।

(iv)विद्रोह निश्चित तिथि से पहले विद्रोह शुरू हो गया।

(v) विद्रोहियों के पास हथियारों और संसाधनों की कमी थी I

प्रश्न 3. चर्चा कीजिए कि किस हद तक धार्मिक विश्वासों ने 1857 के विद्रोह को आकार दिया।

उत्तर. (i) आम भारतीय लोगों को नई शिक्षा प्रणाली पसंद नहीं थी।

(ii) मिशनरी स्कूलों में बाइबल का अध्ययन अनिवार्य था।

(iii) सरकार ने पुरानी बन्दूको को नई राइफलों से बदलने का फैसला किया।जिसमें गाय और सूअर की चर्बी लगे कारतूस उपयोग में लाए जाने थे|

(iv) सती प्रथा का उन्मूलन और अन्य सामाजिक सुधार।

(v) भारत में ईसाई धर्म के विस्तार में ईसाई मिशनरियों की भूमिका

प्रश्न 4. 1857 के विद्रोह के दौरान फैली अफवाहों और भविष्यवाणियों पर चर्चा करें?

उत्तर. अफवाहों और भविष्यवाणियों ने लोगों को कार्रवाई के लिए प्रेरित करने में एक भूमिका निभाई, 1857 के विद्रोह के दौरान फैली मुख्य अफवाहें और भविष्यवाणियां निम्नलिखित थीं

(i) नई एनफील्ड के कारतूसों पर गायों और सूअरों की चर्बी लगाई जाती थी

(ii) यह अफवाह थी कि ब्रिटिश सरकार ने हिंदुओं और मुसलमानों की जाति और धर्म को नष्ट करने की साजिश रची है

(iii) अंग्रेजों ने बाजार में बिकने वाले आटे में गाय और सूअर की हड्डी का चूर्ण मिला दिया था।

(iv) अंग्रेज भारतीयों को ईसाई बनाना चाहते थे। दहशत तेजी से फैली

(v) गांव-गांव चपाती बांटी जा रही थी। एक व्यक्ति रात में आकर गाँव के चौकीदार को एक रोटी देता और उससे पाँच और बनाने और अगले गाँव में बांटने को कहता, इत्यादि।

(vi) ब्रिटिश शासन अपनी स्थापना के 100 वर्ष बाद समाप्त हो जाएगा।

प्रश्न 5. 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण क्या था?

उत्तर. (i) 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण ग्रीस किए गए कारतूसों की शुरूआत थी। इन कारतूसों का इस्तेमाल न्यू एनफील्ड राइफल्स के साथ किया जाना था।

(ii) वे गायों और सूअरों की चर्बी के लेप से युक्त थे, एक मुसलमानों के लिए प्रतिबंधित था और दूसरा हिंदुओं के लिए पवित्र था। सिपाहियों ने इन कारतूसों का उपयोग करने से इनकार कर दिया, जिससे 1857 के विद्रोह की शुरुआत हुई।

(iii) 29 अप्रैल 1857 को मंगल पांडे ने कारतूस का इस्तेमाल करने से मना कर दिया और अपने अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी।

प्रश्न 6. "1857 के विद्रोह से पहले के वर्ष में वरिष्ठ श्वेत अधिकारियों के साथ सिपाहियों के संबंधों में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया।" उदाहरण सहित कथनों का समर्थन कीजिए।

उत्तर. (i) 1857 के विद्रोह से पहले के वर्षों में सिपाहियों के अपने वरिष्ठ श्वेत अधिकारियों के साथ संबंधों में महत्वपूर्ण बदलाव आया।

(ii) 1820 के दशक में, श्वेत अधिकारियों ने सिपाहियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाकर रखते थे । वे अपने फुर्सत के क्षणों में कई गतिविधियों में भाग लेते थे, उनके साथ वे कुश्ती करते थे, उनके साथ बाड़ लगाते थे और उनके साथ घूमते रहते थे।

(iii) उनमें से कई हिन्दुस्तानी में पारंगत थे और देश के रीति-रिवाजों और संस्कृति से परिचित थे। ये अधिकारी अनुशासनप्रिय थेI

(iv) 1840 के दशक में, यह बदलना शुरू हुआ। अधिकारियों ने श्रेष्ठता की भावना विकसित की और सिपाहियों से नस्ल के अधर पर भेदभाव शुरू कर दिया, उनकी संवेदनाओं की फ़िक्र नहीं करते थे । गाली-गलौज और शारीरिक हिंसा आम हो गई और इस तरह सिपाहियों और अधिकारियों के बीच दूरियां बढ़ती गईं।

प्रश्न 7. अवध में तालुकदार इतने शक्तिशाली क्यों थे?

उत्तर. (i) अवध का ग्रामीण इलाका तालुकदारों की सम्पदा और किलों से भरा हुआ था, जिन्होंने कई पीढ़ियों तक ग्रामीण इलाकों में जमीन और सत्ता को नियंत्रित किया था।

(ii) अंग्रेजों के आने से पहले, तालुकदारों के पास हथियार बंद सिपाही होते थे , किले बनाए, और एक हद तक स्वायत्तता का आनंद लिया, जब तक कि उन्होंने नवाब की आधिपत्य को स्वीकार कर लिया और अपने तालुकों के राजस्व का भुगतान किया।

(iii) कुछ बड़े तालुकदारों के पास 12,000 पैदल सैनिक थे और छोटे तालुकदारों में भी लगभग 200 थे। अंग्रेज तालुकदारों की शक्ति को सहन करने के लिए तैयार नहीं थे।

प्रश्न 8. 'देह से जान जा चुकी थी '। यह कथन किसने और क्यों कहा?

उत्तर. (i)अवध के नवाब के निर्वासन में दुःख और हानि की व्यापक भावना कई समकालीन पर्यवेक्षकों द्वारा दर्ज की गई थी। उनमें से एक ने लिखा: "देह से जान जा चुकी थी "।

(ii) ब्रिटिश सरकार ने भी गलत तरीके से मान लिया था कि वाजिद अली शाह एक अलोकप्रिय शासक थे। इसके विपरीत, उन्हें व्यापक रूप से प्यार किया जाता था, और जब उन्होंने अपने प्रिय लखनऊ को छोड़ दिया, तो कई लोग उनके पीछे-पीछे कानपुर तक विलाप में रोते हुए जा रहे थे।

निबंधात्मक प्रश्न - 8 अंक

Q.1 सहायक संधि से आप क्या समझते है ? सहायक संधि के प्रमुख प्रावधान लिखिए ?

• इसे लॉर्ड वेलेजली ने 1798 में लागू किया था

• यह ब्रिटिश और रियासतों के बीच संधि थी |

सहायक संधि के मुख्य प्रावधान

• ब्रिटिश राज्य की रक्षा करेंगे

• राज्य में एक ब्रिटिश सैनिक टुकड़ी की नियुक्ति होगी

• राज्य सैनिक टुकड़ी के लिए संसाधन उपलब्ध कराएगा

• राज्य अंग्रेजों की अनुमति के बिना कोई संधि नहीं कर सकता था या युद्ध में शामिल नहीं हो सकता था

• राजा अपनी सेना को नष्ट कर देंगे

• दरबार मे एक ब्रिटिश रेज़िडन्ट को नियुक्त किया जाएगा। रेज़िडन्ट गवर्नर जनरल का प्रतिनिधि होगा

Q.2 अवध मे किसान तालुकदार, सिपाही, जमींदार विद्रोह में क्यों शामिल हुए?

• अवध के विलय से नवाब निर्वासित हो गया ।

• तालुकदारों को निशस्त्र कर दिया गया और उनके किलों को नष्ट कर दिया गया

• तालुकदारों को भूमि से बेदखल कर दिया गया

- राजस्व की मांग बढ़ी। किसानों पर राजस्व का बोझ बढ़ा
- तालुकदारों के समर्थन में किसान विद्रोह में शामिल हो गए क्योंकि तालुकदार उदार थे। किसानों की ज़रूरतों में मदद की।
- अंग्रेजों ने राजस्व का अधिक मूल्यांकन किया

• राजस्व संग्रह का तरीका कठोर था (सूर्यास्त का नियम)

• कठिनाई और जरूरत ओर त्योहार में कोई मदद नहीं

• तालुकदार अवध के नवाब के प्रति वफादार थे। वे बेगम हजरत महल की सेना में शामिल हो गए।

- ज्यादातर सिपाहियों की भर्ती अवध के गांवों से की जाती थी
- कम वेतन और छुट्टी नहीं होने से सिपाहियों में असंतोष था |
- ब्रिटिश अधिकारियो में श्रेष्ठता की भावना थी |
- वे सिपाहियों को हीन भावना से देखते थे | शारीरिक हिंसा करते थे |
- चर्बी युक्त कारतूस का उपयोग
- बंगाल सेना के अधिकांश सिपाहियों की भर्ती अवध और पूर्वी यूपी से की गई थी
- ज्यादातर सिपाही ब्राह्मण या उच्च जाति के थे।
- अवध को बंगाल सेना की नर्सरी कहा जाता था
- अवध के ग्रामीण क्षेत्र या गांवों में रहने वाले सिपाहियों के परिवार के सदस्य जब भी सिपाही विद्रोह करते हैं तो वे विद्रोह में शामिल हो जाते हैं।

Q.3. 1857 के विद्रोह के स्वरूप का वर्णन कीजिए?

- विद्रोह एक शहर से दूसरे शहर में फैला ।
- सिपाहियों ने एक संकेत के साथ अपनी कार्रवाई शुरू की, बंदूक की फायरिंग या बिगुल बजाकर ।
- उन्होंने हथियारो को जब्त कर लिया और खजाने को लूट लिया।
- उन्होंने सरकारी भवनों पर हमला किया - जेल, कोषागार, टेलीफोन कार्यालय, रिकॉर्ड रूम, बंगले - सभी रिकॉर्ड जला दिए।
- गोरे लोगों से जुड़ी हर चीज को निशाना बनाया।
- कानपुर, लखनऊ और बरेली जैसे बड़े शहरों में साहूकार और अमीरो को विद्रोहियों ने निशाना बनाया ।
- उन्होंने हिन्दी, उर्दू और फारसी में उद्घोषणा जारी की।
- समाज के सभी वर्गों ने भाग लिया – सिपाही/व्यापारी/किसान।
- प्रमुख शहर दिल्ली, कानपुर, लखनऊ और बरेली थे। विभिन्न स्थानों पर विद्रोह का स्वरूप समान था ।
- यह दर्शाता है कि विद्रोह में योजना और समन्वय था।
- सिपाहियों और विभिन्न छावनियों के बीच संदेशों का संचार होता था।
- पुलिस लाइन में पंचायतों में सिपाही सामूहिक रूप से निर्णय ले रहे थे।

Q.4 “"एक चेरी जो एक दिन हमारे मुंह में आकर गिरेगी " - इस कथन को स्पस्ट करो ?

- 1851 में गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी ने अवध राज्य को "एक चेरी जो एक दिन हमारे मुंह में आकर गिरेगी " के रूप में वर्णित किया । अवध उत्पादक राज्य था | अवध की स्थिति बहुत अनुकूल थी |और पांच साल बाद 1856 में इसे कुशासन के आरोप में ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल कर लिया गया।
- 1801 में अवध से सहायक संधि की गई ।इस गठबंधन की शर्तों के अनुसार नवाब को अंग्रेजी सैनिकों को राज्य के भीतर तैनात करने और अंग्रेजों की सलाह के अनुसार कार्य करना था | राजा को अपनी सेना को भंग करनी पड़ी ।
- अपने सशस्त्र बलों से वंचित नवाब राज्य के भीतर कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए अंग्रेजों पर निर्भर हो गया।
- अब वह विद्रोही नेताओ और ताल्लुकदारों पर नियंत्रण नहीं कर सकता था।
- उत्पादक भूमि और उत्तर भारत के बाजार के लिए आदर्श होने के कारण अंग्रेज अवध में रुचि रखते थे

स्रोत आधारित प्रश्न

Q.1 नीचे दिए गए स्रोत को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

सिपाही क्या सोचते थे

विद्रोही सिपाहियों की एक अर्जी जो बच गई :

एक सदी पहले अंग्रेज़ हिंदुस्तान आए और धीरे-धीरे यहाँ फौजी टुकड़ियाँ बनाने लगे। इसके बाद वे हर राज्य के मालिक बन बैठे। हमारे पुरखों ने सदा उनकी सेवा की है और हम भी उनकी नौकरी में आए...। ईश्वर की कृपा से और हमारी सहायता से अंग्रेजों ने जो चाहा वो इलाका जीत लिया। उनके लिए हमारे जैसे हज़ारों हिंदुस्तानी जवानों को अपनी कुर्बानी देनी पड़ी लेकिन न हमने कभी पैर पीछे खींचें और न कोई बहाना बनाया और न ही कभी बग़ावत के रास्ते पर चले...।

लेकिन सन् 1857 में अंग्रेजों ने ये हुक्म जारी कर दिया कि अब सिपाहियों को इंग्लैंड से नए कारतूस और बंदूकें दी जाएंगी। नए कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी मिली हुई है और गेहूँ के आटे में हड्डियों का चूरा मिलाकर खिलाया जा रहा है। ये चीजें पैदल-सेना, घुड़सवारों और गोलअंदाज़ फौज की हर रेजीमेंट में पहुँचा दी गई हैं...। उन्होने ये कारतूस थर्ड लाइट केवेलरी के सवारों (घुड़सवार सैनिक) को दिए और उन्हें दाँतो से खींचने के लिए कहा। सिपाहियों ने इस हुक्म का विरोध किया और कहा कि वे ऐसा कभी नहीं करेंगे क्योंकि अगर उन्होंने ऐसा किया तो उनका धर्म भ्रष्ट हो जाएगा...। इस पर अंग्रेज़ अफ़सरों ने तीन रेजीमेंटों के जवानों की परेड करवा दी। 1400 अंग्रेज़ सिपाही, यूरोपीय सैनिकों की दूसरी बटालियनें, और घुड़सवार गोलअंदाज़ फ़ौज को तैयार कर भारतीय सैनिकों को घेर लिया गया। हर पैदल रेजीमेंट के सामने छरों से भरी छह-छह तोपें तैनात कर दी गईं और 84 नए सिपाहियों को गिरफ्तार करके, बेड़ियाँ डालकर, जेल में बंद कर दिया गया। छावनी के सवारों को इसलिए जेल में डाला गया ताकि हम डर कर नए कारतूसों को दाँतों से खींचने लगे। इसी कारण हम और हमारे सारे सहोदर इकट्ठा होकर अपनी आस्था की रक्षा के लिए अंग्रेज़ों से लड़े...। हमें दो साल तक युद्ध जारी रखने पर मजबूर किया गया। धर्म व आस्था के सवाल पर हमारे साथ खड़े राजा और मुखिया अभी भी हमारे साथ हैं और उन्होंने भी सारी मुसीबतें झेली हैं। हम दो साल तक इसलिए लड़े ताकि हमारा अक़ायद (आस्था) और मज़हब दूषित न हों। अगर एक हिंदू या मुसलमान का धर्म ही नष्ट हो गया तो दुनिया में बचेगा क्या?

(1.1) इस गद्य का स्रोत क्या है?

उत्तर। यह बच गए विद्रोही सिपाहियों की अर्ज़ी (याचिका या आवेदन) में से एक है।

(1.2) 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण क्या था?

उत्तर। गायों और सूअरों की चर्बी लगे कारतूस वाली नई एनफील्ड राइफलों का प्रयोग।

(1.3) भारतीय सिपाही अंग्रेजों के खिलाफ क्यों थे?

उत्तर। (i) भारतीय सिपाहियों के साथ ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा नस्ल के आधार पर दुर्व्यवहार किया जाता था।

(ii) कम वेतन।

(iii) कोई पदोन्नति नहीं।

(iv) नई एनफील्ड राइफलों का उपयोग।

Q.2 नीचे दिए गए स्रोत को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

सिस्टन और तहसीलदार

विद्रोह और सैनिक अवज्ञा के संदर्भ में सीतापुर के देसी ईसाई पुलिस इंसपेक्टर फ्रांस्वाँ सिस्टन का अनुभव हमें बहुत कुछ बताता है। वह मजिस्ट्रेट के पास शिष्टाचारवश मिलने सहारनपुर गया हुआ था। सिस्टन हिंदुस्तानी कपड़े पहने था और आलथी-पालथी मारकर बैठा था। इसी बीच। बिजनौर का एक मुस्लिम तहसीलदार कमरे में दाखिल हुआ। जब उसे पता चला कि सिस्टन अवध में तैनात है तो उसने पूछा, "क्या ख़बर है अवध की? काम कैसा चल रहा है?" सिस्टन ने कहा, "अगर हमें अवध में काम ? मिलता है तो जनाब-ए-आली को भी पता चल जाएगा।" इस पर तहसीलदार ने कहा, “भरोसा रखो, इस बार हम कामयाब होंगे। मामला काबिल हाथों में है।" बाद में पता चला कि यह तहसीलदार बिजनौर के विद्रोहियों का सबसे बड़ा नेता था।

(2.1) फ्रांस्वाँ सिस्टन कौन था?

उत्तर. फ्रांस्वाँ सिस्टन सीतापुर के देसी ईसाई पुलिस इंसपेक्टर थे ।

(2.2) तहसीलदार ने सिस्टेन को एक संभावित विद्रोही क्यों माना?

उत्तर. तहसीलदार सिस्टेन को एक संभावित विद्रोही के रूप में मानते हैं क्योंकि सिस्टेन भारतीय कपड़े पहने हुए थे और ध्यान मुद्रा में बैठे थे।

(2.3) विभिन्न स्थानों पर विद्रोहों के पैटर्न में समानता से आप क्या निष्कर्ष निकालते हैं?

उत्तर. विभिन्न स्थानों पर विद्रोहों के पैटर्न में समानता यह दर्शाती है कि विभिन्न छावनियों के सिपाहियों के बीच संचार था। सिपाही या उनके दूत एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते थे। लोग योजना बना रहे थे और विद्रोह की बातें कर रहे थे।

मानचित्र आधारित प्रश्न

भारत के दिए गए राजनीतिक मानचित्र पर, निम्नलिखित को नामांकित करें

1.1 **1857 में ब्रिटिश नियंत्रण के तहत क्षेत्र/शहर:** पंजाब, सिंध, बॉम्बे, मद्रास किला सेंट डेविड, मसूलीपट्टम, बरार, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, अवध, सूरत, कलकत्ता, पटना, बनारस, इलाहाबाद और लखनऊ।

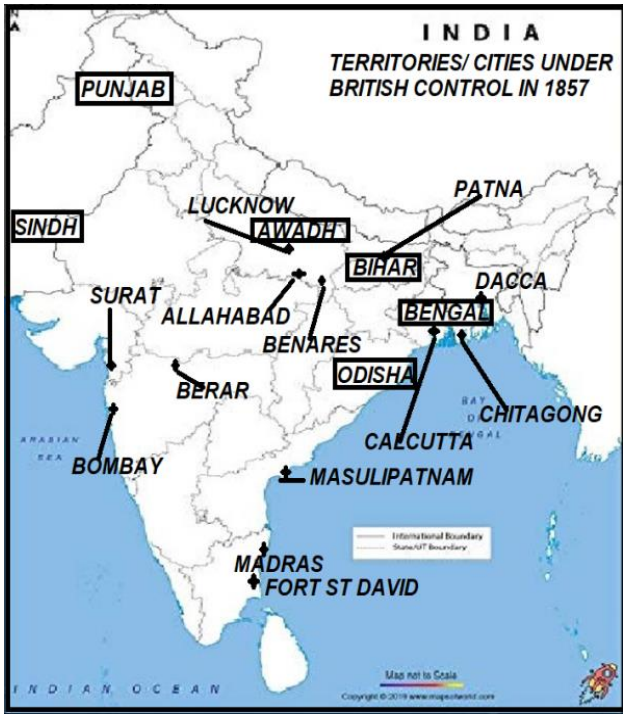

1.2 **1857 के विद्रोह के मुख्य केन्द्रों को** भारत के दिए गए राजनीतिक मानचित्र पर नामांकित करें

: दिल्ली, मेरठ, झांसी, लखनऊ, कानपुर, आजमगढ़, कलकत्ता, बनारस, ग्वालियर, जबलपुर, आगरा, अवध

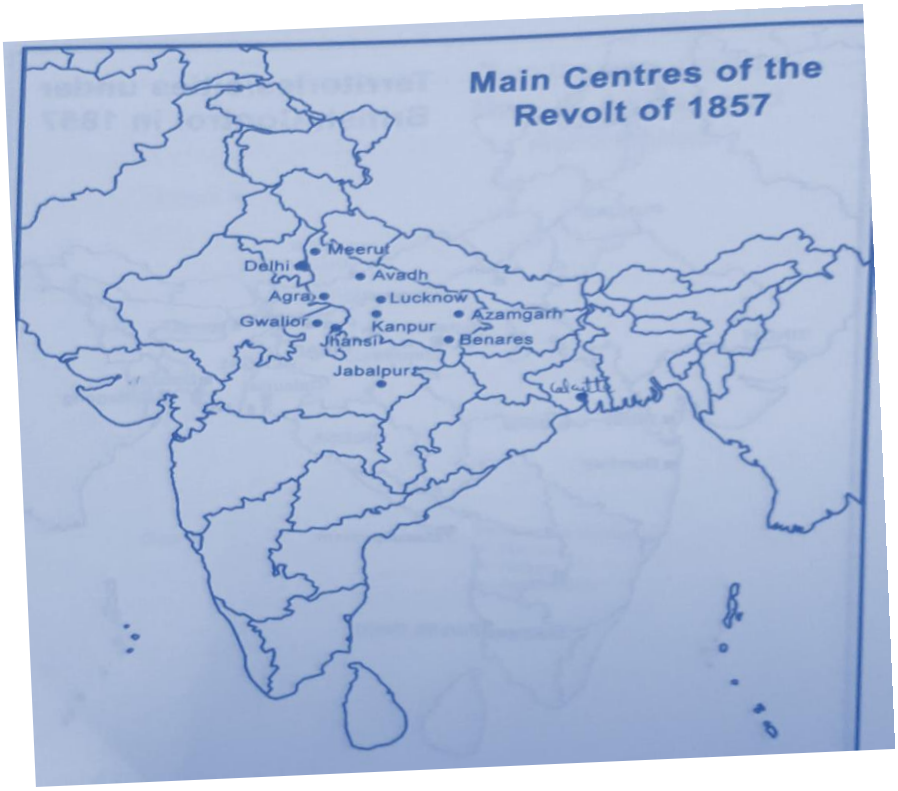

======XXXXX======

11. महात्मा गांधी और राष्ट्रीय आंदोलन

मुख्य अवधारणाएँ: -

स्वयं की उद्घोषणा करता एक नेता: बीएचयू में महात्मा गांधी का भाषण

• 1915 में दक्षिण अफ्रीका से गांधीजी का भारत आगमन।

• अपने राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले की सलाह पर महात्मा गांधी ब्रिटिश भारत में घूमकर लोगों की समस्याओं को जानने लगे।

• फरवरी 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के उद्घाटन के अवसर पर उन्हें आमंत्रित किया गया।

• अपने भाषण में गांधीजी ने भारतीय अभिजात वर्ग पर मेहनतकश गरीबों के प्रति चिंता न करने का आरोप लगाया।

• उन्होंने कहा कि भारतीय राष्ट्रवाद वकीलों, डॉक्टरों और जमींदारों जैसे विशिष्ट वर्गों द्वारा निर्मित था।

• गांधीजी ने उपस्थित लोगों को किसानों और मजदूरों को आंदोलन के केंद्र में रखने का प्रस्ताव किया जिन्हे वास्तविक प्रतिनिधित्व तब तक नहीं दी गई थी।

• गांधीजी ने भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन में आम भारतीय लोगों के प्रतिनिधित्व पर बल दिया।

प्रारंभिक आंदोलन:

➢चंपारण सत्याग्रह

● दिसंबर 1916 में लखनऊ में आयोजित कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में महात्मा गांधी को अंग्रेजों द्वारा चंपारण के नील किसानों के साथ किए जा रहे कठोर व्यवहार के बारे में पता चला।

● इसलिए, 1917 में महात्मा गांधी ने चंपारण (बिहार) में सत्याग्रह का आयोजन किया ताकि किसानों को भूमि स्वामित्व की सुरक्षा के साथ-साथ अपनी पसंद की फसल उगाने की स्वतंत्रता मिल सके।

➢अहमदाबाद कपड़ा मिल हड़ताल

● फरवरी 1918 में गांधीजी ने कपड़ा मिल श्रमिकों के लिए बेहतर कार्य स्थितियों की मांग के लिए अहमदाबाद में सत्याग्रह शुरू किया।

➢खेड़ा सत्याग्रह

● 1918 में गांधीजी ने किसानों के लिए खेड़ा सत्याग्रह शुरू किया था। उन्होंने अपनी फसल की विफलता के कारण राज्य से करों में छूट की मांग की।

➢रौलट एक्ट

● प्रथम विश्व युद्ध (1914-18) के बाद राष्ट्रवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए अंग्रेजों ने सेंसरशिप लगा दी और सर सिडनी रौलट की अध्यक्षता वाली एक समिति की सिफारिश पर एक नया अधिनियम पारित किया गया जिसे रौलट एक्ट के नाम से जाना जाता है।

● इस अधिनियम ने सरकार को आतंकवाद के संदिग्ध किसी भी व्यक्ति को बिना किसी मुकदमे के जेल में डालने का अधिकार दिया।

इस अधिनियम ने भारतीयों को बहुत आक्रामक बना दिया और बड़े पैमाने पर उन्होंने विरोध प्रदर्शन किया।

➢रौलट एक्ट के खिलाफ आंदोलन

● गांधीजी ने रौलट एक्ट के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन का आह्वान किया। 6 अप्रैल 1919 को गांधीजी ने हड़ताल की घोषणा की।

● इस काले कानून के खिलाफ भारतीय बहुत आक्रामक हो गए। अंग्रेजों ने कई इलाकों में कर्फ्यू लगा दिया।

• गांधीजी और प्रमुख स्थानीय कांग्रेस नेताओको गिरफ्तार कर लिया गया।

• रौलट एक्ट के खिलाफ विरोध प्रदर्शन तेज हो गया, जो 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर में चरम पर पहुंच गया, जब एक ब्रिटिश ब्रिगेडियर ओ. डायर ने अपने सैनिकों को एक राष्ट्रवादी बैठक पर गोलियां चलाने का आदेश दिया।

• अमृतसर में 400 से अधिक लोग मारे गए, जिसे जलियावाला बाग हत्याकांड के रूप में जाना जाता है।

• यह रौलट एक्ट ही था जिसने गांधीजी को सही मायने में राष्ट्रीय नेता बनाया।

❖खिलाफत आंदोलन

➢खिलाफत आंदोलन (1919-1920) भारतीय मुसलमानों का एक आंदोलन था, जिसका नेतृत्व मुहम्मद अली और शौकत अली ने किया था।

➢तुर्की सुल्तान या खलीफा को सभी मुसलमानों के आध्यात्मिक नेता के रूप में संदर्भित किया जाता था, लेकिन उन्हें तुर्की शासक केमल अतातुर्क ने अंग्रेजों द्वारा समर्थित करके समाप्त कर दिया था।

➢इसलिए, उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ खिलाफत आंदोलन शुरू किया। उन्होंने मांग की कि खलीफा को 'मुस्लिमों के पवित्र स्थानों' पर नियंत्रण बनाए रखना चाहिए और संप्रभुता होनी चाहिए।

➢कांग्रेस ने इस आंदोलन का समर्थन किया। गांधी जी ने खिलाफत मुद्दे को असहयोग आंदोलन के साथ जोड़ने का फैसला किया। वह औपनिवेशिक शासन को खत्म करने के लिए हिंदुओं और मुसलमानों को एक साथ लाना चाहते थे।

❖ असहयोग आंदोलन की शुरुआत और अंत

➢विश्व युद्ध के बाद सेंसरशिप, रॉलेट एक्ट, जलियांवाला बाग हत्याकांड आदि जैसी तमाम घटनाएं हुईं, जिसके कारण गांधीजी ने अंग्रेजों के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन शुरू किया।

➢गांधीजी का मानना था कि अंग्रेजों का अस्तित्व सिर्फ भारतीयों के सहयोग की वजह से है। इसलिए उन्होंने कहा कि अगर असहयोग को प्रभावी तरीके से लागू किया जाए तो भारत एक साल के अंदर स्वराज जीत सकता है।

➢असहयोग के लिए गांधीजी ने कहा कि--

• ब्रिटिश स्कूलों और कॉलेजों में जाना बंद करें।

• वकील अदालतों का बहिष्कार करें।

• कर न चुकाएं।

• विदेशी सामान, कपड़े आदि का बहिष्कार करें।

➢असहयोग आंदोलन में लोगों ने बड़े पैमाने पर सक्रिय रूप से भाग लिया।

➢यह आंदोलन योजना के अनुसार शुरू हुआ क्योंकि छात्रों ने ब्रिटिश सरकार द्वारा संचालित स्कूलों और कॉलेजों में जाना बंद कर दिया था।

➢वकीलों ने भी अदालत में जाने से इनकार कर दिया।लोगों ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया और विदेशी कपड़ों को एकत्र कर उन्हें जलाया जाने लगा।

➢कई शहरों और कस्बों में मजदूर वर्ग ने हड़ताल भी की।

➢उत्तरी आंध्र में पहाड़ी जनजातियों ने वन कानूनों का उल्लंघन किया।

➢अवध में किसानों ने कर देने से इनकार कर दिया।

➢ये विरोध आंदोलन कभी-कभी स्थानीय राष्ट्रवादी नेतृत्व की अवहेलना में भी किए जाते थे।

➢गांधीजी ने असहयोग आंदोलन के माध्यम से लोगों को आत्म-अनुशासन, त्याग, आत्म-त्याग, अहिंसा, सत्याग्रह की शिक्षा दी। आंदोलन का उद्देश्य स्व-शासन था।

➢इस आंदोलन ने भारत में ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी। अंग्रेजों ने भी इस आंदोलन का क्रूरतापूर्वक दमन किया। उन्होंने हजारों लोगों को जेल में डाल दिया। उन्होंने निर्दोष लोगों पर गोलियां चलाईं।

➢इससे लोग भड़क गए और 5 फरवरी 1922 को किसानों के एक समूह ने उत्तर प्रदेश के चौरी चौरा में एक पुलिस स्टेशन पर आगजनी की जिसमें 22 पुलिसकर्मी मारे गए।

हिंसा के इस कृत्य ने गांधीजी को आंदोलन वापस लेने के लिए प्रेरित किया।

❖जन नेता के रूप में गांधीजी

➢ 1915 से 1947 के बीच की अवधि को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गांधीवादी युग के रूप में जाना जाता है। गांधीजी ने राष्ट्रवादी आंदोलन को एक जन आंदोलन में बदल दिया था। उनके गुण उन्हें आम लोगों के नेता के रूप में स्थापित करते हैं, जैसे-

➢सादगी

▪ गांधीजी व्यापारी समुदाय से थे और पेशे से वकील थे, लेकिन वे एक आम व्यक्ति की तरह रहते थे।

▪उनके कपड़े आम लोगों की तरह थे और वे आम लोगों की भाषा बोलते थे, इसलिए लोग उनकी सराहना करते थे।

➢गरीबों की समस्याओं के प्रति चिंता

▪ बीएचयू में दिए गए अपने पहले भाषण में उन्होंने याद दिलाया कि किसान और मजदूर जो भारतीय आबादी का बहुमत हैं, वे यहां मौजूद नहीं हैं।

▪ गांधीजी की इच्छा थी कि भारतीय राष्ट्रवाद भारतीय लोगों का प्रतिनिधित्व करे।

➢आत्मनिर्भरता

वे प्रत्येक दिन का कुछ हिस्सा चरखा चलाने में बिताते थे और अन्य राष्ट्रवादियों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करते थे।

▪ वे खुद को आम आदमी के साथ जोड़ते थे। यह बात उनकी पोशाक में स्पष्ट रूप से झलकती थी, जहाँ अन्य राष्ट्रवादी नेता औपचारिक पोशाक पहनते थे, पश्चिमी सूट या भारतीय बंदगला (सूट) पहनते थे, वहीं गांधीजी एक साधारण धोती या लंगोटी पहनकर लोगों के बीच जाते थे।

➢नई राजनीतिक व्यवस्था

▪ गांधीजी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का आधार व्यापक हुआ।

▪ उन्होंने कांग्रेस संगठन में बदलाव किए। भारत के विभिन्न हिस्सों में कांग्रेस की नई शाखाएँ स्थापित की गईं।

▪ रियासतों में राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के लिए प्रजा मंडलों की स्थापना की गई।

▪ कांग्रेस की प्रांतीय समितियाँ ब्रिटिश प्रशासन द्वारा स्थापित कृत्रिम सीमाओं के बजाय भाषाई विभाजन पर आधारित थीं।

▪ गांधीजी ने अंग्रेजी के बजाय मातृभाषा में राष्ट्रवादी संदेश फैलाने की वकालत की।

▪ गांधीजी ने अंग्रेजी के बजाय मातृभाषा में राष्ट्रवादी संदेश फैलाने की वकालत की।

➢समाज सुधारक

▪ गांधीजी जितने राजनीतिज्ञ थे, उतने ही समाज सुधारक भी थे।
▪ उन्होंने बाल विवाह और अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए कदम उठाए।
▪ उन्होंने हिंदू मुस्लिम सद्भाव पर जोर दिया।

➢**अमीर और गरीब दोनों का समर्थन**

▪ गांधीजी की सादगी और भाषण ने, न केवल गरीब लोगों को बल्कि अमीर उद्योगपतियों और कुलीन वर्ग को भी आकर्षित किया।
▪ कई उद्योगपतियों ने सोचा कि स्वतंत्र भारत में उन्हें अधिक लाभ होगा इसलिए वे भारतीय उद्यमियों के रूप में कांग्रेस में शामिल हो गए। उदाहरण के लिए, जी.डी. बिड़ला ने राष्ट्रीय आंदोलन का खुलकर समर्थन किया।
▪ अत्यधिक प्रतिभाशाली भारतीयों ने खुद को गांधीजी से जोड़ा।

❖**नमक सत्याग्रह -नजदीक से एक नजर**

➢ स्वतंत्रता दिवस (26 जनवरी 1930) के तुरंत बाद महात्मा गांधी ने घोषणा की कि वे नमक कानून तोड़ने के लिए एक मार्च से नेतृत्व करेंगे। उन्होंने नमक कानून के खिलाफ इस मार्च का नेतृत्व करने का फैसला किया क्योंकि -
➢ नमक के निर्माण पर राज्य का एकाधिकार था जो बेहद अलोकप्रिय था।
➢ नमक की कीमत बहुत अधिक थी।
➢ नमक हर भारतीय घर में एक अनिवार्य वस्तु थी, इसलिए उन्हें उम्मीद थी कि यह ब्रिटिश शासन के खिलाफ लोगों को संगठित करेगा।
➢ गांधीजी ने वायसराय लॉर्ड इरविन को अपने "नमक मार्च" की अग्रिम सूचना दी थी, जो कार्रवाई के महत्व को समझने में विफल रहे।

❖**दांडी / नमक मार्च**

➢ 12 मार्च 1930 को, गांधीजी ने अपने साबरमती आश्रम से दांडी (समुद्र तट) की ओर अपना मार्च शुरू किया।
➢ 24 दिनों के बाद 6 अप्रैल 1930 को गांधीजी हजारों लोगों के साथ दांडी पहुंचे और कानून तोड़ने के लिए मुट्ठी भर नमक बनाया।
➢नमक कानून तोड़ने के लिए, बड़ी संख्या में जनता इकट्ठा हुई।

❖**गांधी-इरविन समझौता/संवाद**

▪ जनवरी 1931 में महात्मा गांधी को जेल से रिहा कर दिया गया। उसके बाद वायसराय इरविन के साथ कई बैठकें हुईं जिन्हें गांधी-इरविन समझौते के नाम से जाना जाता है। समझौते की शर्तें इस प्रकार थीं:-

● सविनय अवज्ञा आंदोलन को वापस लेने की घोषणा की गई।
● बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद सभी राजनैतिक कैदियों को रिहा किया जाएगा।
● तटों पर नमक बनाने की अनुमति दी जाएगी।
● गांधीजी ने लंदन में दूसरे गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किया।
● इस समझौते की क्रांतिकारियों एवं राष्ट्रवादियों ने आलोचना की।

❖**गोलमेज सम्मेलन**

पहला गोलमेज सम्मेलन नवंबर 1930 में लंदन में आयोजित किया गया था, लेकिन प्रमुख भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं की अनुपस्थिति के कारण यह बिना किसी सार्थक निर्णय के समाप्त हो गया।

दूसरा गोलमेज सम्मेलन

- यह 1931 के उत्तरार्ध में लंदन में आयोजित किया गया था।
- गांधीजी ने कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किया और दावा किया कि उनकी पार्टी पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करती है। लेकिन तीन दलों, मुस्लिम लीग, राजकुमारों और वकील विचारक बी.आर. अंबेडकर ने उस दावे का विरोध किया।
- महात्मा गांधी ने बी आर अंबेडकर की अलग निर्वाचिका की मांग का विरोध किया क्योंकि यह भारत को विभाजित करेगा और दलितों के विकास के लिए भी सहायक नहीं होगा।
- इस प्रकार लंदन में सम्मेलन अनिर्णायक रहा, इसलिए गांधी भारत लौट आए और 1932 में सविनय अवज्ञा आंदोलन फिर से शुरू किया।
- **तीसरा गोलमेज सम्मेलन** भी लंदन में आयोजित किया गया जिसमें कांग्रेस ने भाग नहीं लिया।

❖भारत छोड़ो आंदोलन

➢क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद, महात्मा गांधी द्वारा 8 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया गया था।

➢यह ब्रिटिश शासन के खिलाफ तीसरा बड़ा आंदोलन था।

➢लेकिन अगले दिन गांधीजी और अन्य महत्वपूर्ण नेताओं को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया।

➢लेकिन जयप्रकाश नारायण जैसे अन्य समाजवादी नेताओं के नेतृत्व में यह फैल गया। उन्होंने पूरे देश में हड़तालें और तोड़फोड़ की घटनाएँ आयोजित कीं।

➢यह एक जन आंदोलन था जिसमें हज़ारों छात्र और आम भारतीय स्वतंत्रता के लिए एक साथ आए।

➢पश्चिम में सतारा और पूर्व में मिदनापुर जैसे कई जिलों में स्वतंत्र सरकारों की घोषणा की गई।

1943 में, महाराष्ट्र के सतारा जिले के कुछ युवा नेताओं ने स्वयंसेवी कोर (सेवादल) और ग्राम इकाइयों (तूफ़ान दल) के साथ एक समानांतर सरकार (प्रतिसरकार) की स्थापना की। उन्होंने लोगों की अदालतें चलाईं और रचनात्मक कार्य आयोजित किए।

विभिन्न स्रोतों के माध्यम से गांधी को जानना

- महात्मा गांधी और उनके समकालीनों के लेखन और भाषण, जिनमें उनके सहयोगी और उनके राजनीतिक विरोधी दोनों शामिल थे।
- भाषण हमें किसी व्यक्ति की सार्वजनिक आवाज़ सुनने की अनुमति देते हैं, जबकि निजी पत्र हमें उसके निजी विचारों की झलक देते हैं।
- आत्मकथाएँ हमें अतीत का विवरण देती हैं जो अक्सर मानवीय विवरणों से भरपूर होती हैं, वे अक्सर स्मृति से लिखे गए पूर्वव्यापी विवरण होते हैं।
- सरकारी रिकॉर्ड, क्योंकि औपनिवेशिक शासक उन लोगों पर कड़ी नज़र रखते थे जिन्हें वे सरकार के आलोचक मानते थे।

वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न

1. ---------- ने कुछ राजनीतिक नेताओं को बिना मुकदमे के जेल की सजा दिए जाने की अनुमति दी।

क सरकारी गोपनीयता अधिनियम
ख. रॉलट अधिनियम
ग. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम
घ. भारतीय गुलामी अधिनियम
उत्तर : ख

2. जलियांवाला बाग नरसंहार किस वर्ष हुआ था?
क. 1917
ख. 1918
ग. 1919
घ. 1920
उत्तर : ग

3. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और घटनाओं को कालानुक्रमिक अनुक्रमों में व्यवस्थित कीजिए
i. खिलाफत आंदोलन
ii. कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन
iii. साइमन कमीशन का आगमन
iv. चौरीचौरा की घटना
विकल्प
क. i, ii, iii, iv
ख. i, iv, iii, ii
ग. ii,iii,iv,i
घ. iii, iv, ii, i
उत्तर : ख

4. निम्नलिखित में से किसने जलियांवाला बाग में इकट्ठा हुई शांतिपूर्ण भीड़ पर गोली चलाने की आज्ञा दी
क. जनरल डायर
ख. माइकल ओ'डायर
ग. लॉर्ड रॉबर्ट्स
घ. सर विलियम
उत्तर : क

5. "प्रजा मंडलों" की स्थापना का मुख्य उद्देश्य क्या था?
क.नागरिकों के लिए राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने के लिए
ख. रियासतों में राष्ट्रवादी विचारधारा को बढ़ावा देने के लिए
ग. कराधान के विरुद्ध विद्रोह करना
घ. उपरोक्त में से कोई नहीं
उत्तर : ख

6. गांधीजी ने भारतीयों को स्वतंत्रता के योग्य बनाने के लिए निम्नलिखित में से किस विचारधारा पर जोर दिया
क. हिंदू मुस्लिम सद्भाव
ख. आत्मनिर्भरता
ग. सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन
घ. उपरोक्त सभी
उत्तर : घ

7. कांग्रेस के किस अधिवेशन में पूर्ण स्वराज का संकल्प लिया गया?
क. मद्रास
ख. बंबई
ग. लाहौर
घ. कराची
उत्तर : ग

8. कौन सी घटना सविनय अवज्ञा आंदोलन का हिस्सा है?
क. चंपारण सत्याग्रह
ख. नमक सत्याग्रह
ग. अहमदाबाद में कपड़ा मज़दूरों की हड़ताल
घ. रोलेट सत्याग्रह
उत्तर : ख

9. भारत छोड़ो आंदोलन के पीछे उद्देश्य क्या था?

क. अंग्रेजों को भारत छोड़ना चाहिए　　ख. भारत के लिए पूर्ण स्वतंत्रता

ग. संयुक्त स्वतंत्र भारत की मांग　　घ. उपरोक्त सभी

उत्तर : घ

10. भारत में गांधीजी की पहली प्रमुख सार्वजनिक उपस्थिति कहाँ थी

क बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में　　ख. चंपारण में

ग. बारडोली में　　घ कलकत्ता में

उत्तर : क

11. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में दर्शाया गया है

कथन (A): क्रिप्स मिशन भारतीय नेताओं के साथ एक समझौते तक पहुंचने में विफल रहा

कारण (R): भारत छोड़ो आंदोलन 1942 में शुरू किया गया था

क. (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) (A) का सही स्पष्टीकरण है

ख. (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R) (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है

ग. (A) सही है, लेकिन (R) सही नहीं है

घ. (R) सही है, लेकिन (A) सही नहीं है

उत्तर : ख

12. _____ कांग्रेस के उदारवादी नेता थे

(क) लाला लाजपत राय　　(ख) बिपिन चन्द्र पाल

(ग) बाल गंगाधर तिलक　　(घ) गोपाल कृष्ण गोखले

उत्तर : घ

13. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

(क) चौरीचौरा की घटना के कारण गांधी जी असहयोग आन्दोलन से पीछे हट गए।

(ख) गांधी जी ने बीएचयू में अपना पहला सार्वजनिक भाषण दिया था।

(ग) महात्मा गांधी को 1921 ई. में गिरफ्तार किया गया था।

(घ) नेहरू जी लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस के अध्यक्ष थे।

दिए गए कथनों में से कौन सा कथन असत्य है?

उत्तर : ग

14. मुस्लिम लीग ने किस वर्ष में एक अलग राष्ट्र पाकिस्तान के लिए एक प्रस्ताव पारित किया था?

(क) 1940　　(ख) 1942

(ग) 1944　　(घ) 1945

उत्तर : क

15. कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन का क्या महत्व था?

(क) गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित कर दिया

(ख) पूर्ण स्वराज की घोषणा

(ग) रोलेट एक्ट का विरोध किया

(द) खिलाफत आन्दोलन का समर्थन किया

उत्तर : ख

16. महात्मा गांधी की सभा से संबंधित स्थल की पहचान करें

क. दांडी
ख. साबरमती
ग. चंपारण
घ. उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तर : ख

17. दी गई छवि में महात्मा गांधी के साथ खड़े व्यक्ति की पहचान करें

क. लॉर्ड माउंटबेटन
ख. सर स्टैफोर्ड क्रिप्स
ग. विंस्टन चर्चिल
घ. ए.वी. अलेक्जेंडर

उत्तर : ख

18. महात्मा गांधी ने नमक एकाधिकार को चुनकर अपनी कुशल समझदारी को साबित किया। निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन इसे सिद्ध करने के लिए सही है/हैं?

1. नमक पर राज्य का एकाधिकार अलोकप्रिय था |
2. लोगों को घरेलू उपयोग के लिए भी नमक बनाने से मना किया गया था |
3. नमक एक आवश्यक वस्तु नहीं थी।

सही विकल्प चुनिए

क.केवल 1 और 2
ख. 2 और 3 केवल
ग.1, 2, और 3
घ . 2 केवल

उत्तर : क

19. अभिकथन (A): गांधीजी उतने ही बड़े समाज सुधारक थे जितने कि वे राजनीतिज्ञ थे।

कारण (R): उनका मानना था कि स्वतंत्रता के योग्य होने के लिए, भारतीयों को बाल विवाह और अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराइयों से छुटकारा पाना होगा

क. (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) (A) का सही स्पष्टीकरण है
ख. (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R) (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है

ग. (A) सही है, लेकिन (R) सही नहीं है

घ. (R) सही है, लेकिन (A) सही नहीं है

उत्तर : क

20. इनमें से किस स्रोत का उपयोग गांधीजी के राजनीतिक सफर के पुनर्निर्माण के लिए किया जा सकता है?

क. महात्मा गांधी के लेखन और भाषण

ख. सरकारी अभिलेख

ग. समकालीन समाचार पत्र

घ. उपरोक्त सभी।

उत्तर : घ

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

Q.1 गांधीजी का नमक सत्याग्रह किन तीन कारणों से उल्लेखनीय था। इन तीन कारणों का उल्लेख करें?

उत्तर-गांधीजी का नमक मार्च (दांडी मार्च) निम्नलिखित तीन कारणों से उल्लेखनीय था:

1. नमक मार्च का नेतृत्व करके। महात्मा गांधी दुनिया में बहुत लोकप्रिय हुए। उन्होंने विश्व का ध्यान आकर्षित किया क्योंकि उनके मार्च को यूरोपीय और अमेरिकी प्रेस द्वारा व्यापक रूप से कवर किया गया था।

2. यह नमक मार्च पहली राष्ट्रवादी गतिविधि थी जिसमें महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया था। वे बड़ी संख्या में मार्च में शामिल हुई। दरअसल, गांधीजी ने समाजवादी कार्यकर्ता कमलादेवी चट्टोपाध्याय के अनुनय पर महिलाओं को उनके दांडी मार्च में भाग लेने की अनुमति दी थी।

3. नमक यात्रा ने अंग्रेजों को पहली बार यह एहसास कराया कि भारत में उनका शासन हमेशा के लिए नहीं रहेगा। वे समझ चुके थे कि उन्हें प्रशासन में भारतीयों को शामिल करके अपनी शक्ति का विकेंद्रीकरण करना होगा

Q.2 असहयोग आंदोलन के दौरान ब्रिटिश शासन का विरोध करने के लिए कौन से तरीके अपनाए गए थे? (कोई तीन तरीके)

उत्तर-1. छात्रों से कहा गया कि वे अपने स्कूल और कॉलेजों में न जाएं।

2. वकीलों से कहा गया कि वे अदालतों में उपस्थित न हों।

3. आम लोगों को ब्रिटिश सरकार के साथ स्वैच्छिक संबंध छोड़ने के लिए कहा गया था।

4. कई कस्बों और शहरों में मजदूर वर्ग ने हड़तालें कीं। 1921 में विभिन्न शहरों में 396 हड़तालें हुईं। इसमें छह लाख कर्मचारी शामिल थे, जिससे 70 लाख कार्यदिवसों का नुकसान हुआ।

5. आंध्र प्रदेश के उत्तरी भाग में पहाड़ी जनजातियों ने वन कानूनों का उल्लंघन किया।

6. अवध में किसानों ने कर नहीं दिया। उन्होंने कुमाऊं में औपनिवेशिक अधिकारियों के लिए भार ढोने से इनकार कर दिया।

Q.3 सविनय अवज्ञा आंदोलन कब शुरू किया गया था? इसके क्या कारण थे?

उत्तर- महात्मा गांधी ने अपना सविनय अवज्ञा आंदोलन 1930 में निम्नलिखित कारणों से शुरू किया था:

1. साइमन कमीशन का आगमन : 1928 में सर जॉन साइमन के नेतृत्व में साइमन कमीशन ने भारत का दौरा किया। इस आयोग के सभी सदस्य अंग्रेज पुरुष थे। इस आयोग में भारत के किसी भी सदस्य को शामिल नहीं किया गया था।

2. नेहरू रिपोर्ट: अगस्त 1928 में, नेहरू समिति ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें ब्रिटिश सरकार भारतीयो की मांगो को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। निराश होकर गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया।

3. क्रांतिकारियों पर अत्याचार: ब्रिटिश सरकार ने भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी की सजा सुनाई। इससे भारतीयों में असंतोष पैदा हुआ।

4. बारडोली आंदोलन का प्रभाव: सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में बारडोली में एक किसान सत्याग्रह का आयोजन किया गया। इन किसानों की सफलता ने गांधीजी को सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया था।

5. नमक पर कर- प्रत्येक भारतीय घर में नमक अनिवार्य था; फिर भी लोगों को घरेलू उपयोग के लिए भी नमक बनाने से मना किया गया था, उन्हें इसे उच्च कीमत पर दुकानों से खरीदने के लिए मजबूर किया गया था।

Q.4 फरवरी 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन के समय गांधीजी द्वारा अपने संबोधन में व्यक्त किए गए विचारों की व्याख्या करें।

उत्तर-1. उनकी पहली प्रमुख सार्वजनिक उपस्थिति फरवरी 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के उद्घाटन के समय थी।

2. गांधीजी ने भारतीय अभिजात वर्ग पर श्रमिक गरीबों के लिए चिंता की कमी का आरोप लगाया।

3. गांधीजी ने उपस्थित लोगों को उन किसानों और श्रमिकों की याद दिलाई, जो भारतीय आबादी के बहुमत का गठन करते थे, फिर भी दर्शकों में उनका प्रतिनिधित्व नहीं किया गया था।

Q.5 "गांधीजी जितने राजनेता थे उतने ही समाज सुधारक भी थे।" कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-इस बात से कोई इंकार नहीं है कि गांधीजी जितने राजनेता थे उतने ही समाज सुधारक भी थे। एक राजनेता के रूप में, उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को एक व्यापक जन आंदोलन में बदल दिया। 1922 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और फरवरी 1924 में जेल से रिहा कर दिया गया।

फिर उन्होंने अपना ध्यान हाथ से बने कपड़े (खादी) को प्रोत्साहित करने और समाज से अस्पृश्यता को मिटाने के लिए समर्पित किया।

1. गांधीजी का मानना था कि भारतीयों को स्वतंत्रता के योग्य होने के लिए बाल विवाह और छुआछूत जैसी सामाजिक बुराइयों को दूर करने की जरूरत है।

2. उनका विचार था कि हमें विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच सद्भाव का माहौल तैयार करना चाहिए। इसलिए उन्होंने हिंदू-मुस्लिम सद्भाव पर जोर दिया।

3. उनका यह भी मानना था कि भारतीयों को आर्थिक मोर्चे पर आत्मनिर्भर बनना सीखना होगा। इसलिए उन्होंने विदेशों से आयातित कपड़े की जगह खादी के इस्तेमाल पर जोर दिया।

Q.6 गांधीजी ने असहयोग आंदोलन क्यों शुरू किया? इसे क्यों वापस लिया गया?

उत्तर- (i) रॉलेट एक्ट का विरोध करना।

(ii) जलियांवाला बाग में हुए अन्याय का विरोध।

(iii) खिलाफत आंदोलन का समर्थन करना।

(iv) स्वराज के लिए।

कारण-चौरी-चौरा में हिंसा 5 फरवरी 1922 - चौरी-चौरा की घटना के कारण उन्होंने असहयोग आंदोलन वापस ले लिया।क्योकि गांधी जी अहिंसा में विश्वास करते थे।

Q.7 महात्मा गांधी ने आम लोगों के साथ अपनी पहचान कैसे स्थापित की?

उत्तर-महात्मा गांधी ने भारत के आम लोगों के साथ अपनी पहचान स्थापित की। इसके लिए -

(ए) वे एक बहुत ही सरल जीवन शैली में रहने लगे। वे साधारण कपड़े पहनते थे जो एक गरीब भारतीय पहनता था।

(ख) वे स्थानीय लोगों की भाषा बोलता था।

(सी) महात्मा गांधी ने जाति व्यवस्था का विरोध किया और छुआछूत पर हमला किया, व्यक्तिगत रूप से हरिजनो के साथ रहते थे।

(d) महात्मा गांधी ने श्रम और शारीरिक श्रम को सम्मान दिया। उन्होंने चरखे पर काम किया और शौचालयों की सफाई की।

Q.8 नमक कानून संघर्ष का एक महत्वपूर्ण मुद्दा क्यों बन गया?

उत्तर-गरीब से गरीब भारतीय ऐसे भोजन का सेवन करता है जिसमें मुख्य घटक के रूप में नमक होता है। ब्रिटिश सरकार ने नमक पर कर लगाया और देश में नमक बनाना मना था। इसे भारत के गरीब लोगों पर एक बड़ा बोझ समझा जाता था। नमक कानून के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार हैं।

1. नमक कानून नमक उत्पादन और वितरण पर एकाधिकार स्थापित करने के लिए था।

2. लोगों को प्राकृतिक नमक तक पहुंच से वंचित कर दिया गया ।

3. नमक कानून गाँवों के स्थानीय उद्योग पर भी हमला था।

इसलिए नमक कानून बेहद अलोकप्रिय था और यह संघर्ष का एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. गांधीजी ने राष्ट्रीय आंदोलन को जन आंदोलन में कैसे बदला?

उत्तर (i) सादा जीवन-गांधी जी की सादा जीवन शैली और आकर्षक व्यक्तित्व भी एक कारण था

(ii) संचार के लिए हिंदी का प्रयोग- गांधी जी ने हिंदी या आम लोगों की भाषा का इस्तेमाल किया।

(iii) तीन जन आंदोलनों में गांधीजी की भूमिका।- 1917-1918 की अवधि में उन्होंने भारत में तीन आन्दोलन शुरू किए गए तीनो आंदोलनों ने लोगों को सत्याग्रह के विचार से अवगत कराया।

(iv) सत्य और अहिंसा पर जोर-सत्य अहिंसा उनका शक्तिशाली हथियार था।

(v) स्वदेशी, बहिष्कार और स्वराज- गांधी जी ने स्वदेशी, बहिष्कार और स्वराज पर जोर दिया और आत्मनिर्भरता पर ध्यान दिया।

(vi). चरखा और खादी का महत्व।

(vii) महिलाओं और पददलित गरीब का उत्थान, - गांधी जी समाज के भेदभाव वाले समूह के लिए भी काम आवाज उठाई।

(viii) हिंदू-मुस्लिम एकता- गांधी जी की हिंदू और मुस्लिम को एकजुट करने की प्रतिबद्धता ने पूरे देश को एकजुट करने में मदद की

(xi) अस्पृश्यता का उन्मूलन- छुआछूत के खिलाफ संघर्ष जैसे उनके सामाजिक सुधार भी एक प्रमुख कारण है|

Q.2 उन स्रोतों की व्याख्या करें जिनसे हम महात्मा गांधी के राजनीतिक जीवन और भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास का पुनर्निर्माण कर सकते हैं।

उत्तर: ऐसे विभिन्न स्रोत हैं जिनके माध्यम से हम गांधीजी के राजनीतिक जीवन और राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास का पुनर्निर्माण कर सकते हैं। कुछ महत्वपूर्ण स्रोत नीचे दिए गए हैं।

सार्वजनिक स्वर और निजी लेखन

एक महत्वपूर्ण स्रोत महात्मा गांधी और उनके समकालीनों के लेखन और भाषण हैं भाषण, हमें किसी व्यक्ति की सार्वजनिक विचार सुनने की अनुमति देते हैं निजी पत्र हमें उनके निजी विचारों की झलक देते हैं। महात्मा गांधी नियमित रूप से अपनी पत्रिका हरिजन में उन पत्रों को प्रकाशित करते थे जो दूसरों ने उन्हें लिखे थे।नेहरू ने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान उन्हें लिखे गए पत्रों के संग्रह का संपादन किया और पुराने पत्रों का एक पुलिंदा, प्रकाशित किया

छवि गढ़ना-आत्मकथाएँ

इसी तरह आत्मकथाएँ हमें अतीत का एक लेखा-जोखा देती हैं जो अक्सर मानवीय विवरणों से भरपूर होता है।हमें यह याद रखने की आवश्यकता है कि वे बहुत बार स्मृति के आधार पर लिखी गई होती है।

पुलिस की नजरों से

पाक्षिक रिपोर्ट बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से गृह विभाग द्वारा तैयार की गई थी।ये रिपोर्टें इलाकों से पुलिस की जानकारी पर आधारित थीं, लेकिन अक्सर उच्च अधिकारियों ने जो देखा, या जो विश्वास करना चाहते थे, उसे व्यक्त किया।

समाचार पत्रों से

अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं में छपने वाले अखबार भी राष्ट्रीय आंदोलन का एक स्त्रोत थे तथा ये अखबार गांधी जी की प्रत्येक गतिविधियों पर नजर रखते थे.

प्रश्न 3. "गांधी जी जहां भी गए, उनकी चमत्कारी शक्ति की अफवाहें फैल गईं।" उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : गांधीजी की चमत्कारी शक्तियों के बारे में कुछ अफवाहें थीं।

1. कुछ स्थानों पर यह कहा गया कि उन्हें राजा द्वारा किसानों की शिकायतों के निवारण के लिए भेजा गया था और उनके पास सभी स्थानीय अधिकारियों की अवज्ञा करने की शक्ति थी।

2. गरीबों और किसानों के बीच गांधीजी की अपील, विशेष रूप से, उनकी तपस्वी जीवन शैली से बढ़ी थी।

3. यह भी दावा किया गया कि गांधी की शक्ति अंग्रेजी सम्राट से श्रेष्ठ थी और उनके आगमन के साथ औपनिवेशिक शासक देश से भाग जाएंगे।

4. उनका विरोध करने वालों के लिए भयानक परिणाम की कहानियां फैलीं।

5. जिन लोगों ने गांधी की आलोचना की, उन्होंने पाया कि उनके घर रहस्यमय तरीके से गिर रहे हैं या उनकी फसलें खराब हो रही हैं।

6. गांधीजी भारतीय किसानों को एक उद्धारकर्ता के रूप में दिखाई दिए, जो उन्हें उच्च करों और दमनकारी अधिकारियों से बचा सके और उनके जीवन में गरिमा और स्वायत्तता बहाल कर सके।

स्रोत आधारित प्रश्न (4 अंक)

Q.1 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

चरखा

महात्मा गांधी उस आधुनिक युग के घोर आलोचक थे, जिसमें मशीनों ने इंसानों को गुलाम बनाया और मजदूरों को विस्थापित किया। उन्होंने चरखे को मानव समाज के प्रतीक के रूप में देखा जो मशीनों और प्रौद्योगिकी का महिमामंडन नहीं करेगा। इसके अलावा, चरखा गरीबों को पूरक आय प्रदान कर सकता है और उन्हें आत्मनिर्भर बना सकता है।

मुझे जिस चीज से आपत्ति है, वह है मशीनों के प्रति सनक । यह सनक उस चीज के लिए है जिसे वे श्रम बचाने वाली मशीनरी कहते हैं। ये तब तक श्रम बचाते रहेंगे, जब तक कि हजारों बिना काम के और भूख से मरने के लिए खुली सड़कों पर न फेंक दिए जाये। मैं मानव जाति के किसी एक हिस्से के लिए नहीं, बल्कि सभी के लिए समय और श्रम बचाना चाहता हूं; मैं चाहता हूं कि दौलत का केंद्रीकरण चंद लोगों के हाथ में नहीं बल्कि सबके हाथों में हो। खद्दर सभी मशीनरी को नष्ट करने की कोशिश नहीं करता है, लेकिन यह इसके कारणों को

नियंत्रित करता है और इसके विकास को रोकता है। यह उनकी अपनी ही झोपड़ियो में गरीबों की सेवा के लिए मशीनरी का काम करता है। पहिया अपने आप में मशीनरी का एक उत्कृष्ट नमूना है।

यंग इंडिया, 17 मार्च 1927

(i) महात्मा गांधी मशीनों के आलोचक क्यों थे?

उत्तर:-महात्मा गांधी मशीनों के आलोचक थे क्योंकि उन्होंने मनुष्यों को गुलाम बनाया और मजदूरों को विस्थापित किया।

(ii) महात्मा गांधी ने चरखे को इतना महत्व क्यों दिया?

उत्तर:-महात्मा गांधी ने चरखे को बहुत महत्व दिया। वे चरखे को आत्मनिर्भर समाज का प्रतीक मानते थे। गांधीजी के अनुसार, यह शारीरिक श्रम का प्रतीक है। इसने गरीबों को पूरक आय भी प्रदान की।

(iii) गांधीजी के विचार में, यदि मशीनों ने श्रम बचाया तो गरीबों पर क्या प्रभाव पड़ेगा? इससे अमीरों (पूंजीपति) को क्या फायदा होगा?

उत्तर:- गांधीजी मशीनरी के प्रति सनक के सख्त खिलाफ थे। उन्होंने मशीनों को इस दलील पर उचित नहीं माना कि उन्होंने श्रम बचाया। वह मशीनों के आलोचक थे क्योंकि उन्होंने हजारों लोगों को बिना काम के छोड़ दिया था। उन्होंने कई लोगों को भूख से मरवा दिया। इतना ही नहीं, मशीनों से चंद पूंजीपतियों के हाथों में धन का केंद्रीकरण हो जाएगा।

प्रश्न 2- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

"कल हम नमक कर कानून तोड़ेंगे"

5 अप्रैल 1930 को दांडी में महात्मा गांधी ने कहा:

जब मैं अपने साथियों के साथ साबरमती से दांडी के इस समुद्र तटीय गांव के लिए निकला, तो मेरे मन में यह निश्चित नहीं था कि हमें इस स्थान तक पहुँचने की अनुमति दी जाएगी। जब मैं साबरमती में था तब भी यह अफवाह थी कि मुझे गिरफ्तार किया जा सकता है। मैंने सोचा था कि सरकार शायद मेरेसाथियों को दांडी तक जाने दे, लेकिन मुझे नहीं। अगर कोई कहता है कि यह मेरी ओर से अपूर्ण विश्वास के साथ विश्वासघात करता है, तो मैं आरोप से इनकार नहीं करूंगा। शांति और अहिंसा की शक्ति के कारण ही मैं यहां तक पहुंचा हूं, वह शक्ति सार्वभौमिक रूप से महसूस की जाती है।

सरकार चाहे तो अपने इस काम के लिए खुद को बधाई दे सकती है, क्योंकि सरकार चाहती तो हम सभी को गिरफ्तार कर सकती थी। जब सरकार यह कहती कि उसके पास शांति की इस सेना को गिरफ्तार करने का साहस नहीं है, तो हम इसकी प्रशंसा करते हैं। सरकार को ऐसी सेना को गिरफ्तार करने में शर्म आती थी। वह एक सभ्य व्यक्ति है जो कुछ भी करने में शर्म महसूस करता है जिसे उसके पड़ोसी अस्वीकार करते हैं। हमें गिरफ्तार न करने के लिए सरकार बधाई की पात्र है, भले ही वह विश्व मत के डर से ही क्यों न झुकी हो।

कल हम नमक कर कानून तोड़ेंगे। क्या सरकार इसे बर्दाश्त करेगी, यह अलग सवाल है। यह इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता, लेकिन इस पार्टी के संबंध में इसने जो धैर्य और सहनशीलता दिखाई है, उसके लिए वह बधाई के पात्र हैं…

क्या होगा अगर मुझे और गुजरात व देश के बाकी सभी प्रतिष्ठित नेताओं को गिरफ्तार कर लिया जाए? यह आंदोलन इस विश्वास पर आधारित है कि जब एक पूरा राष्ट्र जागता है और आगे बढ़ने लगता है तो उसे किसी नेता की आवश्यकता नहीं होती है।

(i) गांधीजी ने नमक कानून कहाँ और कैसे तोड़ा?

उत्तर:-गांधी ने समुद्र के तट पर दांडी में नमक कानून तोड़ा। उन्होंने समुद्री जल से अपने हाथो से एक मुट्ठी नमक बनाकर ब्रिटिश कानून को तोडा।

(ii) दांडी यात्रा से पहले गांधीजी की मानसिक स्थिति क्या थी? क्या वह सही साबित हुआ?

उत्तर:-गांधीजी को अनिश्चितता महसूस हुई कि क्या उन्हें दांडी पहुंचने दिया जाएगा। ऐसी अफवाह थी कि उसे गिरफ्तार किया जा सकता है।

(iii) गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार की प्रशंसा क्यों की?

उत्तर:-गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार की प्रशंसा की क्योंकि वह परिष्कृत और सभ्य थी। उसमें गांधी की शांति सेना को गिरफ्तार करने का साहस नहीं था। इसलिए, गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार की तुलना एक सभ्य सज्जन से की, जो कुछ भी ऐसा करने में शर्म महसूस करते थे जो उनके पड़ोसियों को पसंद नहीं था।

मानचित्र कार्य

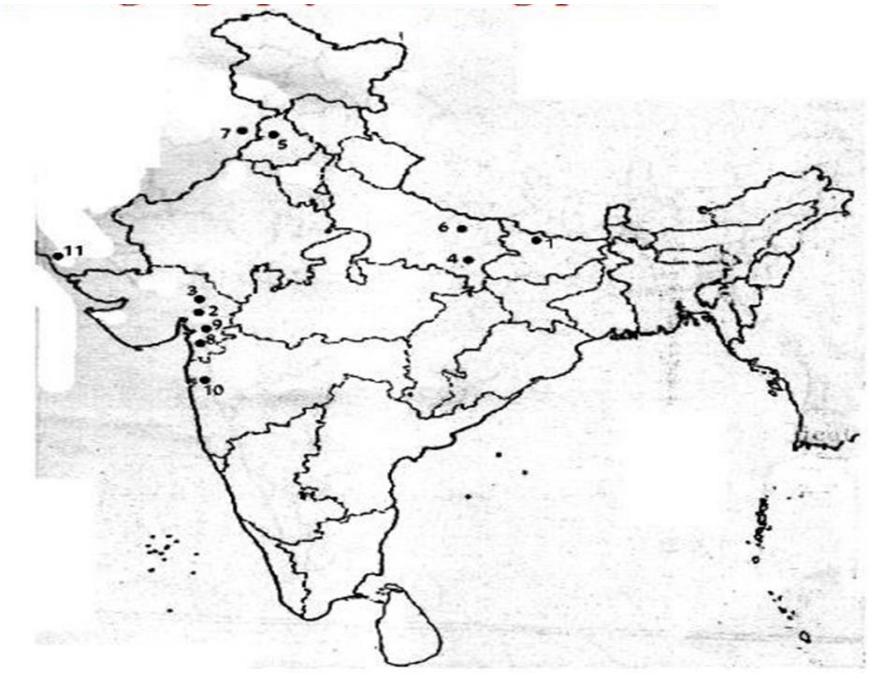

मानचित्र संख्या–10

भारत के दिये गये मानचित्र में राष्ट्रीय आंदोलन के महत्वपूर्ण केन्द्रो (Important Centres of the National Movement) को अंकित कीजिए –

1. चंपारन, 2 खेड़ा, 3 अहमदाबाद, 4. बनारस 5. अमृतसर, 6. चौरी चौरा, 7. लाहौर, 8. बारदोली, 9. दांडी, 10. बम्बई (भारत छोड़ो प्रस्ताव), 11. कराची।

=======XXXXX====

12. संविधान का निर्माण

(नए युग की शुरुआत)

मुख्य अवधारणाएँ: - **उथल-पुथल का दौर :**

• 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ भारतीय संविधान दुनिया का सबसे लंबा संविधान होने का गौरव प्राप्त करता है।

• भारत का संविधान दिसंबर 1946 और नवम्बर 1949 के बीच तैयार किया गया था।

• संविधान के प्रत्येक खंड पर संविधान सभा द्वारा चर्चा की गई थी। कुल मिलाकर, संविधान सभा के ग्यारह सत्र आयोजित किए गए और 165 बैठकें हुईं।

• संविधान के निर्माण से ठीक पहले के वर्ष असाधारण रूप से उथल-पुथल भरे थे: बहुत उम्मीदों का समय, लेकिन साथ ही घोर निराशा का भी समय।

• लोगों की यादों में 1942 का भारत छोड़ो संघर्ष, स्वतंत्रता पाने के लिए सुभाष चंद्र बोस का प्रयास और बॉम्बे में रॉयल इंडियन नेवी की विद्रोह ताज़ा थी।

• अगस्त 1946 में कलकत्ता में हुए नरसंहार ने उत्तरी और पूर्वी भारत में निरंतर दंगों का समय शुरू कर दिया।

• भारत के विभाजन की घोषणा के बाद जनसंख्या के स्थानांतरण के साथ-साथ हिंसा की परिणति नरसंहारों में हुई।

• लाखों शरणार्थी पलायन कर रहे थे। कई लोग अपने गंतव्य तक पहुँचने से पहले ही मर गए।

• नए राष्ट्र के सामने एक और समस्या रियासतों की थी।

संविधान सभा का गठन

• संविधान सभा के सदस्य अप्रत्यक्ष रूप से चुने जाते थे। सदस्यों का चुनाव प्रांतीय विधायिका द्वारा किया जाता था।

• मुस्लिम लीग ने विधानसभा का बहिष्कार किया क्योंकि वह एक अलग संविधान और अलग राज्य चाहती थी।

• संविधान सभा के भीतर गहन चर्चा भी जनता की राय से प्रभावित थी। जनता से भी अपने विचार और सुझाव भेजने के लिए कहा गया।

• भाषाई अल्पसंख्यकों ने अपनी मातृभाषा की सुरक्षा की माँग की, धार्मिक अल्पसंख्यकों ने विशेष सुरक्षा उपायों की माँग की। जबकि दलितों ने जाति दमन को समाप्त करने और शिक्षा और सरकारी नौकरियों में आरक्षण की माँग की।

मुख्य आवाजें:

• संविधान सभा के सभी 300 सदस्यों में से पंडित नेहरू, वल्लभ भाई पटेल, राजेंद्र प्रसाद, बीआर अंबेडकर, केएम मुंशी और अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर जैसे कुछ सदस्यों का उल्लेखनीय योगदान था।

• पंडित जवाहरलाल नेहरू ने महत्वपूर्ण "उद्देश्य प्रस्ताव" के साथ-साथ राष्ट्रीय ध्वज का प्रस्ताव भी पेश किया।

• वल्लभ भाई पटेल ने रियासतों के साथ बातचीत करने और इन रियासतों को भारत में विलय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कई रिपोर्ट का मसौदा तैयार किया और विरोधी दृष्टिकोण को समेटने के लिए काम किया।

• संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में राजेंद्र प्रसाद ने चर्चा को रचनात्मक दिशा में आगे बढ़ाया और सुनिश्चित किया कि सभी सदस्यों को बोलने का मौका मिले।

• डॉ. बीआर अंबेडकर गांधीजी की सलाह पर कैबिनेट में शामिल हुए और कानून मंत्री के रूप में काम किया। वे संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष थे। केएम मुंशी और अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर दो अन्य वकील थे जिन्होंने संविधान के मसौदे को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

• इन नेताओं को महत्वपूर्ण सहायता देने वाले दो सिविल सेवक थे, उनमें से एक बी.एन. राव थे, जो भारत सरकार के संवैधानिक सलाहकार के रूप में काम करते थे और दूसरे एस.एन. मुखर्जी थे, जिन्होंने स्पष्ट कानूनी भाषा में जटिल प्रस्ताव रखे थे।

संविधान की दृष्टि:

• 13 दिसंबर, 1946 को जवाहरलाल नेहरू ने "उद्देश्य प्रस्ताव" पेश किया। इसने भारत को एक "स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य" घोषित किया, जो अपने नागरिकों को न्याय, समानता, स्वतंत्रता की गारंटी देता है और "अल्पसंख्यकों, पिछड़े और आदिवासी क्षेत्रों, दलित और पिछड़े वर्गों के लिए पर्याप्त सुरक्षा" का आश्वासन देता है।

• नेहरू ने अमेरिकी और फ्रांसीसी संविधान और इसके निर्माण से जुड़ी घटनाओं का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि हम सिर्फ उनकी नकल नहीं करने जा रहे हैं, बल्कि उन्होंने कहा कि इनसे सीखना महत्वपूर्ण है, ताकि गलतियों से बचा जा सके।

• भारतीय संविधान का उद्देश्य लोकतंत्र के उदार विचारों को आर्थिक न्याय के समाजवादी विचारों के साथ मिलाना और भारतीय संदर्भ में इन सभी विचारों को फिर से अनुकूलित और फिर से तैयार करना होगा।

लोगों की इच्छा:

• सोमनाथ लाहिड़ी, एक कम्युनिस्ट सदस्य ने कहा कि 'हम भारतीयों को ब्रिटिश प्रभाव से मुक्त होने की आवश्यकता है'। उन्होंने आगे कहा कि संविधान सभा ब्रिटिश द्वारा बनाई गई थी और ब्रिटिश योजनाओं के अनुसार काम कर रही थी।

• नेहरू ने अपने जवाब में कहा कि यह सच है कि ब्रिटिश सरकार ने संविधान सभा के जन्म में भूमिका निभाई थी और संविधान सभा के कामकाज के लिए शर्तें रखी थीं। लेकिन, उन्होंनेकहा कि हम लोगों की ताकत के कारण आयें हैं और हम वहां तक जाएंगे जहां तक लोग हमारे साथ जाना चाहेंगे।

• उनका मानना था कि संविधान सभा के सदस्य प्रांतीय विधायिका द्वारा चुने जाते हैं और प्रांतीय विधायिका भारतीय लोगों द्वारा चुनी जाती है। इसलिए यहां हम अपने देश के लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

• संविधान सभा से लोगों की आकांक्षाओं को व्यक्त करने की अपेक्षा की गई थी। लोकतंत्र, समानता और न्याय ऐसे आदर्श थे जिनकी भारत के लोग आकांक्षा रखते थे।

अधिकारों का निर्धारण :

• एनजी रंगा, एक समाजवादी और किसान आंदोलन के नेता ने उद्देश्य प्रस्ताव का स्वागत किया और आग्रह किया कि अल्पसंख्यक शब्द की व्याख्या आर्थिक संदर्भ में की जानी चाहिए।

• रंगा ने भारत की जनता और संविधान सभा में उनके प्रतिनिधियों के बीच भारी अंतर के बारे में भी बात की।

●जयपालसिंह, एक आदिवासी प्रतिनिधि, ने अपनी बात रखी।

पृथक निर्वाचिका की समस्या:

●पृथक निर्वाचिका के मुद्दे पर विधानसभा में गहन बहस हुई।

●बी.पोकर बहादुर ने पृथक निर्वाचिका को जारी रखने के लिए एक सशक्त प्रस्तुति दी ।उन्होंने कहा कि निर्वाचिका से अल्पसंख्यकों को राजनीतिक व्यवस्था और देश के शासन में प्रतिनिधित्व देने में मदद मिलेगी।

●कई राष्ट्रवादी नेताओं ने पृथक निर्वाचिका प्रणाली को धर्म के आधार पर लोगों को विभाजित करने के साधन के रूप में देखा।

●सरदार पटेल ने दृढ़ता से कहा कि पृथक निर्वाचिका एक जहर है जो हमारे देश की राजनीति में प्रवेश कर चुका है और एक समुदाय को दूसरे के खिलाफ खड़ा कर रहा है, जिससे खून-खराबा, दंगे और विभाजन हो रहा है।

●जी बी पंत ने एक बहस में कहा, पृथक निर्वाचिका न केवल राष्ट्र के लिए बल्कि अल्पसंख्यकों के लिए भी हानिकारक है।

●उन्होंने कहा, पृथक निर्वाचिका की मांग अल्पसंख्यकों को स्थायी रूप से अलग-थलग कर देगी और उन्हें कमजोर बना देगी और इसके अलावा यह उन्हें सरकार के भीतर किसी भी प्रभावी भूमिका से वंचित कर देगी।

"केवल इस प्रस्ताव से काम चलने वाला नहीं है"

• एन.जी. रंगा, एक समाजवादी जो किसान आंदोलन के नेता थे, ने आग्रह किया कि अल्पसंख्यक शब्द की व्याख्या आर्थिक संदर्भ में की जानी चाहिए; उन्होंने संविधान द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को दिए जा रहे कानूनी अधिकारों का स्वागत किया, लेकिन इसकी सीमाओं की ओर इशारा किया।

• रंगा द्वारा उल्लिखित समूहों में से, संविधान सभा के एक प्रतिभाशाली आदिवासी वक्ता जयपाल सिंह थे।

• जयपाल सिंह ने जनजातियों की रक्षा करने और ऐसी स्थितियाँ सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बात की, जो उन्हें सामान्य आबादी के स्तर तक आने में मदद कर सकें। उन्हें आदिम और पिछड़ा हुआ मानते हुए, बाकी समाज ने उनसे मुंह मोड़ लिया था, उन्हें तिरस्कृत किया था।

• जयपाल सिंह अलग निर्वाचन क्षेत्रों की मांग नहीं कर रहे थे, लेकिन उन्हें लगा कि आदिवासियों को खुद का प्रतिनिधित्व करने की अनुमति देने के लिए विधायिका में सीटों का आरक्षण आवश्यक था।

"हमें हज़ारों वर्षों तक दबाया गया है "

• दलित जातियों के सदस्यों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि "अछूतों" की समस्या सिर्फ़ सुरक्षा और बचाव के ज़रिए हल नहीं की जा सकती; उनकी अक्षमताएँ सामाजिक मानदंडों और जाति समाज के नैतिक मूल्यों के कारण हैं।

•मद्रास के जे. नागप्पा ने कहा, "हम पीड़ित रहे हैं, लेकिन हम और अधिक पीड़ित होने के लिए तैयार नहीं हैं।" "हमें अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास हो गया है। हम जानते हैं कि हमें अपनी बात कैसे रखनी है।"

दलित जातियाँ कुल आबादी का 20 से 25 प्रतिशत हिस्सा थीं। उनकी पीड़ा उनके व्यवस्थित हाशिए पर होने के कारण थी, न कि उनकी संख्यात्मक रूप से कमज़ोरी के कारण।

संविधान सभा ने अंततः सिफारिश की कि अस्पृश्यता को समाप्त किया जाए, हिंदू मंदिरों को सभी जातियों के लिए खोला जाए, विधानमंडलों में सीटें और सरकारी कार्यालयों में नौकरियाँ दलितों के लिए आरक्षित की जाएँ।

राज्य की शक्तियां:

•केंद्र और राज्य स्तर पर सरकार की शक्ति के विभाजन के मुद्दे पर गहन बहस हुई।

•संविधान के मसौदे में विषयों की तीन सूचियाँ दी गई हैं, यानी

संघ सूची- केंद्र सरकार इस पर कानून बना सकती है।

राज्य सूची- राज्य सरकार इस पर कानून बना सकती है और

समवर्ती सूची- केंद्र और राज्य सरकार दोनों सूचीबद्ध वस्तुओं पर कानून बना सकती हैं।

•अनुच्छेद 356 ने केंद्र को राज्यपाल की सिफारिश पर राज्य प्रशासन को अपने हाथ में लेने की शक्ति दी।

•संविधान ने राजकोषीय संघवाद की एक जटिल प्रणाली के लिए भी आदेश दिया।कुछ करों (उदाहरण के लिए, सीमा शुल्क और कंपनी कर) के मामले में केंद्र ने सभी आय को अपने पास रख लिया; अन्य मामलों में (जैसे आयकर और उत्पाद शुल्क) इसने उन्हें राज्यों के साथ साझा किया।

•इस बीच, राज्य अपने दम पर कुछ कर लगा सकते थे और एकत्र कर सकते थे: इनमें भूमि और संपत्ति कर, बिक्री कर और बोतलबंद शराब पर बेहद लाभदायक कर शामिल थे।

"केंद्र बिखर जाएगा"

•मद्रास के के. संथानम ने राज्यों के अधिकारों का सबसे शानदार बचाव किया।

•यह लगभग एक जुनून बन गया है कि केंद्र में सभी तरह की शक्तियाँ जोड़कर हम इसे मज़बूत बना सकते हैं।" संथानम ने कहा कि यह एक ग़लतफ़हमी है।

•इसके कुछ कार्यों से मुक्त करके और उन्हें राज्यों को हस्तांतरित करके, केंद्र को वास्तव में मज़बूत बनाया जा सकता है।

•संथानम ने भविष्यवाणी की कि अगर शक्तियों के प्रस्तावित वितरण को बिना किसी और जांच के अपनाया गया तो भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। उन्होंने कहा कि कुछ वर्षों में सभी प्रांत "केंद्र के खिलाफ़ विद्रोह" करेंगे।

•उड़ीसा के एक सदस्य ने चेतावनी दी कि "केंद्र के टूटने की संभावना है" क्योंकि संविधान के तहत शक्तियों को अत्यधिक केंद्रीकृत किया गया है।

"आज हमें एक शक्तिशाली सरकार की आवश्यकता है "

अंबेडकर ने घोषणा की थी कि वे "भारत सरकार अधिनियम 1935 के तहत बनाए गए केंद्र से ज़्यादा मज़बूत और एकजुट केंद्र" चाहते हैं।

•गोपालस्वामी अयंगर ने घोषणा की कि "केंद्र को जितना संभव हो सके उतना मज़बूत बनाया जाना चाहिए"।

•संयुक्त प्रांत के एक सदस्य, बालकृष्ण शर्मा ने विस्तार से तर्क दिया कि केवल एक मजबूत केंद्र ही देश की भलाई के लिए योजना बना सकता है, उपलब्ध आर्थिक संसाधनों को जुटा सकता है, एक उचित प्रशासन स्थापित कर सकता है और विदेशी आक्रमण के खिलाफ देश की रक्षा कर सकता है।

•विभाजन के बाद अधिकांश राष्ट्रवादियों ने अपनी स्थिति बदल दी क्योंकि उन्हें लगा कि विकेंद्रीकृत संरचना के लिए पहले के राजनीतिक दबाव अब नहीं रहे।

राष्ट्र की भाषा

हिंदी की हिमायत (हिंदी के पक्ष में)

•संयुक्त प्रांत के कांग्रेसी आर. वी. धुलेकर ने आक्रामक दलील दी कि संविधान निर्माण की भाषा के रूप में हिंदी का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

•भाषा के मुद्दे ने अगले तीन वर्षों तक कार्यवाही को बाधित किया और सदस्यों को आंदोलित किया।

•12 सितंबर 1947 को राष्ट्र की भाषा पर धुलेकर के भाषण ने एक बार फिर भारी तूफान खड़ा कर दिया।

•पहले पंद्रह वर्षों तक, सभी आधिकारिक उद्देश्यों के लिए अंग्रेजी का उपयोग जारी रहेगा। प्रत्येक प्रांत को प्रांत के भीतर आधिकारिक कार्यों के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में से एक चुनने की अनुमति दी जानी थी।

•धुलेकर चाहते थे कि हिंदी को आधिकारिक भाषा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय भाषा घोषित किया जाए।

हिंदी के वर्चस्व का भय

•श्रीमती जी. दुर्गाबाई ने सदन को बताया कि दक्षिण में हिंदी के खिलाफ विरोध बहुत प्रबल है: "विरोधियों को शायद यह उचित ही लगता है कि हिंदी के लिए यह प्रचार प्रांतीय भाषाओं की जड़ों को नुकसान पहुंचाता है..."

बॉम्बे के एक सदस्य श्री शंकर राव देव ने कहा कि एक कांग्रेसी और महात्मा गांधी के अनुयायी के रूप में उन्होंने हिंदुस्तानी को राष्ट्र की भाषा के रूप में स्वीकार किया है।

•मद्रास के टी. ए. रामलिंगम चेट्टियार ने इस बात पर जोर दिया कि जो कुछ भी किया जाना चाहिए, उसे सावधानी से किया जाना चाहिए; अगर इसे बहुत आक्रामक तरीके से आगे बढ़ाया गया तो हिंदी के हित में कोई मदद नहीं होगी।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारतीय संविधान कब लागू हुआ?

(A) 26 जनवरी 1949 (B) 26 जनवरी 1950

(C) 15 अगस्त 1947 (D) 26 नवंबर 1950

उत्तर. - (B) 26 जनवरी 1950

2. भारतीय संविधान _____ के बीच बनाया गया था

(A) दिसंबर 1946 और नवंबर 1949 (B) दिसंबर 1947 और नवंबर 1950

(C) नवंबर 1946 और दिसंबर 1949 (D) नवंबर 1947 और दिसंबर 1950

उत्तर. - (A) दिसंबर 1946 और नवंबर 1949

3. "नियति से साक्षात्कार" भाषण किसने और कब दिया था?

(A) महात्मा गांधी, 15 अगस्त 1947 (B) बीआर अम्बेडकर, 26 जनवरी 1950

(C) जवाहरलाल नेहरू, 14 अगस्त 1947 (D) राजेंद्र प्रसाद, 15 अगस्त 1947

उत्तर. - (C) जवाहरलाल नेहरू, 14 अगस्त 1947

4. किस राजनीतिक समूह ने संविधान सभा को अंग्रेजों की रचना के रूप में देखा?

(A) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (B) मुस्लिम लीग

(C) उदारवादी (D) समाजवादी

उत्तर. - (D) समाजवादी

5. भारत के पहले कानून मंत्री के रूप में किसे नियुक्त किया गया था?

(A) जवाहर लाल नेहरू (B) बीआर अम्बेडकर

(C) राजेन्द्र प्रसाद (D) सरदार वल्लभाई पटेल

उत्तर. - (B) बीआर अम्बेडकर

6. संविधान के प्रारूपण में डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की सेवा करने वाले दो महत्वपूर्ण वकील कौन थे?

(A) केएम मुंशी और कृष्णास्वामी (B) एस एन मुखर्जी और कृष्णास्वामी

(C) बीएन राव और एसएन मुखर्जी (D) केएम मुंशी और बीएन राव

उत्तर. - (A) केएम मुंशी और कृष्णास्वामी

7. उद्देश्य प्रस्ताव का स्वागत करते हुए किसने यह आग्रह किया कि अल्पसंख्यक शब्द की व्याख्या आर्थिक दृष्टि से की जाए?

(A) एनजी रंगा (B)जवाहर लाल नेहरू

(C) बी.आर. अम्बेडकर (D) महात्मा गांधी

उत्तर. - (A) एनजी रंगा

8. "... एक आदिवासी होने के नाते मुझसे यह उम्मीद नहीं की जाती की मैं इस प्रस्ताव कि पेचीदगियों को समझता होऊंगा" यह किसने कहा?

(A) बिरसा मुंडा (B) अल्लूरी सीताराम राजू

(C) जयपाल सिंह (D) तिरोत सिंह

उत्तर. - (C) जयपाल सिंह

9. "हम सदा कष्ट उठाते रहे हैं पर अब और कष्ट उठाने को तैयार नहीँ हैं।" यह किसने कहा?

(A) बी.आर. अम्बेडकर (B) जे नागप्पा

(C) के.जे. खांडेरकर (D) सुभाष चंद्र बोस

उत्तर. - (B) जे नागप्पा

10. राज्यपाल की सिफारिश पर किस अनुच्छेद के तहत केंद्र को राज्य प्रशासन को अपने हाथ में लेने का अधिकार दिया गया हैं?

(A)अनुच्छेद 360 (B) अनुच्छेद 350

(C) अनुच्छेद 353 (D) अनुच्छेद 356

उत्तर. - (D) अनुच्छेद 356

11. महात्मा गांधी _____ भाषा को राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे।

(A) हिंदुस्तानी (B) हिंदी

(C) तमिल (D) उर्दू

उत्तर. (A) हिंदुस्तानी

12. 'प्रारूप समिति' के अध्यक्ष कौन थे?

(A) बी.आर. अम्बेडकर (B) सरदार पटेल

(C) नेहरू (D) डॉ राजेंद्र प्रसाद

उत्तर. - (A) बी.आर. अम्बेडकर

13. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. महात्मा गांधी ने उदेश्य प्रस्ताव पेश किया।

2. 1946 में जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में एक अंतरिम सरकार बनी थी।

3. मद्रास के के. सनातनम ने राज्यों के अधिकारों का पुरजोर समर्थन किया।

4. महात्मा गांधी हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में रखना चाहते थे।

दिए गए कथनों में से कौन सा सही नहीं है?

(A) 1, 4 (B) 2, 3
(C) 3, 4 (D) 2, 4

उत्तर. - (A) 1, 4

14. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. संविधान सभा के सदस्य अप्रत्यक्ष रूप से चुने गए थे।

2. गोविंद बल्लभ पंत ने पृथक निर्वाचक मंडल का विरोध किया।

3. श्री शंकर राव ने हिंदुस्तानी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया।

4. एन जी रंगा ने आदिवासियों को अल्पसंख्यकों में गिना।

दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही हैं?

(A) 1, 3, 4 (B) 1, 2, 4,
(C) 2, 4 (D) 2,3, 4

उत्तर. - (B) 1, 2, 4,

15. निम्नलिखित युग्मों में से ज्ञात कीजिए कि कौन सा सही सुमेलित नहीं है:

(A) भारत छोड़ो आंदोलन: 1942

(B) उद्देश्य प्रस्ताव पेश किया गया: दिसंबर 1945

(C) बॉम्बे में रॉयल इंडियन नेवी में असंतोष का बढ़ना: 1946

(D) भारतीय संविधान पर हस्ताक्षर किए गए हैं: 1949

उत्तर. - (B) उद्देश्य प्रस्ताव पेश किया गया: दिसंबर 1945

16. संविधान के अनुच्छेद 25-28 में ____ शामिल हैं

(A) समानता का अधिकार (B) सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार
(C) धर्म की स्वतंत्रता (D) जाति आरक्षण

उत्तर - (C) धर्म की स्वतंत्रता

17. संविधान सभा की संरचना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य है?

(A) प्रतिनिधि को चार घटकों - हिंदू, मुस्लिम, सिख और ईसाई से चुना जाना था।

(B) संविधान सभा की कुल सदस्य संख्या 389 थी।

(C) संघ की संविधान समिति के अध्यक्ष सरदार वल्लभ भाई पटेल थे

(D) डॉ बी.आर. अम्बेडकर की अध्यक्षता में प्रारूप समिति में आठ सदस्य थे।

उत्तर. - (D) डॉ बी.आर. अम्बेडकर की अध्यक्षता में प्रारूप समिति में आठ सदस्य थे।

18. स्वतंत्र भारत की संविधान सभा के सदस्यों की संख्या _____ थी!

(A) 200 (B) 300
(C) 400 (D) 500

उत्तर. - (B) 300

19. दिए गए चित्र को देखकर बताओ किस पर हस्ताक्षर किया जा रहा है?

उत्तर. – भारतीय संविधान पर!

20. नीचे दिए गए चित्र में, पहली पंक्ति में बायें से दायें चौथे नंबर पर कौन है?

उत्तर: पंडित जवाहरलाल नेहरू

3 अंक वाले प्रश्न उत्तर (Short उत्तरwer Type)

Q 1 उद्देश्य संकल्प में कौन से आदर्श व्यक्त किए गए थे?

उत्तर 1. भारत को एक 'स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य' घोषित किया।

2. अपने नागरिकों को न्याय, समानता और स्वतंत्रता की गारंटी दी।

3. अल्पसंख्यकों, पिछड़े और आदिवासी क्षेत्रों और दलित वर्गों के लिए पर्याप्त सुरक्षा का आश्वासन दिया।

Q 2 संविधान के निर्माण से पहले की तात्कालिक घटनाएँ क्या थीं?

उत्तर 1. भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया गया था जो अंग्रेजों के खिलाफ एक व्यापक लोकप्रिय आंदोलन था।

2. सुभाष चंद्र बोस ने सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से स्वतंत्रता हासिल करने के लिए बोली लगाई और 1946 के वसंत में बॉम्बे और अन्य शहरों में रॉयल इंडियन नेवी का विद्रोह हुआ।

3. 1940 के दशक के अंत में देश के विभिन्न हिस्सों में मजदूरों और किसानों के बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए।

Q 3 राजकोषीय संघवाद के प्रावधान क्या थे?

उत्तर 1. कुछ कर जैसे सीमा शुल्क और कंपनी कर, सभी आय केंद्र द्वारा बरकरार रखी गई थी।

2. अन्य कर जैसे कि आयकर और उत्पाद शुल्क, आय केंद्र और राज्यों दोनों द्वारा साझा की जाती थी।

3. कुछ कर जैसे भूमि और संपत्ति कर, बिक्री कर और बोतलबंद शराब पर कर राज्यों द्वारा अपने दम पर लगाया और नियंत्रित किया जा सकता है।

Q 4 आर.वी.धुलेकर और श्रीमती जी. दुर्गाबाई के राष्ट्रभाषा के सवाल पर विचारों की बताइये।

उत्तर 1. राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर हिन्दी की वकालत अधिकतर आर.वी.धुलेकर ने की थी। वे चाहते थे कि हिन्दी को संविधान-निर्माण की भाषा के रूप में प्रयोग किया जाए।

2. श्रीमती। दुर्गाबाई ने सदन को सूचित किया कि दक्षिण हिंदी के खिलाफ है क्योंकि यह सभी प्रांतीय भाषाओं की जड़ को काट सकता है। उन्होंने स्कूल शुरू किए और हिंदी में कक्षाएं संचालित कीं, और हिंदी के लिए आंदोलन को देखकर चौंक गईं।

Q 5 भारत का संविधान केंद्र और राज्य सरकार के अधिकारों की रक्षा कैसे करता है?

उत्तर 1. संविधान सभा में केंद्र और राज्य सरकारों के अधिकारों पर जोरदार बहस हुई।

2. संविधान ने राजकोषीय संघवाद की एक जटिल प्रणाली के लिए अनिवार्य किया।

3. अनुच्छेद 356 ने केंद्र को राज्यपाल की सिफारिश के आधार पर राज्य प्रशासन को अपने हाथ में लेने की शक्ति प्रदान की।

Q 6 देश की राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर महात्मा गांधी के विचारों का परीक्षण कीजिए।

उत्तर 1. महात्मा गांधी को लगा कि हिंदुस्तानी एक ऐसी भाषा है जिसे आम लोग आसानी से समझ सकते हैं।

2. हिन्दुस्तानी हिन्दी और उर्दू का मिश्रण था, लोगों के एक बड़े वर्ग के बीच लोकप्रिय था।

3. महात्मा गांधी के अनुसार, हिंदुस्तानी विविध समुदायों के बीच संचार की आदर्श भाषा होगी। यह हिंदुओं और मुसलमानों और उत्तर और दक्षिण के लोगों को एकजुट करने में मदद करेगा।

Q 7 पृथक निर्वाचक मंडल के मुद्दे पर बी. पोकर बहादुर की मांग क्या थी?

उत्तर मद्रास के बी पोकर बहादुर ने पृथक निर्वाचक मंडल के साथ जारी रखने की मांग की। उन्होंने तर्क दिया कि अल्पसंख्यक सभी देशों में मौजूद हैं। उनको अस्तित्व से मिटाया नहीं जा सकता था।

निबंधात्मक प्रश्न - 8 अंक

Q 1 “अल्पसंख्यक” शब्द को विभिन्न समूहों द्वारा कैसे परिभाषित किया गया?

उत्तर अल्पसंख्यक को विभिन्न समूहों द्वारा निम्नलिखित तरीकों से परिभाषित किया गया था:

एन.जी. रंगा, एक समाजवादी, जो किसान आंदोलन के नेता थे, ने कहा कि अल्पसंख्यक शब्द की व्याख्या आर्थिक दृष्टि से की जानी चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि असली अल्पसंख्यक गरीब और दलित यानी इस देश की जनता हैं। इनमें आदिवासी लोग और गरीब ग्रामीण शामिल हैं जिनका साहूकारों, जमींदारों, मालगुजार और अन्य लोगों द्वारा शोषण किया जाता है।

एक आदिवासी जयपाल सिंह ने कहा कि जनजातियां संख्यात्मक अल्पसंख्यक नहीं हैं, लेकिन उन्हें सुरक्षा की आवश्यकता है। पिछले 6,000 वर्षों से उनके साथ अपमानजनक व्यवहार किया गया और उनकी उपेक्षा की गई। उन्हें आदिम और पिछड़ा माना गया है।

मद्रास की दक्षिणायनी वेलायुधन ने यह मानने से इन्कार कर दिया कि सत्तर मिलियन हरिजनों को अल्पसंख्यक माना जाना चाहिए लेकिन उनकी सामाजिक अक्षमताओं को दूर किया जाना जरुरी है ।मद्रास के जे. नागप्पा ने बताया कि संख्यात्मक रूप से दलित जातियां अल्पसंख्यक नहीं है। वे कुल आबादी के 20 से 25 प्रतिशत के बीच थे किन्तु उनके व्यवस्थित हाशियाकरण के कारण उन्हें नुकसान उठाना पड़ा।

Q 2 "संविधान सभा के भीतर चर्चा भी जनता द्वारा व्यक्त विचारों से प्रभावित थी"। समझाइए।

उत्तर संविधान सभा की चर्चाओं पर जनता की राय का काफी प्रभाव था जो थे:

सभी प्रस्तावों पर सार्वजनिक बहस हुई।

समाचार पत्रों ने किसी भी मुद्दे पर विभिन्न सदस्यों द्वारा प्रस्तुत तर्कों की सूचना दी।

प्रेस में आलोचनाओं और प्रति आलोचनाओं ने आम सहमति की प्रकृति को आकार दिया जो अंततः विशिष्ट मुद्दों पर पहुंची थी।

जनता के सुझावों का भी स्वागत किया गया जिससे सामूहिक भागीदारी की भावना पैदा हुई।

कई भाषाई अल्पसंख्यकों ने अपनी मातृभाषा के संरक्षण की मांग की। धार्मिक अल्पसंख्यकों ने विशेष सुरक्षा उपायों की मांग की।

निम्न जाति या दलित समूहों ने उच्च जाति के लोगों द्वारा दुर्व्यवहार को समाप्त करने और विधानसभाओं में उनकी आबादी के आधार पर अलग सीटों के आरक्षण की मांग की।

सभा में सार्वजनिक चर्चा में उठाए गए सांस्कृतिक अधिकारों और सामाजिक न्याय के महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हुई।

इसी तरह धार्मिक अल्पसंख्यकों के समूह आगे आए और विशेष सुरक्षा उपायों की मांग की।

Q 3 दमित वर्ग के संरक्षण के पक्ष में दिए गए विभिन्न तर्कों की विवेचना कीजिए।

उत्तर सामाजिक और आर्थिक अधिकारिता की मांग-

यह महसूस किया गया कि आदिवासियों और अछूतों जैसे दमित वर्गों को विशेष ध्यान और सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है ताकि वे अपनी स्थिति को ऊपर उठा सकें और सामान्य आबादी के स्तर पर आ सकें।

मुख्य धारा के आदिवासी-

आदिवासियों को पिछड़ा माना जाता था। उन्हें समाज में अच्छी तरह से स्वीकार नहीं किया गया था। उन्हें लगभग खारिज कर दिया गया था। उनके सशक्तिकरण के लिए उन्हें समाज में आत्मसात करने की आवश्यकता थी। उन्हें भी समाज की मुख्यधारा में लाने की जरूरत थी। इसलिए उन्हें विशेष सुरक्षा और देखभाल की पेशकश की गई।

संवैधानिक प्रावधान-

आदिवासियों की भूमि को जब्त कर लिया गया है और उनके जंगलों और चरागाहों से वंचित कर दिया गया है। आदिवासियों और अछूतों की शिक्षा तक पहुंच नहीं थी। वे प्रशासन में भाग नहीं लेते थे। इसलिए उनकी स्थितियों में सुधार के लिए कुछ कानून की आवश्यकता थी।

दलित वर्गों को सशक्त बनाना-

समाज में अछूतों को मजदूर की तरह माना जाता था। समाज ने उनकी सेवाओं का इस्तेमाल किया लेकिन उन्हें सम्मानजनक स्थान नहीं दिया। उन्हें बहिष्कृत के रूप में माना जाता था और अलग-थलग रखा जाता था। उनके कष्ट उनके व्यवस्थित हाशिए पर रहने के कारण थे।

प्रश्न 4. संविधान सभा ने भाषा विवाद को कैसे सुलझाया?

उत्तर

भाषाई विविधता-

भारत एक विशाल देश है। इसके कई अलग-अलग क्षेत्र हैं। लोगों के विविध समूह यहां रहते हैं और विभिन्न भाषाएं बोलते हैं। इसलिए भारत जैसे नए राष्ट्र के लिए विभिन्न भाषाओं की पेचीदगियों पर उचित ध्यान देना आवश्यक था।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दुस्तानी-

हिन्दुस्तानी कांग्रेस और महात्मा गांधी की पसंद थे। कांग्रेस ने पहले ही हिंदुस्तानी को देश की राष्ट्रीय भाषा के रूप में अपनाने का फैसला कर लिया था। महात्मा गांधी भी हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने के पक्ष में थे और उन्होंने इस मत का पुरजोर समर्थन किया। उनका तर्क था कि हर किसी को उस भाषा में बोलना चाहिए जो ज्यादातर आम लोगों द्वारा समझी जाती है। हिन्दुस्तानी कोई नई भाषा नहीं थी। यह हिंदी और उर्दू का मिश्रण था। यह विविध संस्कृतियों की बातचीत से समृद्ध हुआ और देश के अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाती थी।

भाषा के मुद्दे पर बवाल-

आर.वी. धुलेकर ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने के पक्ष में निवेदन किया। वह संयुक्त प्रांत और एक कांग्रेसी से आए थे। वे चाहते थे कि हिन्दी को संविधान-निर्माण की भाषा के रूप में प्रयोग किया जाए। उन्होंने यहां तक कहा कि जो लोग हिंदुस्तानी नहीं जानते वे संविधान सभा के सदस्य बनने के योग्य नहीं थे।

भाषा समिति का सुझाव-

संविधान सभा की भाषा समिति ने अपनी रिपोर्ट में एक समझौता सूत्र का सुझाव दिया। इसने सुझाव दिया कि देवनागरी लिपि में हिंदी देश की राजभाषा होनी चाहिए और इस मुद्दे को हल करने का प्रयास किया। इसने यह भी सुझाव दिया कि अंग्रेजी से हिंदी में संक्रमण क्रमिक होना चाहिए। यह भी सुझाव दिया गया था कि संविधान को अपनाने के बाद से पहले पंद्रह वर्षों के दौरान, अंग्रेजी आधिकारिक उद्देश्यों के लिए काम करना जारी रखेगी। तो यह स्पष्ट था कि भाषा समिति ने हिंदी को राष्ट्रभाषा नहीं राजभाषा के रूप में संदर्भित किया।

हिंदी के दबदबे का डर-

संविधान सभा के सदस्य जो दक्षिण भारत से ताल्लुक रखते थे, इस दृष्टिकोण से आशंकित थे। उन्हें लगा कि हिंदी उनकी प्रांतीय भाषाओं के लिए खतरा होगी। बंबई से शंकर राव। टी.ए. रामलिंगम चेट्टियार और मद्रास की श्रीमती जी दुर्गाबाई ने सुझाव दिया कि भाषा के मुद्दे को अत्यधिक सावधानी की आवश्यकता है और इसे कुशलतापूर्वक और कुशलता से संभालने की आवश्यकता है। दक्षिण भारत के लोगों पर हिंदी थोपी नहीं जानी चाहिए।

स्रोत आधारित प्रश्न

Q.1 नीचे दिए गए स्रोत को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (1+1+2=4)

Q 1 "कोई विभाजित निष्ठा नहीं हो सकती" - गोविंद बल्लभ पंत।

गोविंद बल्लभ पंत ने तर्क दिया कि वफादार नागरिक बनने के लिए लोगों को केवल समुदाय और स्वयं पर ध्यान देना बंद करना होगा।

लोकतंत्र की सफलता के लिए व्यक्ति को आत्म-अनुशासन की कला में खुद को प्रशिक्षित करना चाहिए।

लोकतंत्र में खुद की कम और दूसरों की ज्यादा परवाह करनी चाहिए। कोई विभाजित निष्ठा नहीं हो सकती। सभी वफादारी विशेष रूप से राज्य के आसपास केंद्रित होनी चाहिए। यदि किसी लोकतंत्र में आप प्रतिद्वंदी निष्ठा पैदा करते हैं, या आप एक ऐसी व्यवस्था बनाते हैं जिसमें कोई व्यक्ति या समूह, अपनी फिजूलखर्ची को दबाने के बजाय, बड़े या अन्य हितों की परवाह नहीं करता है, तो लोकतंत्र बर्बाद हो जाता है।

(i) गोविंद बल्लभ पंत ने आत्म-अनुशासन की कला पर अधिक बल क्यों दिया?

उत्तर गोविंद बल्लभ पंत ने सुझाव दिया कि लोकतंत्र को सफल बनाने के लिए व्यक्ति को आत्म अनुशासित होना चाहिए। व्यक्तिगत लाभ के लिए व्यक्ति को कम परवाह करनी चाहिए और सामूहिक लाभ पर या

(ii) लोकतंत्र में दूसरों के लाभ पर अधिक ध्यान देना चाहिए। इसलिए प्रत्येक नागरिक में बलिदान का गुण

उत्तर होना चाहिए और बलिदान के इस चरित्र को अनुशासन के माध्यम से सीखा जा सकता है।

(iii) लोकतंत्र की सफलता के लिए क्या महत्वपूर्ण माना जाता था?

उत्तर लोकतंत्र की सफलता के लिए वफादारी का बंटवारा नहीं होना चाहिए और यह राज्य के इर्द-गिर्द केंद्रित होना चाहिए और नागरिकों को अपने लिए कम और साथी नागरिकों की अधिक परवाह करनी चाहिए।

'लोकतंत्र में व्यक्ति को स्वयं की कम और दूसरे की अधिक परवाह करनी चाहिए।' इस दर्शन पर अपने विचार दें।

लोकतंत्र का यह दर्शन बताता है कि एक को दूसरे के प्रति विचारशील होना चाहिए; व्यक्तिगत लाभ के लिए कुछ भी नहीं किया जाना चाहिए जो दूसरे व्यक्ति या लोगों के बड़े वर्ग के हितों को नुकसान पहुंचा सकता है। यह दर्शन व्यक्तिगत केन्द्रित के स्थान पर जन केन्द्रित लाभों की भावना को बढ़ावा देता है।

Q 2 **'हम सिर्फ नक़ल नहीं करने जा रहे हैं'।**

हम कहते हैं कि एक स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य का हमारा दृढ़ और गंभीर संकल्प है। भारत का संप्रभु होना अनिवार्य है, स्वाधीन होना ही है और गणतंत्र होना ही है…. खैर, मैंने उनसे कहा कि यह कल्पना की जा सकती है कि एक गणतंत्र लोकतांत्रिक नहीं हो सकता है लेकिन हमारा पूरा अतीत इस तथ्य का गवाह है कि हम लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए खड़े हैं।

जाहिर है, हमारा लक्ष्य लोकतंत्र है और किसी लोकतंत्र से कम नहीं। लोकतंत्र का कौन सा रूप है, यह क्या आकार ले सकता है यह एक और मामला है? वर्तमान समय के लोकतंत्रों ने, उनमें से कई यूरोप और अन्य जगहों पर, दुनिया की प्रगति में एक बड़ी भूमिका निभाई है। फिर भी यह संदेहास्पद हो सकता है कि अगर उन लोकतंत्रों को पूरी तरह से लोकतांत्रिक बने रहने के लिए बहुत पहले अपना आकार बदलना नहीं पड़ सकता है। मुझे उम्मीद है कि हम किसी तथाकथित लोकतांत्रिक देश की किसी लोकतांत्रिक प्रक्रिया या संस्था की सिर्फ नकल करने नहीं जा रहे हैं।

हम इसमें सुधार कर सकते हैं। किसी भी स्थिति में हम यहां सरकार की जो भी व्यवस्था स्थापित करें, वह हमारे लोगों के स्वभाव के अनुकूल होनी चाहिए और उन्हें स्वीकार्य होनी चाहिए। हम लोकतंत्र के लिए खड़े हैं। इस सदन को यह तय करना होगा कि उस लोकतंत्र, पूर्ण लोकतंत्र को क्या आकार दिया जाए, मुझे उम्मीद है कि सदन इस संकल्प में ध्यान देगा, हालांकि हमने "लोकतांत्रिक" शब्द का इस्तेमाल नहीं किया है क्योंकि हमने सोचा था कि यह स्पष्ट है कि शब्द "रिपब्लिक" में वह शब्द है और हमने इस शब्द का उपयोग करने के अलावा और भी बहुत कुछ किया है।

हमने इस संकल्प में लोकतंत्र की सामग्री दी है और न केवल लोकतंत्र की सामग्री बल्कि संदर्भ भी, अगर मैं इस प्रस्ताव में आर्थिक लोकतंत्र के बारे में कह सकता हूं। अन्य लोग इस प्रस्ताव पर इस आधार पर आपत्ति कर सकते हैं कि हमने यह नहीं कहा है कि यह एक समाजवादी राज्य होना चाहिए।

खैर, मैं समाजवाद के लिए खड़ा हूं और मुझे उम्मीद है कि भारत समाजवाद के लिए खड़ा होगा और भारत एक समाजवादी राज्य के संविधान की ओर जाएगा और मुझे विश्वास है कि पूरी दुनिया को उस रास्ते पर जाना होगा।

(i) "हम सिर्फ नकल नहीं करने जा रहे हैं"। यह किसने कहा?

उत्तर जवाहर लाल नेहरू

(ii) उपरोक्त परिच्छेद में दिए गए संविधान की तीन मूलभूत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर उपरोक्त परिच्छेद में दिए गए संविधान की तीन बुनियादी विशेषताएं हैं-

(अ) स्वतंत्र (ब) संप्रभु (स) गणराज्य।

(iii) नेहरू ने किस प्रकार के समाजवाद पर बल दिया?

उत्तर नेहरू समाजवाद के समर्थक थे और उन्होंने कहा कि भारत समाजवाद के लिए खड़ा होगा, जहां प्रत्येक नागरिक को विकास और विकास के समान अवसर प्रदान किए जाएंगे। आर्थिक लोकतंत्र और आर्थिक न्याय होगा।

Q 3 "ब्रिटिश तत्व चले गए लेकिन उन्होंने शरारत को पीछे छोड़ दिया" - सरदार वल्लभ भाई पटेल।

यह कहने का कोई फायदा नहीं है कि हम अलग निर्वाचन मंडल की मांग करते हैं, क्योंकि यह हमारे लिए अच्छा है। हमने इसे काफी देर तक सुना है। हमने इसे वर्षों से सुना है, और इस आंदोलन के परिणामस्वरूप अब हम एक अलग राष्ट्र हैं ... क्या आप मुझे एक स्वतंत्र देश दिखा सकते हैं जहां अलग निर्वाचक मंडल हैं? अगर ऐसा है तो मैं इसे स्वीकार करने के लिए तैयार रहूंगा। लेकिन इस बदकिस्मत देश में अगर देश के बंटवारे के बाद भी यह अलग मतदाता बना रहा तो देश का दुर्भाग्य है। यह रहने लायक नहीं है। इसलिए, मैं कहता हूं, यह केवल मेरे अच्छे के लिए नहीं है, यह आपके अपने अच्छे के लिए है कि मैं इसे कहता हूं, अतीत को भूल जाओ।

एक दिन, हम एकजुट हो सकते हैं… ब्रिटिश तत्व चला गया है, लेकिन उन्होंने शरारत को पीछे छोड़ दिया है। हम उस शरारत को कायम नहीं रखना चाहते। (सुनो सुनो)।

जब अंग्रेजों ने इस तत्व को पेश किया तो उन्हें उम्मीद नहीं थी कि उन्हें इतनी जल्दी जाना पड़ेगा। वे इसे अपने आसान प्रशासन के लिए चाहते थे। वह सब ठीक है। लेकिन वे विरासत को पीछे छोड़ गए हैं। क्या हमें इससे बाहर निकलना है या नहीं?

(i) पृथक निर्वाचक मंडल को एक शरारत क्यों माना जाता है?

उत्तर पृथक निर्वाचक मंडल को एक शरारत माना जाता था क्योंकि अल्पसंख्यकों को प्रतिनिधित्व देने और प्रशासन को आसान बनाने के नाम पर अंग्रेजों ने भारत के दो प्रमुख समुदायों को राजनीतिक रूप से विभाजित कर दिया था। बाद में पृथक निर्वाचन क्षेत्र के इस मुद्दे ने देश के विभाजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(ii) राजनीतिक एकता के निर्माण और राष्ट्र निर्माण के लिए सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा दिए गए तर्कों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर पटेल ने एक विधानसभा में कहा कि किसी भी स्वतंत्र देश में पृथक निर्वाचक मंडल का प्रावधान नहीं है। उन्होंने आगे कहा कि पृथक निर्वाचक मंडल कोई अच्छा काम नहीं कर सकता, इसलिए इसे भूल जाने में ही भलाई है। उन्होंने कहा कि राजनीतिक एकता के लिए इस मतदाता को जाना होगा। अंग्रेजों ने फूट डालो और राज करो की नीति पेश की। अंग्रेजों के बाद हमें अपने राष्ट्र की एकता के लिए इसे अस्वीकार कर देना चाहिए।

(iii) पृथक निर्वाचक मंडल के दर्शन का परिणाम एक अलग राष्ट्र में कैसे हुआ?

उत्तर पृथक निर्वाचक मंडल के दर्शन ने हिंदू और मुसलमानों को अलग-अलग राजनीतिक पहचान के रूप में देखा। यह माना जाता था कि हिंदुओं और मुसलमानों के हित आम नहीं थे, इसलिए मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करने के लिए केवल एक मुस्लिम होना चाहिए, इसी तरह हिंदू के लिए केवल हिंदू का प्रतिनिधित्व करना चाहिए। इस नीति ने लोगों को धर्म के आधार पर अलग कर दिया और राजनीतिक रूप से एक समुदाय को दूसरे से अलग रखना शुरू कर दिया। यह भारतीयों को धर्म के आधार पर बांटने के लिए था।

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

SUBJECT -HISTORY

CLASS –XII

SAMPLE QUESTION PAPER

Time Allowed :3 Hrs **Max. Marks: 80**

सामान्यनिर्देश:

(i) प्रश्नपत्र में पांच खंडहैं - ए, बी, सी, डीऔर ई।प्रश्नपत्र में 34 प्रश्न हैं।सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) खड़ ए – प्रश्न 1 से 21 प्रत्येक 1 अंक के वस्तुनिष्ट हैं।
(iii) खंड बी – प्रश्न संख्या 22से27लघुउत्तरीय प्रश्न हैं, जिनमें से प्रत्येक के 3 अंक हैं।प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 60-80 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
(iv) खंड सी – प्रश्नसंख्या 28 से 30 दीर्घउत्तरीय प्रश्न हैं, प्रत्येक के 8 अंक हैं।प्रत्येक प्रश्न का उत्तर300-350 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए |
(v) खंड़ डी – प्रश्न संख्या 31 से 33 तीन उपप्रश्नों के साथ स्रोत आधारित प्रश्न हैं और प्रत्येक 4 अंकों के हैं |
(vi) खंड-ई – प्रश्न संख्या 34 मानचित्र आधारित है | जिसमें 5 अंक हैं जिसमें महत्वपूर्ण परीक्षण वस्तुओं की पहचान और स्थान शामिल है।मानचित्र को उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न करें।
(vi) प्रश्नपत्र में कोई समग्र विकल्प नहीं है।हालांकि, कुछ प्रश्नों में आंतरिक विकल्प प्रदान किया गया है।ऐसे प्रश्नों में से केवल एक विकल्प का प्रयास करना है।
(vii) इसके अलावा, जहां आवश्यक हो, प्रत्येक अनुभाग और प्रश्न के साथ अलग-अलग निर्देश दिए गए हैं।
General Instructions:
Question paper comprises five Sections – A, B, C, D and E. There are 34 questions in the question paper. All questions are compulsory.
(ii) Section A – Question 1 to 21 are MCQs of 1 mark each.
Section B – Question no. 22 to 27 are Short Answer Type Questions, carrying 3 marks each. Answer to each question should not exceed 60-80 words.
Section C - Question no 28 to 30 are Long Answer Type Questions, carrying 8 marks each. Answer to each question should not exceed 300-350 words
Section D – Question no.31 to 33 are Source based questions with three sub questions and are of 4 marks each
Section-E - Question no. 34 is Map based, carrying 5 marks that includes the identification and location of significant test items. Attach the map with the answer book.
(vi)There is no overall choice in the question paper. However, an internal choice has been provided in few questions. Only one of the choices in such questions have to be attempted.
(vii)In addition to this, separate instructions are given with each section and question, where ever necessary.

	Section A 1X21=21	
1	निम्नलिखित जानकारी की सहायता से महाभारत के चरित्र की पहचान कीजिए। *गुरु या कौरवों और पांडवों के संरक्षक *एकलव्य को अपना शिष्य नहीं स्वीकार किया (अ)गुरु वशिष्ठ (ब)गुरु व्यास (स)गुरु संदीपनी(द)गुरु द्रोणाचार्य Identify the character of Mahabharata with the help of the following information. ***Guru or Mentor of Kaurvas and Pandvas** ***Did not accept Eklavya as his disciple** A. Guru Vashsishtha B. Guru Vyasa C. Guru Sandeepni D. Guru Dronacharya	1
2	निम्नलिखित में से कौन-सा/सेअभिलेखीय साक्ष्य की सीमाएँ हैं/हैं? (अ) शब्द गायब हो सकते हैं (ब) शब्द कमजोर उत्कीर्ण हो सकते हैं। (स) सटीकअर्थ निश्चित नहीं है। (द)उपरोक्त सभी Which of the following is/are the limitation(s) of inscriptional evidence? (A) Letters may be missing (B) Letters are faintly engraved. (C) Exact meaning is not certain. (D) All of the above	1
3	निम्नलिखित का मिलन करें: (अ)राखीगढ़ी (1)पाकिस्तान (ब)धोलावीरा (2) हरियाणा (स) कोट्दिजी (3)गुजरात सहीविकल्पचुने : A) a)-ii b-iii c-i B) a)-i b-ii c-iii C)a)-i b-iii c-ii D) a)-iii b-ii c-i Match the following- (a)-Rakhigarhi (i)- Pakistan (b)-Dholavira (ii)-Haryana (c)-Kotdiji (iii)-Gujarat Choose the correct option- (A)- a-ii, b-iii and c-i (B)- a-i, b-ii and c-iii (C)- a-i, b-iii and c-ii (D)- a-iii, b-ii and c-i	1

4	द्रौपदी ने शुरू में अपने बहुपति विवाह का विरोध किया लेकिन अंत में आश्वस्त हो गई क्योंकि: (अ) पांडवों की मां कुंती की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया जा सका। (ब) द्रष्टा व्यास ने उसे आश्वस्त किया कि यह उसके लिए नियत था। (स) उस समय शासक अभिजात वर्ग के बीच बहुपतित्व आमतौर पर प्रचलित था। (द) दोनों अ और ब Draupadi initially protested against her polyandrous marriage but at the end was convinced because: (a) The command of Kunti, mother of Pandavas could not be violated. (b) Seer Vyasa convinced her that it was destined for her. (c) Polyandry was commonly prevalent amongst ruling elites at those times. (d) Both (a) and (b).	1
5	उस शासक का नाम बताएं जिसके सिक्के निम्न दर्शाए गए हैं: : Name the ruler whose coin is shown in figure - अ) मेनांडर ब) सिकंदर स) सेल्युकस द)कनिष्क (A) Menander (B) Sikandar (C) Seleucus (D) Kanishka	1

6	स्तूप की संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें। I. हरमिका एक बालकनी जैसी संरचना है जो देवताओं के निवास का प्रतिनिधित्व करती है। II. हरमिका से एक मस्तूल निकलता था जिसे अंडा कहतेथे। III. एक यष्टि को अक्सर छतरी या छतरी से पार किया जाता था। IV. यष्टिहरमिकासेनिकलतीथी। (अ) I, II और III (ब) II, III और IV (स) I और IV (द) I, III और IV Consider the following statement regarding the structure of the Stupa. I. Harmika is a balcony- like structure that represented the abode of gods. II. A mast called the Anda arose from the Harmika. III. A Yashti was often surmounted by a Chhatri or umbrella. IV. Yashti arose from the Harmika. A. I, II and III B. II, III and IV C. I and IV D. I, III and IV	1
7	Which one of the following temples was used only by Vijayanagara rulers and their families? (अ)विट्ठलमंदिर (ब)विरुपाक्षमंदिर (स)हजाराराममंदिर (द)रघुनाथमंदिर A. The Vitthala Temple B. The Virupaksha Temple C. The Hazara Rama Temple D. The Raghunatha Temple	1

8	निम्नलिखित में से कौनसा कथन महानवमी डिब्बा के संबंध में सही है? (अ) महानवमी डिब्बा 'द किंग्स पैलेस कॉम्प्लेक्स' का हिस्सा था। (ब) महानवमी डिब्बा पवित्र केंद्र का एक हिस्सा था। (स). महानवमी डिब्बा एक परामर्श केंद्र' था (द) महानवमी डिब्बा एक "चर्चा केंद्र " था Which of the following statement is correct regarding Mahnavami Dibba? A. Mahnavami Dibba was part of 'The King's Palace Complex'. B. Mahnavami Dibba was a part of "Sacred Centre". C. Mahnavami Dibba was a 'Counselling Hall' D. Mahnavami Dibba was a "Discussion Hall'	1
9	'तवरम' किसकी कविताओं का संकलन है? (अ)अप्पार (ब)संबंदर (स)सुंदरर (द)उपरोक्तसभी Tevaram' is collection of Poem – A- Appar's B- Sambandar's C- Sundarar's D- All of these	1
10	कथन(A): कुछ हड़प्पा मुहरों पर योगी मुद्रा को प्रोटो-शिव के रूप में दर्शाया गया है। कारण(R)- प्रोटो-शिव ऋग्वेद में रुद्र के वर्णन से मेल खाते हैं। (अ) ए औरआरदोनों सत्य हैं और आर ए का सही स्पष्टीकरण है। (ब) एऔरआरदोनों सत्य हैं और आर ए का सही स्पष्टीकरण नहीं है। (स) A सत्य है और R असत्य है। (द) A असत्य है और R सत्य है | Assertoin (A)- The yogi posture on some Harappan seals is depicted as Proto-Shiva. Reason (R)- Proto-Shiva matches with description of Rudra in Rigveda. (A) Both A and R are true and R is the correct explanation of A. (B) Both A and R are true and R is not the correct explanation of A. (C) A is true and R is false. (D) A is false and R is true	1

11	अल-बिरूनी द्वारा लिखित पुस्तक का नाम है: (अ) द ट्रेवल्स इन मुगल एम्पायर (ब) किताब-उल-हिंद (स) रिहला (द) उपरोक्तसभी The book written by Al-Biruni is…… a)The Travels in Mughal Empire b) Kitab-Ul-Hind c) Rihla d) All of the above	1
12	Which among the following is Correctly matched? CENTRE LEADER केंद्र नेता **List I** **List II** **सूची-1** **सूची-2** A. Delhi — Nana Saheb B. Kanpur — Kunwar Singh C. Arrah — Bahadur Shah D. Lucknow — Birjis Qadr अ)दिल्ली — नाना साहिब ब)कानपुर — कुँवर सिंह स)आरा — बहादुरशाह द)लखनऊ — बिरजिस कद्र	1
13	नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। दावा (ए): संथालों को जमीन दी गई और राजमहल पहाड़ियों के चट्टानी ऊपरी हिस्से में बसने के लिए राजी किया गया। कारण (R) : अंग्रेजों ने पहाड़ी और संथालों को आदर्श आबादकार के रूप में देखा ए.दोनों (ए) और (आर) सही हैं और (आर) (ए) की सही व्याख्या है | बी. (ए) और (आर) दोनों सही हैं, लेकिन (आर) (ए) की सही व्याख्या नहीं है | सी (ए) सही है, लेकिन (आर) सही नहीं है | डी (आर) सही है, लेकिन (ए) सही नहीं है | **Given below are two statements, one labelled as Assertion(A) and the other labelled as Reason (R).** Assertion (A): The Santhals were given land and persuaded to settle in the rocky upper part of Rajmahal Hills. Reason (R): The British perceived Paharias and Santhals as ideal settlers A. Both (A) and (R) are correct and (R)is the correct explanation of (A) B. Both (A) and (R) are correct, but (R) is not the correct explanation of (A) C. (A) is correct, but (R) is not correct D. (R) is correct, but (A) is not correct	1

14	i)अल-बिरुनी का जन्म ख्वारिज़्म मे 973 मे हुआ। ii)सुल्तान महमूद गजनी ने ख्वारिज़्म पर 1091 मे आक्रमण किया। iii) अल-बिरुनी ने अरबी भाषा मे "किताबउल-हिन्द" नामक पुस्तक लिखी। कौन से सही वक्तव्य हैं: अ) ii और iii ब) iii स) iऔर ii द) iऔर iii I).Al-Biruni was born in Khwarizm in 973. II).Sultan Mahmud Ghazni attacked Khwarizm in 1091. III) Al-Biruni wrote a book in Arabic called"Kitab-UL-Hind". A. II & III B. III C. I & II D. I & III	1
15	'बेगार' शब्द का प्रयोग मुगलकाल में किसके लिए किया गया था- (अ) सवैतनिक श्रम (ब) अवैतनिकश्रम (स) दासश्रम (द) भिखारी The term 'begar' was used in the Mughal period for— a) paid labour b) unpaid labour c) slave labour d) beggar	1
16	तालुकदारकाक्याअर्थहै? (अ) एकव्यक्तिजोतालुकारखताहै(ब) एकव्यक्तिजोएकप्रांतरखताहै (स) एकव्यक्तिजोएकराज्यरखताहै(द) जमींदारकादूसरानाम। What does Taluqdar mean? a)A person who holds a Taluq b) A person who holds a Province c) A person who holds a State d) Another name of Zamindar.	1
17	स्थायी बंदोबस्त कब लागू हुआ? (अ) 1797 (ब) 1783 (स) 1793 (द) 1822 When did permanent settlement come into operation? (a)1797 (b) 1783 (c)1793 (d) 1822	1

18	निम्नलिखितमेंसेकौनसाविकल्पसहीहै? ए. गांधीजी ने 1920 में भारत छोड़ो मिशन की शुरुआत की। बी. गांधीजी ने अपना पहला भाषण बारडोली में दिया था। सी. गांधीजी ने कट्टरपंथी राष्ट्रवादी नेता के रूप में काम किया | Dडी. गांधीजी.के. गोखले उनके राजनीतिक गुरु के रूप में | Which of the following options is correct? A. Gandhi ji started Quit India Mission in 1920. B. Gandhiji gave his first speech in Bardoli. C. Gandhiji worked as radical nationalist leader D. Gandhi considered G.K. Gokhale as his political mentor	1
19	निम्नलिखित युग्मों में से ज्ञात कीजिए कि कौनसा सही सुमेलित नहीं है: (अ)लॉर्डवेलेस्ली: सहायक संधि (ब)लार्डडलहौजी: हड़पनीति का सिद्धांत (स)लॉर्डहेनरीहार्डिंग: एनफील्ड राइफल्स का परिचय दिया (द)लॉर्डकैनिंग: धार्मिक विकलांगता अधिनियम Find out from the following pairs which one is NOT correctly matched: A. Lord Wellesley: Subsidiary Alliance B. Lord Dalhousie: Doctrine of Lapse C. Lord Henry Hardinge: Introduced the Enfield rifles D. Lord Canning: Religious Disabilities Act	1
20.	"ब्रिटिशतत्व चलागयाहै, लेकिन उन्होंने शरारत को पीछे छोड़ गए है" यह कथन किसने कहा: (अ) महात्मागांधी (ब) जवाहरलालनेहरू (स) सरदारबल्लभभाईपटेल (द)एम.ए. जिन्ना। ."The British element is gone, but they have left the mischief behind".who said this statement: a) Mahatama Gandhi b) Jawaharlal Nehru c) Sardar Ballabh bhai Patel d)M.A. Jinnah	1

21.	निम्नलिखित में से किस भाषा को गांधीजी ने राष्ट्रीय भाषा के रूप में पसंद किया था? (अ)हिंदी (ब)उर्दू (स)हिंदुस्तानी (द)अंग्रेजी Which one of the following languages was favored by Gandhiji as the national language? (A) Hindi (B) Urdu (C) Hindustani (D) English	1
	SECTION B **SHORT ANSWER TYPE QUESTIONS 3X6=18**	
22	पुरातत्वविदों और इतिहासकारों को हड़प्पा लिपि गूढ़ क्यों लगती है? कारण स्पष्ट कीजिए। Why do archaeologists and historians find Harappan script enigmatic? Explain reasons. or शुरुआती हड़प्पा पुरातत्वविदों ने सोचा था कि कुछ वस्तुएं जो असामान्यऔरअपरिचित लगती हैं, उनका धार्मिक महत्व हो सकता है'।पुष्टिकरें। 'Early Harappan archaeologists thought that certain objects which seem unusual and unfamiliar may have had a religious significance'. Substantiate.	3
23	भारत के राजनीतिक और आर्थिक इतिहास को समझने में अभिलेखीय साक्ष्यों की सीमाओं का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। Critically examine the limitations of the inscriptional evidences in understanding political and economic history of India.	3
24	अल-बिरूनी के जाति व्यवस्था के विवरण की व्याख्या करें। Explain Al-Biruni's description of caste system.	3
25	विजयनगर साम्राज्य के विस्तार में कृष्णदेवराय के योगदान पर प्रकाश डालिए। Highlight the contribution of Krishnadeva Raya in the expansion of Vijayanagara empire.	3
26	"कुदाल और हल के बीच की लड़ाई लंबी थी"। 18वीं शताब्दी के दौरान राजमहल पहाड़ियों के संथाल और पहाड़ियाओं के संदर्भ में इस कथन की पुष्टि कीजिए। "The battle between the hoe and plough was a long one". Substantiate the statement with reference to the Santhal and Paharias of Raj Mahal Hills during 18th century.	3

27	विशिष्ट उदाहरणों की सहायता से 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों के विरुद्ध उभरे भारतीय नेतृत्व की प्रकृति का परीक्षण कीजिए। With the help of specific examples examine the nature of Indian leadership that emerged against British in the revolt of 1857. Or "अफवाहों और भविष्यवाणियों ने 1857 के विद्रोह के दौरान लोगों को सक्रिय करने में एक भूमिका निभाई।" अफवाहों और इसके विश्वास के कारणों के साथ कथन का परीक्षण करें। "Rumours and prophecies played a part in moving the people into action during the revolt of 1857." Examine the statement with rumours and reasons for its belief.	3
28	"धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रों में वर्णों की चार श्रेणियों के आदर्श व्यवसायों के बारे में भी नियम हैं।" कथन का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। "The Dharmasutras and Dharmashastras also contained rules about the ideal occupations of the four categories of varnas." Critically examine the statement. Or ब्राह्मणवादी अभ्यास में दिए गए गोत्र के नियम क्या हैं? यह दिखाने के लिए कुछ उदाहरण दीजिए कि इन नियमों का हमेशा पालन नहीं किया जाता था। What are the rules of gotra as given in Brahmanical practice? Give some example to show that these rules were not always followed.	8
29	कमियों के बावजूद, आइन-ए-अकबरी अपने समय का एक असाधारण दस्तावेज बना हुआ है।कथन की व्याख्या कीजिए। Inspite of the limitations, the Ain-i Akbari remains an extraordinary document of its time. Explain the statement. Or "मुगलकाल के दौरान ग्राम पंचायत ग्रामीण समाज को नियंत्रित करती थी।कथन की व्याख्या कीजिए। "The village panchayat during the Mughal period regulated rural society. Explain the statement.	8

30	1930 का नमक सत्याग्रह पहली घटना थी जिसने महात्मा गांधी की ओर दुनिया का ध्यान आकर्षित किया।" स्वराज के लिए इस आंदोलन के महत्व की व्याख्या करें। "The salt march of 1930 was the first event that brought Mahatma Gandhi to world attention." Explain significance of this movement for Swaraj. Or राष्ट्रवाद के इतिहास में गांधीजी की पहचान अक्सर राष्ट्रनिर्माण के साथ की जाती थी। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका का वर्णन कीजिए। In the history of nationalism Gandhiji was often identified with the making of a nation. Describe his role in the freedom struggle of India.	8
	SECTION -D **Source Based Questions** **4x3=12**	

31.	संसार (स्थानांतरण) के दौरान नहीं बदला जा सकता है।इसे न तो कम किया जा सकता है और नही एक गेंद के रूप में बढ़ाया जा सकता है जब डोरी को फेंका जाएगा तो वह अपनी पूरी लंबाई तक खुल जाएगी, इसलिए मूर्ख और बुद्धिमान समान रूप से अपना काम करेंगे और दुख का अंत करेंगे।" और अजीता के साकम्बलिन नामक एक दार्शनिक ने यही सिखाया है: "ऐसी कोई चीज नहीं है, राजा, भिक्षा या बलिदान, या प्रसाद ... इस दुनिया या अगले जैसी कोई चीज नहीं है| मनुष्य चार तत्वों से बना है।जब वह मर जाता है तो उसमें की मिट्टी वापस आ जाती है पृथ्वी, द्रव से जल, उष्मा से अग्नि, वायु से वायु और उसकी इन्द्रियाँ अन्तरिक्ष में जाती हैं।उपहारों की बात करना मूर्खों का सिद्धांत है, एक खाली झूठ मूर्ख और बुद्धिमान समान रूप से काट दिए जाते हैं और नष्ट हो जाते हैं।वे मृत्यु के बाद जीवित नहीं रहते।" पहला शिक्षक आजीविकों की परंपरा से संबंधित था। उन्हें अक्सर भाग्यवादी के रूप में वर्णित किया गया है: जो मानते हैं कि सब कुछ पूर्व निर्धारित है।दूसरा शिक्षक लोकायतों की परंपरा से संबंधित था, जिसे आमतौर पर भौतिकवादी के रूप में वर्णित किया गया था।इन परंपराओं के ग्रंथ नहीं बचे हैं, इसलिए हम उनके बारे में अन्य परंपराओं के कार्यों से ही जानते हैं। ii. अजातशत्रु कौन था? 1 ii. मक्खली गोशाल किसमें विश्वास करती थी? 1 iii. भाग्यवादी कौन थे? वे भौतिकवादियों से किस प्रकार भिन्न थे? 2 **Fatalists and Materialists**? Here is an excerpt from the Sutta Pitaka, describing a conversation between king Ajatasattu, the ruler of Magadha, and the Buddha : On one occasion King Ajatasattu visited the Buddha and described what another teacher, named MakkhaliGosala, had told him : "Though the wise should hope, by this virtue ... by this penance I will gain karma and the fool should by the same means hope to gradually rid himself of his karma, neither of them can do it. Pleasure and pain, measured out as it were, cannot be altered in the course of samsara (transmigration). It can neither be lesseneed or increased just as a ball of string will whenthrown unwind to its full length, so fool and wise alike will take their course and make an end of sorrow." And this is what a philosopher named Ajita Kesakambalin taught : "There is no such thing, 0 king, as alms or sacrifice, or offerings ... there is no such thing as this world or the next A human being is made up of the four elements. When he dies the earthy in him returns to the earth, the fluid to water, the heat to fire, the windy to air, and his senses pass into space.Thetalk of gifts is a doctrine of fools, an empty lie fools and wise alike are cut off and perish. They do not survive after death." The first teacher belonged to the tradition of the Ajivikas. They have often been described as fatalists : those who believe that everything is predetermined. The second teacher belonged to the tradition of the Lokayatas, usually described as materialists. Texts from these traditions have not survived, so we know about them only from the works of other traditions. i.Who was Ajatasattu? 1 ii. What did MakkhaliGosala believe in? 1 iii. Who were fatalists? How were they different from Materialists? 2	

32	यहाँ कबीर को समर्पित एक रचना दी गईहै: हेभाई, यह बताओ,यह किस तरह हो सकता है कि संसार के एक नही दो स्वामी हो? आपको इतना भटका किसने दिया? भगवान को कई नामों से पुकारा जाता है: अल्लाह, राम, करीम, केशव, हरि और हज़रत जैसे नाम।सोने को अंगूठियों और चूड़ियों में आकार दिया जा सकता है।क्या यह सब सोना नहीं है? भेद केवल शब्दों में हैं जिनका हम आविष्कार करते हैं ... कबीर कहते हैं कि वे दोनों गलत हैं।इनमे से कोई एक राम को प्राप्त नही कर सकता।एक बकरी को मारता है, दूसरा गायों को।वेवाद-विवाद में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। I विभिन्न समुदाय के देवताओं के बीच किए गए भेद के विरुद्ध कबीर का क्या तर्क है? 2 ii. वह भगवान के लिए किस प्रकार के नामों का उल्लेख करता है? 1 iii) कबीर के अनुसार भेद क्या हैं? 1 **Here is a composition attributed to Kabir:** Tell me, brother, how can there be No one lord of the world but two? Who led you so astray? God is called by many names: Names like Allah, Ram, Karim, Keshav, Hari, and Hazrat. Gold may be shaped into rings and bangles. Isn't it gold all the same? Distinctions are only words we invent ... Kabir says they are both mistaken. Neither can find the only Ram. One kills the goat, the other cows. They waste their lives in disputation. i. What is Kabir's argument against the distinction made between gods of different communities? 2 ii. Which types of names does he refer for God? 1 iii)What are distinctions according to Kabir? 1	4

33.	"ब्रिटिशतत्व चला गया है, लेकिन उन्होंने शरारत को पीछे छोड़ दिया है"। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा: यह कहने का कोई फायदा नहीं है कि हम अलग निर्वाचक मंडल की मांग करते हैं, क्योंकि यह हमारे लिए अच्छा है। हमने इसे काफी देर तक सुना है।हमने इसे वर्षों से सुना है, और इस आंदोलन के परिणामस्वरूप अब हम एक अलग राष्ट्र हैं.... क्या आप मुझे एक स्वतंत्र देश दिखा सकते हैं जहां अलग निर्वाचक मंडल हैं? अगर ऐसा है तो मैं इसे स्वीकार करने के लिए तैयार रहूंगा।लेकिन इस बदकिस्मत देश में अगर यही पृथक निर्वाचकमंडल कायम रहने वाला है; देश के बंटवारे के बाद भी देश पर धिक्कार है; यह रहने लायक नहीं है।इसलिए, मैं कहता हूं, यह केवल मेरे अच्छे के लिए नहीं है, यह आपके अपने अच्छे के लिए है कि मैं इसे कहता हूं, अतीत को भूल जाओ।एक दिन हम एकजुट हो जाएं.... ब्रिटिशतत्व चले गए, लेकिन उन्होंने शरारत को पीछे छोड़ दिया है।हम उस शरारत को कायम नहीं रखना चाहते। (सुनसुन)।जबअंग्रेजों ने इस तत्व को पेश किया तो उन्हें उम्मीद नहीं थी कि उन्हें इतनी जल्दी जाना पड़ेगा।वे इसे अपने आसान प्रशासन के लिए चाहते थे।वह सब ठीक है।लेकिन वे विरासत को पीछे छोड़ गए हैं।क्या हमें इससे बाहर निकलना है या नहीं? I)पृथक निर्वाचक मंडल को एक शरारत क्यों माना जाता है? 1 II) पृथक निर्वाचक मंडल का सिद्धांत अलग राष्ट्र के सिद्धांत में कैसे परिवर्तित हुआ? 1 III)राजनीतिक एकता के निर्माण और एक राष्ट्र बना रहे, के लिये सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा दिए गए तर्कों का उल्लेख कीजिए। 2 **“The British element is gone, but they have left the mischief behind”.** SardarVallabh Bhai Patel said: It is no use saying that we ask for separate electorates, because it is good for us. We have heard it long enough. We have heard it for years, and as a result of this agitation we are now a separate nation..... Can you show me one free country where there are separate electorates? If so, I shall be prepared to accept it. But in this unfortunate country if this separate electorate is going to be persisted in; even after the division of the country, woe betide the country; it is not worth living in. Therefore, I say, it is not for my good alone, it is for your own good that I say it, forget the past. One day, we may be united..... The British element is gone, but they have left the mischief behind. We do not want to perpetuate that mischief. (Hear, hear). When the British introduced this element they had not expected that they will have to go so soon. They wanted it for their easy administration. That is all right. But they have left the legacy behind. Are we to get out of it or not? I)Why are separate electorate considered as a mischief? 1 II) How did the philosophy of separate electorates result in separate nation? 1 III) State the arguments given by Sardar Vallabh Bhai Patel for building political unityand forging a nation. 2	4
	SECTION E **Map Based Question 1x5=5**	

34	34.1) भारत के दिए गए राजनीतिक मानचित्र पर, उपयुक्त प्रतीकों के साथ निम्नलिखित का पता लगाएँ और लेबल करें: I -अमरावती – एक स्तूप II- राखीगढ़ी- सिंधु घाटीस्थल III- आगरा- क्षेत्र मुगलों के नियंत्रण में अथवा विजयनगर- विजयनगर साम्राज्य की राजधानी (34.2) उसी रूपरेखा मानचित्र पर, दो स्थानों को 'ए और बी' के रूप में चिह्नित किया गया है, 1857 के विद्रोह के केंद्रों के रूप में उन्हें पहचानें और उनके पास खींची गई रेखाओं पर उनके सही नाम लिखें | (34.1) On the given political map of India, locate and label the following with appropriate symbols: I.Amravati – A Stupa II.Rakhigarhi- Indus Valley Site III.Agra-Territory Under the Control of Mughals OR Vijayanagar- Capital of Vijayanagar empire (34.2) On the same outline map, two places have been marked as 'A and B,as the centres of the Revolt of 1857 Identify them and write their correct names on the lines drawn near them.	5

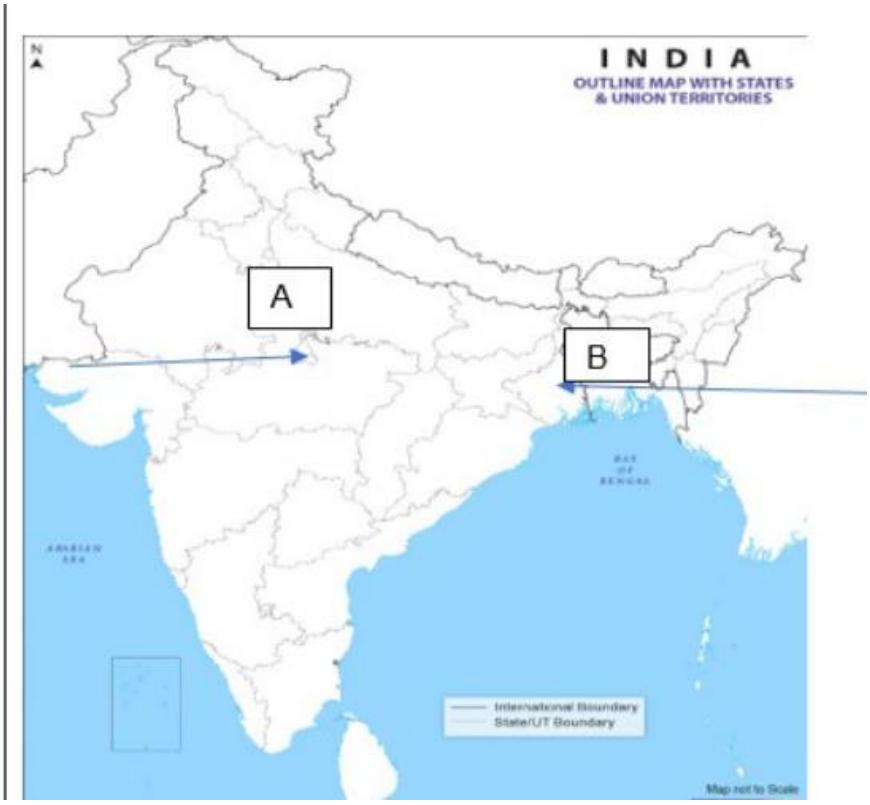
INDIA
OUTLINE MAP WITH STATES
& UNION TERRITORIES
N
A
B
BAY OF BENGAL
ARABIAN SEA
International Boundary
State/UT Boundary
Map not to Scale

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

MARKING SCHEME

2024-25

QUESTION NO.	ANSWER
1	D
2	D
3	A
4	B
5	A
6	D
7	C
8	B
9	D
10	A
11	B
12	D
13	A
14	D
15	B
16	A
17	C
18	D
19	D
20	C
21	C

MARKING SCHEME- QUESTION NO. 22-34

Q.NO.	ANSWERS OF QUESTIONS
22	Archaeologists and historians found Harappan script enigmatic. The reasons behind it were: • Harappan seals usually had a line of writing, containing the name and title of the owner, sometimes the motif conveyed a meaning to those who could not read. • The script was non-alphabetical, it had many signs, somewhere between 375 and 400. It was written from right to left. • Most inscriptions were short, the longest contained about 26 signs, each sign stood for a vowel or consonant. Sometimes it contained wider space, sometimes shorter, had no consistency. Till today, the script remains undeciphered. OR 1. Archaeologists thought that certain objects which seemed unusual or unfamiliar may have had a religious significance. These included Answer: Giving archaeologic interpretation to reconstruct religious practices of Harappan civilisation was not easy. The important facts to reconstruct the religious belief of the Harappan period are as follows: terracotta figurines of women, heavily jewelled with elaborate head dresses. These were regarded as mother Goddesses. 2. Rare stone statuary of men seated with one hand on the knee was regarded as 'priest king'. Other structures found in Harappan Civilisation, like the great bath and fire altars found at Kalibangan and Lothal also were taken as significant for ritual practices. 3. Attempts were made to reconstruct religious beliefs and practices by examining different seals. 4. Mythical creatures like unicorn, figure seated cross-legged in yogic posture, sometimes surrounded by animals, regarded as 'proto-shiva' were all examples of Hindu religion. Conical stone objects were classified as Tingas'. Many reconstructions of Harappan religion are made on the assumption that later traditions provide similarity with earlier ones. It follows from the rule that archaeologists try to know the facts by following the process of 'known to the unknown.' Thus, reconstructing religious practices was not easy for the archaeologists.
23	Inscriptions are important source to know history. But there are certain limitations of

	inscriptions. These were: 1. Several thousands of inscriptions were discovered, but not all of them were deciphered or translated. 2. Generally, inscriptions were composed in praise of kings and patrons, e.g. Prayaga Prashasti was composed in Sanskrit by Harisena, the court poet of Samudragupta. From this inscription, we know about the generosity, administrative capabilities of the king Samudragupta who was described as equal to different deities. 3. The context of the inscription invariably projected the perspective of the person who commissioned it. But it was not recorded what we consider politically and economically significant facts of that period. For example, routine agricultural practices, the joys and sorrows of common people were not mentioned in these inscriptions. History is not only the histories of kings, it includes different social groups and even marginalised sections of our society. 4. From mid-20th century historians' become more interested in political and economic changes of society (e.g. the ways in which different social groups emerged). This lead to fresh investigations of old sources and in this respect, inscription had its own limitations to interpret political and economic history of India.
24	Al-Biruni's description of the caste system was influenced by his study of the Sanskrit texts. These texts written by the Brahmanas and followed the four divisions of varna. Al-Biruni accepted this division. According to him, the Brahmana was created from the head of God, Brahma and regarded as the highest caste of society. The next caste was Kashatriyas, who were created from the shoulders and hands of Brahma. After them followed the Vaishyas, who were created from the thigh of Brahma. The Shudras were created from the feet of Brahma. However, as these classes differed from each other, they lived together in the same town and villages, mixed together in the same houses and lodgings. In real life, this system was not quite as rigid
25	The most famous ruler of Vijayanagara, Krishnadeva Raya (1509-29) belonged to the Tuluva dynasty. His rule was characterised by expansion and consolidation in the following ways: The land between the Tungabhadra and Krishna rivers (the Raichur Doab) was acquired by Krishnadeva Raya in 1512. In 1514, rulers of Odisha were subdued and Sultan of Bijapur was defeated in 1520. He made his kingdom so extensive that many smaller kingdoms allied with it and showed their respect to Raja Krishnadeva Raya. His kingdom remained in a constant state of military preparedness. It flourished under the conditions of unparalleled peace and prosperity at the time of Krishnadeva Raya.
26	Santhal came to Bengal around 1780. Zamindars hired them to reclaim land and

	expand cultivation. British invited Santhals to settle in the Jangal Mahal, when they failed to subdue Paharias. The Paharias refused to cut the forest, resisted touching the plough and continued to be turbulent. On the other hand, Santhal appeared to be ideal settlers, clearing the forest and ploughing the land with vigour. Santhal settlements and cultivation gradually expanded and Paharias were forced to withdraw deeper into hills and were confined to dry interior and to more barren and rocky upper hills. This severely affected their lives, impoverishing them in the long term. If paharia life was symbolised by the hoe, which they used for shifting cultivation, the Santhals' life represented the power of the plough. The battle between the hoe and plough was really a long one.
27	During the revolt few leaders participated very enthusiastically while some other participated because they had no choice. They had to participate in the revolt for the sake of their reputation. For e.g. Bahadur Shah was reluctant to join the rebellion but due to demands of sepoys, he joined the revolt and it was fought under his name. Similarly, sepoys and people of Kanpur choose Nana Sahib as their leader and he joined the revolt. Rani Lakshmibai of Jhansi participated because her kingdom had been annexed to empire by 'Doctrine of Lapse' and there was also popular pressure on her to take the leadership. In Awadh, their was deep resentment against annexation, dispossession of nawab and oppressive rule of British. People of Awadh declared Birjis Qadar, the young son of dispossessed Nawab as their leader. Apart from the royal families, local leaders also emerged during the revolt like Kuwar Singh in Arrah, fakir in Lucknow, Shah Mai in Barout and Gonoo, a tribal cultivator in Singhbhum. Although the leaders of 1857 revolt participated in this war, but they had separate goals which made the revolt unsuccessful against British. **Or** It is true that rumours and prophecies played a part in moving people to action during the revolt of 1857. These rumours were as follows: 1. During 1857 revolt, there was an apparent rumour that the Indian sepoys were intentionally given the Enfield rifles, and its bullets were coated with the fat of cows and pigs and biting those bullets would corrupt their caste and religion. 2. The British tried to explain to the sepoys that this was not the case but the rumour that the new cartridges were greased with the fat of cows and pigs which spread like wildfire across the sepoy lines of North India.

	3. This is one rumour whose origin can be traced. Captain Wright, commandant of the Rifle Instruction Depot, reported that in the third week of January 1857 a 'low-caste' Khalasi who worked in the magazine in Dum Dum had asked a Brahmin sepoy for a drink of water from his lota. The sepoy had refused saying that the lower caste's' touch would defile the lota. The Khalasi had reportedly retorted, "You will lose your caste, as ere long you will have to bite cartridges covered with the fat of cows and pigs". 4. The truthfulness of the report had not identified but once this rumour started no amount of assurances from British officers could stop its circulation and the fear of it spread among the sepoys.
28	The Dharmasutras and Dharmashastras contained rules about the ideal occupations of four categories of varnas. These categories are as follows: Brahmanas were supposed to study and teach the Vedas, perform sacrifices and get sacrifices performed and give and receive gifts. Kshatriyas were to engage in warfare, protect people and administer justice, study the Vedas, get sacrifices performed and make gifts. Vaishyas were also assigned to study the Vedas, get sacrifices performed and make gifts as the Kshatriyas and in addition were expected to engage in agriculture, pastoralism and trade. Shudras were assigned only one occupation i.e. of serving the three 'higher' varnas. In addition to assigning these occupations to the four varnas, the Brahmanas evolved two or three strategies for enforcing these norms. **Or** Brahmanical practice from 1000 BCE onwards classified people in terms of gotra. Each gotra was named after a vedic seer. All those who belonged to the same gotra were regarded as the descendants of the particular vedic seer. Two rules about gotra were particularly important. These were: 1. Women were expected to give up their father's gotra and adopt their husband's gotra on marriage. 2. Members of the same gotra could not marry. But always these rules were not followed. Many women who married Satavahana rulers retained their father's name instead of adopting names derived from their husband's gotra. For example, there were Satavahana rulers who were recognised by their mother's name, like Gotami-puta Siri-Satakani, Vasithi-puta (Sami) Siri-Pulumayi, etc. This meant that these women did not adopt their husband's gotra name and rejected the Brahmanical rules. Moreover, some of these women belonged to the same gotra, i.e. the gotras of their father and husband were same. This was against the rules of exogamy (referred to marriage outside the unit), recommended by the Brahmanieal seriptures.

29	The major sources for the agrarian history of the 16th and early 17th centuries are chronicles and documents from the Mughal court. One of the most important chronicles was the Ain-i Akbari. Ain was authored by Akbar's court historian Abu'l Fazl. This text meticulously recorded the arrangements made by the state to ensure cultivation to enable the collection of revenue by the agencies of the state and to regulate the relationship between the state and the zamindars. Ain-i Akbari was not a mere reproduction of official papers. Abu'l Fazl had worked very carefully to search the authenticity of the documents. He tried to cross-check and verify oral testimonies before incorporating them as facts in the chronicle. This was why that the text achieved its final form only after having gone through five . revisions. But there are some problems in using the Ain-i Akbari as a source for reconstructing agrarian history of that period. These are: • We should realise that the Ain-i-Akbari was penned under patronship of the emperor. It was a part of larger royal project of history writing. Its main objective was to depict the Mughal empire under Akbar in such a way as to prove that social harmony was provided by a strong ruling class in the empire. • The totalling given in the Ain-i Akbari are not thoroughly accurate. We find numerous errors in the totalling. • Another problem while using the Ain-i Akbari as a source for reconstructing agrarian history is that the quantitative data given in it is of skewed nature. • Similarly, though the fiscal data from the provinces has been given in detail, sufficient light had not been thrown on vital parameters such as prices and wages of the same areas. **or** The Panchayat and villagemen occupied a significant place in rural society during the period of the 16th and 17th centuries. They played an important role in regulating the rural society. Generally the Village Panchayat was an assembly of important and respected elders of the village having hereditary rights over their property Every Panchayat was headed by a headman who was known as Muqaddam or Mandal. The headman could hold his office as long as he enjoyed the confidence of the village elders. He had to lose his position if he failed to win the confidence of the elders. The Panchayat had its own funds. All the villagers contributed to a common financial pool. All expenditures of the Panchayat were met from these funds. The functions of Panchayat are: 1.The Panchayat was responsible for the administration of the village. All the functions such as security, health, and cleanliness, primary education, law and order, irrigation, construction work and making arrangements for the moral and religious upliftment of the masses were performed by the Panchayat. One of the main function of the Panchayat was to keep accounts of the income and expenditure of the village. It

	used to accomplish this task with the help of the accountant or patwari of the Panchayat. 2.The most important function of the Panchayat in medieval India was to regulate the rural society The Panchayat endeavoured to ensure that the various communities inhabiting the village were up holding their caste limits and were following their caste norms as well. Thus, overseeing the conduct of the members of the village community in order to prevent any offence against their caste w'as an important duty of the village headman or mandal. In addition to the village Panchayat, each caste or jati in the village had its own Jati Panchayat. The caste Panchayat protected the rights and interests of its members and raised voice against any injustice caused to them. The members of a particular caste could complain to their Panchayat in case the members of a superior caste or state officials forced them to pay taxes or to perform unpaid labour. Villagers regarded the village Panchayat as the court of appeal that would ensure that the state carried out its moral obligations and guaranteed justice. The decision of the Panchayat in relation to conflicts between 'lower caste' peasants and state officials or lower zamindars could vary from case to case. Sometimes panchayat suggested to compromise and in cases where reconciliation failed, peasants took their own decisions. 3. The Panchayats had the authority to levy fines and inflict more serious forms of punishment like expulsion from the community. These meant that the person was forced to leave the village and became an outcaste and he lost the right to practise his profession. Such a measure was taken on a violation of caste norms.
30	On 26th January, 1930, 'Republic Day' was observed, with the National Flag being hosted in different venues, the patriotic songs being sung and after the observance of this day, Mahatma Gandhi announced that he would lead a march to break one of the most widely disliked laws in British India. The law which gave the state a monopoly in the manufacture and sale of salt. The conditions in the country had become very favourable to launch a widespread movement against the British, the movement was started with famous Dandi March on 12th March, 1930. Gandhiji alongwith 78 of his followers began his foot march from Sabarmati Ashram to Dandi, a village of seashore in Surat district, about 375 km away from Sabarmati Ashram. The violation of salt law by Gandhiji was a signal of the beginning of Civil Disobedience Movement. Soon, this movement spread like wildfire through the length and breadth of the country. Gandhiji's Dandi March occupies a very significant place in the history of the freedom struggle of India because of several reasons: • This march made Gandhiji a centre of attraction of the whole of the world. The European press and the American press published detailed accounts of the Salt March conducted by Gandhiji.

• Undoubtedly it was the first National Movement in which women participated in large numbers. Kamala Devi Chattopadhyay, the renowned socialist worker advised Gandhiji not to keep the movements limited to men-folk only. A large number of women alongwith Kamala Devi violated the salt and liquor laws and courted arrest collectively.
• As a result of the salt movement, the colonial rulers understood it clearly that their authority was not going to remain permanent in India and now they will have to give some participation to the Indians in power.

Or

The period of 1919-1947 occupies a very important place in the history of the Indian freedom struggle. It was the third and the final phase of the Indian freedom struggle. It was during the period that a great personality entered the Indian political scene with several weapons like Satyagraha, Non-Cooperation and Civil Disobedience, based on truth and non-violence and soon became the pioneer of the National Movement. This period is generally known as the 'Gandhian Era', Gandhiji transformed the nature of the National Movement and it became a mass movement.

Gandhiji transformed the National Movement of the masses by following his new technique of struggle based on the principle of Satyagraha and Civil Disobedience. Indian nationalism witnessed a transformation in its nature with the active participation of Gandhiji in Indian National Movement. The mass appeal of Gandhiji was undoubtedly genuine. His qualities of efficient leadership made a remarkable contribution in making the base of Indian nationalism wider. It is worth mentioning that the provincial committees of the Congress were formed on linguistic regions

and not on the artificial boundaries of the British India. These different ways contributed greatly to take nationalism to the distant corners of the country.

Consequently, the social groups previously untouched by nationalism, now became an important part of it. Thousands of peasants labourers and artisans started participating in the National Movement. Similarly the common masses participated in the Civil Disobedience Movement significantly. In Delhi, some 1600 women picketed the liquor shop. In the same way, Quit India Movement became genuinely a Mass Movement, hundreds of thousands of ordinary Indians participated in it.

Besides the common Indian, some very prosperous businessmen and industrialists too became supporters of the Indian National Congress. They came to realise it well that the favours enjoyed by their British competitors would come to them in free India.

Consequently, some renowned industrialists such as GD Birla started supporting the national movement openly whereas some others began to do so tactly. Thus, the followers and admirers of Gandhiji included both the peasants and the rich industrialists. Thus, under Gandhiji the National Movement was transformed into a Mass Movement.

31	**Source Based Question**
32	**Source Based Question**
33	**Source Based Question**
34	34.1 MAP- (i) Amravati Stupa (ii) Rakhigarhi (iii) Agra Or Vijayanagar 34.2 MAP A-Jhansi B- Calcutta

Sample Paper-(2024-25)
CLASS – XII
SUBJECT – HISTORY

MM – 80 **TIME-03:00HRS**

Instructions:

1. The Question paper comprises five Sections – A, B, C, D, and E. There are 34 questions in the question paper. All questions are compulsory.
2. Section A – Questions 1 to 21 are MCQs of 1 mark each.
3. Section B – Questions no. 22 to 27 are Short Answer Type Questions, carrying 3 marks each. The Answer to each question should not exceed 60-80 words.
4. Section C - Questions no 28 to 30 are Long Answer Type Questions, carrying 8 marks each. Answer to each question should not exceed 300-350 words.
5. Section D – Questions no.31 to 33 are Source-based questions with three sub-questions and are of 4 marks each.
6. Section-E - Question no. 34 is Map based, carrying 5 marks that include the identification and location of significant test items. Attach the map with the answer book.
7. There is no overall choice in the question paper. However, an internal choice has been provided in a few questions. Only one of the choices in such questions has to be attempted.
8. In addition to this, separate instructions are given with each section and question, wherever necessary.

निर्देश:-

1. प्रश्नपत्र में पांच खंड शामिल हैं - क, ख, ग, घ और ङ।प्रश्न पत्र में 34 प्रश्न हैं।सभी प्रश्न अनिवार्य हैं |

2. खंड क - प्रश्न 1 से 21 प्रत्येक 1 अंक के बहुविकल्पीय प्रश्न हैं।

3. खंड ख – प्रश्न संख्या 22 से 27 लघुउत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं, प्रत्येक 3 अंक का है।प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 60-80 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

4. खंड ग - प्रश्नसंख्या 28 से 30 दीर्घउत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं, जिनमें से प्रत्येक के लिए 8 अंक हैं।प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300-350 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

5. खंड घ - प्रश्नसंख्या 31 से 33 तीन उप-प्रश्नों के साथ स्रोत-आधारित प्रश्न हैं और प्रत्येक 4 अंक का है।

6. खण्ड ङ – प्रश्न संख्या. 34 मानचित्र-आधारित है, जिसमें 5 अंक हैं जिनमें महत्वपूर्ण परीक्षण वस्तुओं की पहचान और स्थान शामिल हैं।उत्तर पुस्तिका के साथ मानचित्र संलग्न करें।

7. प्रश्नपत्र में समग्र रूप से कोई विकल्प नहीं है।हालाँकि, कुछ प्रश्नों में आंतरिक विकल्प प्रदान किया गया है।ऐसे प्रश्नों में से केवल एक विकल्प का ही प्रयास करना होता है।

8. इसके अतिरिक्त, जहां भी आवश्यक हो, प्रत्येक अनुभाग और प्रश्न के साथ अलग-अलग निर्देश दिए गए हैं।

	SECTION – A (खंड- क)	1x21 =21
S.N. **क्र.सं.**	**OBJECTIVE TYPE QUESTIONS** (**वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न**)	
1.	Why the Harappan script called enigmatic? हड़प्पालिपि को गूढ़ लिपि क्यों कहा जाता है? A) it resembles the hieroglyphic script of Egypt. यह मिश्र की चित्रलिपि से मिलती जुलती है। B) it had too many symbols ,between 600 to 1000. इसके कई प्रतीक थे, 600 से	1

	1000 के बीच। C) it was written from left to right. यह बाएं से दाएं लिखा गया था। D) Its writing remains undecipherable. इसका लेखन अपठनीय है।	
2.	Match the following- (a)-Rakhigarhi (i)- Pakistan (b)-Dholavira (ii)-Haryana (c)-Kotdiji (iii)-Gujarat Choose the correct option- (A)- a-ii, b-iii and c-i (B)- a-i, b-ii and c-iii (C)- a-i, b-iii and c-ii (D)- a-iii, b-ii and c-i निम्नलिखित का मिलान करें: (अ) राखीगढ़ी (1)पाकिस्तान (ब)धोलावीरा (2) हरियाणा (स) कोट्दिजी (3)गुजरात सही विकल्प चुने : A) a)-ii b-iii c-i B) a)-i b-ii c-iii C)a)-i b-iii c-ii D) a)-iii b-ii c-i	1
3.	In the question given below, there are two statements marked as Assertion (A) and Reason (R). Mark your answer as per the codes provided below: **Assertion (A):**Ashoka used inscriptions to proclaim what he understood to Dhamma. **Reason (R):**Inscriptions are written on hard stone surfaces and can survive long-lasting. a) Both A and R are true and R is the correct explanation of A. b) Both A and R are true but R is not the correct explanation of A. c) A is true but R is false d) A is false but R is नीचे दिए गए प्रश्न में, दो कथन अभिकथन (ए) और कारण (आर) के रूप में चिह्नित हैं।नीचे दिए गए कोड के अनुसार अपना उत्तर चिह्नित करें: **अभिकथन (ए)**: अशोक ने धम्म को जो समझा उसे घोषित करने के लिए शिलालेखों का उपयोग किया। **कारण (आर):**शिलालेख कठोर पत्थर की सतहों पर लिखे जाते हैं और लंबे समय तक टिके रह सकते हैं। क) ए और आर दोनों सत्य हैं और आर, ए का सही स्पष्टीकरण है। ख) ए और आर दोनों सत्य हैं लेकिन आर, ए का सही स्पष्टीकरण नहीं है। ग) A सत्य है लेकिन R गलत है | घ) A गलत है लेकिन R गलत |	1

4	Which of the following scripts were deciphered by James Prinsep ? (A) Bengali and Devanagari (B) Sanskrit and Prakrit (C) Brahmi and Kharosthi (D) Greek and Indo-Greek निम्नलिखित लिपियों में से किसका अर्थ जेम्स प्रिंसेप द्वारा निकाला गया था ? (A) बंगाली और देवनागरी (B) संस्कृतऔरप्राकृत (C) ब्राह्मी और खरोष्ठी (D) यूनानी और इण्डो-यूनानी	1
5	Who among the following ruler rebuilt the “Sudarshan lake”? (A) Siri Satakarni (B) Sakasena (C) Siri Vijaya Satakarni (D) Rudradaman निम्नलिखित में से किस शासक ने 'सुदर्शनझील' को पुनर्निर्मित किया? (A) सिरि सतकर्नि (B) शाकासेन (C) सिरि विजय सतकर्नि (D) रुद्रदमन	1
6	Mahabharata is attributed to sage Vyasa. a) True b) False महाभारत का श्रेय ऋषि व्यास को दिया जाता है। क) सही ख) गलत	1
7	ASSERTION (A) The great epic Mahabharata is the work of not one but several authors at different time periods. REASON(R) Historians suggest the didactics section of the epic was probably added later. a) Both A and R are true and R is the correct explanation of A. b) Both A and R are true and R is not the correct explanation of A. c) A is true, but R is false. d) A is false, but R is true. अभिकथन (ए): महान महाकाव्य महाभारत एक नहीं बल्कि विभिन्न समय अवधि के कई लेखकों का काम है। कारण(आर): इतिहासकारों का सुझाव है कि महाकाव्य का उपदेशात्मक खंड संभवतःबाद में जोड़ा गया था। क) ए और आर दोनों सत्य हैं और आर, ए का सही स्पष्टीकरण है। ख) ए और आर दोनों सत्य हैं और आर, ए का सही स्पष्टीकरण नहीं है। ग) ए सत्य है, लेकिन आर गलत है। घ) A गलत है, लेकिन R सच है।	1
8	Given below are two statements, one labelled as Assertion (A) and the other labelled as Reason (R). Assertion (A) : Bernier was a firm believer in the virtues of private property.	1

	He saw crown ownership of land in the Mughal empire as being harmful to both State and the people. Reason (R) : Landlords could not pass on their land to their children, so they were averse to any long time investment in the expansion of production. From the above Assertion and Reason, find out which one of the following is true : (A) Both (A) and (R) are true and (R) is the correct explanation of (A). (B) Both (A) and (R) are true, but (R) is not the correct explanation of (A). (C) Both (A) and (R) are false. (D) Both (A) and (R) are true. **नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन** (A) **के रूप में जाना गया है और दूसरे को कारण** (R) **के रूप में जाना गया है।** **अभिकथन** (A) : **बर्नियर का निजी स्वामित्व के गुणों में दृढ़विश्वास था।उसने देखा कि मुग़ल साम्राज्य में भूमि पर राजकीय स्वामित्व राज्य और उसके निवासियों दोनों के लिए अहितकर है।** **कारण** (R) : **भूधारक अपने बच्चों को भूमि नहीं दे सकते थे।इसलिए वे उत्पादन के स्तर को बनाए रखने और उसमें बढ़ोत्तरी के लिए दूरगामी निवेश के प्रति उदासीन थे।** **उपरोक्त अभिकथन और कारण से ज्ञात कीजिए कि निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है :**(A) (A) **और** (R) **दोनों सही हैं और** (R), (A) **का सही स्पष्टीकरण है।** (B) (A) **और** (R) **दोनों सही हैं, परन्तु** (R), (A) **का सही स्पष्टीकरण नहीं है।** (C) (A) **और** (R) **दोनों ग़लत हैं।** (D) (A) **और** (R) **दोनों सही हैं।**	
9	Who was the author of the book " RIHLA". (A) Francois Bernier(B) Ibn Battuta (C) Albiruni (D) Barbosa "रिहाला" पुस्तक के लेखक कौन थे? (A) फ्रेंकोइस बर्नियर(B) इब्नबतूता (C) अलबिरूनी (D) बारबोसा	1
10	Name the lingayat devotee who led a new movement in Karnataka in 12th century. A) J. F. Noyan B) joseph C) Bassvanna D) Yedurappa 12 **वींशताब्दी में कर्नाटक में एक नए आंदोलन का नेतृत्व करने वाले लिंगायत भक्त का नाम बताइए।** **ए) जे. एफ. नोयान बी) जोशफ सी) बासवन्ना डी) येदुरप्पा**	1
11	Which one of the following temples was used only by Vijayanagara rulers and their families? A. The Vitthala Temple B. The Virupaksha Temple C. The Hazara Rama Temple D. The Raghunatha Temple	1

	निम्नलिखित में से किस मंदिर का उपयोग केवल विजयनगर के शासकों और उनके परिवारों द्वारा किया जाता था? (अ) विट्ठलमंदिर (ब) विरुपाक्षमंदिर (स) हजाराराममंदिर (द) रघुनाथमंदिर	
12.	Identify the picture from the given options:- दिए गए विकल्पों में से चित्र को पहचानें:- a) Mahanavami dibba b) Lotus Palace c) Virupaksha Temple d) Hazara rama temple क) महानवमी डिब्बा ख) लोटस पैलेस ग) विरुपाक्ष मंदिर घ) हजारराम मंदिर	1
13	The land was classified into four categories under the rule of Akbar. Which of these four categories was considered the best? (a) Polaj (b) Parauti (c) Chachar (d) Banjar अकबर के शासन काल में जमीन को चार भागों में वर्गीकृत किया जाता था।निम्नलिखित चार वर्गों में से कौन-सा सबसे अच्छा माना जाता था? (A) पोलज (B) परौती (C) चाचर (D) बंजर	1
14	Identify which of the following was **not correct** in the context of Mughal Empire. (A) States help was available for irrigation. (B) Jins-i-kamil was a Rabi Crop. (C) Many new crops reached India such as maize, potato, etc. (D) There were two types of peasants – khud-Kashta and Pahi-Kashta पहचानें कि मुगल साम्राज्य के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा **सही नहीं था**।	1

	(A) सिंचाई के लिए राज्यों की मदद उपलब्ध थी। (B) जिन्स-ए-कामिल रबी की फसल थी। (C) कई नई फसलें भारत पहुंचीं जैसे मक्का, आलू आदि। (D) दो प्रकार के किसान थे - खुद-काश्त और पाही-काश्त।	
15	In which year permanent settlement was introduced in India? भारत में स्थायी बंदोबस्त किस वर्ष शुरू किया गया था? A. 1873 B. 1973 C. 1793 D. 1775	1
16	Given below are two statements, one labelled as Assertion (A) and other labelled as Reason (R): Assertion (A): Zamindars defaulted on payments in the Permanent Settlement.in Bengal Reason (R): Prices of the agricultural produce were low. (A) (A) and (R) are correct and (R) is the correct explanation of (A). (B) (A) and (R) are correct and (R) is not correct explanation of (A). (C) (A) is correct but (R) is not correct. (D) (R) is correct but (A) is not correct. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R) है : अभिकथन (A) : जमींदारों ने बंगाल में इस्तमरारी बंदोबस्त के राजस्व को भुगतान करने में चूक की कारण (R) : कृषि की उपजों की कीमतें कम थीं। (A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) (A) का सही स्पष्टीकरण है। (B) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है। (C) (A) सही है, लेकिन (R) सही नहीं है। (D) (R) सही है, लेकिन (A) सही नहीं है।	1
17.	When did the British end the practice of Sati in India? अंग्रेजों ने भारत में सती प्रथा को कब समाप्त किया? (A) 1856 (B)1905 (C) 1829 (D) 1929	1
18.	Which of the following was not an objective of the revolt of 1857? निम्नलिखित में से कौनसा 1857 के विद्रोह का उद्देश्य नहीं था? A. Vision of Unity एकता का दृष्टिकोण B. Search for alternative power वैकल्पिक शक्ति की खोज करें C. To revive Islamic rule इस्लामी शासन को पुनर्जीवित करना D. Attacking every symbol of British rule ब्रिटिश शासन के हर प्रतीक पर हमला करना	1
19.	Which of the following options is correct? A. Gandhi ji started Quit India Mission in 1920. B. Gandhiji gave his first speech in Bardoli.	1

	C. Gandhiji worked as radical nationalist leader D. Gandhi considered G.K. Gokhale as his political mentor निम्नलिखित में से कौनसा विकल्प सही है? A. गांधीजी ने 1920 में भारत छोड़ो मिशन की शुरुआत की। B. गांधीजी ने अपना पहला भाषण बारडोली में दिया था। C. गांधीजी ने कट्टरपंथी राष्ट्रवादी नेता के रूप में काम किया। D. गांधीजी, जी.के. गोखले कोअपना राजनीतिक गुरु मानते थे।	
20.	What was the significance of the Lahore Session of Congress? कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन का क्या महत्व था? A. Declaration of Poorna-swaraj पूर्ण-स्वराज कीघोषणा | B. Support the Khilafat Movement खिलाफत आंदोलन का समर्थन करें | C. Oppose Rowlatt Act रौलेट एक्ट का विरोध | D. Gandhiji postponed Civil Disobedience Movementगांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित कर दिया |	1
21.	Which one of the following languages was favored by Gandhiji as the national language? (A) Hindi (B) Urdu (C) Hindustani (D) English निम्नलिखित में से किस भाषा को गांधीजी ने राष्ट्रीय भाषा के रूप में पसंद किया था? (अ) हिंदी (ब) उर्दू (स) हिंदुस्तानी (द) अंग्रेजी	1
	SECTION – B **SHORT ANSWER TYPE QUESTIONS** खंड-ब लघुउत्तरीय **प्रकार के** प्रश्न	3x6=18
22.	‘‘The domestic architecture of Mohenjodaro was unique.’’ Explain the statement with examples. **OR** ‘‘One of the most distinctive features of Harappan cities was the carefully planned drainage system.’’ Substantiate the statement. ''मोहनजोदड़ो की गृह वास्तुकलाअद्‌वितीय थी।'' कथन को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। या ''हड़प्पा शहरों की सबसे विशिष्ट विशेषताओं में से एक सावधानी पूर्वक नियोजित जल निकासी प्रणाली थी।'' कथन की पुष्टि करें।	
23.	Give a brief description of Megasthenese. What does Megasthenese tell	

	about the administration of the Mauryan Empire? मेगस्थनीज का संक्षिप्त विवरण दीजिए।मेगस्थनीज मौर्य साम्राज्य के प्रशासन के बारे में क्या बताता है?	
24.	Explain Al-Biruni's description of caste system. अल-बिरूनी के जाति व्यवस्था के विवरण की व्याख्या करें।	
25.	"The arguments and evidences offered by the Fifth Report cannot be accepted uncritically". Give arguments. "पांचवीं रिपोर्ट द्वारा पेश किए गए तर्कों और सबूतों को बिना आलोचना के स्वीकार नहीं किया जा सकता है"।तर्क दीजिए.	
26.	'Highlight the contribution of Krishnadeva Raya in the expansion of Vijayanagara empire. विजयनगर साम्राज्य के विस्तार में कृष्णदेवराय के योगदान पर प्रकाश डालिए।	
27	With the help of specific examples examine the nature of Indian leadership that emerged against British in the revolt of 1857. विशिष्ट उदाहरणों की सहायता से 1857 के विद्रोह में अंग्रेजों के विरुद्ध उभरे भारतीय नेतृत्व की प्रकृति का परीक्षण कीजिए। Or "Rumours and prophecies played a part in moving the people into action during the revolt of 1857." Examine the statement with rumours and reasons for its belief. "अफवाहों और भविष्यवाणियों ने 1857 के विद्रोह के दौरान लोगों को सक्रिय करने में एक भूमिका निभाई।" अफवाहों और इसके विश्वास के कारणों के साथ कथन का परीक्षण करें।	
	SECTION – C **LONG ANSWER TYPE QUESTIONS** **खंड-ग** **दीर्घउत्तरीयप्रकारकेप्रश्न**	3x8= 24
28.	"The Dharmasutras and Dharmashastras also contained rules about the ideal occupations of the four categories of varnas." Critically examine the statement. "धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रों में वर्णों की चार श्रेणियों के आदर्श व्यवसायों के बारे में भी नियम हैं।" कथन का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। Or What are the rules of gotra as given in Brahmanical practice? Give some example to show that these rules were not always followed. ब्राह्मणवादी विचाधारा में दिए गए गोत्र के नियम क्या हैं? यह दिखाने के लिए कुछ	

	उदाहरण दीजिए कि, इन नियमों का हमेशा पालन नहीं किया जाता था।	
29..	Assess the conditions of women in agrarian society. कृषि समाज मे महिलाओं की स्थिति आकलन कीजिए। OR Analyse the role played by Zamindars during Mughal India. मुगल भारत के दौरान जमींदारों द्वारा निभाई गई भूमिका का विश्लेषण करें।	
30.	उन विभिन्न स्रोत का वर्णन करें जिससे हम गांधीजी के राजनीतिक जीवन और राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास का पुनर्निर्माण कर सकते हैं? Describe the different source from which we can reconstruct the political career of Gandhiji and the history of National Movement? OR "The salt march of 1930 was the first event that brought Mahatma Gandhi to world attention." Explain significance of this movement for Swaraj. 1930 का नमक सत्याग्रह पहली घटना थी जिसने महात्मागांधी की ओर दुनिया का ध्यान आकर्षित किया।" स्वराज के लिए इस आंदोलन के महत्व की व्याख्या करें i |	
	SECTION – D **SOURCE BASED QUESTION** **खंड-घ** **स्रोतआधारितप्रश्न**	3x4=12
31.	स्तूप क्यों बनाए जाते थे यह उद्धरण महापरिनिब्बान सुत्त से लिया गया है जो सुत्तपिटक का हिस्सा है : परिनिर्वाण से पूर्व आनंद ने पूछा: भगवान हम तथागत (बुद्ध का दूसरा नाम) के अवशेषों का क्या करेंगे? बुद्ध ने कहा, "तथागत के अवशेषों को विशेष आदर देकर खुद को मत रोको।धर्मोत्साही बनो, अपनी भलाई के लिए प्रयास करो।" लेकिन विशेष आग्रह करने पर बुद्ध बोले : "उन्हें तथागत के लिए चार महापथों के चौक पर धूप (स्तूप का पालि रूप) बनाना चाहिए।जो भी वहाँ धूप या माला चढ़ाएगा... या वहाँ सिर नवाएगा, या वहाँ पर हृदय में शांति लाएगा, उन सबके लिए वह चिरकाल तक सुख और आनंद का कारण बनेगा।" (31.1) स्तूप किसे कहते हैं? आनंद को स्तूप बनाने की सलाह किसने दिया ? (31.2) तथागत कौनथे? (31.3)कोई दो स्थानो के नाम बताइये जहाँ स्तूप बनाये गए। Why were Stupas Built? "This is an excerpt from the MahaparinibbanaSutta, part of the SuttaPitaka: As the Buddhalay dying, Ananda asked him: "What are we to do Lord, with remains of the Tathagata (another name for	

	the Buddha)?" The Buddha replied: "Hinder not yourelvesAnanda by honouring the remains of theTathagata. Be zealous, be intent on your own good." But when pressed further, the Buddha said: "At the four crossroads they should erect a thupa(Pali for stupa) to the Tathagata. And whosoever shall there place garlands or perfume….ormake a salutation there, or become in its presence calm of heart, that shall long be to them for aprofit and joy." (31.1) What are the Stupas? Who advised the Ananda to build the Stupa? (31.2) Who was the Tathagata? (31.3) Name any two places where the Stupas have been built.	
32.	निम्नलिखित स्रोत को ध्यान पूर्वक पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें: **एक राक्षसी ?** यह कराइक्कल अम्मैय्यर की एक कविता का एक अंश है जिसमें वह खुद का वर्णन करती है: मादापे (राक्षस) के साथ। . . उभरी हुई नसें, उभरी हुई आंखें, सफेद दांत और सिकुड़ा हुआ पेट, लाल बालों वाले और निकले हुए दांत, टखनों तक फैली हुई लंबी पिंडलियाँ, जंगल में घूमते समय चीखना और विलाप करना।यह अलंकातु का जंगल है, जो हमारे पिता (शिव) का घर है, जो अपने उलझे हुए बालों को आठों दिशाओं में फैलाकर और शांत अंगों के साथ नृत्य करते हैं। 32.1). कराईकल अम्मैयार ने सुंदरता को किस प्रकार चित्रित किया है ? 32.2). "उभरी हुई नसें, उभरी हुई आंखें, सफेद दांत और सिकुड़ा हुआ पेट", "चिल्लाता और चिल्लाता है"।दिए गए अंश में कवि की इस स्थिति का कारण बताइए | 32.3) वाक्यांश का परीक्षण करें "उसके उलझे हुए बाल सभी आठ दिशाओं में फैले हुए थे" | Read the following source carefully and answer the questions that follow: **A demon?** This is an excerpt from a poem by Karaikkal Ammaiyar in which she describes herself: The female Pey (demoness) with . . . bulging veins, protruding eyes, white teeth and shrunken stomach, red haired and jutting teeth lengthy shins extending till the ankles, shouts and wails while wandering in the forest. This is the forest of Alankatu, which is the home of our father (Shiva) who dances … with his matted hair thrown in all eight directions, and with cool limbs. 32.1). How beauty has been personified by Karaikal Ammaiyar? 32.2). "Bulging veins, protruding eyes, white teeth and shrunken stomach", "Shouts and wails". State the reason behind the poet's condition in the excerpt given 32.3) Examine the phrase "With his matted hair thrown in all eight directions "	

33.	निम्नलिखित स्रोत को ध्यान पूर्वक पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें: **"मेरा मानना है कि पृथक निर्वाचिका अल्पसंख्यकों के लिए आत्मघाती साबित होगा"** 27 अगस्त 1947 को बहस के दौरान गोविंद बल्लभपंत ने कहा: मेरा मानना है कि पृथक निर्वाचन क्षेत्र अल्पसंख्यकों के लिए आत्मघाती होगा और इससे उन्हें जबरदस्त नुकसान होगा।यदि उन्हें हमेशा के लिए अलग-थलग कर दिया जाए तो वे कभी भी खुद को बहुमत में नहीं बदल पाएंगे और निराशा की भावना उन्हें शुरू से ही अपंग बना देगी।आप क्या चाहते हैं और हमारा अंतिम उद्देश्य क्या है? क्या अल्पसंख्यक हमेशा अल्पसंख्यक बने रहना चाहते हैं या क्या वे कभी किसी महान राष्ट्र का अभिन्न अंग बनने और इस रूप में उसकी नियति को निर्देशित और नियंत्रित करने की उम्मीद करते हैं? यदि वे ऐसा करते हैं, तो क्या वे कभी भी उस आकांक्षा और उस आदर्श को प्राप्त कर सकते हैं यदि उन्हें शेष समुदाय से अलग कर दिया जाए? मुझे लगता है कि यह उनके लिए बेहद खतरनाक होगा अगर उन्हें बाकी समुदाय से अलग कर दिया जाए और एक एयर-टाइट डिब्बे में अलग रखा जाए, जहां उन्हें सांस लेने वाली हवा के लिए भी दूसरों पर निर्भर रहना पड़े... अल्पसंख्यकों को अगर वापस लौटा दिया जाए पृथक निर्वाचन क्षेत्रों में कभी भी कोई प्रभावी आवाज नहीं हो सकती। (33.1) "संविधान सभा में कुछ नेताओं ने अलग निर्वाचन क्षेत्रों को जारी रखने के लिए तर्क दिया।" कथन का परीक्षण करें। (33.2) प्रस्ताव के विरोध में गोविंद वल्लभ पंत के दृष्टिकोण का विश्लेषण करें। (33.3) भारत को एक मजबूत एकीकृत राष्ट्र-राज्य बनाने पर दिए गए तर्कों का विश्लेषण करें। Read the following source carefully and answer the questions that follow: **"I believe separate electorates will be suicidal to the minorities"** During the debate on 27 August 1947, Govind Ballabh Pant said: I believe separate electorates will be suicidal to the minorities and will do them tremendous harm. If they are isolated for ever, they can never convert themselves into a majority and the feeling of frustration will cripple them even from the very beginning. What is it that you desire and what is our ultimate objective? Do the minorities always want to remain as minorities or do they ever expect to form an integral part of a great nation and as such to guide and control its destinies? If they do, can they ever achieve that aspiration and that ideal if they are isolated from the rest of the community? I think it would be extremely dangerous for them if they were segregated from the rest of the community and kept aloof in an air-tight compartment where they would have to rely on others even for the air they breath… The minorities if they are returned by separate electorates can never have any effective voice.	

	(33.1) ‘‘Some leaders in the Constituent Assembly argued for the continuation of separate electorates.’’ Examine the statement. (33.2) Analyse the perspective of Govind Ballabh Pant in opposing the proposal. (33.3) Analyse the arguments made on making India a strong unified nation-state.	
	SECTION – E **MAP BASED QUESTION** खंड-ड़ मानचित्र आधारित प्रश्न	5
34.	(34.1) On the given political map of India, locate and label the following with appropriate symbols: I.Amravati – A Stupa II.Rakhigarhi- Indus Valley Site III.Agra-Territory Under the Control of Mughals OR Vijayanagar- Capital of Vijayanagar empire (34.2) On the same outline map, two places have been marked as ‘A and B,as the centres of the Revolt of 1857 Identify them and write their correct names on the lines drawn near them. 34.1) भारत के दिए गए राजनीतिक मानचित्र पर, उपयुक्त प्रतीकों के साथ निम्नलिखित का पता लगाएँ और लेबल करें: I -अमरावती – एकस्तूप II- राखीगढ़ी- सिंधु घाटी स्थल III- आगरा- क्षेत्र मुगलों के नियंत्रण में अथवा विजयनगर- विजयनगर साम्राज्य की राजधानी (34.2) उसी रूपरेखा मानचित्र पर, दो स्थानों को 'ए और बी' के रूप में चिह्नित किया गया है, 1857 के विद्रोह के केंद्रों के रूप में उन्हें पहचानें और उनके पास खींची गई रेखाओं पर उनके सही नाम लिखें।	

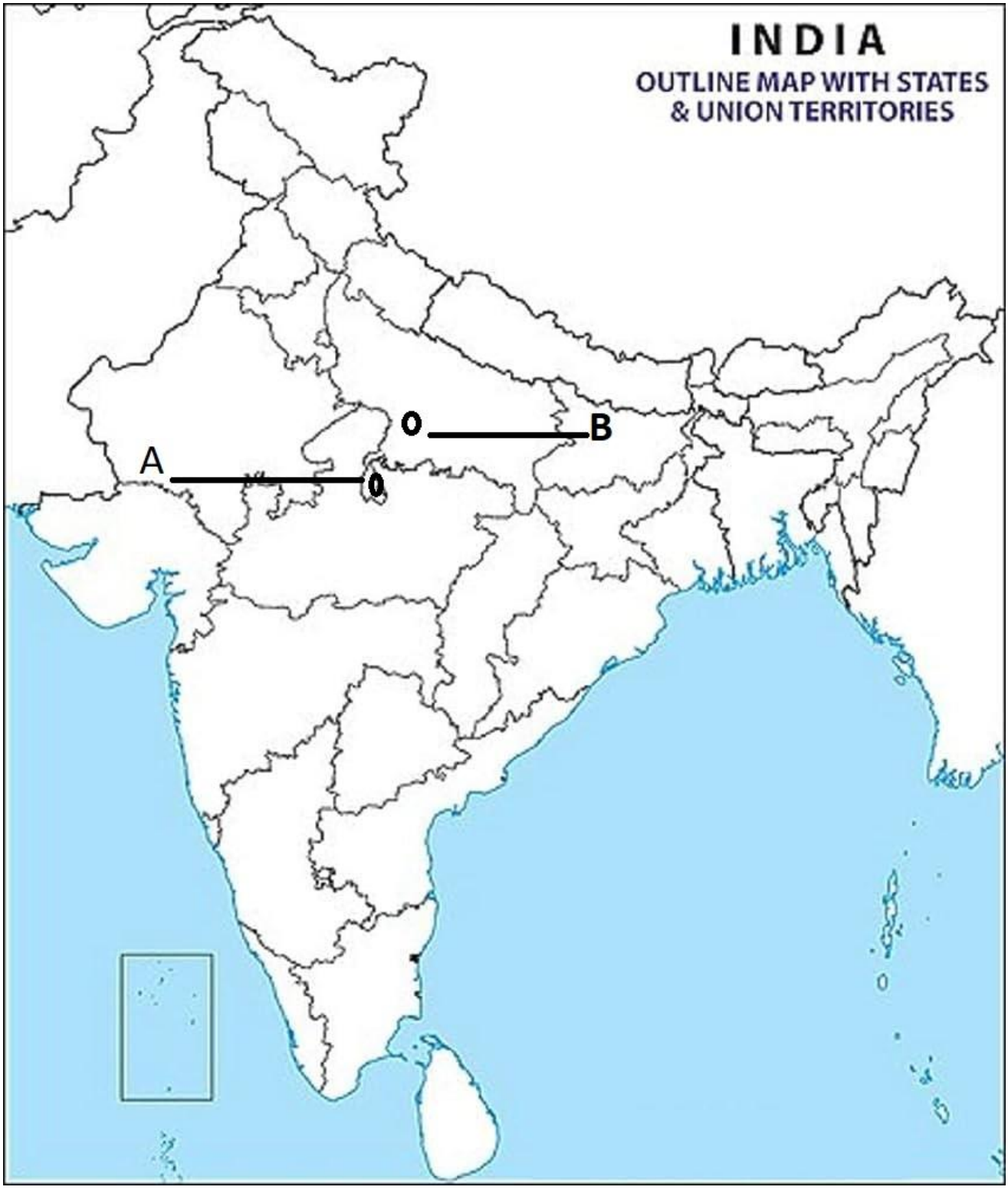
INDIA
OUTLINE MAP WITH STATES
& UNION TERRITORIES
A
B

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Kendriya Vidyalaya Sangathan